

समय संकेत

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2018
अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)



सौजन्य







IndianOil

2018 YEAR OF TRUST

SUNEVER Electricals

कृषि एवं ग्रामीण विकास की सेवा में समर्पित राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एन.सी.डी.सी.)

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) कृषि उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन, भंडारण, आयात एवं निर्यात, खाद्यान्नों तथा संबद्ध कार्यकलापों जैसे कृषिक कार्यों हेतु सहकारिताओं के जरिए विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों का संवर्धन कर रहा है जिनमें मुख्यतया निम्नलिखित कार्यक्रम सम्मिलित हैंः—

- **जिन्निंग, प्रेसिंग एवं कताई, बुनाई एवं वस्त्र निर्माण**
- **चीनी एवं अन्य कृषि प्रसंस्करण इकाइयां**
- **उपभोक्ता व्यापार करने के लिए सहकारिताओं को सहायता**
- सभी प्रकार की **औद्योगिक सहकारिताएं,** कुटीर एवं ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प / ग्रामीण शिल्प आदि
- **ऋण एवं सेवा सहकारिताएं** श्रमिक सहकारिताएं एवं सेवा सहकारिताएं : सहकारिताओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण कार्य एवं सिंचाई, पशु देखभाल / स्वास्थ्य, कृषि बीमा एवं कृषि ऋण, ग्रामीण स्वच्छता, पर्यटन, आतिथ्य एवं यातायात / नई एवं गैर पारम्परिक एवं अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उत्पादन एवं वितरण / ग्रामीण आवास / अस्पताल / स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा आदि
- चुनिंदा जिलों में **एकीकृत सहकारी विकास परियोजनाएं**
- **कमजोर वर्गों** के कार्यक्रम – मात्स्यिकी, डेरी एवं पशुधन, कुक्कुटपालन, अनु0जा0 / अनु0ज0जा0, हथकरघा, कॉयर, पटसन, कोशकीटपालन, पर्वतीय क्षेत्र, श्रम एवं महिला सहकारिताएं
- **कम्प्यूटरीकरण हेतु सहायता**

एनसीडीसी का शुद्ध एनपीए शून्य है और इसके ऋणों की वसूली स्थिति 99% से अधिक है। एनसीडीसी द्वारा विभिन्न सरकारी विकास कार्यक्रमों हेतु अब तक लगभग 1 लाख करोड़ रूपये से अधिक की संचयी सहायता दी जा चुकी है।





राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

(आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित संगठन)
4, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली–110016
फोनः 26567475, 26567026, 26567202, 26567140
फैक्सः 0091–011–26962370, 26516032
वेबसाइटः www.ncdc.in



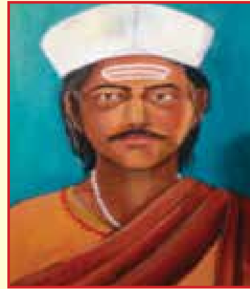
मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2018

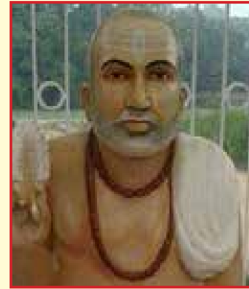
अखिल भारतीय मिथिला संघ



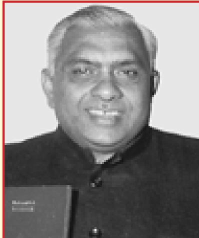
(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, सलहेस, लोरिक, दीना-भद्री आ आओर प्रेरणा पुंज सबहक स्मृति)


विद्यापति


ज्योतिरीश्वर


वाचस्पति मिश्र


उदयनाचार्य


ललित ना. मिश्र


भोला पासवान शास्त्री


कर्पूरी ठाकुर

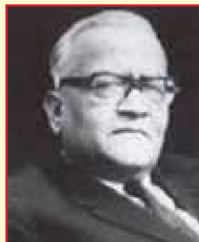

भोगेन्द्र झा


गुणानंद ठाकुर


यमुना प्रसाद मंडल

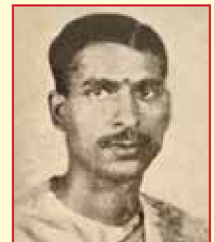

भागवत झा आजाद

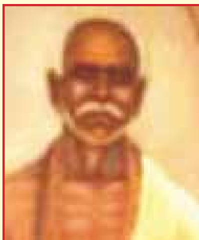

आर.पी. यादव


आदित्यनाथ झा

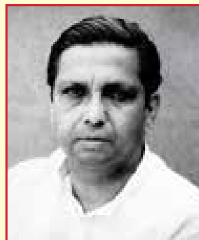

बाबा नागार्जुन


सुभद्र झा

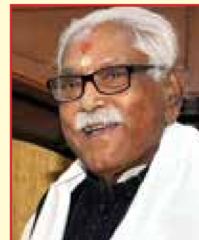

सुरेन्द्र झा सुमन

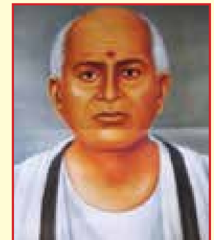

लाल दास


मणिपद्म


बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल


आद्या झा


ताराकांत झा


चंदा झा

स्थायी पता
एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062

पत्राचार पता
एच-14-15, पुरानी सीमापुरी,
दिल्ली-110095

फोन: 9650461788, 9717539000

ईमेल
abmssmarika@gmail.com
akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com

(सभटा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

की कतय अछि

की कतय अछि

विभूति खंड

साक्षात्कार

विमर्श

विकास खण्ड

साहित्य खण्ड

कविता

की कतय अछि

हरिवंश
Harivansh





उप सभापति, राज्य सभा
Deputy Chairman, Rajya Sabha

32, संसद भवन, नई दिल्ली
32, Parliament House, New Delhi
दूरभाष/Tel.: 23017371, 23034689
फैक्स/Fax : 23012559

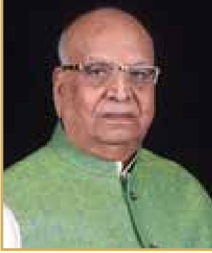
दिनांकः 17.12.2018

शुभकामना संदेश

अखिल भारतीय मिथिला संघ की ओर से आयोजित ' मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह-2018' के लिए अशेष शुभकामनाएं.जानकर अच्छा लगा कि यह संस्था पिछले पांच दशक से अधिक समय से मिथिला के साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकारो से जुड़कर काम कर रही है. मिथिला की भूमि आदिकाल से साहित्य,संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा की पहचान को स्थापित करनेवाली भूमि रही है. इस धरती पर लोक और शास्त्र, दोनों धाराएं और परंपराएं पीढ़ियों से एक आकार लेती रही हैं और एक-दूसरे से सामंजस्य बिठाते हुए भारतीय संस्कृति व परंपरा को समृद्ध करती रही हैं.इस धरती ने एक ओर जहां संस्कृत साहित्य को बहुत कुछ देकर समृद्ध किया तो दूसरी ओर यहीं से पहली बार महाकवि विद्यापति ने 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' का उदघोष कर लोकभाषा, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति,लोकपरंपरा को आत्मसम्मान,स्वाभिमान,पहचान और गौरवगान से जोड़ा. यह विदेह राजा जनक की धरती है, जनकनंदिनी की धरती है, जिसे लेकर हमेशा ही न सिर्फ मिथिला बल्कि पूरे देश को गौरवबोध रहा है. मिथिलावाले तो अलग से इस गौरवबोध को गान में दुहराते हैं-' जगत में हमरा सब के आन. मिथिला छाड़ी जगत में कहां के, दुलहा छती भगवान.' साहित्य,संस्कृति,ज्ञान के क्षेत्र में इस धरती ने विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, वाचस्पति मिश्र, मंडन मिश्र, भारती जैसे न जाने कितने विद्वान व विदुषियों को जन्म दिया.दूसरी ओर कला के क्षेत्र में पूरी दुनिया में बिहार की संगीत की पहचान को स्थापित करनेवाले मल्लिक घराना को दिया. मिथिला पेंटिंग की धमक आज पूरी दुनिया में है, जो मिथिला के गांव-गिरांव के सामान्य जनों की कला रही है. गांव-गिरांव की सामान्य कला का दुनिया में छा जाना, किसी राज्य की पहचान बन जाना, उस इलाके के लोगों का उस कला से सरोकार और व्यवहार के कारण ही संभव हो सका है. हिंदी साहित्य में बाबा नागार्जुन, राजकमल चौधरी, रेणुजी जैसे कई नाम इस धरती से निकले. मणिपद्म, स्नेहलता जैसे कालजयी नाम मैथिली साहित्य से जुड़े हुए हैं. सबके साथ ही अगर राजनीति के क्षेत्र में बात करें तो बीपी मंडल, भोला पासवान शास्त्री, ललित नारायण मिश्र, भोगेंद्र झा, कर्पूरी ठाकुर जैसे कई कर्मठ नेताओं को जन्म दिया. समग्रता में देखें तो मिथिला इलाके की यह बौद्धिक उर्वरता, संघर्ष के साथ सृजन करने की क्षमता और परंपरा ही यहां की खास पहचान है. अखिल भारतीय मिथिला संघ पिछले 51 सालों से इसी परंपरा और पहचान को बनाये रखने, बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है, इसके लिए साधुवाद. यह यात्रा जारी रहे और नये मुकाम को हासिल करते रहे. पुन: शुभकामना.

Office : 32, Parliament House, New Delhi-110 001 Ph. : 011-23034689, 23034677, 23017371
Fax : 011-23012559 E-mail : office.hdcrajyasabha@sansad.nic.in
Ranchi Resi.: 103, Umashanti Appartment, Kanke Road, Post - Ranchi University,
P.S.- Gonda, Ranchi, Jharkhand-834008 Ph.: 0651-2233994, 2233993

लाल जी टंडन
LAL JI TANDON





राजभवन
पटना-800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

11 दिसम्बर, 2018

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्न्ता हुई कि अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में आगामी 23 दिसंबर, 2018 को 'मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह–2018' का आयोजन नई दिल्ली में होने जा रहा है।

मिथिला की लोक संस्कृति, लोक कला, लोक गीत–संगीत एवं सारस्वत साधना की सुदीर्घ परम्परा रही है। भारत के सांस्कृतिक अभ्युत्थान में मिथिला की लोक संस्कृति की समृद्धि का सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिला की विभूतियों का स्मरण करना अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

मैं 'मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह–2018' की समग्र सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

(लाल जी टंडन)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governo.bihar@nic.in





Manoj Tiwari
Member of Parliament
Lok Sabha – North East Delhi

दिनांक: 14.12.2018

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्ता हो रही है कि पिछले 51 वर्षों से अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.) द्वारा मिथिला स्मृति पर्व समारोह का आयोजन किया जा रहा है जो कि इस वर्ष दिनांक 23 दिसंबर 2018 को मावलंकर सभागार, रफी मार्ग, नई दिल्ली में मनाया जायेगा। इस अवसर पर संस्था के द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन एवं साहित्यिक, सांस्कृतिक, लोक नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन भी किया जायेगा।

इस के लिए मैं संस्था के सभी सदस्यों को स्मारिका के सफल प्रकाशन एवं सफल सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ।

Manoj Tiwari

(मनोज तिवारी)

श्री विद्या नन्द ठाकुर
महासचिव, अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)
संगम विहार, नई दिल्ली

Member :
• Standing Committee on Transport, Tourism and Culture • Consultative Committee on Ministry of Information & Broadcasting

159, North Avenue, New Delhi-110 001, Tel.: 011-23094123, Fax: 011-23094122
Email: mp.manojtiwari@gmail.com, mt7tiwari@gmail.com

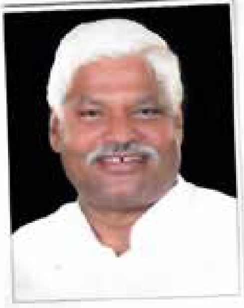
महाबल मिश्रा
पूर्व सांसद
(लोक सभा)

Mahabal Mishra
Ex. Member of Parliament
(Lok Sabha)



मकान नं. 86, गली नं. 2,
वैशाली डाबड़ी, पालम रोड़
नई दिल्ली-110045
फोन नं. (ऑ.) 25380005 (निवास) 25390005

H.No.-86, Gali No.-2, Vaishali Dabri
Palam Road, New Delhi-110045
Cell. : 9811289600, 9958095781, 9013180122



शुभकामना सन्देश

दिनांक : २६-११-२०१८

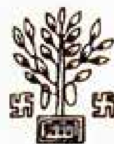
सेवा में,
श्री विद्या नन्द ठाकुर
अखिल भारतीय मिथिला संघ
नई दिल्ली

हमरा ई जानिअति प्रसन्नता भ रहल अछि जे अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन वार्षिक मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोहक आयोजन आगामी २३-१२-२०१८ क दिल्ली के मावलंकर सभागार में आयोजित क रहल अछि। विद्यापति, बाबा नागार्जुन, लोरिक, सलहेस, भोगेन्द्र झा इत्यादिक स्मृति में मनाओल जा रहल एहि पर्व में स्मारिका एवं कार्यक्रमक सफलता हेतु हमर शुभकामना अर्पित अछि। संस्था सं हम स्वयं जुड़ल छी एवं संस्थाक कार्यकर्ताक रूप में अपन भाषा एवं मिथिलाक विकास हेतु सतत संघर्षशील रहलाहूँ। हम पुनः एक बेर एहि कार्यक्रमक सफलता हेतु शुभकामना दैत छी।

धन्यवाद

(महाबल मिश्र)

मो॰ हारूण रशीद
कार्यकारी सभापति
बिहार विधान परिषद्



फैक्स : 0612-2215683 (का.)
दूरभाष : 0612-2215245 (का.)
दूरभाष : 0612-2215819 (का.)
टे/फै. : 0612-2215986 (आ.)
मो. : 09431250157

पत्रांक : 242/का. स. (बि.) दिनांक : 26.11.2018



शुभकामना संदेश

ई जानि बड़ प्रसन्नता भए रहल अछि जे अखिल भारतीय मिथिला संघक तत्वावधान में मावलंकर सभागार, नई दिल्ली मे मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोहक आयोजन कएल जा रहल अछि।

एहि समारोहक सफलता एवं एहि अवसर पर प्रकाशित होअए वाली 'समय संकेत' नामक स्मारिका हेतु हमर हार्दिक शुभकामना स्वीकार करी।

26.11.18

(मो. हारूण रशीद)

सेवा में,

श्री विजय चन्द्र झा
अध्यक्ष
अखिल भारतीय मिथिला संघ
20, कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस
नई दिल्ली -110001

अजय नारायण झा
वित्त सचिव और सचिव (व्यय)
AJAY NARAYAN JHA
Finance Secretary
& Secretary (Expenditure)





भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
व्यय विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE
DEPARTMENT OF EXPENDITURE

दिनांक : 11/12/2018

शुभकामना सन्देश

हमरा ई जानि अत्यंत प्रसन्नता अछि जे **अखिल भारतीय मिथिला संघ** द्वारा एहि वर्ष **'मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह २०१८'** केर आयोजन २३ दिसम्बर २०१८ क नई दिल्ली में कएल जा रहल अछि | इहो सराहनीय अछि जे एहि अवसर पर प्रकाशित कएल जा रहल स्मरिकाक माध्यम सं सुरूचिपूर्ण रचना सब मिथिलावासी धरि पहुचायल जायत |

वैदिक ग्रन्थ में वर्णित व पुराण में प्रशंसित 'मिथिलांचल'अपन विशिष्ट सांस्कृतिक , सामाजिक व अध्यात्मिक पहिचान बचैने राखैत आधुनिक जीवन - मुल्यक संग सामंजस्य बनौने अछि |

अपन विशिष्ट कलात्मक मनीषाक संग मिथिलांचल विश्व के एक नव 'मधुबनी चित्रकलाक रूप में एकटा नव कला – दृष्टि देने अछि | ई कला अपन उत्पति व विकास में गहीर भक्ति भाव सं प्रेरित अछि एवं मिथिलाक स्त्रीगणक अद्वितीय कलात्मक अभिव्यक्तिक प्रतीक सेहो अछि |

पुन्य सलिला धारक जल सं सिंचित एहि प्रदेश में पर्यटनक विकासक अपार सम्भावना अछि | हमरा सबके मिल क एकरा वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अनबाक प्रयास करबाक चाही |

सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय अखिल भारतीय मिथिला संघ एहेन संस्थाक भूमिका एहि अर्थ में महत्वपूर्ण अछि | ओ अप विशिष्टता बना क राखैत अछि आ भारत एहेन विविधतापूर्ण देश में ,दोसर क्षेत्रक संग सामंजस्य बना क रखबाक बाट प्रशस्त करैत अछि |

हम एहि अवसर पर सब मिथिलावासी आ प्रवासी के बधाई आ शुभकामना दैत छी |

अजय नारायण झा

(अजय नारायण झा)

नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली–110001
North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092929, 23092663, Fax : 23092546
E-mail : secyexp@nic.in Website : www.finmin.nic.in



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
ब्लॉक नं0 –1, सीजीओ कॉम्प्लेक्स
लोदी रोड, नई दिल्ली–110003
कार्यालय दूरभाष – 011–24360778



डॉ0 संजीव मिश्रा, आई.सी.ए.एस.
वित्तिय सलाहकार



राष्ट्रीय सुरक्षा गारद
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
मेहराम नगर, नजदीक घरेलू एयर पोर्ट
पालम – 110037
कार्यालय दूरभाष 01– 25671638

शुभकामना संदेश

आदरणीय विजय चन्द्र झाजी,

अपनेक आग्रहपत्र प्राप्त भेल । हमरा ई जानि अति प्रसन्नता भ, रहल अछि जे अखिल भारतीय मिथिला संघ आगामी 23 दिसम्बर 2018 क, मिथिला विभूति समृति पर्व समारोह मनाब, जा रहल अछि। अहाँ के शत्–शत् बधाई, अपनैक संगठन मिथिला और मैथिली के लेल जे काज कएल जा रहल अछि, वो सराहनीय एवं उत्कृष्ट अछी । संस्थासँ हम स्वयं जुड़िक एकर एक कार्यकर्ताक रूपमें अपन माटि–पानि एवं भाषा हेतु सतत् संघर्षशील रहलहुँ।

हमसब मिथिलावासी जै प्रवासी छी, सदैव अपनैक संगेछी । हम पुनश्च एक बेर एहि कार्यक्रमक सफलता हेतु शुभकामना दैत छी।

(डॉ0 सजीव मिश्रा)

श्री विजय चन्द्र झा
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय मिथिला संघ,
नई दिल्ली।

Nirraj Pathak
Vice Chairman





Maithili Bhojpuri Academy, Delhi
Government of NCT of Delhi
Aapurti Bhawan, Aram Bagh,
Pahar Ganj, New Delhi-110055

শুভকামনা সন্দেশ

সেবা মে,
শ্রী বিজয় চন্দ্র ঝা
অখিল ভারতীয় মিথিলা সংঘ
নবা দিল্লী

হমরা ঈ জানি প্রসন্নতা ভঽ রহল অছি জে **অখিল ভারতীয় মিথিলা সংঘ** অপন বার্ষিক **মিথিলা বিভূতি স্মৃতি পর্ব সমারোহ**ক আয়োজন আগামী ২৩.১২.২০১৮ ক দিল্লী কে **মাবলংকর সভাগার** মে আয়োজিত ক' রহল অছি। বিদ্যাপতি, বাবা নাগার্জুন, লোরিক, সলহেস, ভোগেন্দ্র ঝা আদিক স্মৃতি মে মনাওল জা রহল এহি পর্ব মে স্মারিকা এবং কার্যক্রমক সফলতা হেতু হমর শুভকামনা অর্পিত অছি। সংস্থা স হম সেহো জুড়ল ছী এবং সংস্থাক কার্যকর্তাক রূপ মে অপন ভাষা এবং **মিথিলাক বিকাস** হেতু সতত সংঘর্ষশীল রহলহুঁ। হম পুনঃ এক বের এহি কার্যক্রমক সফলতা হেতু হার্দিক শুভকামনা দৈত ছী।

ধন্যবাদ সহিত

নীরজ পাঠক

(নীরজ পাঠক)
উপাধ্যক্ষ, মৈথিলী ভোজপুরী অকাদমী
দিল্লী সরকার



अखिल भारतीय मिथिला संघ



संस्थाक गीत

डॉ. चन्द्रमणि झा

अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!
दशको पूर्व प्रवासी मैथिलकें एकठाम जुटौलनि
अपन माटि-पानिक दरेग, दिल्लीमे संघ बनौलनि
मिथिला-रत्न भोगेन्द्र प्रयासें, मैथिल भेलाह संग
अखिल भारतीय...2

संसद कें झकझोरि देलक मिथिलाक बेटा
मिथिला मैथिल मैथिलीक, आवाज़ उठौलनि नेता
भरि देशक मैथिल जागल, पटना दिल्ली आ बंग
अखिल भारतीय...2

अखिल भारतीय मिथिला संघक रहलै अथक प्रयास
दरभंगे की? गाम गाममे शिक्षा केर भेल विकास
कोशी डैमक मांग एखनधरि चलिये रहल नि:संग
अखिल भारतीय...2

खुलल जयन्ती जनता वैशाली, मिथिलापुरी धरि चललै
दिल्लीमे मैथिली अकादेमी, संघक बल पर बनलै
एहन कतेको काज भेल अछि, बनले छैक उमंग
अखिल भारतीय...2

जन आंदोलन बल सं सबटा, वस्तु संगोरल गेलै
अप्पन भाखा मैथिली भाखा, संविधानमे एलै
संघ सदा जीवनदानी, लड़िए रहल जंग
अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!

सफरनामा

पहिल कार्यकारिणी (दिल्ली) 1967

(भोगेन्द्र झा जीक नेतृत्वमे दिल्लीमे अभियान शुरू)

पहिल सम्मलेन	: 1971
पहिल अध्यक्ष	: चंद्रकांत झा
पहिल उपाध्यक्ष	: रामदेव झा
पहिल उपाध्यक्ष	: बलिराम ठाकुर
पहिल महासचिव	: गंगाधर झा 'शास्त्री'
पहिल संयुक्त सचिव	: विजय चन्द्र झा
पहिल कार्यकारिणी (कोलकाता)	: 1950-51

अध्यक्षगण

स्व. चंद्रकांत झा	: 1970-1974
स्व. राजकुमार पूर्वे	: 1974-1975
स्व. श्रीमती आद्या झा	: 1975-1977
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	: 1977-1985
श्री अजीतनाथ झा (कार्यकारी)	: 1985-1989
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	: 1985-2001
श्री शुभचंद्र झा	: 2001-2005
स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव	: 2005-2010
श्री रामचंद्र चौधरी (कार्यकारी)	: 2010-2013
श्री विजयचंद्र झा	: 2013 सं पदासीन



अखिल भारतीय मिथिला संघ
कार्यकारिणी



अध्यक्ष

श्री विजय चन्द्र झा (9650461788)

उपाध्यक्ष

श्री पवन कुमार सिंह यादव	9810553119, 01127857765
श्री हेमचंद्र झा	9835211953
श्री अनिल झा	9868410643, 01128053286
श्री राकेश रमण झा	9810644976
डॉ. ममता ठाकुर	9717258787

महासचिव

श्री परमेश्वर सिंह	9968216711
श्री शम्भु नाथ मिश्र	8800426656
श्री विद्यानंद ठाकुर	9717539000
श्री राधानाथ झा	9971034185

कोषाध्यक्ष

श्री शीतलकांत झा	9717241189

सचिव

श्री ऋषि कुमार झा	9560306681, 9312919334
श्री यन्त्र नाथ मिश्र	9873346849
श्री अमरनाथ झा (फरीदाबाद)	9213367892
श्री शुभ नारायण झा	9891830976
श्री घूरण झा	9968098881, 8130361151
श्री नन्द कुमार झा	9871462516, 9999635196
श्री रौशन कुमार झा	9350216092

कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. संजीव मिश्र	9871278809
श्री त्रिपुरारी कुमार ठाकुर	9718608191
श्री विनीत उत्पल	9911364316
डॉ. प्रवीण कुमार झा	9868330336
श्री लक्ष्मेश्वर तिवारी	8826847709
श्री सर्वनारायण मिश्र	01127915589
श्री जगन्नाथ झा	9810835117
श्री वीरेंद्र मलिक	9830460649
श्री अरुण कुमार यादव	9810655246
श्री राज किशोर झा (गुजरात)	9227236855
श्री अखिलेश झा	9711991695
श्री आशुतोष झा	9313300533
श्री विश्वमोहन झा	9811423665
डॉ. प्रकाश झा	9811774106
श्री ऋतेश पाठक	9213152822
श्री संजीव झा	9818789902
श्री सरोज झा (मुम्बई)	9820785991
श्री प्रेमकान्त चौधरी	9435342658
पं. कौशल झा	9999327551, 9818820043
श्री शंकर कुमार झा	8010545118
श्री गोविन्द कुमार झा	8826320223



मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2018

अखिल भारतीय मिथिला संघ



आयोजन समिति

1. नंदकुमार झा
2. कौशल झा
3. जगन्नाथ झा
4. चन्द्रभूषण मिश्र
5. आशुतोष झा
6. अरुण कुमार यादव
7. रौशन झा
8. नरेन्द्र मिश्र
9. पवन सिंह यादव
10. अशोक कुमार ठाकुर
11. अर्जुन झा
12. उज्ज्वल कुमार मिश्र
13. विरेन्द्र मिश्र
14. डॉ. ममता ठाकुर
15. अनिल झा
16. शंकर कुमार झा
17. मिलन कुमार झा
18. घूरण झा
19. प्रवीण कुमार झा
20. कल्पना झा
21. सबिता झा 'सोनी'
22. ज्योति झा
23. सांत्वना झा
24. नवीना मिश्र
25. पूजा
26. श्री दिवाकर झा
27. श्री के एन झा

अन्य उपसमिति

वित्तीय उपसमिति

1. श्री प्रभात झा, सांसद, राज्यसभा
2. श्री विजय चंद्र झा, अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.
3. श्री विद्यानंद ठाकुर, महासचिव, अ.भा.मि.सं.
4. श्री राधानाथ झा
5. श्री शीतलकांत झा
6. श्री वरुण चौधरी, आजादपुर

सांस्कृतिक आयोजन हेतु उपसमिति

1. हरिनाथ झा (संयोजक)
2. डॉ. प्रकाश झा

स्मारिका उपसमिति

1. ऋतेश पाठक (संयोजक)
2. रमण कुमार सिंह
3. विनीत उत्पल
4. स्वाती शाकम्भरी
5. मृणाल आशुतोष
6. डॉ. अनमोल झा
7. रौशन कुमार झा
8. भास्कर ज्योति
9. गोविन्द कुमार झा
10. मणिशंकर कुमार

आईटी सेल उपसमिति

1. श्री अरुण कुमार यादव (संयोजक)
2. श्री गोविन्द कुमार झा (उप-संयोजक)
3. मिलन कुमार झा
4. ओम चौधरी
5. शंकर कुमार झा

स्वागत समिति

स्वागताध्यक्ष

श्री प्रभात झा

सांसद, राज्यसभा एवं
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा

स्वागत समिति सदस्य

श्री विजयचंद्र झा, अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.
श्री विद्यानन्द ठाकुर, महासचिव, अ.भा.मि.सं.
श्री हुकुमदेव नारायण यादव, सांसद, लोकसभा
श्री सुखदेव पासवान, पूर्व सांसद
श्री महाबल मिश्र, पूर्व सांसद
श्री देवेश चंद्र ठाकुर, विधान पार्षद, बिहार
श्री संजीव झा, विधायक, दिल्ली विधानसभा
श्री इंदुशेखर झा,
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पॉवरग्रिड कॉरपोरेशन
श्री शंकर कुमार झा, सी.एस.
श्री संत चौधरी, शिक्षाविद
डॉ. संजीव मिश्रा
वित्तीय सलाहकार, एनएसजी एवं सीआरपीएफ
पं. कौशल कुमार झा
श्रीमती मधुलता मिश्रा
श्रीमती कल्पना झा
श्रीमती पूजा झा
श्रीमती जानबी झा
श्रीमती सोनी नीलू झा
श्रीमती नवीना मिश्रा
डॉ. आभा झा
श्री दिवाकर झा
श्री के एन झा
श्री शुभाकर झा
श्री नंदलाल ठाकुर
श्री प्रदीप झा

स्वागतातुरः समस्त पदाधिकारी आ कार्यकारिणी सदस्यगण, अखिल भारतीय मिथिला संघ

प्रेरणा पुंज

भोला पासवान शास्त्री



- जन्म: सन् 1914 ई.
- स्थान: गांव वैरगाछी, जिला-पूर्णियां, बिहार
- पिता: श्री धुसर पासवान
- माता: श्रीमती देवकी देवी
- शिक्षा: प्राथमिक शिक्षा गामक स्कूलमे
- माध्यमिक शिक्षा : धर्मपुर गांधी विद्यालय रहटा।
- बिहार विद्यापीठ पटना सं स्नातक
- काशी विद्यापीठ बनारस सं शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण।
- राजनीतिक कार्यकतर्त्ता एवम स्वतंत्रता आन्दोलनमे सहभागी। परिणामत: जेल गेलाह।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित हरिजन कल्याण कार्यमे पूर्ण दिलचस्पी।
- जिला बोर्ड एवम् लोकल बोर्ड पूर्णियां केर सदस्य एवम् बिहार विधान सभाक सदस्य।
- बिहार सरकारमे मंत्री : 1952-1963 धरि।
- बिहार प्रदेशक मुख्य मंत्री, पूर्वमे बिहार प्रदेश लोकतांत्रिक कांग्रेससं जुटल रहलाह। बादमे ओकर नेता चुनल गेलाह।
- केन्द्रीय मंत्रीक रूपमे वर्कर्स हाउसिंग एवं शहरी विकास मंत्रालय कें फरवरी 1973 सं अक्टूबर 1974 धरि।
- जुलाई 1972मे राज्य सभाक सदस्य निर्वाचित, पुन: अप्रैल 1976 मे निर्वाचित।
- विदेश यात्रा : मारीशस।
- प्रकाशन : दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार सम्पादन।
- देहावसान: अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा अहि महान विभूतिक सम्मानमे श्रद्धा सुमन अर्पित।

पद्मश्री

आदित्यनाथ झा

- जन्म : 18 अगस्त, 1911 (इलाहाबादमे)
- आरंभिक शिक्षा क्वीन्स कॉलेज, वाराणसीमे।
- बादक शिक्षा गवर्नमेट इंटर कॉलेज प्रयागमे।
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय बी.एल. (आनर्स) अंग्रेजी परीक्षामे अपन ज्येष्ठ भाई डॉ. अमरनाथ झाक (पद्मभूषण) कीर्तिमान तोड़लनि।
- एम.ए. के बाद एल.ए.बी. के शिक्षा इलाहाबादमे।
- 1934मे तत्कालीन भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.सी. एस.)मे प्रथम स्थान प्राप्त केलनि।
- 1934मे विलायतक ऑक्सफोर्ड जाय प्रशासनिक व्यावहारिक शिक्षा (ट्रेनिंग) प्राप्त केलनि।
- 1936मे स्वदेश घुरलाह पर संयुक्त दंडाधिकारीक पद पर फैजाबादमे नियुक्ति।
- 1939मे बनारस नगर सह दंडाधिकारीक पद पर ओ पहिल भारतीय छलाह जे पदभार ग्रहण केलनि।
- तत्पश्चात् किछु कालक लेल पूर्वी राज्य सभक Political Agent नियुक्त भेलाह।
- 1948 सं 1954 धरि यू.पी.मे विभिन्न विभागक कार्य करैत तराईक विकास पर ध्यान देलनि। हुनका नाम पर रूद्रपुरमे इंटरमीडिएट कृषि महाविद्यालय अछि।
- 1954मे सब सं कम उम्रक उत्तर प्रदेशक मुख्य सचिवक कार्यभार ग्रहण केलनि।
- 1958मे देशक सर्वप्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसीमे उप-कुलपति क' पद केर सुशोभित केलनि।
- 1959मे केन्द्रमे नेशनल एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन मसूरीमे प्रथम निदेशक पद सुशोभित केलनि।
- 1963मे केन्द्रमे योजना आयोगक अतिरिक्त सचिव के पदभार ग्रहण केलनि।
- 1963मे रक्षा उत्पादनक सचिव पद सुशोभित कयलनि।
- 1964मे जखन इन्दिरा गांधी सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनली त' डॉ. झा कें सचिव बनौलनि।
- 1966मे डा. झा दिल्लीक चीफ कमिश्नर बनलाह आ ओही वर्ष केन्द्र शासित प्रदेश, दिल्लीक प्रथम उप राज्यपाल भेलाह।
- 18 जनवरी 1972 परलोकवासी भेलाह।
- 26 जनवरी 1972 मरणोपरान्त देशक दोसर सभ सं पैघ उपाधि पद्मविभूषण सं अलंकृत कएल गेल।

प्रेरणा पुंज

सूरज नारायण सिंह

महान क्रान्तिकारी नेता शहीद सूरज नारायण सिंहक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत नरपतिनगर गामक एकटा साधारण किसान परिवारमे 17 मई 1909 ई. मे भेल। बाल्यावस्थेसं स्वतंत्र भारतक सपना देखनिहार बलौर मिडिल स्कूलमे अंग्रेजक खिलाफ झंडा उठौलन्हि आ वाटसन स्कूल, मधुबनी अबैत देरी स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रान्तिकारी गतिविधिस पूर्णतः जुटि गेलाह। स्कूलसं निष्कासित भेलोपरान्त जिला स्कूलमे नामांकन करौलन्हि, मुदा ओतहु पुलिस हिनक पाछां नञ छोड़लक, फलस्वरूप काशी विद्यापीठसं विशारदक उपाधि प्राप्त केलन्हि।

सूरजबाबूक जिनगीक अधिकांश भाग संघर्ष आ जहलेमे बितलन्हि, जाहिमे मुख्य रूपसं नमक सत्याग्रह, तार कटबाक अभियोग, मधुबनीमे विदेशी कपड़ा आ शरबखानाक विरूद्ध सत्याग्रह, 1932 ई. मे हाजीपुर रेल डकैती आ हथियार संग्रह करबाक अभियाग, 1934 ई. मे सी आई डी वेदानन्द झाक हत्याक प्रयाससं संबंधित अभियोगमे बनारसमे गिरफ्तारी सहित अनेको मामिलामे गिरफतार होइत रहलाह।

1934 ई. मे दरभंगा राजक विरूद्ध व कास्त जमीन वापसीक हेतु संघर्ष आ ओहिसं सम्बंधित अनेको मामिलामे जीत एक दिस सूरजबाबूकें एकटा महान् क्रान्तिकारी नेताक पहचान देलक त' दोसर दिस 1942क 'भारत छोड़ो आन्दोलन' शुरू भेलोपरान्त जयप्रकाश आ रामनंदन मिश्र जीक संग जहलक देबाल फानिक' भगनाइ आ हनुमाननगर जहल पर हमला केनाइ आदि घटना राजनीतिक हीरो बनौलक।

1946 ई. मे बिहार जहलसं रिहाइ भेलोपरान्त सूरज बाबू मुख्य रूपसं किसान - मजदूरक शोषणक विरूद्ध संघर्षमे जुटलाह जाहिमे रेलवे, चीनी मिल आ इंजीनियरिंग उद्योग आदिकें कार्य-क्षेत्र बनौलन्हि। जिनगीक अन्तिम क्षण धरि हिन्द-मजदूर सभाक अध्यक्ष रहलाह। 1962 ई. मे बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलोपरान्त विधानसभामें प्रभावशाली भूमिका निभौलन्हि। 21 अप्रैल 1973 ई. क' भारतीय जनतंत्रक एकटा शर्मनाक घटनान्तर्गत उषा मार्टिन कंपनीक गेट पर मजदूर सभक मांगक समर्थनमे अनशन पर बैसल एहि लोकप्रिय नेताक हत्या कम्पनी मालिकक लठैत आ पुलिस द्वारा कैल गेल।

कर्पूरी ठाकुर

- जननायक कर्पूरी ठाकुरक जन्म समस्तीपुर जिलाक एकटा गाम पितौंझिया, जेकरा आब कर्पूरीग्राम कहल जायत अछि, मे 24 जनवरी, 1924 के भेल छल।
- ओ स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आ बिहार राज्यक दोसर उपमुख्यमंत्री संग दू बेर मुख्यमंत्री रहल छलाह।
- भारत छोड़ो आन्दोलनक समय ओ 26 मास जेलमे बितौने छलाह।
- सामाजिक रूपसं पिछड़ल मुदा सेवा भाव जेहन महान लक्ष्यकें चरितार्थ करय बला नउवा जाइतमे जन्म लहि बला एहि महानायक राजनीति के सेहो जन सेवाक संग जीलक।
- मुख्यमंत्री रहैत श्री कर्पूरी ठाकुर पिछड़ा वर्गके 27 प्रतिशत आरक्षण देलक।
- हुनक निधन 17 फरवरी 1988 के भेल।

ताराकांत झा

- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी अनुमंडलक शिवनगर गाममे 1927 मे जन्म।
- बिहारक महाधिवक्ताक पदकें सुशोभित केलाह आ बिहार विधान परिषद् के अध्यक्ष सेहो भेलाह।
- वर्ष 1952 सं आरएसएस आ जनसंघ सं जुटल रहल। ओ भाजपाक संस्थापक सदस्य छलाह।
- मैथिली कें आठम अनुसूचीमे आनब लेल संघर्ष कयलाह।
- बिहार प्रदेश भाजपाक अध्यक्ष रहलाक बाद ओ बादमे जनता दल मे शामिल भेलाह।
- 1956 सं ल' क' जीवन पर्यंत वकालत करैत रहलाह। बिहार बार काउंसिल मे 22 बरख धरि सदस्य रहलाह। अध्यक्ष सेहो भेलाह। नेशनल स्कूल ऑफ़ लॉ, बेंगलुरु के एग्जीक्यूटिव काउंसिलक सदस्य छह बरख धरि रहलाह।
- हुनक निधन 2014 मे भेल।

मिथिला केशरी : जानकी नंदन सिंह

जन्म स्थानः इन्दरपुर डेयोढ़ी (प्रसाद), मधुबनी

जन्म तिथिः 14 जनवरी 1907, पुण्य तिथिः 2 मई, 1969

गिरफ्तारीः मिथिला राज्यक लेल आंदोलन करैत आसनसोलमे 22 जनवरी, 1954 कें

विधायकः 1952-1956, विधान पार्षदः 1957-1962



अखिल भारतीय मिथिला संघ

विविध वार्षिक सम्मान



अखिल भारतीय मिथिला संघ हर साल मिथिला विभूति स्मृति सम्मान समारोहक आयोजन करैत आबि रहल अछि। वर्ष 2015 सं एहि समारोह कें किछु विशिष्ट स्वरूप देबय कें प्रयास शुरू कएल गेल। एहि क्रममे तीन टा विशिष्ट सम्मान, नामतः, सर गंगानाथ झा सम्मान, बाबू साहेब चौधरी सम्मान आ भोगेन्द्र झा सम्मान आरंभ कएल गेल। अगिला वर्ष अर्थात् 2016 मे एहि कड़ीमे यात्री सम्मान सेहो जुटि गेल। एहि चारु पुरस्कार सं एखन धरि सम्मानित विभूति सबहक सूची नीचा प्रस्तुत अछिः



सर गंगानाथ झा सम्मान

अकादमिक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदानक लेल (वर्ष 2015 सं आरंभ)

2015 : श्री संदीप झा, संदीप फाउंडेशन, मुम्बई

2016 : श्री उदयनारायण सिंह नचिकेता, कोलकाता

2017 : श्री मानस बिहारी वर्मा, दरभंगा

2018 : पं. गोविन्द झा, पटना



बाबू साहेब चौधरी सम्मान

मिथिला-मैथिलीक लेल संघर्षरत व्यक्तिक सम्मान (2015 सं आरंभ)

2015 : श्री अशोक झा, कोलकाता

2016 : श्री कमलेश झा, मधुबनी

2017 : श्री लक्ष्मण झा 'सागर', कोलकाता

2018 : श्री मनीष कुमार झा, रायपुर (छत्तीसगढ़)



भोगेन्द्र झा सम्मान

राजनीति समाजमे उल्लेखनीय योगदानक लेल (2015 सं आरंभ)

2015 : मैथिली पुत्र प्रदीप, दरभंगा

2016 : श्री एन. के. झा, सीए, पटना

2017 : श्री वीरेन्द्र मल्लिक, दिल्ली

2018 : प्रो. सुभाषचंद्र यादव, सहरसा



यात्री सम्मान

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट योगदानक लेल (2016 सं आरंभ)

2016 : श्री जगदीश मंडल, दिल्ली

2017 : श्री भीमनाथ झा, दरभंगा

2018 : एहि बरख ई सम्मान नहि देल जाएत*

**एहि बरख यात्री सम्मान श्री बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून) कें देबाक निर्णय सर्वसम्मति सं भेल आ हुनक स्वीकृति सेहो भेटल लेकिन ओ अंतिम क्षण मे कार्यक्रम मे उपस्थित हेबा मे असमर्थता जतौलनि। एहि कारण एहि बरख ई सम्मान किनको नहि देल जाएत।*

– अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादकीय

ऊपर चढ़बा मे जतेक मेहनत लागैत छैक, ताहिसं बेशी मेहनत ओहि नव स्थान पर बनल रहबा मे लागैत छैक। सएह स्थिति अखिल भारतीय मिथिला संघक समक्ष आओल अछि। विगत बरख अपन स्वर्ण जयंती समारोह मे संघ जे मानक स्थापित कएलक, ओकरा सं आगां बढ़बाक चुनौती संघक समक्ष ओहि दिन आबि गेल छल।

एहि स्थिति कें गमैत अ.भा.मि.सं. विगत एक बरख मे अपन गतिविधि केर फलक कें नवाचारपूर्ण विस्तार देलक अछि। मांग आ अधिकारक विमर्श संग आब अपना स्तर सं सृजनात्मक परिणाम देबाक प्रयास सेहो शुरू क' देल गेल अछि। एहि प्रयास सभ मे प्रकाशन, विचार गोष्ठी इत्यादि पर विशेष ध्यान देल जा रहल अछि। स्मारिका कोनो संस्थाक गतिविधिक सर्वश्रेष्ठ प्रमाण होयत छैक, ताहि सं संघक नवाचारपूर्ण दृष्टि कें झलक एहि स्मारिका मे आनबाक प्रयास कएल गेल अछि।

अ.भा.मि.सं. अपन प्रारंभिके काल सं नव प्रतिभा सभकें मंच देबय के आ प्रतिभा मे निखार आनबाक प्रयास करैत आओल अछि। एहि परंपरा कें पालन नवाचारी प्रयोग सभ मे सेहो करबाक प्रेरणा एहि स्मारिका मे जरूर झलकत। आ एहि प्रेरणा सं स्मारिका मे उदीयमान वा कदाचित अनजान रचनाकार सभ कें सेहो समुचित स्थान देबाक प्रयास कएल गेल अछि। एहि प्रयासक परिणामस्वरूप बीसो एहन रचनाकार सबहक जुड़ाव हमरा लोकनि सं भ' रहल अछि, जिनका लेल अपन मातृभाषा मैथिली मे प्रकाशित हेबाक ई प्रथम अवसर अछि वा ओ पहिने गोटेक बेर छपल छथि। एहि कारणे, हुनक रचना मे सामग्रीक परिपक्वता इत्यादिक कमी झलकि सकैत अछि मुदा हमरा लोकनिक कर्तव्य एहन रचनाकार लोकनि कें प्रोत्साहित करबाक अछि।

संगहि 'सबहक समावेश' केर व्यापक मंत्र अमल मे राखि अ.भा.मि.सं. मिथिलाक वैयक्तिक, क्षेत्रगत, व्यवहारगत आदि हरेक स्तर पर 'सकल मैथिल व्याप्ति' प्रयास करैत अछि। एहि बेरुक स्मारिका मे सेहो क्षेत्रगत, वयसगत, समूहगत विविधता कें उभारै केर प्रयास कएल गेल अछि जाहिसं 'चम्पारण सं चम्पानगरी धरि मिथिला' केर धारणा कें व्यापक स्वीकार्यता भेटय। बेगूसराय, पूर्णिया, अररिया, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, दरभंगा, मधुबनी आदि स्थानक निवासी आ आन ठाम रहैत प्रवासी लोकनिक योगदान स्मारिका कें भेटल अछि, ताहि लेल सभ रचनाकारक हम आभारी छी। निश्चित रूप सं रचनाकार लोकनिक भाषामे हुनक क्षेत्रगत विशेषता सेहो दृष्टिगोचर हेतैक। हमरा लोकनिक प्रयास एकर कोनो मानक रूप मे आनबाक बजाय एहि विविधता मे बनौने राखबाक अछि।

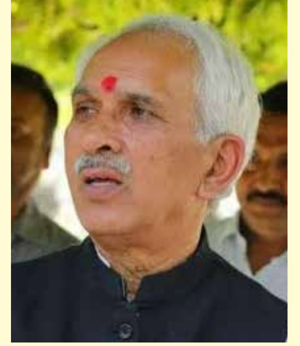
सामग्री आ बिंबक स्तर पर सेहो एहि विविधताक समावेशक प्रयास संपादकीय टीम कयने अछि। उदाहरणक तौर पर मैथिली बौद्धिक जगत मे प्राय: कम चर्चित नेता बलिराम भगत आ कर्पूरी ठाकुर, साहित्यकार यदुनाथ झा 'यदुवर' आदि पर सामग्रीक संकलन, यथासंभव बेशी सं बेशी विधाक रचनाक समायोजन इत्यादि पहल देखल जा सकैछ।

स्मारिका कें एहि रूप मे प्रस्तुत क' सकय केर श्रेय सर्वश्री रमण कुमार सिंह, विनीत उत्पल, भास्कर ज्योति, गोविन्द कुमार झा आ हमर जीवनसाथी स्वाती शाकंभरी समेत समस्त संपादकीय टीम आ अ.भा.मि.सं. केर कार्यकारिणी धन्यवाद केर पात्र छथि। एहि सं आगां सुधी पाठक लोकनिक भूमिका अछि। एहि प्रयासक सर्वतोप्रकारेण समालोचनाक प्रतीक्षा abmssmarika@gmail.com पर रहत।



– ऋतेश पाठक

अध्यक्षक दूटप्पी



अखिल भारतीय मिथिला संघ केर दिल्ली नगर मे पचास वर्ष पूरा भ' गेल अछि। एहि पचास वर्ष मे हम सब मिथिला-मैथिलीक लेल सड़क सं ल' क' संसद धरि बहुत खून पसीना एक केलहुं। ज्ञापन-पत्राचार इत्यादिक माधयम सं मिथिलाक आवाज दिल्ली मे बुलंद करैत हमरा सबहक संघर्ष किनको सं नुकायल नहि अछि। बेहतर रेल संपर्क सं अष्टम अनुसूची मे मैथिलीक स्थान धरि, दिल्ली मे अकादमी सं ल' क' असहाय मैथिल सबहक मदद धरि अनेको काज मे अखिल भारतीय मिथिला संघ फारा बान्हि क' तैयार रहल अछि। एहि सभ काज सबहक बीच एकटा कमी करेज के हरदम फाड़ैत छल। ओ कमी छल बौद्धिक विमर्शक क्षेत्र मे वा कहि जे प्रकाशन क्षेत्र मे किछु नै क' पएबाक कचोट। प्रति वर्ष अपन स्मारिका 'समय संकेत' हम सब छापि रहल छलहुं मुदा ओ प्रयास प्रकाशन क्षेत्र मे अपर्याप्त बुझना गेल। आ तें, हम सब आब, नियमित प्रकाशन दिश उन्मुख भेलहुं।

गत वर्ष संघक स्वर्ण जयंती समारोह मे संघक इंप्रिंट सं पोथीक विमोचन करबाक तीव्र इच्छा छल मुदा ओ नहि पूरा भ' सकल। तथापि, अपन त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' केर लोकार्पण मे हमरा लोकनि सफल भेलहुं। विगत एक बरख मे संघक ऊर्जा एहने बौद्धिक काज सबमे विशेष रूपसं लागल। 'तीरभुक्ति' केर नियमित प्रकाशन केर संग-संग हम सब विविध सेमिनार / गोष्ठी सभमे सेहो औपचाारिक रूप सं भूमिका निबाहै केर प्रयास तेज कएलहुं। ई एहि बरखक ई सब सं पैघ उपलब्धि रहल।

पछिला साल स्वर्ण जयंती समारोह मे बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार माता सीताक प्राकट्यस्थली पुनौराधामक जीर्णोद्धार आ दरभंगा मे हवाई अड्डा केर शीघ्र निर्माण केर घोषणा केने छलाह। अ.भा.मि.सं. लगातार एहि घोषणा सभ केर खोज-खबरि लैत रहल आ ई जानि हर्ष भ' रहल अछि जे पुनौराधामक जीर्णोद्धार लेल प्राथमिक बजट केर घोषणा क' देल गेल अछि आ हवाई अड्डा सेहो शीघ्र संचालित हेबाक आस अछि।

मैथिली कें यूनेस्को केर शास्त्रीय भाषा सबहक सूची मे शामिल करबाक मांग केर समर्थन मे अ.भा.मि.सं. अपना तरफ सं हरसंभव प्रयास क' रहल अछि। एहि क्रम मे केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर कें ज्ञापन सेहो देल अछि, आ एहि विषय पर हमरा लोकनि एकटा संगोष्ठी केर आयोजन 13 अक्टूबर, 2018 के सेहो केलहुं। अ.भा.मि.सं. नहि केवल अपन ऊर्जा अपना धरि सीमित राखलक बल्कि आन मैथिल संगठन सब कें साथ सेहो तन-मन-धन सं सहयोग देबाक प्रयास राखलक अछि। दिल्ली मे आयोजित मैथिली लिटरेचर फेस्टिबल मे संघ द्वारा 25 हजार रुपया केर आर्थिक योगदान देल गेल संगहि मिशन मिथिलाक्षर द्वारा मिथिलाक्षर प्रवीण विद्वतजन केर सम्मान कार्यक्रम, काठमांडू अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला मे मैथिली मचानक प्रस्तुति, मलंगिया महोत्सव 2018 आ प्रेस क्लब ऑफ इंडिया मे आयोजित मिथिला महोत्सव मे सेहो संघक सहयोग रहल अछि। एहि बरख संस्था द्वारा होली मिलन समारोह, मधुश्रावणी, सामा चकेबा इत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रम सभक आयोजन त' कएले गेल, संगहि वरिष्ठ साहित्यकार श्री उदय चन्द्र झा विनोदक सम्मान, भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी केर निधन पर श्रद्धांजलि सभा आ बहुत रास आन गतिविधि सभक आयोजन कएल गेल।

संस्था कें अपन गतिविधि सभक संचालन मे महासचिव श्री विद्यानंद ठाकुर, उपाध्यक्ष डॉ. ममता ठाकुर, सदस्यगण पं. कौशल झा, सीएस शंकर कुमार झा आ समस्त कार्यकारिणी केर सहयोग भेटैत अछि। एहि लेल हम सब आभारी छी। संगहि सोझां आबैत नित-नूतन काज सभ मे सहयोग केनिहार समस्त कार्यकर्ता, स्वयंसेवक आ पदाधिकारी केर सेहो हम आभार व्यक्त करैत छी। प्रकाशन एहन महत्वपूर्ण उपलब्धि के लेल हम ऋतेश पाठक (अधिकारी, भारतीय सूचना सेवा), विनीत उत्पल (संपादक, 'तीरभुक्ति'), रमण कुमार सिंह (हिंदी आ मैथिलीक वरिष्ठ कवि), भास्कर ज्योति (पीएचडी स्कॉलर, जेएनयू), स्वाती शाकम्भरी (युवा कवयित्री), त्रिपुरारी ठाकुर (प्राध्यापक), डॉ. प्रवीण कुमार झा (प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय) आ गोविन्द कुमार झा (उपसंपादक, 'तीरभुक्ति') हिनका सबहक संग समर्पण भाव सं जुटल साहित्यप्रेमी-भाषाप्रेमी लोकनिक बहुत आभारी छी। एहि समर्पित टीमक बिना ई काज असम्भव छल।

अ.भा.मि.सं.

धन्यवाद।

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मैथिल

– विजय चन्द्र झा





Thousands of years ago
GREEN turned BLACK
deep inside mother Earth.
And today,
we mine with a thought
to return GREEN back to Her

Some of our efforts in a bid to turn Coalfields into GreenFields are...

- Planted over 5.15 million trees in and around MCL's command area in Odisha
- Became the 1st company to introduce the eco-friendly Surface Miner in 1999, which completely eliminates drilling, blasting and crushing operations in mining of coal
- Installations of Mobile Water Sprinklers, Fixed Automatic Sprinklers, Instant Showering Systems and Mist Spraying arrangements at CHP to reduce air pollution
- Industrial waste water is treated through Mine Discharge Treatment Plant while sedimentation ponds, oil & grease traps in workshop and domestic effluent treatment plant in colonies help minimise pollution

Follow us on :
www.mahanadicoal.in | Twitter@mahanadicoal
Facebook@mahanadicoal



MCL

#MyCompanyMyPride

महासचिवक प्रतिवेदन



अखिल भारतीय मिथिला संघक स्थापना 1950 ई. मे स्वर्गीय बाबू साहेब चौधरी आ देवनारायण झा जीक नेतृत्व मे ताहि दिनक कलकत्ता मे भेल छल। दिल्ली मे एकर स्थापना 1967 ई. मे भेल, ताहि दिन सं अहि बरख संस्था अपन स्वर्णिम एकावन स्थापना दिवस मना रहल अछि। एहि एकावन बरखक यात्रामे एत्ते उतार-चढ़ाव देखलाक बादो संस्था अपन समर्पित कार्यकर्ता संग आगू बढ़ैत, मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल जमीनी स्तर पर संघर्ष करैत रहल अछि। एहि एकावन बरखक यात्रा पर ध्यान दी त' मैथिलीक अष्टम अनुसूचीमे मान्यता, दिल्ली मैथिली-भोजपुरी अकादमिक गठन, मिथिलामे रेल लाइनक आधुनिकीकरण आदि लेल सड़क सं संसद धरि आंदोलन, पुनौराधाम, सीतामढ़ीक पुनरुद्धारक आ दरभंगा हवाई अड्डा लेल लिखित आ व्यक्तिगत स्तर पर माननीय मुख्यमंत्री जी (बिहार सरकार) सं आग्रह, मैथिली कें प्राथमिक शिक्षा कें माध्यम बनेबाक लेल मुख्यमंत्री जी आ राज्यपाल कें ज्ञापन आदि मुख्य काज केने अछि।

हमरा लोकैन लेल ई हर्षक गप अछि जे स्थापना सं ल' क' आय धरि संघक स्थापना सदस्य आ वर्तमान अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झाजीक मार्गदर्शन हमरा सबकें भेट रहल अछि। श्री झाजी वहि लोक छथि जे स्थापना बरख सं ल' क' आय धरि दिल्ली कें कोन-कोन मे रहनिहार मैथिल सब लेल काज क' रहल छथि। आई हुनके अथक प्रयासक फल छैन जे आय ई संस्था अपन स्वर्णिम एकावन स्थापन दिवस मना रहल अछि। दिल्ली मे हुनकर नेतृत्वमे संघ द्वारा केल गेल काज क' ल' क' दिल्लीमे रहनिहार सब मिथिलावासी हुनकर ऋणी अछि।

ओना त' पछिला एकावन बरख मे अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा मिथिला आ मैथिलीक विकासक लेल समय-समय पर कतेक रास काज केल गेल अछि, मुदा पुनौराधाम, सीतामढ़ीक पुनरुद्धार लेल बिहार सरकार द्वारा प्रदान केल गेल 44 करोड़ 48 लाख टका आ दरभंगा हवाई अड्डा कें शीघ्र अतिशीघ्र शुरू करबाक लेल केल जा रहल प्रयास मे संघ कें योगदान उल्लेखनीय अछि।

अहि बरख मे संघ द्वारा केल गेल आयोजन सबमे होली, मधुश्रावणी आ सामा चकेबाक आयोजन मुख्य रहल अछि। संगे भाषाक संवर्धन लेल ''भारत सरकार आ यूनेस्को कें शास्त्रीय भाषाक सूचीमे मैथिलीक स्थान'' विषय पर केल गेल संगोष्ठी कें आयोजन आ संघ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' मे शुरू केल गेल मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता उल्लेखनीय अछि।

एहि सबमे सबसं प्रमुख काजक रूपमे मैथिली साहित्यिक संवर्धन लेल संघ द्वारा शुरू केल गेल त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' अपन एक बरख पूर्ण केलक संघक प्रकाशन उपक्रम 'तीरभुक्ति' पोथी प्रकाशन दिए सेहो डेग बढ़ौलक अछि, भविष्य मे जकर मैथिली साहित्यक संवर्धन मे महत्वपूर्ण भूमिका रहत।

धन्यवाद।

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मैथिल

– विद्यानंद ठाकुर

मैथिली को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने की मांग

पटना। अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पत्र लिखकर मैथिली भाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने का अनुरोध किया है। उन्होंने मुख्यमंत्री को 24 दिसंबर 2017 को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित भव्य समारोह की याद दिलाते हुए लिखा कि आपको देखने और उद्बोधन सुनने के लिए दिल्ली में रहने वाले हजारों मैथिली प्रेमी मौजूद थे। इस जनसभा में मंच से मैने आपसे मातृभाषा मैथिली में ... शिक्षा की व्यवस्था करने का अनुरोध ...

मातृभाषा मैथिली को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने का आग्रह

पटना। अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मातृभाषा मैथिली को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने का आदेश जारी करने का आग्रह किया है. अध्यक्ष विजय चंद्र झा ने पत्र के माध्यम से यह याद दिलाया कि गत 24 दिसंबर को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में हुए भव्य समारोह में उपस्थित लोगों के बीच अनुरोध किया था कि मातृभाषा मैथिली में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्णय बिहार सरकार ले लेकिन यह निर्णय अब तक नहीं लिया गया है और पांच करोड़ से अधिक मैथिली भाषी इस निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे ... उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित अन्य राजनेताओं ने ...

New airports at Darbhanga, Purnia soon: CM

New Delhi: Chief minister Nitish Kumar on Sunday announced that new airports will be developed in Darbhanga and Purnia, two northern districts of the state.

He said the state government has "committed" land to the Centre for this purpose.

The chief minister made the announcement at the golden jubilee celebrations of the Akhil Bharatiya Mithila Sangh at Talkatora Stadium, an event which was also attended by Union home minister ... Singh and Lok Sabha ...



मैथिली भाषा माध्यम बने

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से अखिल भारतीय मिथिला संघ ने मांग की है कि बिहार में मैथिली को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। बिहार की पांच करोड़ से अधिक ...

Airports at Darbhanga, Purnia soon for better connectivity: CM

MITHILA SANGH JUBILEE Says Mithila art has gained popularity globally and government planning a Mithila Chitrakala Institute in Madhubani



Chief minister Nitish Kumar being felicitated at the golden jubilee celebration of Akhil Bharatiya Mithila Sangh at Tal Katora stadium in Delhi on Sunday.

मैथिल संस्कृति बिहार के लिए गौरव : नीतीश

... एवं पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ



The Indian EXPRESS

2



Bihar cannot develop without Mithila: CM



'मिथिलांचल के लोगों का हर क्षेत्र में योगदान'

अखिल भारतीय मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह



'बिहार के बिना देश का विकास मुश्किल'

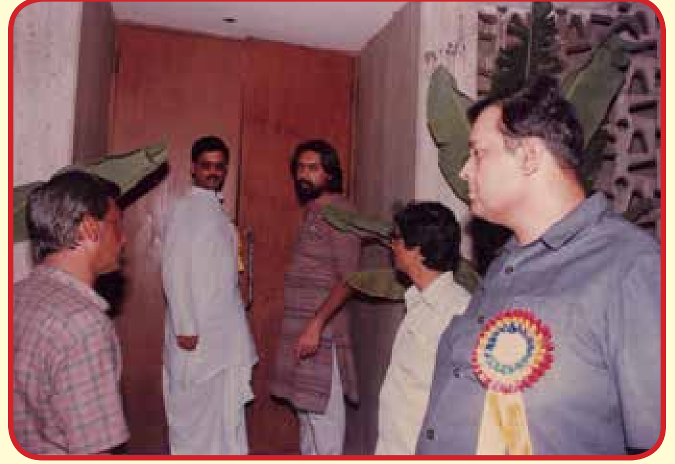
अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयंती समारोह में बोले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार



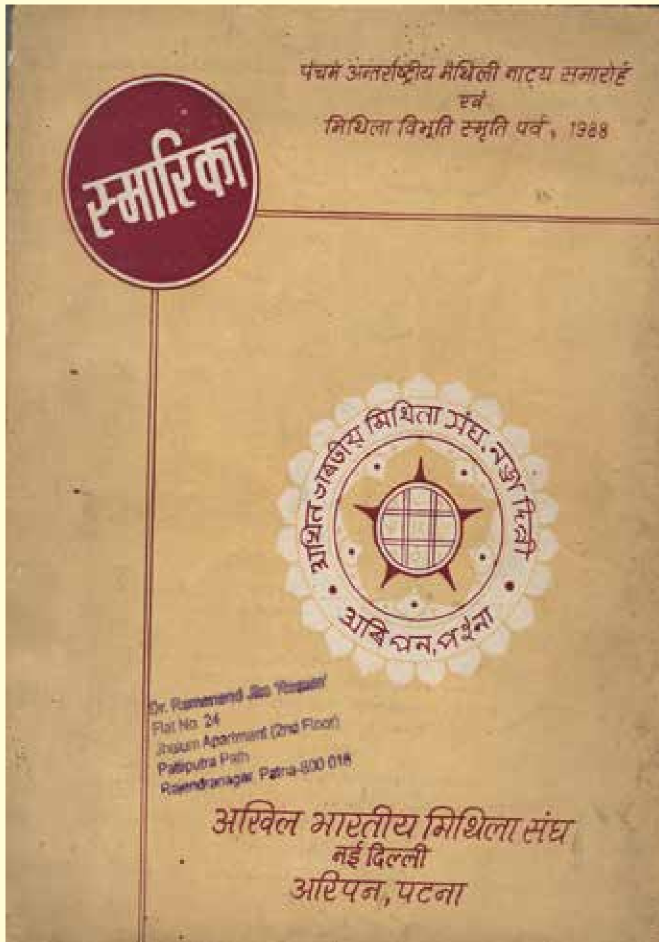
 **बीतल जमाना** 

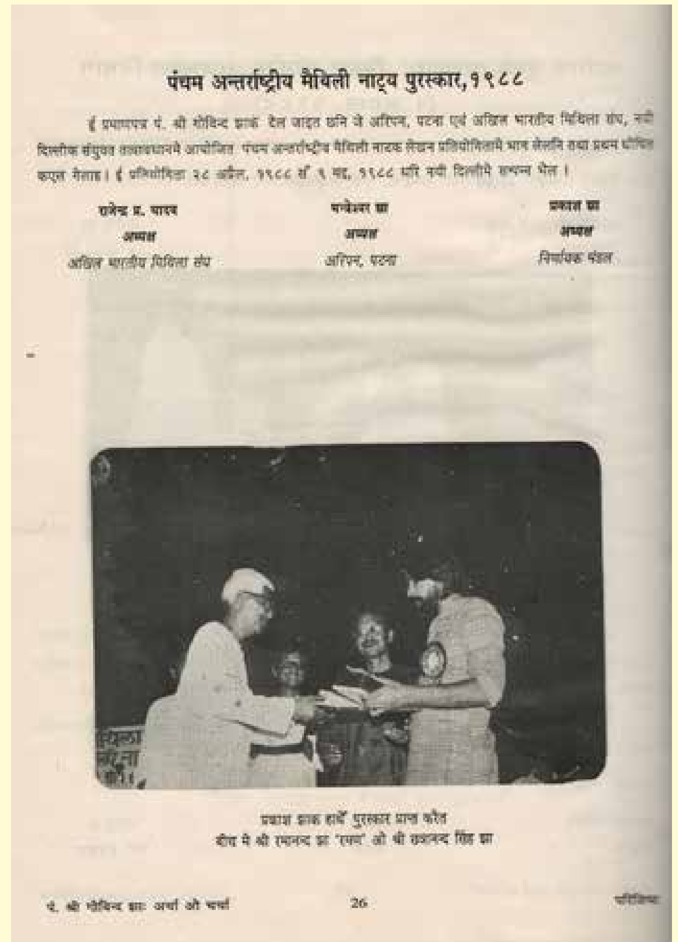
अखिल भारतीय मिथिला संघक किछु गतिविधि: 1988





वर्ष 1988 मे अखिल भारतीय मिथिला संघक समारोहमे उपस्थित दर्शक गण आ मुस्तैद कार्यकर्ता





पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य पुरस्कार, १९८८

ई प्रमाणपत्र पं. श्री गोविन्द झाकें देल जाइत छनि जे अरिपन, पटना एवं अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्लीक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक लेखन प्रतियोगितामे भाग लेलनि तथा प्रथम घोषित कएल गेलाह। ई प्रतियोगिता २८ अप्रैल, १९८८ सँ ९ मई, १९८८ धरि नयी दिल्लीमे सम्पन्न भेल।

राजेन्द्र प्र. यादव	मन्त्रेश्वर झा	प्रकाश झा
अध्यक्ष	अध्यक्ष	अध्यक्ष
अखिल भारतीय मिथिला संघ	अरिपन, पटना	निर्णायक मंडल

प्रकाश झाक हाथें पुरस्कार प्राप्त करैत
बीच मे श्री रमानन्द झा 'रमण' ओ श्री छत्रानन्द सिंह झा

पं. श्री गोविन्द झा: अर्चा ओ चर्चा 26 परिशिष्ट

इतिहासक झलक: दस्तावेजक नजरिमे

अखिल भारतीय मिथिला संघ ने डा० आदित्यनाथ झा की २८वीं पुण्य तिथि मनायी

मिथिलांचल विकास बोर्ड का गठन जरूरी

दिल्ली के विकास में बिहारियों का योगदान सर्वाधिक : शीला

मिथिला, मैथिली के विकास के लिए जागरूकता की आवश्यकता

(मधुबनी कार्यालय)

दहेज हत्या का अभियुक्त गिरफ्तार

मिथिलांचलका विकास—राष्ट्रपतिको ज्ञापन

अलग मैथिली अकादमी बनाने की मांग

मैथिलीकोसंविधानकीअष्टम सूचीमें स्थान देनेकी मांग

अखिल भारतीय मिथिला संघ स्मारिका 2015 — 61

मैथिली पुत्र प्रदीप भोगेंद्र झा सम्मान से विभूषित

उद्घाटन करते कामेश्वर सिंह संस्कृत विवि के वीसी डॉ देवनारायण झा व अन्य.

दरभंगा. अखिल भारतीय मिथिला संघ की दिल्ली तथा दरभंगा इकाई के तत्वावधान में आयोजित समारोह में मंगलवार को मैथिली पुत्र प्रदीप को भोगेंद्र झा सम्मान से नवाजा गया. संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह का उद्घाटन कामेश्वर सिंह संस्कृत विवि के कुलपति डॉ देवनारायण झा ने इसका उद्घाटन किया.

उन्होंने मैथिली साहित्य के क्षेत्र में ...

मैथिल संगठन की स्वर्ण जयंती 24 दिसंबर को

प्रस, नई दिल्ली : मिथिला और मैथिली के लिए संघर्ष करने वाले अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन 24 दिसंबर को तालकटोरा स्टेडियम में होगा। इसमें बड़ी संख्या में मैथिलीभाषी शिरकत करेंगे। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए इस संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र ...

मैथिली पुत्र प्रदीप को भोगेन्द्र झा सम्मान

दरभंगा | एक प्रतिनिधि

अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्ली एंव दरभंगा की ओर से मंगलवार को जी एम रोड स्थित सीतायन होटल के सभागार में मैथिली पुत्र प्रदीप भोगेन्द्र झा सम्मान से सम्मानित किए गये। केएसडीएस विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ देव नारायण झा ने मैथिली पुत्र को मिथिला चित्र का मोमेन्टो, प्रशस्ति पत्र तथा 5100 रुपये का चेक पुरस्कार के रुप में प्रदान किया।

कुलपति डॉ झा ने मैथिली साहित्य में प्रदीप के अमूल्य योगदान की सराहना ...

भोगेन्द्र झा सम्मान से श्री मैथिली पुत्र 'प्रदीप' के सम्मान समारोह

प्रदीप को भोगेन्द्र झा सम्मान देते केएसडीएसयू के कुलपति डॉ. देवनारायण झा।

डॉ भीम नाथ झा ने किया।

मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2016 केर खबरि

उत्सव आ विमर्श संग बीतल साल

✍ गोविन्द कुमार झा



लेखक अखिल भारतीय मिथिला संघक युवा कार्यकर्ता छथि। दिल्ली विश्वविद्यालय सं शिक्षण केर पश्चात् क्रॉनिकल प्रकाशन मे कार्यरत छथि। मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' केर उप-संपादक सेहो छथि।

वर्तमान मे देखल जाय त' मैथिली आ मिथिला कें नाम पर कतेको संगठन अछि। मात्र दिल्ली मे देखल जाय त' मिथिला आ मैथिली कें नाम पर पचासो टा संगठन भेट जायत। लेकिन, इतिहास सब तं नै लिख सकैत अछि।

दिल्ली मे मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल पछिला एकावन बरख सं आंदोलन, संगोष्ठी वा बड़ रास प्रकार सं कार्यरत संस्था 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' वैह इतिहास लिखनिहार संस्था अछि, जे समय-समय पर आवश्यकतानुसारे सड़क सं ल' क' संसद धरि आंदोलन करैत रहल अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ नहि केवल आंदोलन कलक अपितु आवश्यकता पर बौद्धिक गतिविधि सबहक आयोजन सेहो करैत रहल अछि।

मिथिला मे रेल लाइनक आधुनिकीकरण, मैथिली के अष्टम अनुसूची मे मान्यता, दिल्ली मे मैथिली-भोजपुरी अकादमिक स्थापना, मिथिला विश्वविद्यालय के स्थापना आदि मे संघक आंदोलन आ विभिन्न प्रकार सं चलि अ.भा.मि.सं. बहुत बाट नापि लेने अछि।

चूंकि संघक स्थापनाक उद्देश्य केवल आंदोलन धरि सीमित नहि अछि। एहि लेल संघ अपन प्रकृति अनुसारे सामाजिक चेतना जागृत करबाक लेल सेहो विभिन्न प्रकार सं प्रयासरत रहैत अछि। एहि क्रम मे संघक पछिला एक बरखक यात्रा पर ध्यान आकृष्ट केला सं संघक प्रकृति कें किछु छाया भेटैत अछि।

पछिला एक बरखक यात्रा मे दिल्ली मे रहनिहार मैथिल सबकें बीच मिथिलाक संस्कृति कें जीवित रखबाक लेल, प्रवासी मैथिल सबकें बीच मिथिलाक सांस्कृतिक अनुभूति लेल अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती केर आयोजन, होली, मधुश्रावणी आ सामा-चकेबा द्वारा मिथिलाक संस्कृति मे प्रदर्शित करैत रहल अछि। संघ द्वारा मैथिली साहित्य मे योगदान करबाक लेल सेहो समयानुसार मैथिली साहित्यकार सबकें सम्मान कैल जायत रहल अछि आ साहित्यक संवर्धन लेल सेहो संगोष्ठी सबकें आयोजन संघ



सम्पर्क:
मो. 8826320223
ईमेल :
govindjha18feb@gmail.com



प्रमुखता सं करैत रहल अछि।

स्वर्ण जयंती समारोह

अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन स्वर्ण जयंती समारोह 24 दिसंबर, 2017 कें तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली मे मनौलक, जकर साक्षी तीस हजार सं बेसी मैथिल सब बनलाह। ई आयोजन मिथिला कें बाहर प्रवासी मैथिल सबकें बीच इतिहास बनौलक, किएक त' एहि पूर्व मे एतेक बड्ड संख्या मे मैथिल सब कें जुटान कें कल्पनो राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली नै कएल गेल रहल।

एहि आयोजन कें अवसर पर सनातन धर्मक सर्वोच्च अधिकारी पुरी पीठाधीश्वर श्रीमज्जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी, गृहमंत्री भारत सरकार श्री राजनाथ सिंह जी, मुख्यमंत्री बिहार सरकार श्री नीतिश कुमार जी आ कतेक रास मंत्री, सांसद आ विधायक, विधान पार्षद, प्रशासनिक अधिकारी सब स्वर्ण जयंती के अवसर पर मंच पर अपन उपस्थिति सं सुशोभित केला। जहि मे नीतिश कुमार जी मुख्यमंत्री, बिहार सरकार द्वारा आश्वासन देल गेल जे शीघ्र-अतिशीघ्र दरभंगा हवाई अड्डा कें सार्वजनिक उपयोग लेल शुरू करबाक लेल प्रयास कएल जायत आ पुनौरा-धाम सीतामढ़ी के सेहो पर्यटन स्थल स्वरूप मे विकसित कएल जायत। ओ अप्पन संपूर्ण भाषण मैथिली भाषा मे देलाह। एहि आयोजन मे लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी द्वारा आ गृहमंत्री भारत सरकार श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा सेहो मिथिलाह सर्वांगीण विकास करबाक लेल प्रयास करबाक आश्वासन देल गेल।

होली मिलन समारोह

मिथिलाक संगे-संग सनातन धर्म केर प्रमुख पाबैन सबमे सं एकटा होली मिलन समारोह केर आयोजन सेहो संघ द्वारा 25 फरवरी, 2018 क' 20 कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली मे कएल गेल। जाहि मे मिथिलाक छवि प्रदर्शित करैत दिल्ली मे रहनिहार प्रवासी मैथिल सब केर बीच मिथिलाक अनुरुरूपे होलीक आयोजन कएल गेल।

मधुश्रावणी

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा मधुश्रावणी पाबैन केर आयोजन पारंपरिक वेश-भूषा, पूजा आदिक संग 5 अगस्त, 2018 क' 20 कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली मे कएल गेल। एहि आयोजनक साक्षी दिल्ली-एनसीआर मे रहनिहार सैकड़ों मिथिलानी सब बनलैथ आ आगु बढ़ि अपन-अपन योगदान सेहो देलैथ।

सामा चकेबा

एहि बरख संघ द्वारा केल गेल आयोजन सब मे मिथिलाक प्रसिद्ध पाबैन सामा-चकेबा सेहो प्रमुख रहल अछि। जकर आयोजन 21 नवंबर, 2018 क' 20 कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली मे कएल गेल। एहि आयोजनक साक्षी दिल्ली-एनसीआर मे रहनिहार सैकड़ों मिथिलानी सब बनलैथ आ आगु बढ़ अपन-अपन योगदान सेहो देलैथ। भाय बहन के स्नेहक पर्व समा-चकेबा द' कहल जायत अछि जे भगवान कृष्ण के पुत्री सामा प्रकृति कें स्नेही छलैथ संगे ऋषि-मुनि सब कें से हो बढ़ सेवा करैत छलैथ। कहल जैत अछि सामा कें चरित्र हनन कें ल' क' जहन चुगला भगवान श्रीकृष्ण कें शिकायत केलक तहन बिना जांच-केने भगवान सामा कें पक्षी बना देलखिन। तकरा बाद सामा समस्त वृंदावन मे आइग लगा देलक। जकरा बाद चकेबा अपना बहिन सामा के पुनः मनुष्य स्वरूप मे अनबाक लेल घोर तपस्या केलैथ आ सामा फेर सं मनुष्य बनलैथ। अछि पाबैन मे मुख्य रूपसं भाय आ बहिन कें स्नेह भेटत अछि, जे मिथिलाक संस्कृति कें एकटा बड्ड पैघ अंग अछि।



सहभागिता

अखिल भारतीय मिथिला संघ नहि केवल मिथिला-मैथिली केर सर्वांगीण विकासक लेल काज करैत अछि, अपितु आनो संस्था सब जे मिथिला-मैथिली लेल काज करैत अछि हुनकर आगु बढ़ तन, मन आ धन सं पूर्ण सहयोग सेहो करैत अछि। जाहि मे एहि बरख 16 सं 18 मार्च, 2018 क' इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली मे आयोजित मैथिली लिटरेचर फेस्टिबल आ 19 अगस्त, 2018 क' राजेन्द्र भवन, आईटीओ, नई दिल्ली मे मैथिली पुनर्जागरण प्रकाश (रजि.) द्वारा मिथिलाक्षर साक्षरता सम्मान समारोह, दिल्ली मे अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा कएल गेल योगदान सब उल्लेखनीय अछि। मैथिली लिटरेचर फेस्टिबल मे 'तीरभुक्ति' शोध पत्रिका संपादक विनीत उत्पल 'एमएलएक' समाचार केर प्रकाशन केलनि।

श्रद्धांजलि

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जीक मिथिलाक विकास मे अतुलनीय योगदान कें देखैत, अखिल भारतीय मिथिला संघक पदाधिकारी सब 16 अगस्त, 2018 क' हुनकर देहावसान केर पश्चात 28 अगस्त, 2018 क' हुनका श्रद्धांजलि अर्पित केलैथ।

सम्मान

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा मिथिला-मैथिली लेल संघर्षरत व्यक्ति सबकें अलग-अलग क्षेत्रमे कएल गेल काजक लेल प्रति वर्ष सम्मान देल जायरहल अछि। जाहि मे 24 दिसंबर, 2017 क' आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह मे अकादेमिक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदानक लेल श्री मानस बिहारी वर्मा जी कें 'सर गंगानाथ झा सम्मान' सं सम्मानित कएल गेल। (कोनो कारण ावश श्री मानस बिहारी जी कार्यक्रम मे नहि आबि सकलाह ताहि लेल हुनका दरभंगा जा क' सम्मानित कएल गेलनि। कोलकाता निवासी श्री लक्ष्मण झा 'सागर' जीक मिथिला-मैथिलीक लेल कएल गेल संघर्ष लेल हुनका 'बाबू साहेब चौधरी सम्मान' सं सम्मानित कएल गेलनि त' श्री वीरेन्द्र मल्लिक जी कें राजनीति आ सामाजिक योगदानक लेल 'भोगेन्द्र झा सम्मान' सं सम्मानित कएल गेलनि। श्री भीमनाथ झा जी कें मैथिली साहित्य मे उत्कृष्ट योगदानक लेल 'यात्री सम्मान' सं सम्मानित कएल गेलनि।



एहि क्रममे आगु बढ़ैत मैथिल साहित्यक संवर्धन लेल कार्यरत, मैथिली साहित्य केर अग्रणी साहित्यकार श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' जी कें सेहो मैथिली साहित्य मे हुनकर अतुलनीय योगदानक लेल 2 अप्रैल, 2018 क' 20 कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली मे सम्मानित कएल गेलनि।

साहित्य संवर्धन

एहि बरख संघ नहि केवल सांस्कृतिक आयोजन सब केलक अपितु साहित्य क्षेत्र मे सेहो उल्लेखनीय काज सब केलक अछि। जहि मे 'भारत सरकार एवं यूनेस्को कें शास्त्रीय भाषाक सूची मे मैथिलीक स्थान' विषय पर 13 अक्टूबर, 2018 कें गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली मे आयोजित संगोष्ठी आकर्षणक केन्द्र रहल अछि। एहि संगोष्ठी मे पुरातत्वविद् श्री भैरव लाल दास द्वारा मैथिली साहित्य केर संबंध मे प्रस्तुत कएल गेल तथ्य सब मैथिली साहित्यक संवर्धन लेल उल्लेखनीय छल।

संघ एहि वर्ष मैथिली साहित्यक संवर्धन लेल मुख्यमंत्री, बिहार सरकार आ राज्यपाल बिहार कें सेहो ज्ञापन स्वरूपे मैथिली कें प्राथमिक शिक्षाक बनेबाक लेल आग्रह कयलक अछि।

मैथिली साहित्यक संवर्धन मे पछिला एक बरख मे संघ द्वारा कएल गेल काज सबमे, सब सं उल्लेखनीय आ प्रशंसनीय रहल संघ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति', जे अपन एक बरख पूर्ण कयलक आ मैथिलीक संवर्धन लेल शोध परक आ मैथिली मे प्रकाशित पत्रिका सब मे अग्रिम पंक्ति मे बुझा रहल अछि। संगे एहि बरख संघ के पोथी प्रकाशन उपक्रम 'तीरभुक्ति' लेल सेहो मैथिली साहित्य आ साहित्यकार सब लेल साहित्यक संवर्धन मे भविष्य मे महत्वपूर्ण भूमिका मे रहत।

एहि बरख संघ द्वारा कएल गेल सामाजिक काज सब सेहो उल्लेखनीय अछि। पुनौराधाम, सीतामढ़ी मे मां जानकीक उद्गम स्थलक जीर्णोधार लेल बिहार सरकार द्वारा 44 करोड़ 48 लाख रुपया केर घोषणा ा आ दरभंगा हवाई अड्डा कें सामान्य लोक सब लेल शुरू करेबाक घोषणा हाल मे कएल गेल अछि। एहि सब संबंध मे अ.भा.मि.सं. अनबरत प्रयत्नशील रहल अछि।

हम आशा करैत छी जे संघ अहिना मिथिला आ मैथिली के सर्वांगीण विकासक मार्ग मे अपन योगदान करैत रहय।



फोटो फीचर





अ.भा.मि.सं. केर स्वर्ण जयंती समारोह मे मुख्य अतिथि लोकसभाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन केर स्वागत करैत संघक उपाध्यक्ष श्रीमती ममता ठाकुर



स्वर्ण जयंती समारोह मे विद्यापति, ज्योतिरिश्वर आ आन महापुरुष सभ कें पुष्पांजलि दैत केंद्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा, लोक सभा सांसद श्री हुकुमदेव नारायण यादव आ अ.भा.मि.सं. केर अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा



स्वर्ण जयंती समारोह मे बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार केर स्वागत करैत राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा आ अ.भा.मि.सं. केर अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा



स्वर्ण जयंती समारोहक मध्य वरिष्ठ साहित्यकार श्री वीरेन्द्र मल्लिक कें भोगेन्द्र झा सम्मान प्रदान करैत गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह



वरिष्ठ साहित्यकार श्री भीमनाथ झा कें यात्री सम्मान प्रदान करैत गृहमंत्री राजनाथ सिंह आ श्री हुकुमदेव नारायण यादव



मैथिली अभियानी श्री लक्ष्मण झा सागर कें बाबू साहेब चौधरी सम्मान प्रदान करैत अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा संग मे गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह आ श्री हुकुमदेव नारायण यादव



दरभंगा मे प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री मानस बिहारी वर्मा कें सर गंगानाथ झा सम्मान–2017 सं सम्मानित करैत अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झा आ सदस्यगण



श्रद्धांजलि



भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी केर देहाबसान एहि बरख 16 अगस्त कें भ गेल। हुनक कार्यकालमे मिथिलाक लेल कएल गेल काज सब अविस्मरणीय अछि। एहि पोथी मे हम सब श्री वाजपेयी जी कें हुनके किछु कविता सभक मैथिली अनुवादक माध्यम सं श्रद्धांजलि द' रहल छी।

✍ अटल बिहारी वाजपेयी

✍ डॉ. चन्द्रमणि झा (अनुवाद)



लेखक प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ कवि छथि। बिहार सरकार केर सेवा सं सेवानिवृत्त छथि। पछिला लगभग चारि दशक सं विविध साहित्यिक मंच आ प्रकाशन सब मे अनवरत उपस्थित छथि। विद्यापतिक बिछौटा गीत सभक अंग्रेजी मे पद्यानुवाद सेहो कयने छथि। मैथिली मे कुल नौ गोट पोथी प्रकाशित छनि।

सम्पर्कः

शिवसागर, न्यू बलभद्रपुर, लहेरिया सराय दरभंगा, मिथिला, बिहार

मो. : 9430827795

ईमेल : drchandramanijha@gmail.com

सत्ता

अबोध बच्चा
बूढ़ी महिला
जुआन मर्दक लहासक ढेरी पर चढ़िकए
जे सत्ताके सिंहासन पर पहुंचए चाहैत छथि
हुनकासं हमरा एक प्रश्न अछि–
की मारएवलाके संग हुनकर कोनो संबंध
नहि छल?
ने सही धर्मक संबंध
की धरतीक संबंध नहि छल?
पृथ्वी माय हम हुनकर पुत्र
छी
अथर्वेदक ई मंत्र
की केवल जपबाक लेल
अछि
जीबाक लेल नहि?
आगिमे जरल बच्चा
वासनाक शिकार महिला
छाउरमे बदलल घर
ने सभ्यताक प्रमाण-पत्र अछि
ने देशभक्तिक तमगा
ओ जौं घोषणापत्र अछि त' पशुताक
प्रमाण अछि त' पतितावस्थाक
एहन कपूत सं
मायक निपूत रहब सहए नीक
निर्दोष रक्तसं सानल राजगद्दी
श्मशासनक धूरि सं पतित अछि
सत्ताक अनियंत्रित भूख
रक्त-पियासहुसं अधलाह अछि
पांच हजार बरखक संस्कृति
गउरव करी कि कानी?
स्वार्थक आपाधापी मे
स्वतंत्रता कतहु पुनः ने चलि जाए।



हरियर-हरियर दूबि पर

हरियर-हरियर दूबि पर
ओसक बून
एखनहि छल
एखनहि नहि अछि
एहन आनन्द
जे सदिखन हमरा संग दिअए
कहियो नहि छल
कतहु नहि अछि
शरदक कोखिसं
निकसल बाल सुरुज
जखन पुरुबक कोणमे
पएर पसारय लागल
त' हमरा फुलवाड़ीक
पात-पात चमकए लागल
हम उगैत सुरुजकें नमस्कार
करी
कि ओकरा तापसं भाफ
बनल
ओसक बूनकें हेरी
सुरुज एक सत्य अछि
कियैक नहि हम
क्षण-क्षण कें जीबी
कण-कण मे छिड़ियैल सौन्दर्यकें पीबी
सुरुज त' तइयो उगत
रौद त' तइयो पसरत
किन्तु हमरा फुलवाड़ीक
हरियर-हरियर दूबि पर
ओसक बून
सब मौसिममे नहि भेटत

प्रस्तुत कविता सभ अटल बिहारी वाजपेयीक कविताक अनुवाद संग्रह 'हारि नहि मानब' मे प्रकाशित अछि।

✍ अटल बिहारी वाजपेयी
✍ कुमकुम झा (अनुवाद)



मधुबनी जिलाक महिनाथपुर गामक बेटी आ छतौनी गामक निवासी कुमकुम झा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी केर पोथी 'मेरी एक्यावन कविताएं' के मैथिली मे 'हमर एकावन कविता' के नाम सं अनुवाद केने छथि। कुमकुम झा केर दू गोट पोथी आओर प्रकशित भ' चुकल छनि। मैथिली-भोजपुरी अकादमी कें सौजन्य सं 'शब्दक बरियाती' मे मैथिलीक सौ कविताक संकलन कल गेल अछि. संगहे 'स्नेह कुसुम' कविता संग्रह मे कुमकुम झा मैथिली आ हिन्दी के 51-51 कविता के संकलित कैल गेल अछि।

संपर्क :
35/4, टाईप-5, बीएसएनएल क्वार्टर, आईजीएल सीएनजी स्टेशनक सोझां, उद्यान मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली

पहचान

गाछक उपर चढ़ल आदमी
ऊंच देखाई दैत अछि।
जड़िमे ठाढ़ आदमी
नीचां देखाई दैत अछि।

आदमी नहि ऊंच होइत अछि,
नहि नीच होइत अछि,
नहि पैघ होइत अछि,
नहि छोट होइत अछि
आदमी त' मात्र आदमी होइत अछि।

पता नहि एहि सोझ-साझ सत्य कें
दुनिया किएक नहि जनैछ?
आओर जदि जनैत अछि,
त' मन सं किएक नहि मानैत अछि?

एहि सं फर्क नहि पड़ैत छै
जे आदमी कतय ठाढ़ अछि
पथ पर किवां रथ पर
तीर पर किवां प्राचीर पर

फर्क एहि सं पड़ैत छैक जे जतय ओ ठाढ़ अछि,
अथवा जयत ओकरा ठाढ़ होमय पड़ैत छैक,
ओहिठाम ओकर धरातल छैक?

हिमालयक शिखर पर पहुंचि,
एवरेस्ट पर विजय पताका फहरा,
किओ विजेता जदि ईर्ष्या सं दग्ध
अपन संगी सं विश्वासघात करय,

त' कि ओकर अपराध
एहि लेल क्षम्य भ' जयतैक जे
ओ एवरेस्टक चोटी पर भेल छलैक?

नहि अपराध, अपराधे रहत,
हिमालयक संपूर्ण धवलता
ओहि कालिख के नहि झांपि सकत

धप-धप उज्जर वस्त्र जेना
मनक मलिनता कें नहि नुका सकैत अछि।

कोनो संत-कवि कहने छथि जे
मनुक्खक उपर किओ नहि होइत छैक
हमरा लगैत अछि जे मनुक्खक उपर
ओकर मोन होइत छैक।

छोट मोन सं किओ पैघ नहि हेताह,
टूटल मौन सं किओ ठाढ़ नहि हेताह।

एहि लेल त' भगवान कृष्ण कें
शस्त्र सं सुसज्जित रथ पर चढ़ि,
कुरुक्षेत्रक मैदानमे ठाढ़ भ',
अर्जुन के गीता सुनाबय परलैन्ह।

मोन हारि के लड़ाई नहि जीतल जाइछ,
नहि मैदान जीत क' मौन जीतल जाइछ।
शिखर सं खसला पर,
बेसी चोट लगैत अछि
हाड़ टुटि जाइछ,
दर्द मोन मे धधकैत रहैछ

एकर अर्थ ई नहि जे
चोटी पर चढ़बाक चुनौती नहि स्वीकारी,
एकर अर्थ इहो नहि जे
परिस्थिति पर विजय पाबय के नहि ठानी।

मनुक्ख जतय अछि, ओतय ठाढ रहय?
दोसरक दयाक भरोसे परल रहय?
जड़ताक नाम जीवन नहि होइछ,
पलायन पुरोगमन नहि होइछ।

मनुक्ख कें चाही जे ओ जूझय,
परिस्थिति सं लड़य,
एकटा सपना टूटय त' दोसर कें गढ़य।

मुदा कतबो ऊ उठय,
मनुक्खक स्तर सं नहि खसय,
अपन जमीन कें नहि छोड़य,
अन्तर्यामी सं मुंह नहि मोड़य।

एक पयर धरती पर राखिए क'
वामन भगवान आकाश, पाताल जीतने छलाह।
धरतीय धारण करैछ
किओ ओहि पर भार नहि बनय,
मिथ्या अभिमान सं नहि तनय।

मनुक्खक परिचय
ओकर धन वा आसन सं नहि होइत छै,
ओकर मोन सं होइत छै।
मोनक फकीरी पर
कुबेरक संपत्तिओ कानैत अछि।

प्रस्तुत कविता सभ अटल बिहारी वाजपेयीक कविताक अनुवाद संग्रह 'हमर एकाबन कविता' मे प्रकाशित अछि।

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित हुअय बला जर्नल अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता छै। हम चाहैत छी जे अहां अपन अहि जर्नल के आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' के वार्षिक सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका, पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर, चेक/ड्राफ्ट सहित ***'अखिल भारतीय मिथिला संघ'*** *केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा* teerbhuktimaithili@gmail.com *पर मेल करी।*

पत्राचार पता : तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक .... दिनांक .... (केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी।
हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

.... मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशाः ....

शिक्षा : ....

सदस्यता अवधि : ☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान : ☐ नगद (विवरण) ....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ (Akhil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861, आईएफएससी कोड : SBIN0000691 एमआईसीआर कोड : 110002087,

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

मिथिला-मैथिली सेनानी कॉमरेड श्री भोगेन्द्र झा

✍ विजय चन्द्र झा



लेखक अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली केर वर्तमान अध्यक्ष आ संस्थापक सदस्य छथि। मिथिला-मैथिली सं संबद्ध मंच सभ पर देश-विदेश मे अनथक सक्रिय उपस्थिति।

संपर्क :
मो. 9650461788
ईमेल : akhilbhartiyamithila sangh@gmail.com

भोगेन्द्र झा के बारे मे हम अनुभव क' सकैत छी, ओहि क्षण के बेर-बेर स्मरण क' सकैत छी जे हुनक दिव्य संगति मे बितेने छी, हुनक कहल शब्द मनो-मष्तिष्क मे एखनो काल पर विजय पाबि कालजयी भेल हमर भाल पर घुमरैत रहैत अछि। मोछो नहि पनपल छल तहिये दिल्ली आबि गेल रही। दिल्ली मे अबिते मातर भोगेन्द्र जी संग भेंट-घाट भ' गेल। ओ अतेक सहज आ सुगम्य लोक छलाह, जे कहियो पते नहि चलल जे हिनक थाह ली। ओ अथाह सागर छलाह। हुनक शब्द, हुनक भंगिमा, हुनक विचार, हुनक व्यवहार, मैथिली संस्कृति आ परम्पराक प्रति हुनक ज्ञान आ समर्पण किछु एहेन तथ्य अछि, जे कहियो अरुआ नहि सकैत अछि। ई सदैव टटका रहत।

मुदा अतेक भेलाक बादो, हुनक बातक सब गम्भीरता भुझलाक बादो हुनका पर किछु लिखब हमरा सन लोक लेल बहुत अबूह लागि रहल अछि। यैह नहि फुरा रहल अछि जे कतए सं प्रारम्भ करी!

हुनका संग आत्मीयता एहन बढ़ल जे ओ पैघ छथि तकर कहियो भाने नहि भेल। भेल ओ हमर घरक, परिवारक लोक छथि। ओ मिथिलाक लोक छथि। मैथिलीक लोक छथि, मैथिली संस्कृति कें जियेबाक लेल कोनो स्थिति धरि जा सकैत छथि। हुनका कम्युनिस्ट पार्टी सं टिकट भेटैत छलनि। ओ कम्युनिस्ट विचारधारा मे छलाह। अपन कैडर आ अपन दलक निष्ठावान सिपाही छलाह। हुनक विचारक लोक सम्मान करैत छलनि। विश्व मे जे कम्युनिस्ट विचारधारा मे उठा-पटक भ' रहल छलैक ताहि पर अपन आंखि-कान खोलने साकांक्ष रहैत छलाह। पढबाक अनुराग छलनि। मंथन करबाक सामर्थ्य छलनि। बाजबाक आ भाषण देबाक विलक्षण क्षमता छलनि। लिखबाक शक्ति छलनि। कलम विचार संग मेल खाइत छलनि। विश्व संग विचारधारा कें जोड़ैत छलाह। हुनकर कलम आंखि आ कान दुनू सं देखैत छलनि। दुनू सं सुनैत छलनि। ओ जे देखैत छलाह तकर स्वर सुनबाक चेष्टा करैत छलाह आ जे सुनैत छलाह, ताहि मे ओकर चित्रक अनुभूति करैत छलाह। लेकिन भारत मे कम्युनिस्ट विचारधारा कें ओ सदैव स्थानीय परिप्रेक्ष्य मे देखैत छलाह। ओ संस्कृति अनुरागी छलाह। संस्कृति मे समयानुकूल परिवर्तन करबाक समर्थक छलाह- संस्कृति के बिखंडन हेतु कहियो नहि सोचलनि। ओ संस्कृतिक संरक्षक छलाह। संस्कृतिधर्मी छलाह। हुनक कम्युनिस्ट भारतीय परम्परा सं उत्पन्न कम्युनिस्ट छलनि। ओ समयसाक्ष छलाह। आब जखन ओ हमरा सबहक समक्ष भौतिक काया संग नहि छथि त' लगैत अछि जे कतेक पैघ लोक छलाह। भोगेन्द्र जी भोगेन्द्र जी छलाह। हुनक तुलना मिथिला-मैथिलीक सन्दर्भ मे हुनके सं कयल जा सकैत अछि; आर ककरो सं हुनक तुलना करब केर अर्थ भेल हुनक त्यागक अपमान।

भोगेन्द्र जी ऊर्जावान लोक छलाह। ओ जखन मैथिली भाषा, मैथिली संस्कृति, परम्परा, मिथिला क्षेत्र आ मैथिल समुदाय लेल सोचैत छलाह त' ओ अग्गब भोगेन्द्र झा भ' जाईत छलाह। हुनक कम्युनिस्ट विचारधारा आ पार्टी कैडर हुनका रत्तियो भरि नहि प्रभावित करैत छलनि।

ओ एहेन राजनेता छलाह, जे मैथिली केर नाम पर जीवन पर्यन्त कोनो समझौता नहि



केलनि। जीवन भरि मिथिला मे आ अपन लोकसभा क्षेत्र मे अपन भाषण मैथिली मे देलनि। कहियो अपन एहि दृढ़ सिद्धांत सं नहि डगमगेला। वोट केर राजनीति अथवा जीतबाक लोभ कहियो हुनका मैथिली प्रेम सं विगलित नहि केलकनि। एकबेर मधुबनी के कोनो मुसलमान बहुल क्षेत्र मे भोगेन्द्र जी भाषण करैत छलाह। भोगेन्द्र जी भाषण करैत छलाह एकर मतलब ई भेल जे ओ मैथिली मे भाषण करैत छलाह। भाषणक बीच मे एक युवक व्यवधान करैत पूछि देलकनि: "नेताजी, मैथिली मे भाषण नहि करू। हिंदी मे बाजू, हिंदी मे।"

भोगेन्द्र जी विनोदी लोक त' छलाहे। बिहुंसैत उत्तर देलथिन: "वाह, अहां बड्ड चतुर छी! अपने मैथिली मे बाजि रहल छी आ हमरा हिंदी मे बजबा लेल सलाह द' रहल छी। अहां मैथिली मे बजैत छी त' मैथिली मे सुनबाक आदति सेहो राखू।"

मुदा ओ युवक आ ओकरा संगे उपस्थित किछु लोक कोनो स्थिति मे मैथिली मे भाषण सुनबाक लेल तैयार नहि छलनि। ओ सब तुरत अपन पैतरा बदलैत बाजि उठल: "भोगेन्द्र बाबू! मैथिली मे नही चलेगा। हिंदी मे भाषण दीजिये हिंदी में!"

भोगेन्द्र जी फेरो हंसैत बजलाह: "बौआ! भाषण त' हम मैथिली मे देब। हम कोनो स्थिति मे मिथिला भूमि मे अपन मैथिल समुदाय लग अपन मायक भाषा मैथिली छोड़ि आन कोनो भाषा मे भाषण नहि द' सकैत छी।"

युवक सब अपन जिद पर आ भोगेन्द्र जी अपन जिद पर अड़ल छलाह। युवक सब बेर-बेर भाषण मे व्यवधान दैत चिचिया-चिचिया क' भोगेन्द्र जी पर हिंदी मे बाजबाक अनर्गल दबाव दैत रहल। भोगेन्द्र जी लेल धन सन!

अंत मे तंग अबैत ओहि दलक मुखिया चेतावनी दैत कहलकनि: "अगर आप यहां हिंदी मे भाषण नही देंगे, तो यहां से आपको एक भी वोट नहीं मिलेगा!"

भोगेन्द्र जी हंसैत मुदा दृढ़ प्रतिज्ञ जकां बजलाह: "से अहां सब जे करी। मुदा हम वोट लेल अपन मायक भाषा संग विश्वासघात नहि क' सकैत छी।"

भोगेन्द्र जी ओहि बेर चुनाव हारि गेलाह। मैथिली मे बाजब हुनका चुनाव मे पराजय के कारण भेलनि कि नहि ई गहन शोधक विषय अछि। हम अहि शोधक अधिकारी नहि छी मुदा ई उदाहरण एतेक त' स्पष्ट करैत अछि जे भोगेन्द्र जी दृढ़ निश्चयी लोक छलाह। अपन भाषा के नाम पर कोनो बात सं समझौता नहि क' सकैत छलाह।

भोगेन्द्र जी भारतीय परम्परा के गृहस्थ संन्यासी छलाह, कर्मयोगी छलाह। ओ उज्जवल भविष्यवक्ता छलाह। हुनक सहजता आ मितव्ययी स्वाभाव त' जगजियार छलनि। हुनका समय मे पार्लियामेंट के परिसर आ अगल-बगल मे पैरे-पैरे चलय बला मुश्किल सं दू-एक नेता छलाह। एक नाम सुश्री ममता बनर्जीक माथ मे घुमि रहल अछि। साधारण जीवन कोना जीबी ई कला हुनका सं कियोक सीख सकैत छल। ओ अपन मितव्ययी स्वाभाव पर आनंदित होइत छलाह। घोड़ा-गाड़ी, कार आदि नहि होबाक कोनो हुनका ग्लानिबोध नहि छलनि।

भोगेन्द्र जीक जीवन : एक नजरि

- जन्म: 1923 ई.
- पैतृक गांव: बरहा (मधुबनी)
- शिक्षा: सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
- 1941-48: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1954-57: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1967: चारिम लोकसभामे सांसद
- 1971: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1971-78: सदस्य, सार्वजनिक उपक्रम संबंधी लोकसभा समिति
- 1989: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1990: सदस्य, संसदीय विशेषाधिकार समिति, राजभाषा समिति
- प्रकाशित पोथी:
  - भारतीय दर्शनक क, ख, ग (मैथिली)
  - बहुद्देश्यीय बांध परियोजना (मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी)
  - भारत का स्वतंत्रता संग्राम (हिन्दी)
  - प्राचीन भारतीय परंपरा आ साम्यवाद (मैथिली आ अंग्रेजी)
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आइडियोलॉजी, एक्सरेड (अंग्रेजी)
  - रिवर मैनेजमेंट (अंग्रेजी)
- निधन: सन् 2010

हुनक ग़रीबी सं रहब, आ विलासिता कें त्याग करब हुनक जीवनक शृंगार छलनि, हुनक संस्कार छलनि। कखनो तीन धोती, दू कुर्ता, एक बंडी, एक गमछा एहि सं अधिक वस्त्र नहि रखैत छलाह। जड़काला मे कोट पहिरैत छलाह। हुनका देखला सं लगैत छल जे हुनक गरीबी जीवन मे "प्यूरिटी पावर्टी" केर भाव छनि।

हुनका मधुबनी अर्थात अपन संसदीय क्षेत्र सं प्रेम त' सहजे छलनि, मुदा ओ पूरा मिथिला क्षेत्रके समान भाव सं देखैत छलाह। कोशी पर पूल हो, भारतक मिथिला आ नेपालक मिथिलाक बीच पानिक समस्याक कोना निदान हो, मैथिली भाषाक विकास कोना हो, कोन तरहें मैथिली भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची मे आबि जाय, ताहि लेल दिन-राति लागल रहैत छलाह। मैथिली कें अष्टम अनुसूचि मे स्थान भेटैक ताहि हेतु ओ की सत्ता पक्ष आ की विपक्ष-सब लग फाइल केर मोटका मोटका पुलिंदा बना घुमैत रहैत छलाह। एक सफल आ मांजल अधिवक्ता जकां मैथिली के पक्ष मे अपन दलील दैत रहैत छलाह। एक बात स्पष्ट करैत चली जे मैथिली जे अष्टम अनुसूची मे शामिल भेल ताहि लेल अनेक नेता, आ अनेक दलक नेता अपन भूमिका निभेलनि। हुनका सबकें विद्वान, संस्था, मैथिली भाषाक आन्दोलनी सबहक सहयोग भेटलनि, मुदा एक व्यक्ति जे अपन 40 वर्ष मात्र एक काज मे झोकि देलक ओ छलाह स्वर्गीय भोगेन्द्र झा। अखिल भारतीय मिथिला संघक कार्यकर्त्ता होबाक नाते हम हुनका संगे कतेक बेर कतेक नेता, मंत्री, अधिकारी लग गेल छी। हुनक तर्क शक्तिक प्रत्यक्ष गवाह रहल छी आ अनुभव केने छी जे हुनका सन कियोक नहि भ' सकैत अछि: "तोहर सदृश तोहीं एक माधब"!

हमरा इहो लगैत अछि जे भोगेन्द्र जी एक अनगढ़ल हीरा छलाह जकरा मिथिलाक जनता पारखी जौहरी बनि बढ़िया सं नहि गढ़ि सकल। ओ समरसताक सिपाही छलाह। वर्ग विभेद, जाति, ऊंच-नीच आदिक विरोधी छलाह। ओ सांस्कृतिक चेतना आनय केर पक्षधर छलाह। हुनका हृदय मे नारी हेतु सम्मान आ सर्वहारा वर्गक हेतु कल्याणक भाव सदैव जाग्रत रहैत छलनि। जखन निरीह गरीबक शोषण होइत छलैक आ हुनका पता चलैत छलनि त' हुनक आत्मा कराहि उठैत छलनि। किछु एहने घटना जखन अपन विद्यार्थी अवस्था मे देखला त' जीवनपर्यन्त कम्युनिस्ट भ' गेलाह। ओ मिथिला के सम्यक समाज, खुशहाल समाज बनेबाक स्वप्न देखैत छलाह। अपन बात पर आ अपन विवेक पर चट्टान जकां डटल रहबाक अद्भुत क्षमता हुनका मे छलनि जकर प्रयोग ओ कतेक बेर केलनि। यद्यपि एकर बहुत पैघ मूल्य हुनका चुकाबए पड़लनि। मुदा ओ त' निष्काम कर्मयोगी छलाह - की लाभ आ की हानि! सिद्धांत पर जीब त' जीब!

जखन कखनो भोगेन्द्र जी केर नाम सोझा अबैत अछि त' लगैत अछि जेना ओ बगल मे ठाढ़ होथि आ कहि रहल होथि, ''विजय! की सब भ' रहल अछि अखिल भारतीय मिथिला संघ मे?" फेर लगैत अछि: "नहि-नहि आब त' ओ अपन भौतिक काया सं एहि संसार मे कहां छथि!" से जे हो, भोगेन्द्र जी अपन कर्तव्यचेतना, अपन ईमानदारी, मिथिला आ मैथिली प्रेम, सादा आ सहज जीवन, सर्वहारा वर्ग लेल अपन समर्पण आ संस्कृति सं सिनेह लेल सदैव याद अबैत रहताह। ओ हमरा सबहक आ आबयबला पीढ़ी लेल एक आदर्शपुरुख बनल रहताह। जखन कखनो हुनका पर सोचैत छी त' बहुत रास बात, अनेकानेक प्रसंग मोन कें इतिहास मे सोझे लेने जाइत अछि। सब बात सिनेमा केर रील जकां माथ पर घूम' लगैत अछि। मुदा भावना एहेन अछि जे भाव करेज मे कैद भेल रहि जाइत अछि। पितृव्य भोगेन्द्र जी कें हमर श्रद्धांजलि।

भेंट घांट





सरगंगा नाथ झा सम्मान (2018) हेतु चयनित सुप्रसिद्ध विद्वान श्री गोविन्द झा कें शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' भेंट करैत अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा



फोटो फीचर





अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती समारोह मे श्रोतागण कें समक्ष अपन प्रस्तुति के साथ प्रसिद्ध गायक उदित नारायण



चेतना समिति, पटना द्वारा 21–23 नवंबर, 2018 कें आयोजित 65म विद्यापति स्मृति पर्व समारोह मे अ.भा.म.सं. केर अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा के सम्मानित करैत बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार



काठमांडू मे नेपाल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलाक मध्य मिथिला मचानक कार्यक्रम मे उपस्थित अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजयचंद्र झा



सास्वत आ मां जानकी सेवा संघ गुजरात द्वारा आयोजित समारोह मे अ.भा.म.सं. के अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा सम्मानित भेलाह।

ललित बाबू: एक विलक्षण व्यक्तित्व

✍ डॉ. जगन्नाथ मिश्र



लेखक स्व. ललित नारायण मिश्र जीक अनुज छथि। ओ तीन बेर बिहारक मुख्यमंत्री रहलाह। केन्द्र सरकारमे सेहो मंत्री रहि चुकल छथि। मिथिला-मैथिलीक विकासक लेल सदिखन प्रयासरत रहैत छथि।

राष्ट्रीय आ बिहारक राजनीतिक पुरोधा, लोकप्रियताक रहनुमा ललित बाबू राजनीतिमे प्रखर नेता, सांसद आ केन्द्रीय मंत्रीक रूपमे मार्गदर्शक जेना नम्हर काल धरि बहुमूल्य योगदानक लेल याद केल जायत रहता। ओ एकटा आदर्श व्यक्तित्वक धनी पुरुष छला, जे अप्पन राजनीतिक दूरदर्शिता, धर्मनिरपेक्षता, प्रशासनिक दक्षता, राष्ट्र-भक्ति आ नि:स्वार्थ जन-सेवाक लेल जन-जनमे चर्चित अछि। आइ जरूरत अहि गपकें अछि जे युवा पीढ़ी हुनकर आदर्श जीवन-दर्शन सं प्रेरणा ल' क' राष्ट्र-निर्माणक काजमे सक्रिय भूमिका निभाबय। ओ पार्टीक नेता आ कार्यकर्ताक सम्मान देबाक काज केने छला। समाजमे अहिने विरल व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव होयत अछि जिनकर जीवन समकालीन इतिहासक अंग बनि जायत अछि। एहन विरल लोक सभमे ललित बाबू छथि। ललित बाबूक जेहन जनसेवाक रहल अछि, ओकरा देखैत सभटा राजनीतिक आ सामाजिक कार्यकर्ता कें जनताक व्यापक हित कें मनमे राखैत गंभीरता सं आत्ममंथन आ आत्मचिंतन करबाक चाही। ललित बाबूक अनवरत प्रयासक प्रत्यक्ष परिणामकें देखि कें लोकक मनमे हुनका प्रति एकटा नब प्रकाश-पुरुषक आकृति स्वत: आबि जायत अछि।

महात्मा गांधी, इन्दिरा गांधी आ राजीव गांधीक हत्याक कड़ीमे ललित बाबूक हत्या स्वत: जुड़ जाइत अछि, की ई सभटा हत्या साम्प्रदायिक आ उग्रवादी विचार सं प्रेरित भ' क' केल गेल छल। मुदा सबस दुखद पक्ष त' ई अछि जे अहि सभ घटनाक बादो राष्ट्र एहन अवांछित तत्वक विरुद्ध सजग आ सक्रिय नञ भ' रहल अछि। ललित बाबूक स्मृति सं हमर मनमे राजनीतिक मूल्यक गिरावट लेल कृतसंकल्प रहैक एकटा भावना जागैत अछि आ ख्याल आबैत अछि जे ललित बाबू कें विकास पुरुषक उपाधि सं अलंकृत करबाक ओ स्वरूप छल, जाहिमे सामाजिक सौहार्द्र आ समरसताक भाव कुटि- कुटि क' भरल छल। मुदा आय सामाजिक सौहार्द्रक ओ भावनामे बिखराव आ टकराव आबय सं राष्ट्रक धर्मनिरपेक्षता संकटमे अछि। अहि कारण सं मजदूर, सभ वर्गक किसान, गरीब, शिक्षक, सभ स्तरक कर्मचारी,नौजवान, छात्र आ युवा सभहक् बीच निराशाक भाव व्याप्त भ' रहल अछि।

ललित बाबूक जीवन गरीब सभकें सामाजिक समानताक स्तर पर आनय, अल्पसंख्यक सभकें बराबरीक अधिकार दिलाबयसं जुड़ल संवैधानिक प्रावधानक प्रति प्रतिबद्ध रहल। मुदा, आइ संविधान सम्मत ''समाजवादी, पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' पर चारू कात सं संकट छायल अछि। आइ देश साम्प्रदायिक, फासीवाद, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, साम्राज्यवाद आओर पूंजीवाद सं जुड़ल तागतक आगू ठेघुन टेक रहल अछि। गांधी, नेहरु, इन्दिरा गांधी आ जयप्रकाश सं संवारल गेल देश आइ जातिवाद, सम्प्रदायवाद आ क्षेत्रवादक दलदलमे फंसि गेल अछि। देशक चिन्तनशील लोकक आगू एकरा सं दुखक गैप आउर की भ' सकैत अछि

जे अलग-अलग राज्यक लोक क्षेत्रीय भावना सं ग्रस्त भ' एक-दोसराक प्रति असहिष्णु बनिजाय। ललित बाबू अलग-अलग मंत्रालयमे रहिकें सभ राज्यक सम्यक् विकासक लेल काज केने छला। हुनकर आत्मा कें संकीर्ण क्षेत्रवाद की मनोवृति सं कतेक पैघ ठेसं पहुंचल होयत, ई अनुमानक विषय अछि। ललित बाबू बिहार कें पिछड़ापन सं निकालि क' एकटा विकसित राज्य बनाबैक कतेक रास परियोजना मंजूर कयलनि। केन्द्र आ बिहार सरकारक नेता सभहक बीच बेसी सं बेसी गप-शप करा कें बड कठिन समस्या सभकें समाधान करेने छला। कोशी जेहन शोकदायी धारक बाढि आ महामारी सं पीड़ित असंख्य लोक कें मुक्ति दियाबैक उद्देश्य सं ओकरा नियंत्रित करबाक योजना स्वीकृत करेने छला। अहि परिवारक कतेक रास लोक 1920सं स्वतंत्रता संग्राममे सक्रिय छला। हुनकें परिवारक 11 टा सदस्य स्वतंत्रता आदोलनमे यातना सहने छला। छात्र जीवन सं ललित बाबू अप्पन राष्ट्रीयताक भावना प्रदर्शित करैत स्वतंत्रता संग्राममे अगुवा छल। पांच बरखक कठोर सजा जेलमे भोगने छला। विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर पाठ्चर्या आ शोधकाज सम्पन्न करैत ओ राजनीतिमे सक्रियता सं भाग लेलनि आ कांग्रेस पार्टी कें सबल स्तम्भ प्रमाणित भेलखिन। बिहारमे डा. श्रीकृष्ण सिंह आ राष्ट्रीय स्तर पर पं. नेहरु आ इन्दिरा गांधीक विश्वास ओ अर्जित केने छला आ अप्पन योग्यता, कर्मठता आ सक्रियता सं हुनका सभकें प्रभावित केने छला। लोक सेवाक प्रति हुनकर समर्पण-भाव आ जनसेवाक लेल हुनकर प्रतिबद्धता हुनका केन्द्रमे संसदीय सचिव, उपमंत्री, राज्यमंत्री आ अंतत: कैबिनेट मंत्री बनौलक आ कांग्रेसक सर्वोच्च निकाय राष्ट्रीय कार्य समितिक सदस्यक रूपमे स्थापित करौलक। अहि पद पर रहैत ललित बाबू समाजवादी विचारधारा आ पंथ निरपेक्षताक प्रति अप्पनपूर्ण आस्था दिखैने छला। हुनकर विचार आ क्रियाकलापमे गांधी, विनोबा, नेहरु आ इन्दिरा गांधीक सिद्धांत निरंतर लखाह दैत छल। हुनकर दृष्टिकोण राष्ट्रीय विचार सं ओतप्रोत रहैत छल।

पिछड़ल बिहार कें राष्ट्रीय मुख्यधाराक समकक्ष आनैक लेल ललित बाबू सभ दिन कटिबद्ध रहला। ओ अप्पन कर्मभूमि मिथिलांचलक राष्ट्रीय पहचान बनाबैक लेल पूर्ण तन्मयता सं प्रयास कयलनि। ओ मिथिला चित्रकलाक देश-विदेशमे प्रचारित क'ओकर एकटा अलग पहचान बनबैलक। अशोक पेपर मिलक स्थापना कें एकटा नब आशाक संचार केने छला आ दरभंगा व पूर्णियामे वायु सैनिक हवाई अड्डा बनाबय सं अहि क्षेत्र दिस राष्ट्रक ध्यान सहसा आकृष्ट भेल छल। मिथिलांचलक विकासक कड़ीमे ललित बाबू लखनऊ सं असम धरि लेटरल रोडक मंजूरी करेने छला, जे मुजफ्फरपुर आ दरभंगा होयत फारबिसगंज धरि लेल स्वीकृत भेल छल। अहि पथक निर्माण आय सेहो कार्यान्वयनक क्रममे अछि। मिथिलाक भाषा आ संस्कृतिक विकासमे हुनकर महत्वपूर्ण योगदान अछि। मैथिली कें साहित्य अकादेमीमे स्थान दियाबैक लेल, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करबाक लेल आ मैथिली कें लोक सेवा आयोगक चयनित विषयक सूचीमे जोड़बाक लेल हुनकर सहयोग सदिखन स्मरण कयल जायत।

रेल मंत्रीक रूपमे मिथिलांचलक पिछड़ल क्षेत्रमे झंझारपुर-लौकहा रेल लाइन, भपटियाही सं फारबिसगंज रेल लाइन आ कटिहारस बाराबंकी, समस्तीपुर सं दरभंगा बड़ी लाइनक निर्माण मानसीसं फारबिसगंज बड़ी लाइन, कटिहार सं जोगबनी बड़ी लाइन, सकरी सं हसनपुर रेल लाइन आ जयनगर-सीतामढ़ी रेल लाइन जेहन 36टा रेल योजनाक सर्वेक्षणक स्वीकृति अपना आपमे हुनकर कार्यक्षमता, दूरदर्शिता आ विकासशीलताक ज्वलंत उदाहरण अछि। मुजफ्फरपुर, पटना आ रांचीमे रेल सेवा आयोगक स्थापना क' विशेष रूपसं बिहार राज्यक नवयुवकक लेल नियोजनक संभावना बनैने छला। हुनकर रेल विस्तार योजनामे पटनामे गंगा नदी आ कोशी महासेतु पुल निर्माणक योजना सेहो शामिल छल।

विदेश व्यापार मंत्रीक रूपमे ललित बाबू देशक लगभग 150 रुग्ण सूती मिलक अधिग्रहण क' लाख मजदूरक जीवन

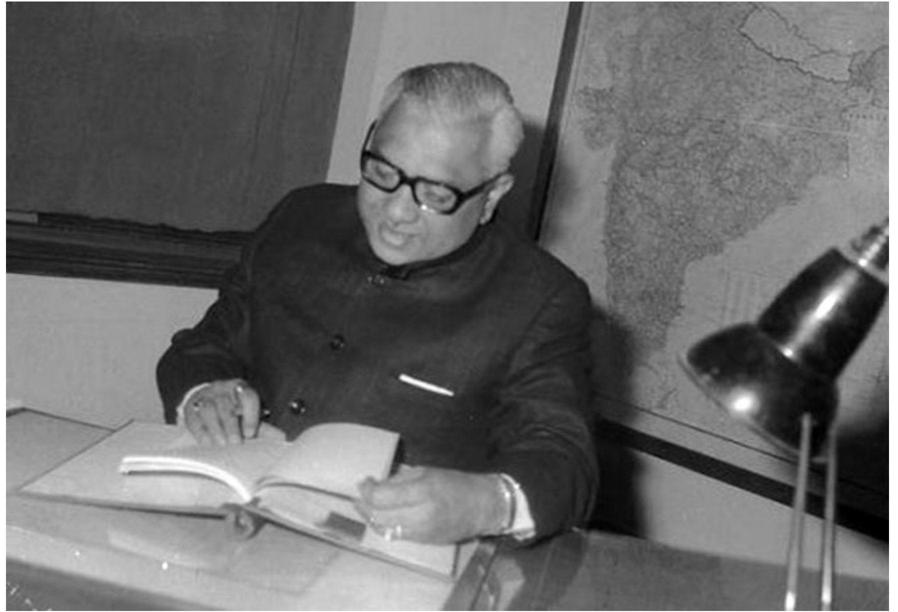
ललित बाबूक जीवन : एक नजरि

- जन्म: 2 फरवरी 1922 ई. (मातृक बाजितपुर, मुजफ्फरपुर मे)
- पैतृक गांव: बलुआ बाजार, सहरसा
- शिक्षा: सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
- टी. एन. बी. कॉलेज, भागलपुर
- पटना विश्वविद्यालय, पटना
- 1939: छात्रजीवन सं राष्ट्रीय आन्दोलनमे संलग्न
- 1941-42: जेल यात्रा
- 1948-49: पटना वि.वि. सीनेट फेलो
- 1950: अ. भा. कांग्रेस कमिटि सदस्य
- 1952: प्रथम लोकसभाक सदस्य
- 1957: पुन: लोकसभामे निर्वाचित आ संसदीय सचिव पद पर नियुक्त
- 1960: श्रम, सेवा: योजना उपमंत्री तथा नियोजन उपमंत्री
- 1960: उप-गृह मंत्री
- 1964: उप-वित्त मंत्री
- 1967: श्रम एवं पुनर्वास राज्यमंत्री, पुन: प्रतिरक्षा उत्पादन राज्यमंत्री
- 1970: विदेशव्यापार राज्य मंत्री
- 1972: कांग्रेस कार्यकारिणी समितिक सदस्य निर्वाचित
- 1973: केन्द्रीय मंत्रिमंडलमे रेलमंत्री
- 2 जनवरी 1975: समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर बड़ी लाइनक उद्घाटन करैत बमकांडमे आहत भ' 3 जनवरी कें नश्वर शरीरक त्याग।

सुरक्षित केने छला आ कपड़ाक निर्यातक संभावना कें बढ़ा कें बेसी उत्पादन कें लेल प्रोत्साहन देलक। अहि निर्णय सं बिहारक गया आ मोकामा स्थित दूटा सूती मिल कें सेहो लाभ भेटल। ललित बाबू बिहारक जूट उत्पादकक लाभक दृष्टि सं राष्ट्रीय स्तर पर जूट कारपोरेशनक स्थापना कयलनि आ ओहि कारपोरेशनक माध्यम सं समर्थन मूल्य द' क' प्रत्यक्ष खरीदारीक व्यवस्था करौलनि। ओ जूट कारपोरेशन सेहो आजुक काल निष्क्रिय बनि पड़ल अछि जेकरा चलते जूट उत्पादक कें विवशतामे अल्प दर पर अप्पन जूट बेचहि परैत अछि।

रक्षा मंत्रीक रूपमे ललित बाबू भारत-चीन युद्धक कड़वा अनुभव कें देखैत रक्षा सामग्रीक उपलब्धता सुनिश्चित करबाक लेल सार्वजनिक क्षेत्रमे कतेक रास रक्षा उत्पादन उद्योग कें सेहो स्थापना करेने छला। पं. नेहरू आओर इन्दिरा गांधीक दूरदरर्शिता सं प्रेरणा ल' क'ललित बाबू रक्षा मंत्रालय कें आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्र सं सुसज्जित केने छला। पं. नेहरू आ इन्दिरा गांधीक आर्थिक सोचक अनुरूप, जाहिमे आत्मनिर्भरता कें आवश्यक अंग मानल गेल छल, ओकरा सार्वजनिक क्षेत्रक विस्तार देलनि। लक्ष्य ई छल जे आत्मनिर्भरता बढ़य आ विदेशी पूंजीक कम उपयोग हुअय आ आयातक मात्रा घटाबैक उपाय कें आर्थिक नीतिक मूल आधार बनाओल जाए।

हुनका सांसद बनय सं पहिने प्रथम पंचवर्षीय योजना आरंभ भ' चुकल छल। 1954 ई.मे कोशीक भीषण बाढ़िक विभीषिका ओ पं. जवाहर लाल नेहरू आ डा. श्रीकृष्ण सिंह कें दिखैने छला। लोकसभामे त' ओ बराबर कोशीक समस्याक निदानक लेल वकालत करिते छला। हुनकर प्रयत्नक परिणाम भेल जे प्रथम पंचवर्षीय योजनामे कोशी-योजना कें सेहो सम्मिलित क' लेल गेल। 1955 ई.मे कोशी योजनाक श्रीगणेश भेल।



पं. जवाहर लाल नेहरू आ गुलजारी लाल नन्दाक सुझाव सं ललित बाबू कोशी-योजनामे जन-सहयोगक प्रयोग कयलनि। अहि काजमे हुनका भारत सेवक समाज सं सेहो बड़ रास सहायता भेटल। श्रमदानक द्वारा तटबंधक निर्माण करल गेल। ओहि काल जूट-उत्पादक स्थिति सेहो बड दयनीय भ' गेल छल। जूटक दाम बड़ गिर गेल छल। अहि समस्या दिस ओ संसदक ध्यान आकृष्ट केने छल। कोशीक प्रलयकारी बाढ़िमे रेलवे लाइने तहस-नहस भ' गेल छल। अहि लाइन सबहक पुनर्निर्माणक लेल ओ संसदमे जोरदार चर्चा केने छला। विदेश व्यापार मंत्रीक रूपमे ओ जूट उत्पादकक हितमे जूट कारपोरेशनक स्थापना कयलनि।

ललित बाबूमे संगठनक अद्भुत क्षमता छल। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण हमरा ओहि काल देखहि लेल भेटल, जखन 1969 ई.मे कांग्रेसमे बंटवारा भेला सं पार्टी दू फांकमे बंटि गेल छल। बिहारक सभटा शीर्षस्थ नेता सिन्डीकेटक पक्षमे छल। असगरे ललित बाबू इन्दिरा गांधीक समर्थित कांग्रेसक नैयाक पतवार थामने छला। ओ 1971 आ 1972 ई. केर चुनावमे अहि निष्ठा आ कर्मठताक संग काज कयलनि जाहि सं कांग्रेसकें अजेय बहुमत भेटल आ देशमे इन्दिरा गांधी सं आशीर्वाद प्राप्त कांग्रेसक झंडा बुलन्द भेल। अप्पन जन्मभूमिक वातावरणमे गूंजैत मैथिली भाषाक प्रति हुनकर अपार अनुराग छल। एकरे परिणाम छल जे मैथिली भाषाकें ओ साहित्य अकादेमीमे सम्मिलित करलखिन। ललित बाबू संसारक कतेक रास देशक परिभ्रमण केने छला। हुनका संसारक कतेक रास नवीन सभ्यताक सम्मोहनसं भरल संपर्कमे आबय केर अवसर सेहो भेटल, मुदा ओ अप्पन धरतीक पुरना परंपरा सं अहि तरहे सम्बद्ध छला जे कोनो बाह्य प्रभाव कें ग्रहण नञ क' सकैत छल। ओकर रंगमे रंग नञ सकैत छला। ओ भारतीय संस्कृतिक कट्टर उपासक रहथिन। ओ अप्पन कला, संस्कृति आ साहित्यक रक्षाक लेल हर संभव उपाय करैत छलखिन। यैह कारण अछि जे ओ भूलल-बिसुरल मधुबनी कला कें पुनर्जीवित कयलनि। ओ संसारक कला-मानचित्र पर मधुबनी कला कें स्थापित कयलनि। आब ई हमरा सबहक जिम्मेदारी अछि जे हम ललित बाबूक केल गेल काजक रक्षा कोन हद तक क' सकैत छी आ ओकर सर्वांगीण विकासमे आउर कतेक योगदान द' सकैत छी।

आर.पी. यादवः संक्षिप्त जीवनवृत्त

✍ सत्यप्रभा



लेखिका समाजसेवी छथि आ अखिल भारतीय मिथिला संघक अगुआ स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव जीक सुपुत्री छथि।

संपर्क :
डी-2/36, शाहजहां रोड, दिल्ली-110059

सत्य, सुन्दर आ सौम्य व्यक्तित्वक स्वामी राजेंद्र प्रसाद (आर.पी.) यादवक जन्म पैतृक गाम तुनियाही (मधेपुरा)मे 29 जनवरी, 1937 कें भेल छल। रघुनन्दन प्रसाद मंडल आ मनोहर देवीक तीन पुत्र आ एक पुत्रीमे अहां तेसर संतान छलहुं। अहांक ननिहाल साहुगढ़ (मधेपुरा) गाम छल। अहां केर प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गाम तुनियाहीमे भेल। तहियोका जेनरल हाई स्कूल (सम्प्रति शिवनंदन प्रसाद मंडल-2 विद्यालय) सं 1952 ई. मे अहां मैट्रिक परीक्षा, 1956 ई. मे बी.एन. कॉलेज सं स्नातक, 1958 ई. मे पटना लॉ कॉलेज सं एलएलबी आ 1956मे पटना विश्वविद्यालय सं दर्शन शास्त्रमे स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण केलहुं। तकर बाद 1960मे मधेपुरा कोर्टमे वकालत केर पेशा शुरू केलहुं आ जीवन पर्यंत सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्लीमे पंजीकृत अधिवक्ता रहलहुं। सन 1964 ई. मे उषा देवी (सुपुत्री उपेन्द्र प्रसाद यादव, फतेहपुर, मुरलीगंज, मधेपुरा) के संग परिणय सूत्रमे बधलहूं। दूटा पुत्र आ एकटा पुत्रीक पिताक रूपमे अहां अप्पन पारिवारिक जीवनक सफलतापूर्वक निर्वहन केलहुं।

वकालत पेशामे आबय कें संग सार्वजनिक जीवनसं अहांक संबंध उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होयत गेल। सन 1967 ई. मे मधेपुरा अनुमंडल कांग्रेस समितिक उपाध्यक्ष बनलहूं। एकर बाद 1971 मे पांचम लोक सभाक सदस्य हेबाक अवसर भेटल, जे अहांक राजनीतिक जीवनक ऊंच उड़ान सिद्ध भेल। प्रान्तक कद्दावर राजनीतिक हस्ती कें मात द' नव-निर्वाचित युवा सांसदक बीच अहां अपन अलग पहचान स्थापित केलहुं। अहि काल अहांक जुड़ाव कतेक रास संगठन सं सेहो भेल, जाहिमे ऑल इंडिया गार्ड काउंसिलक अध्यक्ष पद महत्वपूर्ण अछि। सत्ताधारी दलक सांसदक रूपमे (1971-1977) अहां अपना आपके एकटा जवाबदेही राजनेता प्रमाणित केलाह। कतिपय कारणसं 1977 ई. मे हारय कें बाद सातम लोक सभा (1980-1984)मे अहां कें फेर सं सदस्यता भेटल। अहि काल एकटा विपक्षी दलक सदस्यक रूपमे अहां अपन जिम्मेदारी कें नीक जेकां निर्वहन केलिये। कतेक रास अखिल भारतीय स्तरक संगठन सं अहांक संबंध बढ़ैत गेल। मालूम हुए जे सभटा जिम्मेदारी कें अहां शत-प्रतिशत पालन केलिये। अखिल भारतीय पिछड़ा वर्गक राष्ट्रीय महासचिवक रूपमे आरक्षण आन्दोलनकें परिणिति धरि पहुंचाबैक सतत प्रयास अहां केलहुं। अनुसूचित जाति, जनजाति आ अल्पसंख्यक महासंघक बैनरक नीचां संघर्ष करैत अहां जेल यात्रा सेहो केने रहथि। राजनीतिक दलक राष्ट्रीय स्तरक संघठनमे अहांक भागीदारी बनल रहल। सफल संघठनकर्ताक रूपमे

अहांक पहचान रहल। अपन कार्यकर्त्ता आ समर्थक सं अहांक राजनीतिक टा नै पारिवरिक संबंध सेहो रहल। हुनकर सभटा सुख-दु:खमे सदिक्खन अहांक संग रहैत छल। जीवन पर्यंत सक्रिय राजनीतिसं अहांक संबंध कायम रहल। जीवनक अंतिम क्षणमे जनता दल (यू) के नेताक रूपमे दलीय संघठन कें मजबूत करबामे अहांक योगदान प्रेरणापूर्ण रहल।

जनतांत्रिक पद्धतिमे अटूट विश्वास राखहि बला अहांक मान्यता छल जे राजनीति समाज सेवाक सर्वोत्तम माध्यम अछि। समाज सेवाक संग-संग शैक्षणिक उत्थानमे विशेष अभिरुचि अहां कें विरासतमे भेटल छल। अजीब संयोगे अछि जे अहां 1977 मे लोकसभामे पराजयक पश्चात् 1978 मे शिवनंदन प्रसाद मंडल विधि महाविद्यालय आ 1984मे पराजयक पश्चात् रघुनन्दन प्रसाद मंडल महाविद्यालयक स्थापना केने रहि। एहि तरहक हौसला राखब आ ओकरा कार्यरूप देब अहैंक बूताक गप छल। एकर अलावा, कतेक रास शैक्षणिक संस्थान कें पल्लव-पुष्पणमे अहांक योगदान अविस्मरणीय अछि। जाहिमे भूपेंद्र नारायण मंडल वाणिज्य महाविद्यालय, साहुगढ़क स्थापना प्रमुख अछि। सार्वजनिक जीवनक सभटा पक्षमे अहांक प्रत्यक्ष संबंध बनल रहल। सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे सेहो अहांक भागीदारी निश्चित रूपेण होयत छल।

मधेपुरामे दशहरा संगीत सभाक आयोजन हुए या भारतीय जननाट्य मंच (इप्टा)क कार्यक्रम हुए या साक्षरता अभियानमे अहांक सार्थक सहयोग सर्वविदित अछि। अखिल भारतीय जाति विहीन समाज निर्माण समिति, मधेपुरा स्थापना आ कार्यान्वयनमे अहांक निर्णायक भूमिका रहल। सन 1981मे मधेपुरा जिला स्थापना, 1992मे भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालयक स्थापनामे अहां कें भूमिका कें सदिक्खन याद करल जायत। सन 1986मे सम्पूर्ण संसदीय क्षेत्रक साईकिल यात्रा आ फेर पद यात्रा अहांक जनसंपर्कक अभियानक अनुपम उदाहरण अछि। साहित्य, संगीत आ कलामे सेहो अहां कें गहन रुचि छल। नीक-नीक पोथीक अध्ययनक संग-संग ओकर संग्रहक सेहो अहां शौक़ीन छलहूं। प्रतिभा-प्रोत्साहनक



प्रति सतत अहां प्रयत्नशील रहैत रहि। छोट-पैघ कोनो स्तरक कार्यक्रममे अहांक भागीदारी सफलताक गारंटी भ' जायत छल। अहां सोवियत संघ, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, बुल्गारिया आ चेकोस्लोवाकिया आदि देशक यात्रा सेहो केलहुं। चारि दशकक राजनीति पड़ावमे अहां कतेक रास मंजिल तय केलहुं। जतय रहलहुं, जा धरि रहलहुं, अपन निष्ठा कायम रखलहूं। सदिक्खन राजनीति क्रिया-कलापमे एकटा व्यवस्था देबाक कोशिश केलहुं। जन-समस्याक प्रति जवाबदेहीक प्रति अहां मुस्तैदी सं निर्वहन केलहुं। पोस्ट कार्ड पर भेजल समस्याक सेहो अहां सुलझाबैक भरसक प्रयास केलहुं। अहां मधेपुराक आन-बान आ शान कें कहियो झुकैलेल नञ देलहुं।

निहायत सरलतापूर्ण आ मर्यादित राज्नेतक रूपमे अहां समाजक सर्वोत्तम सेवा केलहुं। अहांक लगन, निष्ठा, अनुशासनप्रियता, समय प्रबंधन, ईमानदार छवि, समर्पित जीवन शैली आ व्यवस्थित काज-धाज अहां कें विशिष्टता प्रदान करैत अछि। अहां जीवन पर्यंत राजनीति सुधार आ सहिष्णुताक पक्षधर रहलहुं। आजुक दूषित भेल जा रहल सार्वजनिक जीवनमे अहांक कमी सदिक्खन रहत।

जुलाई 2008 मे अहां गंभीर रूप सं अस्वस्थ भ' गेलहुं। इलाजक काल नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानमे 29 मई 2010 के अहां अंतिम सांस लेलहुं। अस्वस्थ आ रुग्न भेलाक बादो अहां अपन मानसिक शक्तिकें कहियो कम नञ होम' देलहुं आ बीमारीक काल आपन विभिन्न तरहे कें सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक कार्यक्रमकें विशेषक गरीबी रेखाक नीचां रहय बला परिवारक समेकित विकास लेल अंतिम सांस धरि कृतसंकल्प रहलाह। अश्रुपूरित समर्थकक जनसैलाबक बीच मधेपुरा-सुखासन मुख्य मार्गक बगलमे रघुनन्दन प्रसाद महाविद्यालय, तुनियाही, मधेपुराक लग राजकीय समारोहक संग अहांक अंतिम संस्कार संपन्न भेल। मालूम हुए जे अहि ठामक चयन अहां अपने सं केने छलहुं, जाहि कें आम-अवामक पाइरक माइट अहांक समाधि कें स्पर्श करैत रहय। ई अछि अहांक जन-सरोकारक पराकाष्ठा।

बलिराम भगत : शुचिताक पर्याय

✍ डॉ. नरेश कुमार विकल



समस्तीपुर जिलाक भगवानपुर देसुआ गामक निवासी डॉ. नरेश कुमार विकल सात काव्य संग्रह, पांच कथा संकलन, सात नाटक आ एक दर्जन सं बेसी पोथीक संपादन केने छैथ. मराठी उपन्यास 'ययाती', गुजराती उपन्यास 'तत्वमसि' और तमिल उपन्यास 'चित्रप्रिया' केर अनुवाद विकल जी केने छैथ। कतेक रास फिल्म मे अभिनय संग निर्देशन सेहो केने छैथ।

संपर्क:
'विशाखा', बारह पत्थर (जल विहार),
वार्ड नंबर-14, समस्तीपुर-848101
मोबाइल: 9430244114,
8051986749



मिथिला अदौ सं अखंड भारतक कण्ठहार रहल अछि। एकर एक गोट अभिन्न अंग समस्तीपुर सम्पूर्ण सृष्टिक अनुपम थीक। जम्बूद्वीप पर एहि अघोषित अयोध्याक समुज्जवलकारिणी इतिहास भारतीय संस्कृतिक सनातन सौंदर्यक मंजुल दर्शन करबैत रहल अछि आ आर्यावर्तक गौरव ओ आत्म तत्वबोधक अक्षय दिव्य ज्योतिर्लोक। एहि पावन भूमि मे विद्याक अविजय आलोक निर्झर अप्रतिहत गति सं बहैत आबि रहल अछि। जहिना एकर दर्शन आ कर्मक वैचारिक रश्मि-रज्जू सं विश्वक मानस चेतना अद्यावधि सम्मोहित ओ आकर्षित होइत रहल अछि, तहिना सम्पूर्णता मे भारतीय संस्कृतिक अंगीभूत इकाई होइतहुं एकर संस्कृति अपन वैशिष्ट्यक कारणें प्रेरक, प्रशंसनीय आ ग्राह्य रहल अछि।

कल-कल, छल-छल करैत निश्छल, निर्मल लहराइत वेगवती नदी सभक लहरि, लहरि पर झिकझोरिया करैत वेदक ऋचा, ग्राम-घर, चर-चांचर, खेत-पथार-खरिहान, बाध-बोन, बाड़ी-झाड़ी, गाछी-बिरछी-बगान मे गुंजित काव्य गान, तान-स्वर लहरी आ सम्पूर्ण भारत मे अपन पूजा फहरबैत एकर राजनीति, ओ राजनीति-पुरुष।

किछु एहन प्रातिभ-पुरुष जनिक यशोगाथा शत्-शत् एवं शताधिक बरख धरि चिर-स्मरणीय रहैत अछि, स्मृतिक गवाक्ष सं झांखी मारैत रहत अछि। ओहि परोपट्टेक नहि, सम्पूर्ण राष्ट्र कें सेहो सुवासित कयने रहैत अछि। ताहि मे एक गोट विशिष्ट नाम अछि बलिराम भगत जीक। जनिक चारित्रिक आभा सं राजनीतिज्ञ लोकनिक द्वारा चतुर्दिक व्याप्त-पसरल स्वार्थक कुहेसक हृदय विदीर्ण भ' जाइत छलैक।

7 अक्टूबर, 1922 ई. कें समस्तीपुर जनपदक पटोरी-धमौन अनुमण्डलान्तर्गत दशहरा गाम मे रामरूप भगतक पुत्रक रूप हिनक जन्म भेलनि। पिता जी एक गोट कर्मठ किसान रहथिन।

पटना कॉलेज सं स्नातक डिग्री प्राप्त कयल सन्तां ई पटना विश्वविद्यालय सं अर्थशास्त्र मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान त' प्राप्त कयलनि, मुदा किछु दुष्ट प्रतिद्वंद्वी लोकनिक कारणें हिनक सर्वोच्चक्तांक कें चुनौती देल गेलैक। उत्तर पुस्तिका विदेश पठाओल गेलनि। ओहिठामक परीक्षक लोकनि देल गेल अंक मे किछु आओर अंक जोड़ि पठओलनि।

छात्रे जीवन सं हिनका मे नेतृत्वक अद्‌भुत क्षमता छलनि। 1939 ई. मे ई कांग्रेसक सदस्यता ग्रहण कयलनि। पटना विश्वविद्यालय मे युवा कांग्रेसक अधिवेशन हिनके आ हिनके परम मित्र सहपाठी ललित नारायण मिश्रक संयोजकत्व मे सम्पन्न भेलैक। ओहि मे अर्थसंकट भेला संतां ललित बाबू अपन कनियांक गहना धरि बन्हकी राखि देने छलथिन, जे पछाति ललित बाबूक पिता जी छोड़ओलथिन।

अपन देशप्रेमक भावना सं ओतप्रोत बलिराम बाबू 1942 ई. स्वतंत्रता आन्दोलन मे सक्रिय भ' गेलाह आ दू बरख धरि भूमिगत सेहो रहलाह। भूमिगत रहितो अपन दायित्वक निर्वहन मे किंचितो कमी नहि कयलनि।

1944 ई. मे हिनक विवाह विद्याभगत सं भेलनि। बलिराम बाबू 'आवर स्ट्रेटजी' आ 'नन वायोलेंट रिवोल्यूशन' नामक अंडरग्राउंड साप्ताहिकक सम्पादन सेहो कयलनि। अपन रुचि आ विषयक अनुरूपें 'इकोनोमिक रिव्यू' क सम्पादनक दायित्व बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटीक इकोनोमिक रिसर्च सेक्शनक सेक्रेटरी बनला सन्तां

देल गेलनि।

बलिराम बाबू 1950 ई. सं 1952 ई. धरि प्रोविजनल पार्लियामेंटक सदस्य छलाह। 1952 ई. मे बिहार मे लोकसभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह जे 1977 ई. धरि रहलनि। 1977 ई. के चुनाओ मे जखन इंदिरा गांधी हारि गेलहि तं हुनक किछु विचारक प्रतिरोध करैत ओहि पार्टी सं त्याग पत्र द' देलनि आ कांग्रेस (यू) मे सम्मिल भ' गेलाह।

1980 ई. मे फेर इंदिरा जीक आग्रह पर पुनर्वापसी कयलनि। 1980 ई. मे पुन लोकसभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह।

ई सात बेर लोकसभाक लेल निर्वाचित भेलाह, जाहि मे छओ बेर आरा सं आ एक बेर सीतामढ़ी सं।

लोकसभाक सदस्यक संगहि 1952 ई. सं 1956 ई. धरि ई विदेश मंत्रालय मे संसदीय सचिव भेलाह आ हिनक काज सं प्रभावित भेला सन्तां हिनक प्रोन्नति वित्त विभागक उपमंत्री रूप मे भेलनि, जकर निर्वहन ई 1963 ई. धरि कयलनि। 1963 ई. सं 1966 ई. धरि योजना मंत्रालयक राज्य मंत्री, अगस्त, 1966 ई. सं मार्च, 1967 ई. धारि वित्त विभागक उपमंत्री, 1967 ई. सं फरवरी, 1968 ई. धरि रक्षा मंत्रालयक राज्यमंत्रीक संग - संग फरवरी, 1968 सं फरवरी, 1969 ई. धरि हिनका विशेष मामिलाक राज्यमंत्री बनाओल गेलनि। पहिल बेर फरवरी, 1969 ई. मे हिनका कैबिनेट मंत्री बनाओल गेलनि, संगहि विदेश व्यापार आ आपूर्ति विभाग सेहो सम्हार' पड़लनि। अपन परिपक्वताक संगे ई जून, 1970 ई. धरि रहलाह। हिनक प्रतिभा कर्तव्यपरायणता, बुद्धिमता आ यश कें देखैत 5 जनवरी, 1976 ई. मे हिनका अति सम्मानित पद लोकसभाक अध्यक्ष बनाओल गेलनि, ई मार्च, 1977 ई. धरि एहि पद कें सुशोभित कयलनि।



हिनक बौद्धिक क्षमता कें देखैत भारत सरकार हिनका 1984 ई. मे यूनाइटेड नेशन्स इकोनॉमिक कमीशन फॉर एशिया एण्ड फॉर इस्टर मे भारतक प्रतिनिधि बनाक' टोकियो मे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन मे पढ़ौलकनि। 1956 ई. मे बेलिंगटन मे, जे कोलम्बो प्लान कांफ्रेंस छलैक, ताहि मे, साइगोन मे 1957 ई. मे, 1958 ई. मे सिएटल (अमेरिका) मे, 1961 ई. मे लंदन मे सेहो भारतक प्रतिनिधित्व कयलनि।



हिनक किछु आओर उपलब्धि हिनक व्यक्तित्व कें प्रत्यक्ष करबैत अछि, जाहि मे ई 1965 ई. मे अपन देशक दिस सं एशियन डेवलपमेंट बैंकाक चार्टर पर हस्ताक्षर कयलनि। एकरे उद्घाटन 1966 ई. मे जे टोक्यो मे छलैक, ताहू मे प्रतिनिधित्व, 1968 ई. मे नई दिल्ली मे आयोजित यूनाइटेड नेशंस कांफ्रेंस ऑन ट्रेडर्स डेवलपमेंट मे प्रतिनिधित्व, नई दिल्ली मे आयोजित प्रथम इंडो-अमेरिका वार्ता जे जुलाई, 1968 मे भेलैक, ताहि मे प्रतिनिधित्व, प्रथम इंडिया-सोवियत वार्ता, जे सितंबर, 1968 ई मे नई दिल्ली मे भेलैक, ताहि मे प्रतिनिधित्व, आर्थिक विकास पर इंडो-जापान कमिटीक प्रथम गोलमेज सम्मेलन, जे दिसंबर, 1968 ई. मे नई दिल्ली मे भेलैक, ताहि मे प्रतिनिधित्व कयलनि। संगहि अक्टूबर, 1968 ई. मे यूनाइटेड नेशंसक जोनल एसेंबली, जे न्यूयार्क मे भेल छलैक, मे भारतक नेतृत्वो कयलनि।

हिनक प्रशासनिक क्षमते ओ कुशलताक प्रतिफलन थिक जे इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली के राजीव गांधी वाइस प्रेसीडेंट आ ई प्रसीडेंट भेल छलाह। 1982 ई. मे राजीव गांधीक मंत्रिमंडल मे ई विदेश मंत्री 1985 ई. सं 1988 ई. धरि छलाह। 1993 ई. मे हिमाचल प्रदेश आ 1998 ई. सं 1998 ई. धरि राजस्थानक राज्यपाल रहितो अइ कलुषित-काजर-निमिज्जित कमल सदृशशुचिता एवं दृढ़प्रतिज्ञ बनि रहब कोनो महर्षि-कल्प सन प्रतीत होइत अछि।

हिनका नाम पर स्थापित समस्तीपुर मे बलिराम भगत महाविद्यालय (अंगीभूत) मे आपाद-मस्तक प्रतिमाक अनावरण बिहारक तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री जीतन राम मांझी 14 अक्टूबर, 2014 ई. कें कयलनि।

हिनक लोकान्तरण 2 जनवरी, 2011 ई. कें भ' गेलनि।



जैसी आपकी ज़रुरतें

वैसी हमारी सेवाएँ





@PostOffice.IN @IndiaPostOffice | www.indiapost.gov.in

अधिक जानकारी के लिए, कॉल करें 1800-266-6868 या ई-मेल करें : business@indiapost.gov.in

मिथिलाक असली सपूत जननायक कर्पूरी ठाकुर

✍ नारायण झा



लेखक राजकीय मध्य विद्यालय रहुआ - संग्राम, जिला - मधुबनी (बिहार) मे शिक्षक छथि। एखन तक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि। पहिल पोथी "प्रतिवादी हम" कविता संग्रह पर साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 प्राप्त छनि। दोसर पोथी 2017 ई0 मे "अविरल-अविराम" कविता संग्रह आ तेसर "मैथिली निबन्ध मालिका" निबन्ध संग्रह 2018 ई0 मे प्रकाशित भेलनि अछि। निरंतर पत्र - पत्रिका सभ मे कविता, बाल कविता, निबन्ध, आलेख आदि प्रकाशित होइत रहै छनि। नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी सं एम ए (मैथिली) मे गोल्ड मेडल प्राप्त। मैथिली सं यू जी सी नेट परीक्षा सेहो उत्तीर्ण।

सम्पर्क:

ग्राम-पोस्ट - रहुआ - संग्राम
प्रखंड - मधेपुर, जिला - मधुबनी
बिहार, पिन कोड - 847408
मो0 8051417051
ई मेल- narayanjha1980@gmail.com

जखन अपन समूल जीवन दोसरक कल्याण लेल, सामाजिक स्वार्थ लेल आ देशक हित लेल लगाओल जाइत अछि तखन एकटा विशिष्ट नाम सामने अबैत अछि, ओ नाम थिक- "जननायक कर्पूरी ठाकुर"। देशक सपूत कर्पूरी ठाकुर स्वतंत्रता सेनानी सेहो रहथि, जे भारत छोड़ो आन्दोलनक समय मे 26 महीना जहले मे जिनगी बितौने छथि। सफल शिक्षक रहथि किएक तं अपन पढ़ौनीक खर्च ट्यूशन क' निकालि लैत छलथि। संघर्षशील सामाजिक नेता होइबा कारणें बिहारक दोसर उपमुख्यमंत्री आ दू बेर मुख्यमंत्री बनल रहथि। हिनक जीवन की राजनीति सं नहि रहलनि सम्बद्ध? तैयो जे हिनका पर भूत जकां सवार रहलनि सामाजिक न्याय लेल, सामाजिक हितक बात लेल, सामाजिक कल्याणक बात लेल, लोक कल्याणक बात लेल, ताहि कारणे आइयो हमर समाज मे अमर बनल छथि। देशक खातिर अपना कें उत्सर्ग कएने रहथि तें देशहि नहि विदेशो मे जीवित छथि, जनिका हम सभ प्रेरणाक स्रोत बुझि श्रद्धेय रूप मे गुणि रहल छी। प्रारंभे सं सामाजिक कार्य आदि सं बड्ड लगाउ रहनि। लोकक दर्द देखि देह सिहरि जाइत रहनि। मुख्यमंत्री बनला बादो ओ लोकक उचित - कल्याण आदि मे पहुंचि जाइत छलथि। कतेक बेर तं कोनो दुखदायी घटना घटिते पहिने पहुंचि ओहि ठाम सभ स्थिति कें अनुकूल क' मीडिया कें कहैत छलथिन। जनता सं भेट-घांट, ओकर दुख सुनैत-सुनैत बहुत देरी भ' जाइत छलनि कतेको बेर। जाहि सं मुख्यमंत्रीक फाइल आदि पर हस्ताक्षर होअय मे विलम्ब भ' जाइत छलै, ताहि सं सचिव आदि कतेक बेर टोकि दैत छलथिन। मुदा लोक - समाजक दुख जे असह्य रहनि, तें सर्वोपरि काज रहनि हुनकर जनता संग समय बिताएब। पूर्व मुख्यमंत्री डॉ जगन्नाथ मिश्र कहने छथि जे "जननायक जी अपनो सरकार वा विपक्षो मे परिवर्तन चाहैत छलथि। ओ परिवर्तन हो - हल्ला सं नहि सहमति सं, विचार सं चाहै छलथि।" समाजक नायक रहथि तें जननायक केर उपाधि सं विभूषित छथि, प्रणम्य छथि समाजक महान नायक जननायक कर्पूरी ठाकुर।

सादा जीवन आ प्रखर व्यक्तित्व

जननायक कर्पूरी ठाकुरक उदय 24 जनबरी 1924 ई. कें समस्तीपुरक पितौंझिया गाम, जे आब कर्पूरी ग्राम सं जानल जाइत अछि, मे भेल छलनि। हिनक पिता गोकुल ठाकुर जे गृहस्थ रहथि आ अपन पारम्परिक काज हजामी सेहो करैत रहथि। जन्मदात्रीक नाम रहनि रामदुलारी देवी। हिनक वियाह फुलेश्वरी देवी सं भेल रहनि। कर्पूरी जी कें दू पुत्र आ एक पुत्री छनि। जेष्ठ पुत्र रामनाथ ठाकुर, छोट पुत्र डॉ वीरेंद्र आ पुत्रीक नाम छियनि रेणु। हिनक शिक्षा ग्रामीण वातावरण मे समस्तीपुरक स्कूल मे भेल छलनि। किछु दिन सी. एम. कॉलेज दरभंगा मे सेहो अध्ययन कएने छलथि। उच्च शिक्षा नहि प्राप्त क' सकलाह। ओ प्रारंभे सं मेधावी रहथि तें मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी सं उत्तीर्ण भेल रहथि। मुदा ओइ तीव्र बुद्धिक स्वागत नहि भेल छलनि ओहि गाम मे। हठात हुनका अपमानित करबाक प्रयास भेल छलनि। सोझ आ सरस हृदयक विराट व्यक्तित्त्वक स्वामी छलाह जननायक जी। सन 1938 सं 1940 क बीच जगह - जगह भाषण दैत छलाह। साहित्य, कला, आ संगीत सं सेहो खूब लगाउ रहनि। ओ ओहन सर्जक सभ सं सम्पर्क मे रहथि, जे कोनो व्यक्तिक

खास गुण मे गनल जा सकैत अछि। लिखबाक पलखति नहि भेटि सकलनि, मुदा साहित्य खूब पढ़ैत छलाह। रहन - सहन अति सामान्यो सं सामान्य रहनि। जननायक जी पर पोथीक आलेख मे हुनक ज्येष्ठ पुत्र रामनाथ ठाकुर लिखने छथि "महान पिता सं त्याग, सेवा, आ कर्मक प्रेरणा जे हमरा भेटल अछि, वैह हमर पारिवारिक सम्पत्ति थिक। वैह धरोहर थिक, वैह हमर पूंजी थिक।" मुख्यमंत्री बनला बादो फाटल कुर्त्ता, टूटल चप्पल आ उजरल - उजरल केश पहिचान छलनि। कतेक बेर ओ मुख्यमंत्री रहितहुं अपन नीजी काज लेल रिक्शा सं चलैत छलाह। हुनक जीवन आर्थिक समस्या सं भीजैत रहलनि। एकटा संस्मरण अछि नेता हेमवतीनंदन बहुगुणा जीक, ओ लिखने छथि - "कर्पूरी जी आर्थिक तंगी मे रहथि। हम एकटा मित्र कें कहलियनि जे अहां सं जो आ किछु रूपया मांगथि तं अहां देल करबनि। हम जखन ओइ मित्र सं पुछलियनि जे की हुनका मददि करैत छियनि अहां। ओ कहलथि जे हमरा सं कहियो मंगबे नहि करैत छथि।"

जननायक कर्पूरी जी कहैत छलथिन "अधिक विद्या, पैघ तपस्या, अथाह धन, बलवान शरीर, नव उमेर, आ यशस्वी खानदान ई छः वस्तु सज्जन पुरुषक गुण थिक। मुदा अत्यधिक लोक एकरा प्राप्त क' अहंकारी आ मोचंड बनि जाइत अछि।"

सामाजिक जीवन आ लोक-समाज सं लगाउ

ग्रामीण संस्कृति मे जनमि, पलि आ बढ़ि जननायक जी शहर गेलाक बादो, ओहन पद पर आसीन रहितहुं, आधुनिकताक आवरण नहि ओढ़लथि। अपन माटिक प्रति लगाव सदिखन रहलनि। अपन माटिक लेल संघर्ष करैत रहलथि। जखन ओ पहिल बेर मुख्यमंत्री बनलाह तखन ओ स्त्री शिक्षा लेल आठ कक्षा तक मुफ्त मे पढ़ौनीक व्यवस्था करौलनि। ओ देखलथिन जे समाजक स्त्री कोनो परिवारक धुरी होइत छैक, जकर शिक्षाक व्यवस्था सं समाज व्यवस्थित भ' सकैए। 11 नवम्बर 1978 ई. कें 26 प्रतिशत आरक्षणक घोषणा कएलनि अपन मुख्यमंत्रित्व काल मे, समाजक दीन दशा देखि। मैट्रिक तक शिक्षा मुफ्त कएलनि। ओना मोन रहनि जे स्नातक तक क' दियै, जे नहि कएल भेलनि। ओइ समय मे गाम मे रहै वला बच्चा अंग्रेजी नहि पढ़ि पबै छल। किछु उच्च वर्गक बच्चा तं पढ़ियो लैथि, मुदा हिनक मोन रहनि जे सभ वर्गक बच्चा पढ़ि आगू बढ़ए। तखन ओ एहि परिदृश्य कें देखि समाजक सर्वांगीण विकास लेल मैट्रिक मे अंग्रेजी विषयक अनिवार्यता समाप्त क' देलथिन। तकर बाद गरीबोक बच्चा सभ आगू बढ़ए लागल। आगुक पढ़ाइ दिस जाए लागल, जे अहम योगदान कहल जा सकैत अछि समाजक विकास लेल। समाजक खराब दशा सहन नहि क' पबैत छलाह। कहियो ओ अपन व्यक्तिगत लाभ सं लाभान्वित नहि भेला। जं सरकारक ऑफिसर आ प्रशासक लाभ बिनु पुछने देबाक प्रयास करितो छलनि तं बुझिते मना क' दैत छलाह। एकटा प्रसंग अछि एहि सन्दर्भ - एकबेर जननायक जीक पिता कें कोनो कारणे गामक लठैत सभ प्रताड़ित करए लगलथिन। ई बात जिला प्रशासनक कान तक चलि गेलै। जिला प्रशासन मुख्यमंत्रीक पिताक सुरक्षा बुझि दलबल संगे सुरक्षा करबा लए आबि सभ लठैत कें जिला हाजत मे आनि लेलथिन। सभ बात जननायक जी बुझिते जिला प्रशासन कें डटैत कहलथिन - "पहिने अहां सम्पूर्ण देश मे शोषित - पीड़ित कें ओहन शोषक सं बचाउ तखन अहां हमर पिता कें बचाएब। सभ कें छोड़ि घर पठाउ, हम कहैत छी।" सभ ओहि ठाम सं छुटि आबि गेलाह। ई भेलै समाजक हितसाधकक उदाहरण, जे आइ - काल्हि एहेन सन बात दुर्लभ अछि सुननाइ।

राजनीतिक जीवन आ राजनीति

प्रारंभे समय सं नेतृत्व भावना देखल जाइत छलनि। सामाजिक सेवक तें रहबे करथि। महात्मा गांधीक नेतृत्व मे 9 अगस्त 1942 ई0 कें करो वा मरो केर आह्वान कएल गेल छलै। ओहि समय मे कॉलेजक छात्र रहथि, तें अपन कॉलेजक कमान थाम्हि नेतृत्व कएने रहथि। जे हिनक राजनीतिक जीवनक पहिल सफल द्वार कहल जा सकैए। एहि समय ओ गिरफ्तार भ' जहल गेल रहथि, जे एहि राजनीतिक आंदोलन मे कूदबा लेल शक्ति भरि देलकनि। इहो आधार राजनीति मे अपन आसन जमाबै लेल मददि कएने हेतनि। ओना नेताक वास्तविक गुण जनताक हित मे, समाजक हित मे होइत छैक, मुदा पूर्वहु आ आइ-काल्हि एकर विपरीत छैक। ताहि मे हिनक त्याग ओ सेवा भाव अन्य राजनेता सं फराक करैत छनि। प्रायः गुणी लोक कोनो गुरुदेवक शरण मे ज्ञान अरजै छथि, तहिना जननायक जी सेहो अपन राजनीतिक गुरु लोकनायक जयप्रकाश नारायण, समाजवादी चिंतक डॉ राममनोहर लोहिया सं राजनीति संग ज्ञानक पाठ सिखलथि। तहिना हिनको सानिध्य मे पूर्व मुख्यमंत्री लालूप्रसाद यादव, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, नेता रामविलास पासवान, उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी, गौरीशंकर नागदंश आदि राजनीति केर ज्ञान सीखि राजनीति क्षेत्र मे देशक सेवा क' रहल छथि। जननायक पहिल बेर 1952 ई0 मे विधायक बनलाह। महामाया प्रसादक मंत्रीमंडल मे शिक्षामंत्री आ उपमुख्यमंत्री भेल छलाह। अपन सामर्थ्यक बल पर, संघर्षक बल पर, अपन कद कें बढ़बैत पहिल बेर मुख्यमंत्री बनलाह 22 दिसम्बर 1970 ई. कें। 2 जून 1971 ई. कें पहिल सत्रक मुख्यमंत्रित्व काल पूर्ण भेल छलनि। पुनः 24 जून 1977 ई. सं 21 अप्रैल 1979 ई. धरि मुख्यमंत्री रहि जनताक सेवा कएलनि। अपन भाषाक प्रति सेहो साकांक्ष रहथि। राजकाज लेल ओ हिन्दी भाषा पर बल दैत अंग्रेजी भाषा कें चलनि हटबैक प्रयास कएलाह। तखन सं हिन्दी मे राजकाज होअय लागल। ओ प्रायः जीतैत रहलाह जे एकटा पैघ समाजसेवी आ नेताक गुण बखानै अछि। एक बेर 1984 ई. मे मात्र हारल छथि, कोनो कारणे। लगातार सत्ता मे रहब सामान्य बात नहि थिक। अपन मुख्यमंत्रित्व

काल मे आवासक बरामदा पर जनता लेल बैसकी लगबैत छलाह। ओ मात्र हुनक समस्या मात्र नहि सुनैत छलाह, सभ कें चाह – जलखै खुआ पठबैत छलाह। कहू के नेता वा मुख्यमंत्री एहि ढ़ंगे समाजक सेवा क' सकैत अछि? जननायक जीक मृत्युक बाद एकटा पोथी डॉ भीम सिंह जीक संपादन मे महान कर्मयोगी जननायक कर्पूरी ठाकुर प्रकाशित भेल। ओहि पोथी मे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी द्वारा आलेख लिखल गेल छैक, ताहि मे शीर्षक छैक "कर्पूरी जीक बाद आब के करत विपक्ष कें मर्यादित।'' मात्र एहि सं अर्थ लगाओल जा सकैए जे सत्ता पक्ष मे तं स्वयं कार्य करिते रहथि, मुदा विपक्षो से कार्य करबा लैत रहथि, से अपना ढंग सं। विपक्षक एहेन मर्यादा जं केओ रखलथि तं नाम लेल सकैए हुनका बाद अटल बिहारी बाजपेयी जीक। जे हुनकहि जकां विपक्षो सं संतुलन बनाए काज करबा लैत छलाह। बिनु हो हल्ला केने बिनु एकटा आदर्श स्थापित क' विपक्षक भूमिका मे रहथि। पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद मृत्युक पश्चात लिखने छथि "कर्पूरी जी चलि गेला मुदा छोड़ि गेला हमरा सभ लेल समाजवादक सन्देश।'' समाजवाद एकटा सन्देश मात्र नहि, समाजवाद पैघ विचारक सार थिक। पूर्व सचिव सह नेता यशवंत सिन्हा लिखैत छथि "हम हुनका संगे सचिव पद पर कार्य कएने छी। कतेको बेर भाषण सुनबाक अवसरि लगिते छल। ओ भाषण ध्यान सं मात्र जनते नहि सुनथि, नेता सभ सेहो ध्यान सं सुनथि।'' ओ अपन भाषण देबा काल मे मात्र भाषणे नै दैथि, हुनका द्वारा पक्का वादा होइत छलै। बजबाक क्रम मे भासथि नहि। जे बाजथि ओ पुराबथि यैह तं हुनकर विशेषता रहनि।

देशक चिंतक आ त्यागक प्रतिमूर्ति

जननायक कर्पूरी ठाकुर जी एकटा विराट चिंतक रहथि। हुनकर चिंता अपन देश – समाज लेल देखल जाइत रहलनि। हुनका वाणी पर पूर्ण नियंत्रण छलनि। ओजस्वी भाषण सुनि लोक उत्साहित होइत छल। बजबाक क्रम मे ओ अन्य नेता जकां नहि बजैत छलाह। आडंबरी भाषण मे विश्वास नहि रखैत छलाह, तें हिनक भाषण मे चिंतन देखल जाइत छलनि। स्पष्टवादी विचारधाराक समर्थक रहथि तें कतेको बेर अपन भाषण सं विपक्ष कें तिलमिला दैत छलथिन। हिनक जीवनक मूलमंत्र रहनि संघर्ष, त्यागक भावना ओ देश सेवा। ओ मात्र हजाम परिवारे नहि सम्पूर्ण भारतक लेल गौरवपूर्ण काज क' सिद्ध कएलथिन्ह जे निजी स्वार्थ कोनो सफल राजनेताक गुण नहि होइत छैक। गरीबक हिस्सा लेल, पिछड़ल लोकक हिस्सा लेल सदिखन लड़ैत रहलाह। अपन जीवन मे ओ बहुत महत्वपूर्ण काज कएने छथि। एकटा प्रसंग हुनक बेटाक पढ़ाइक सम्बन्ध मे अछि "एक बेर हुनक बेटा पढ़ाइक समय मे बीमार पड़ि गेलथिन। जाहि सं ओहि वर्ष मेडिकल मे दाखिला नहि भ' सकलनि। ताहि बीमारक हालति मे जननायक कोनो मददि नै कएलथिन एकटा मुख्यमंत्री केर रूप मे। ओ देखबा तक लेल नहि अएलथिन। ओना देशक ओहि समयक प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी दू बेर देखबा लेल गेल रहथिन। संगहि कहलथिन इन्दिरा गांधी जी – जे हम सरकारी खर्च सं इलाज करबा दैत छी, मुदा ई बात तं कर्पूरी जी कें पसीन नहि। तखन कोनो आओर माध्यम सं इलाज भेल रहनि। एहि ठाम बात स्पष्ट अछि जे ओ सामान्य नागरिकक भांति अपने संग अपन परिवार कें राखए चाहलथिन आ रखबो कएलथिन। परिवारक लोक ई बात कहियो नहि बुझलक जे हमरे बेटा वा हमरे पिता वा हमरे पति वा हमरे दादा मुख्यमंत्री छथि। ओ जेना जनता कें मुख्यमंत्रीक दृष्टि सं देखैत छलाह तहिना अपन परिवारोक सदस्य कें। न जमीन न मकान न सम्पत्ति यैह तं हुनक इमानदारी रहनि। "एटका प्रसंग बेटीक वियाह सं जुड़ल अछि। जननायक कर्पूरी ठाकुर जीक बेटीक वियाह हेबाक छलनि ताहि हेतु वर कें देखबाक योजना बनलै। ओ सरकारी गाड़ी नहि उपयोग कएलथिन। भाड़ा पर टैक्सी क' वर कें देखबा लेल गेलथिन। बियाह सेहो मंदिर पर हेबाक योजना छलै। मुदा परिवारक जिद्द पर घरे मे बियाह सम्पादित भेलै। जाहि मे कोनो अधिकारी, प्रशासक आदि कें हकार तक नहि देलथिन। सभ कें मना क' देलथिन जे एहि ठाम कोनो हेलीकॉप्टर आदि नहि उतरि सकैए। "भाषा, साहित्य, कला आदि सं लगाउ रहनि। भाषाक लेल सेहो चिंतित रहथि तें उर्दू भाषा कें दोसर राजभाषा बनबै मे महत्वपूर्ण योगदान छलनि।'' एक बेर हिनकहि सरकार मे विधायक सभ कें सस्ता मे जमीन उपलब्ध करेबाक योजना आयल। सभ केओ जमीन कीनए लगलथि। हिनको जमीन लेबा लेल कहल गेल। मुदा जननायक जी नहि लेलथिन जमीन। विधायक सभक पूछला पर कहलथिन हमरा नहि काज अछि। फेर पूछल गेलनि अहांक बाल – बच्चा लेल तं भ' सकैत काज। कहलथिन जननायक जी नै नै ओ लोकनि गाम मे रहता। "एहेन जे त्यागी छथि ओ मनुक्खक रूप मे ईश्वरो सं बढ़ि क' कहल जा सकैत अछि। एकटा आओर प्रसंग जननायक जीक त्याग भावनाक पक्ष पर बल दैत अछि – जखन मुख्यमंत्री बनि गेलाह जननायक कर्पूरी ठाकुर जी तखन अपन पुत्र रामनाथ जी कें पत्र लिखैत छथि। "हम मुख्यमंत्री बनि गेलहुं अछि, ताहि कारणे कोनो लोभ – लालच मे नहि पड़ब। केओ दोसर लोभ देत, अहां अस्वीकार करब। जं अहां स्वीकार करब तं हमर बदनामी हएत, जे हमरा एकोरती पसीन नै पड़ैए। "एकटा आओर प्रसंग हुनक परिवार सं अछि – हुनक बहिनोइ हुनका लग नौकरीक मांग कएने छलथिन। ओ हुनक सभ बात सुनि किछु क्षण गंभीर भ' गेल रहथिन। तखन जननायक जी पचास टाका निकालि कहलथिन जे जाउ अस्तूरा – कैंची सभ कीनि लेब। अपन पुश्तैनी धंधा करू जा कए। एहेन – एहेन प्रसंग कोनो व्यक्ति कें विशिष्ट बना दैत छैक। सूनि – सूनि रोइंया ठाढ होअय लगैत छैक।

त्यागक प्रतिमूर्ति जननायक जी कतेक त्यागक बानगी छोड़ि चलि गेल छथि। जकर बखान करब सामान्य सन बात नहि। एकटा प्रसंग अछि जे हुनक फाटल कुर्त्ता तं पहिचान बनि गेल छलनि। विधायक सभ बैसल रहथिन। हुनक फाटल कुर्त्ता देखि एकटा विधायक हंसी करैत बजलथिन जे एकटा मुख्यमंत्रीक कतेक वेतन हेबाक चाही, जाहि सं गुजर भ' सकै। किछु रूपया चंदा कएलथिन चन्द्रशेखर जी। चन्द्रशेखर जी ओ रुपया जननायक जी कें दैत कहलथिन जे एहि रुपया सं अहां कुर्त्ता - धोती बनेबै। जननायक कर्पूरी ठाकुर जी तुरंत कहलथिन एहि रुपया कें मुख्यमंत्री राहत कोष मे जमा क' दैत छियै। "ई सभ घटना पैघ तपस्वीक घटना अछि। एहेन लोक कें तपस्वी सेहो कहल जा सकैत अछि। जकरा मात्र दोसरक हित सं सम्बन्ध हो। जकरा आपन माटि आ देशक प्रति चिंता हो। रोहतास मे एकटा शिविर भेल छलै 1986 ई. मे, जाहि मे विषय रहै बर्तमान शोषण व्यवस्थाक चुनौती। जाहि मे अन्तिम वक्ता रहथि जननायक कर्पूरी ठाकुर। ओ बजबाक क्रम मे कहलथि " गाम मे पुलिस आ सामंतक गठजोड़ छैक, जे दमनकारी नीति चला रहल अछि। ताहि लेल मुक्ति सेना कें उचित प्रतिरोध आ प्रतिकार करबाक चाही। जाहि गाम मे मजदूर - किसान क्रियाशील भ' गेल छथि हुनका सभ कें अन्य स्थान पर सहयोगी केर भूमिका मे कार्य करबाक चाही।''

जननायक कर्पूरी ठाकुर जीक विचार आ आजुक समय

जननायक कर्पूरी ठाकुर जीक विचार सभ दिन विचारणीय रहल अछि। सभ समाज मे सभ तरहक लोक रहैत छथि। स्वत: जे अगुआएल छथि अपन कर्म आ मेहनतिक बल पर ओ ठीक। सभ जाति मे किछु पछुआएल लोक रहैत छथि, कारण जे हो। ताहि लेल उचित विचार करब आवश्यक अछि ओकर जीवन - स्तर उठेबा लेल। आरक्षणक नीति जे आइयो लागू भ' रहल अछि ओ सभ नीति ओहि समय मे कर्पूरी जी सोचि चर्चा क' चुकल रहथि। आइ ओकरा लागू क' नाम कमाओल जाए रहल अछि। शोषक वर्ग सभ दिन सं शोषण करैत आबि रहल अछि, चाहे ओकर रूप - स्वरूप जे हो। ताहि लेल आवाज उठाएब, ओकर अस्तित्त्व रक्षा करब जननायक जी लेल श्रेष्ठ श्रद्धांजलि भ' सकैत अछि। कर्पूरी जीक गुरु रहथिन डॉ राममनोहर लोहिया। राममनोहर लोहिया सामाजिक सेवक रहथिन। ओ बहुत रास एहेन बात समाजक स्वरूप बदलै लेल उठेलखिन जाहि मे गरीब - पछुआएल लोकक कल्याण छलै। कर्पूरी जी हुनक आदर्श पर चलि प्रमाण छोड़ि चुकल छथिन। भाषणक क्रम मे नेता लोकनि जननायक जीक नाम ल' कहैत छथि जे हम तं हुनके मार्ग पर चलैत आबि रहल छी। हमर ओ राजनीतिक अभिभावक रहथि। कष्टक बात ई अछि जे ठीके ओ चलैत आबि रहल छथि मुदा विपरीत दिशा मे। कहां केओ आइ हुनक आदर्शवादी विचारधारा जे गरीब - पछुआएल लोकक हित लेल छलै, चलै छथि। मात्र मंचीय भाषण लेल कर्पूरी जीक नामक उपयोग कएल जाइत छैक जे अन्याय थिक। आइ - काल्हि कोन राजनेताक अपन मकान - जमीन नै छनि ? किनका सोन - चानी आ फिक्स्ड डिपोजिट नहि छनि ? सभ कें छनि आ देशहि नहि विदेशो मे। आइ - काल्हि जतेक खर्च नेता अपन सर्फ - लील मे करैत छथि, ततेक मे कोनो छोट छिन विकासक कार्य भ' सकैत अछि। हुनक मोटरक खर्च सं सरकारी वृद्धाश्रम बनि सकैत अछि। हुनक सुरक्षा पर खर्च सं कतेक गरीबक बेटीक वियाह भ' सकैत अछि। आइ उल्टा बसात चलि रहल अछि। आजुक समय मे आधा शहर मे नेता लोकनिक अट्टालिका बनल अछि। अधिकांश नेताक पैघ - पैघ फैक्ट्री, स्कूल आ ठीकाक काज चलैए। मुदा जननायक जी अपन घर धरि नहि बना सकलाह, जे एकटा इतिहास अछि। जननायक जकां वास्तविक रूप मे नेता होयब, बहुत कठिन अछि। आवश्यकता अछि एहेन सपूत हेबाक, जे समाजक सेवक बनि देश लेल सोचताह।

17 फरवरी 1988 क' दिन एकटा सूर्य समान जन केर नायकक अवसान भ' गेल छल। सम्पूर्ण लोक मे उदासी देखाइत छल। देशक सम्पूर्ण अखबार मे न्यूज छपल छल। विभिन्न नेता, प्रशासक गण, विचारक गणक विचार आयल छल, जे रोमांचकारी छल। किएक जननायक जी कुशल राजनीतिक योद्धा मात्र नहि छलाह, ओ समाजक सेवक आ नायक बेसी छलाह। देशक चिंतक छलाह। अपन कर्मक बल पर चहुं दिस इजोत पसारि चुकल छलथि। ओहने दीप फेर सं जरबथि नेता लोकनि, गरीबक हिस्सा दियाबथि ओ लोकनि। अत्याचार पर अंकुश लगै राज्य मे, तखने हिनक सुच्चा श्रद्धांजलि भ' सकैत अछि। नमन अछि एहेन विराट व्यक्तित्व आ विमल हृदयक स्वामी कें, जे जन सं जननायक बनि इतिहास पुरुष कहा गेला।

सन्दर्भ

1. महान कर्मयोगी : जननायक कर्पूरी ठाकुर - संपादक - डॉ. भीम सिंह (प्रभात प्रकाशन - दिल्ली)
2. जननायक कर्पूरी ठाकुर जी पर एमफिलक शोधकर्ता सत्यप्रकाश जी सं गपसप केर आधार
3. https%//youtu.be/0kFg2mkHY_0
4. https%//hi.wikipedia.org/wiki/»
5- https://m.youtube.com/watch\v¾xbMx-Wy3N6voº
6- https%//hindi.firstpost.com/politics/anniversary&special &karpoori&thakur&bihar&chief& minister&who&when&died& left &only&a&hut&for&his& family&89 900.html
7- https%//m.youtube.com/watc h\v¾E9S-faoReqs8º
8- ht tps%//m.youtube.com/watch\v¾s0kyPsqSV&8º
9- https%//satyagrah.scroll.in/article/113087/
10- http%//m.bharatdiscovery.org/india/
11- www.prabhatbooks.com/mahan&karmayogi&jannayak&karpuri&t hakur&vol&1.htm
12- https%//hindi.news18.com/tag/karpuri&thakur

पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

✍ शीतल कुमारी



शिक्षा : एम.ए. (मैथिली) शोध छात्रा (एनईजे, जेआरएफ) यूजीसी, ल.ना.मि. वि.वि., दरभंगा।
कृति : कविता, कथा, समीक्षात्मक एवं शोधपरक निबंध, आलेख आदि पत्रिका एवं स्मारिका मे प्रकाशित।

सम्पर्क:
पिता-डॉ. विद्यानाथ झा, दिग्घी पश्चिम (दरभंगा), प्रोफेसर कालोनी, पिन-846004
ग्राम-केवटी, जिला-दरभंगा
मो. 6203298597
ईमेल :
shitalmishra87@gmail.com

जनिकर सामान्यो गप्पमे हास्य ओ वाकपटुताक तेहन भरमार रहैछ जे श्रोता हंसैत-हंसैत लोट-पोट भ' जाय मुदा अघा नहि सकैछ। जनिकर वाक्चातुर्य ओ प्रत्युत्पन्नमतित्व ताहिना चमत्कृत करैछ जेना हुनकर साहित्य। कविवर सुमनजी हिनकर आशादिशामे कवि परिचय लिखबाक प्रसंग अपन उद्गार व्यक्त करैत कहैत छथि- ''जतबे कलम चलित-वलित, ततबे बचनहुं ललित कलित, यदवत सभा सम्मेलनक मंच बदवत रूपचित्रक रंगमंच, यवैत गामघरक गोष्ठि, जहिना पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ कालम ताहिना कथा वाचक प्रखर भास्वर।''

पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क' जन्म ज्येष्ठ कृष्ण पड़ीब 1925 ई मे भेलनि। अपन विद्वान पिता पं. मुक्तिनाथ मिश्रक बाट पर चलैत ई संस्कृत शिक्षा ग्रहण कैलनि। व्याकरण मे आचार्य क' 1947 ई. सं एम.एल. एकेडमी मे शिक्षकक रूप मे नियुक्ति भेलाह। एहि पद पर ई लगातार पैंतीस वर्ष धरि कार्यरत रहलाह आ 1983 ई. मे सेवानिवृत्त भेलाह। एहि मध्य ई विद्यादान ओ मैथिली भाषा साहित्यक उपादानक निर्माण करैत। अनुशासन पालन करैत अपन कर्तव्यक निर्वाह करैत रहलाह।

ई शैशवेसं संगीतक प्रेमी छलाह, किन्तु संगीत शिक्षक हेतु विशेष प्रयास नहि कैलनि। महाराज दरभंगाक दरबारक एक विशिष्ट गायक मांगनि खबास रहथि जनिकासं हरिमुनियम सीख' लगलाह। ई नौ दस वर्षक अवस्थहिसं पार्थिव शिव लिंगक पूजा करैत छलाह एवं ओहि कालमे बेस टोप टहंकार सं चन्दाझाक ई गीत गबैत छलाह-

''शिव जाउ कतै, शरण धयल हम बड़ बिपते / शिव निन्दा जनु रहु बहु करइत लगइत अछि कम / सुनह हमर हित बतिया।''

मैथिली साहित्यक हास्य व्यंग्य परम्पराक कविवर सीताराम झा, प्रो. हरिमोहन झा ओ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ई तीन गोट स्तम्भ थिकाह। कविवर सीताराम झा ठेंठ देशज ओ तद्भव शब्दावलीक माध्यमसं समाज मे व्याप्त विकृति ओ विसंगतिक उपहास कैलनि। हास्य व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहन झा पुरानपंथी लोकनिक आलोचना कैलनि तं अमरजी अपन कवि कर्ममे अपन पूर्ववर्ती हास्य व्यंग्यकारसं प्रेरणाओ प्रभाव ग्रहण कैलनि अवश्य मुदा ई कराक सं अपन स्वतंत्र छविक निर्माण कैलनि, संगहि मैथिली साहित्यकारक प्राचीन तथा नवीन पीढ़ीक बीचक प्रतिनिधि साहित्यकार सेहो भेलाह।

हिनक पोथीक रूप मे पांच गोट कविता संग्रह प्रकाशित छनि- गुदगुदी, युगचक, उनटापाल, ऋतुप्रिया आ आशा-दिशा। वीर-कन्या ओ विदागरी उपन्यास, जल समाधि कथा संग्रह, जीरो पावर आ दहीक सुईचा लघु कथा संग्रह, खजबा टोपी एकांकी संग्रह, मैथिली आन्दोलन एक सर्वेक्षण निबंध, मैथिली पत्रकारिताक इतिहास समीक्षा, अ.भा. मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास तथा मैथिल महासभाक इतिहास। अनुवाद साहित्य मे विद्यापति नीतितरंगिणी, विद्यापति शूक्ति तरंगिणी तथा परशुरामक बीछल बेरायल कथा छनि। म.म. मुरलीधर झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप' तथा दीनानाथ पाठक बन्धु पर मोनोग्राफ छनि। बाल साहित्य कथाकिसलय सेहो साहित्य अकादमी सं प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त हिनका द्वारा सम्पादित अनेक पत्र-पत्रिका ओ ग्रंथ छनि। ई अनेक ग्रंथक भूमिका सेहो लिखने छथि। जाहिमे ओहि ग्रंथक प्रति हिनक दृष्टिकोण, ओकर रचना मे लेखकक सफलताक संग साहित्य मे ओकर महत्व पर सेहो प्रकाश देलथिन अछि।

अमरजी कविक रूप मे सर्वाधिक सफल मानल जाइत छथि। ओना हिनक अन्यो विधाक रचना सबमे जीवन ओ जगतक तात्विक समन्वयक विश्लेषण भेल अछि, मुदा कविता हिनका सर्वाधिक लोकप्रिय बनौलकनि। आ तकर आधार ई बनेलनि हास्य ओ व्यंग्यकें। हिनक कविता मे लोट-पोट क' देबाक क्षमता एतेक दूर धरि रहैछ जे हंसैत-हंसैत आंखिसं पानि पर्यन्त बहरा जाय आ पेटमे बगहा लागि जाय। गुदगुदी, युगचक्र ओ उनटापाल एहि तीनू संग्रह मे बेसी कविता परिवर्तित वातावरणक व्यंग्याश्रित आकलन थिक जाहि मे हास्य स्वाभविक गुणक संग वर्तमान देखबामे अबैछ।

हिनक दुनू उपन्यास सरल ओ ललित भाषा मे रचल गेल अछि। शब्दक संयम सं प्रयोग क' दुनूकें काव्यात्मक रूप देल गेल अछि। पात्र सभक निर्माण एनाक' कैल गेल अछि जेना अपने गाम-धरक लोक। दुनू मे मैथिल ललनाक साहस, आत्मविकास ओ प्रगतिक बाट दृष्टिगोचर होइछ। ताहिना हिनकर कथा सभ हल्लुक ओ गंभीर दुनू तरहक छनि, मुदा सहज-सरल अभिव्यक्ति मे होइतो व्यंग्यक प्रखरता ठाम-ठाम देखल जाइछ। हिनक किछु प्रसिद्ध कथा छनि - जल समाधि, आत्महत्याक पूर्व, जाड़ फेनो अओतै, प्रतिक्रिया, सुराही, हमर कोन दोष, गोबरछत्ता आदि। हिनक समीक्षात्मक ग्रंथ छनि मैथिली पत्रकारिताक इतिहास। ई पुस्तक मैथिली साहित्य मे अपना ढंगक एकसरे ग्रंथ अछि आ दोसर ई मैथिली गद्यक विकासकें रेखांकित सेहो कैलक अछि। एहूसं बढ़ि ई मैथिली साहित्यक विकास मे पत्र-पत्रिकाक योगदान कें प्रमाणित करबाक चेष्टा सेहो कैलक।

अत: कहि सकैत छी जे पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली जागरणक पैघ पुरोधा रहला अछि। मैथिली आन्दोलनकें जन-जन धरि पहुंचयबाक हेतु 'विद्यापति स्मृति पर्वक' आयोजन प्रारंभ कैल गेल, जकरा लोकप्रिय बनयबा मे श्री अमरजीक पैघ योगदान रहलनि अछि। दोसर दिस आधुनिक मैथिली भाषा साहित्यकें आम जनता धरि पहुंचयबा मे श्री अमरजीक योगदान अविस्मरणीय छनि। मैथिली भाषा ओ साहित्यक कोनो आन्दोलन आरंभसं अद्यावधि एहन नहि भेल होयत, जाहि मे अमरजी अग्रिम पंक्ति मे ठाढ नहि होथि। ई समाज मे पसरल सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक विकृतिक कुरूपताकें अपन सहज, विलक्षण प्रतिभाक संस्पर्शसं अनावृतक करबाक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कैने छथि। आइ हिनक छत्र-छाया मे शिक्षा ग्रहण केनिहार छात्र देश-ओ विदेशक आन-आन भाग मे कार्यरत छथि आ मिथिला मैथिलीक परचम लहरा रहल छथि।

भेंट घांट



राज्यसभा केर उपसभापति श्री हरिवंश जी सं भेंट करैत अखिल भारतीय मिथिला संघक पदाधिकारीगण

बाबा, खान-पान आ बिलड़वा

✍ हेमेन्द्र मिश्र



लेखक पत्रकार छथि। संप्रति हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तानमे कार्यरत छथि। ओ बाबा नागार्जुन अर्थात् वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पौत्र छथि।

संपर्क : 521-बी, न्यायखंड-3, इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.) मो. 9312288101

जखन-जखन हम बाबा (वैद्यनाथ मिश्र यात्री) केर 'विजयी के वंशधर' (नागार्जुन रचनावली, भाग-1) पढ़ैत छी, त' हमरा जूलिया चाइल्डक एगो पंक्ति मोन पड़ि जाइत अछि। जूलिया चाइल्ड के जे नहि जानैत छी, उनका लेल ई हम कहि दी जे ओ बीसम सदी मे अमेरिकाक नामचीन शेफ यानी हमर-अहांक जबान मे भनसिया छलखिन। ओ कहने छथिन- पीपुल हू लव टु ईट आर ऑल्वेज द बेस्ट पीपुल। एकर भावार्थ अछि, जिनका खाना खेनाइए पसंद छैन, ऊ हमेशा सबसं बढ़िया लोग होयत छथि। बाबा के हम एहि कोटि मे गिनै छिअई, आ बाबाक इहे खान-पानक आदत मे नुकायल अछि ओहि सवालक सेहो जवाब, जे वक्त-बेवक्त हमरा सं पूछल जायत अछि।

सवाल ई जे बाबा हमरा बिलड़वा कियैक कहैक छलाह?

एकर जवाब सं पहिला बाबा के स्वादक पहिचान जरूरी अछि। आ ई 'विजयी के वंशधर' मे खूब कहल गेल अछि- कनकजीर चावल के सुरभित महीन भात, अरहर की दाल और परवल की तरकारी, कोहड़े के फूलों के पकौड़े बड़े-बड़े, तिलौड़ी, दनौड़ी, तिसियौड़ी, पापड़, तरोई, ननुआ, भिंडी और बैगन, सूरन और अरुई, मछली और सालन, ऊपर से पुष्ट घृत, कसौदी, अचार, नींबू, अंत मे दही, तिस पर सकरौड़ी!!!

निश्चये बाबा केर जीह विलक्षण छलैन। ओ भांति-भांति के स्वाद ल' चुकल छलाह। दलिया मे दही, चीनी आ नून मिलेलाक बाद ओकरा रस ल'-ल' क' खायत हम बाबा के अलावा आई धरि ककरो नहि देखलौं। अपन जीवनकाल मे बाबा जत'-जत' रहला, हमर भरोसा अछि कि ओत' हुनकर स्वादक चर्चा आइ धरि होयत हैत। भोरे सं हुनकर जिज्ञासा रहैत छलैन्ह कि आइ की बनि रहल अछि। मन मुताबित भेल, त' जय-जय, आ नहि, त' फरमाइश करै मे ओ पाछू नहि रहैत छलाह। बाबा भनसाघर शौक सं जायत छलाह। आ ई मात्र दरभंगा, तरौनी, दिल्ली वा पटना मे नहि होयत छल, बल्कि ओ सब जगह, जत' हुनकर राति बीतैत छलैन्ह। देश-दुनिया मे पसरल यात्रीजीक महा-परिवारक सब भनसाघर मे हुनकर पहुंच छलैन्ह। ओ जा क' एक बेर जरूर देख लैत छलाह। घरक गृहिणी केर खानाक स्वाद बढ़ैबाक तरीका बता दैत छलखिन- अमुक सब्जी मे ई मसाला दिऔ, आ अमुक चीज एना पकाऊ। हमरा कखनो-कखनो लागैत अछि कि बाबा साहित्य मे निपुण होयत-होयत पाककला मे केना पारंगत भ' गेलाह। चूंकि जाहि समय ओ ई धरा-धाम सं विदा भेला, ताहि समय हम साहित्य सं ओते परिचित नहि छलौंह। बाबा हमरा लेल सिर्फ बाबा छलाह, यात्री आ नागार्जुन नहि। मुदा आब बुझाइत अछि कि घरक गृहिणी मे बाबा शायद ओ नेह खोजैत रहैत छलाह, जाहि सं बाल ठक्कन अपन मां केर गुजरि जैबाक बाद महरूम रहलाह।

बाबाक आखिरी दस सालक बात करू, त' हुनकर दिनक शुरुआत कॉम्प्लानक साथ होयत छल। एकर एकाध घंटा बाद दलिया, आ फेरो दु-तीन घंटाक बाद खाना। खाना बनय सं पहिले हुनका जरूर जिज्ञासा रहैत छलैन्ह कि की बनि रहल छई, मुदा बनलाक बाद जे सामने आबि

जाइत छलैन, मन सं खाइत छलाह। छोड़ै नहि छलाह। अगर पसिन नहि भलनि, त' बगल मे जे खाय लेल बैसल अछि, हुनकर थारी मे राखि दैत छलखिन। खानाक बाद कनि देर आराम आ फेरो बार्ली। एकर बाद घर-आंगन मे कनि देर टहलकदमी आ सांझ होयते रातुक खाना। हां, बीच-बीच मे मिठ-मिष्ठान सेहो होयत रहैत छलनि आ नियमित रूप सं अखबार आ पत्र-पत्रिका जरूर उलटाबैत छलाह।

अहां कहब जे ई दिनचर्या मे एहन त' कोनो खास बात नहि अछि, जकर विशेष उल्लेख कयल जाए। असल मे, अहि मे खास अछि खानाक ऊ वैरायटी, जे बाबाक सामने परोसल जायत छलनि। चूंकि बीमार रहबाक कारणे हुनकर खान-पान मे प्रोटीनक मात्रा ज्यादा रखबाक बात डॉक्टर गणपति मिश्र (बाबाक नब्जक कमान हुनकरे हाथ मे छलैन्ह) कहनै छलखिन, अहि द्वारे छेना, छेनाक मिठाई वा माछ पर ज्यादा जोर दैल जाइत छल। कोनो मैथिल के जौं मिठाई आ मछली बेर-बेर मिलइ, तो बुझू ओकर जीवन तरि गेल! की गलत कहलूं? त' भानसघर सं ई सब बाबा लग ल' जाय के 'जिम्मेदारी' कम-बेशी हमर छल! अहां कहब कि ई त' बड्ड पैघ जिम्मेदारी अहां निभेलौं। मुदा रुकु। हमरा ई मानै मे कोनो संकोच नहि अछि कि ई काजक पाछू हमर की लोभ छल। पापा (शोभाकांत) क शब्द मे कहू, त' ई सब ताहि समय सं चलि आबैत छल, जखन बाबा पहिल बेर गंभीर रूप सं बीमार भेलाक बाद दरभंगा आयल छलैथ।

ई नवम दशकक बात अछि। दमा त' पहिने सं बाबाक देह तोड़ने छलैन्ह। मुदा तखन ओ अनीमियाक शिकार भ गेल छलाह। कारण छलनि, खान-पान मे लापरवाही। हुनकर पैर फुलि गेल छलनि। मदहोशी आब' लागल छलैन्ह। आनन-फानन मे अस्पताल मे भर्ती करायल गेल। इलाज त' चलि रहल छलनि, मुदा शरीर केर मजबूत बनैनाइ जरूरी छलै। डॉक्टरी सलाह पर खान-पान मे प्रोटीनक मात्रा बढ़ाओल गेल। पर्याप्त प्रोटीन वला ई खास भोजन चूल्हा लग सं बाबाक लग ल' जैबाक काज हमहीं करैत छलौंह। स्वाभाविक छई कि ओहि खाद्य पदार्थ मे हमर सेहो दाबेदारी होयत छल। आ ई अधिकारपूर्वक हम बाबा सं लैत छलियैन्ह। बाबा तखने हमरा नामकरण बिलड़वा क' देलथि। आ इहे नाम सं आइ धरि घरक लोग आ जिनका ई पता छनि, ओ सब वक्त-बेवक्त हमरा बजाबैत छथि।

साथ-साथ बैसि क' खाना खयबाक परंपरा हमरा ओहिठम रहल अछि। बाबा जा धरि पलथि मारि क' बैसे वला छलाह, बैसला, मुदा जखन पैर जबाव देब' लगल, त' उनका लेल कुर्सीक व्यवस्था कयल गेल। ओ कुर्सी पर आ हम सब नीचा बैसैत छलौंह। माछ सं हमर विशेष स्नेह ककरो सं नहि छुपल अछि। बाबा सेहो ई बात जानैत छलाह। जाहि दिन थाली मे माछ परोसल जायत छल, बाबाक ठीक बगल मे बैसबाक हमर अधिकार होयत छल। मां (श्रीमती रेखा मिश्र) वा बड़की दीदी (ऋचा) माछक कांट छोड़ाब लेले सेहो बैसेत छलखिन। एहि समय बाबा एगो कौर अपने खाइ छलखिन, त' दोसर हमर थाली मे राखि दैत छलाह। बाबाक ई स्नेह हुनकर अंतिम काल तक हमरा पर बनल रहल। साफ अछि कि हम बाबाकें बुझलिअइ कि नहि, मुदा बाबा हमरा बुझि गेल छलाह। हुनकर अपन बिलड़वा पर पूरा ध्यान रहैत छलैन्ह।

खेनाई-पिनाई के ल' क' बाबाक एगो आर आदत हमर मन मे बसल अछि। बाबा हाथ-विशेष के स्वाद अपन दिमाग मे बैसौने छलाह। जेना कि, हुनकर यदि मानब छलैन्ह कि अमुक चीज हमर मां बढ़िया बनाबैत अछि, त' कोनो दोसर के हाथे बनाओल ओ चीज हुनका पसिन नहि पड़ैत छलनि। मुदा, कोनो-कोनो दिन काज मे उलझल रहबाक कारण दलिया आदि ऋचा दीदी सेहो बना दैत छलथिन। बाबा के पता लागि गेल कि दलिया दीदी के बनाओल अछि, तो हुनकर शब्द होयत छल कि आइ ओ स्वाद नहि अछि दलिया मे। आ, हम सब जहिया उनका सं फुसि बाजि दैत छलिअइ कि आइ दलिया मां बनौने अछि, त' बाबा प्रेम सं भोग लगाबैत छलाह।

एहि द्वारे बाबा के जखन दरभंगा आबै क प्रोग्राम बनैत छल, हम सब खुश भ' जाइत छलौं। हम त' दिन गिनय लागैत छलौं। मुदा जाहि समय विदाई क' बारी आबैत छलैह, त' सबहक चेहरा लटकि जाइत छलै। कियैक जा रहल छी बाबा? हम बाल-बुतरूक ई सवाल पर बाबा मुस्करा क रहि जायत छलाह। ई सवालक जवाब हमरा पापाक किताब 'नागार्जुन: मेरे बाबूजी' मे मिलल। एक बेर पापा सं बाबा कहने छलथिन- 'पूरा परिवारक संग ढाई-तीन बरख कतो अपना के जमा ली, त' सब व्यवस्थित भ' जैते। मुदा एतअ त' श्रीमान यात्रीजीक चूतड़ मे कवाछ लागल छन्हि।' वाकई, बाबा के जखन मूड बनि जायत छलैन्ह, ओ विदा भ' जायत छलाह। कोनो पहिने से तय नहि रहैत छलैन्ह। अचानक मोन भेलनि आ टिकट मंगैबाक आदेश जारी भ' जायत छल। दरभंगा सं हुनकर विदाई हम बाल मुकुंद सबकें खूब अखरै छल। रोकबाक गुहार कयल जाइत छलन्हि। मुदा बाबा त' अपन नामे जकां यात्री छलाह। सब मोह-माया आ बंधन से मुक्त। एहन यायावरी आब कहां संभव अछि। की गलत कहलौं?

कोशी अंचलक महान युग कवि: यदुनाथ झा 'यदुवर'

✍ हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ'



एक दर्जन सं बेसी पोथीक लेखक। प्रमुख प्रकाशित कृति, अर्चना (गीत काव्य), आनंद (खंड काव्य), एक बनजारा विजन मे (काव्य), मधेपुरा मे स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, शैव अवधारणा और सिंहेश्वर स्थान, मन्नद्रष्टा घ्यश्रृग्य, कोसी की अनमोल धरोहरें, कोसी तीर के आलोक पुरुष, मैना घाट के सिदघ (कहानी संग्रह)

सम्पर्क:
कला कुटीर, अशेष मार्ग,
लक्ष्मीपुरा मोहल्ला, मधेपुरा,
बिहार-852113

मधेपुरा जिला मुख्यालय सं दस किलोमीटर पूरब-दक्षिणमे स्थित मुरहो गाममे 13 मई 1887 कें पंडित हियालाल झा (पिता)क' घर एकटा यशस्वी बालक 'यदुनाथ' के जन्म भेल। यैह बालक महान स्वतंत्रता सेनानी आ मात्र बीस वर्षक अल्पायुमे तत्कालीन मैथिली भाषाक शीर्षस्थ कवि सबके पंक्तिमे विराजमान भेलाह। बिहार लोक-संस्कृति कोश 'मिथिला खंड' क' अनुसार लोक-चेतना आ प्रखरक स्वर के मैथिली लोक-भाषामे अंकित करहि बला साहित्यकार आ राजनीतिज्ञ मे पं. यदुनाथ झा 'यदुवर' के स्थान सर्वोच्च अछि।

यदुवरजी यजमनिकावृत्ति करैत छलाह। ओ बाबू रास बिहारी मंडलक अभिन्न मित्र छलाह। मंडलजीक दलान पर शाखा डाकघर चलैत छल-ओतय यदुवरजी शाखा डाकपाल छल। ओ सरकारी सेवामे रहितो स्वतंत्रता संग्रामक दिस उन्मुख छलाह। परिणाम ई भेल जे हुनका सरकार एहि पद सं हटा देलक। तकर बादो यदुवरजी रास बिहारी मंडलक संग नहि छोड़लक। रास बिहारी लाल मंडल भारतीय स्वतंत्रताक अप्रतिम सेनानीक संग महान समाज सुधारक सेहो छलाह। ओ यादव समुदायक जागरणक आह्वान केने छलाह। ओ घोषणा केने छलाह जे यादव शुद्र नै छथि, बल्कि वैश्य आश्रमक सदस्य छथि। मरणोपरांत हुनकर क्रियाकर्म तेरह दिन पर हेबाक चाहि। मंडलजीक एहि घोषणा के यदुवर जी भरपूर समर्थन केलनि। ओहि कालखंडमे सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज मंडलजीक एहि आह्वानक विरोध केलक। मुदा यदुवरजी एहि सामाजिक विषमता क' तोड़य के लेल यादव सबहक संग देलक।

यदुवरजीक सत्तर वर्षीय पुत्र पंडित ब्रजकृष्ण झाक अनुसार, 'यदुवरजीक एहि काज सं क्षुब्ध भ' के तत्कालीन दरभंगा महाराज हुनका एकटा पत्र लिखलनि जे विशिष्ट काव्य-प्रतिभा सं सुसंपन्न भेलाक बादो यदुवरजी यादव सबक संग द' रहल अछि। ओ व्यर्थ यादवक पराधीनतामे रहि के गरीबी के अंगीकार क' मुरहो मे पड़ल छथि। महाराज आगू सूचित केयलनि जे जों यदुवरजी चाहे ते ओ अप्पन जमींदारीमे सं हुनका पचास बीघा जमीनक परवानगी द' सकैत अछि, मुदा ओ यादवक संग छोड़ि दैथि।

यदुवरजी एकरा अस्वीकार क' के महाराज के लिखलनि,

"जननी जन्मभूमिच जहान्वी च जनार्दन। जाति मध्ये न भोक्तव्यं जकारा पंच दुर्लभ।"

यदुवरजी अंत अंत धरि यादवक एहि समाजसुधारक अभियानमें संग दैत रहलाह।

रास बिहारी बाबूक निधनक पश्चात् यदुवरजी असगरे पड़ि गेलाह। डाकघरक नौकरी गंवाक' ओ जीविकाविहीन सेहो भ' गेलाह। कोशीक विनाशलीला आओर परिवारक असह्य बोझक अप्पन निरुपाय अवस्थामे यदुवरजी मुरहो छोड़िके कुमारखंड प्रखंडक अंतर्गत गढ़िया गाम चलि आयलाह। ओतय चेचक सं पीड़ित भ' के मात्र 44 वर्षक अवस्थामे 1935 ई मे स्वर्गीय भ' गेलाह। यदुवरजीक एकमात्र प्रकाशित पोथी 'मिथिला गीतांजलि' अछि आ छिटपुट काव्य अनेक अछि, जे हुनकर राष्ट्रीय चेतनाक सशक्त संवाहक अछि।

*प्रस्तुत लेख लेखकक हिंदी पोथी ' कोसी की अनमोल धरोहरें' मे प्रकाशित लेख केर अनुदित आ संपादित अंश अछि। – **अनुवाद : विनीत उत्पल***

पंडित यदुनाथ झा 'यदुवर' मे राष्ट्रीयताक अजस्र स्रोत प्रवाहित छल। हुनकर देशप्रेम गौरवशाली मिथिला अंचल सं आरम्भ भ' के भारतीय राष्ट्रवादक महासागरमे तिरोहित भ' जायत अछि।

'जय जय मिथिला मातृ धरा,
भारत खंड बिच सभसं सुन्दर,
अतिशय पावन पूज्य वरा
यज्ञ भूमि और पुन्य भूमि, तप भूमि आदि कहि ख्यात सदा
वस्धि अनेक तपोधन मुनिगन
जनिक कीर्ति अवदात सदा
शत शत मानव रत्न प्रसवनी
सिद्ध विज्ञ दर्शन कारी
पुनि जहं प्रगटलि सती शिरोमणि
आदि शक्ति विदुषी नारी'

मिथिलाक गौरवोज्ज्वल इतिहास-संस्कृति आ परंपरा सं अपन भारत देश संवर्धित भेल अछि। ओतुका विज्ञ मनस्वी आ भारती सन विदुषी स्त्रीक इतिहासक नव धारा आ राष्ट्रक नव दिशा प्रदान केने अछि। मिथिलाक सदानीरा स्त्रीक तीर सदाबहार कानन सं संपूरित तपोवन अछिण

'सुधा समान स्वाद औ निर्मल
जल सं वह नित जहां धारा
कमला विमला दुग्धवती औ
कोशिबागमती कृत सारा
अतिपावन रमणीक सुकानन
कांचन चम्पा तपोवना,
हिमवतादि सुर कानन सदृश
के बरनत शोभा सदना।'

मिथिलाक धारक तीर नंदन-कानन सं कम रमणीक नै अछि। जों कतो स्वर्ग अछि ते एहि तीर पर अछि। एतुका भूमि उर्वरा अछि, काननमे द्रुमदल फल सं लादल अछि, एतुका शीतल मंद सुगंधित हवा स्वास्थ्यवर्धक अछि। कूप, तड़ाग, स्वच्छ जल सं भरल-पूरल अछि। ई कोनो साधारण धरती नहि अछि। स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के सासुर अछि।

'शस्य शालि औ कंद मूल फल
फुल अनेक जतय सुखकर
शीतल मंद सुगंध युक्त जहं
बहथि वायु नित जनमनहर
वापी कूप तड़ाग आदि जहं
रामी अनेक स्वच्छ नीरा
लुब्ध हृदय भेलाह देखि जे
पुरुषोत्तम श्री रघुवीरा
कानन ओ उद्यान सदा जंह
हरित प्रसून युक्त राजे
गूंज मधुप गन बैशी बैशी'

प्राचीन भारतीय वांगमयमे मिथिला सर्वाधिक चर्चित रहल अछि। कविवर यदुवर एहि पुण्या, पूज्या आ रम्या भारती कें भारतवर्षक मुकुटमणि मानैत अछि, जे हुनकर देश-भक्तिक परिचायक अछिण

'अगम, निगम पुराण और इतिहास
मध्य वर्णित मिथिला
जनमान मुग्ध करौ अति पुण्या
धन्या रम्या पूजा स्थला
जननि जनक औ विश्व जननि हुक
जननी जय जय जय पुण्य धरा
यदुवर सकल सौख्यदा, शुभदा
देश मुकुट मणि विश्वम्भरा।'

कविवर 'यदुवर' के राष्ट्रीय कवितामे स्थायित्वक समावेश अछि आ सामयिकताक प्रतिबिम्ब सेहो। ओ अधिकांशतः सामायिक समस्या क' ल' क' राष्ट्रीय कविता के सृजन केने छथि। सामाजिक सद्‌भाव आ पारस्परिक एकता तहियोका भारतक सामायिक समस्या छल। लोक आपसमे एक-दोसराक प्रति बैर भाव पालैत छल। कवि एहन परिस्थिति सं कतेक विकल अछि, देखियौ-

भाग्यहीन भारतवासी के जनु कहियो विसराउ / सबका वचन सुने हितक पुनि वैर विरोध हटाउ।

वर्तमानमे कविक सम्मुख ओकर अपन पराधीन देश अछि आ ओकर लक्ष्य छै देशोन्नति आ पराधीनता-

'देशोन्नति हित स्वार्थ नहि परित्याग अव्यर्थ थिक, / तैखन जीवन सफल ठीक नहिं तों सब किछु व्यर्थ थिक / मातृ भूमि उद्धार पाठ जे सतत पढै छथि / नित निर्भय उन्नतिक शिखर सोपान चढै छथि।'

अपन मातृभाषाक प्रति एहि कविक व्यामोह सर्वत्र प्रदर्शित होयत अछि। हुनकर 'मातृभाषा' शीर्षक कविता एहि तथ्य क' रेखांकित करैत अछि।

'उन्नति निज भाषाक ठीक सबहिक सार / तैं इज भाषा का' करिय सब जन मे परचार / पढू गुनू बाजू लिखू निज भाषा सब व्यक्ति / पुनि हो उन्नति जाहि सं करू प्रचार भरिशक्ति।'

स्मरण करू जे ओहि समय अंग्रेजक निरंकुश शासन छल। अंग्रेजी भाषाक बोलबाला छल। हमर अपन भाषा वाण-विद्ध-विहगी कैक तरहे भू-लुंठित छली, मरणासन्न छली, मुदा जनताक भाषा चोट खा क' नहि मरत-क्याकि ओकरा कविवर 'यदुवर' के तरहे संजीवनी पियाबैक लेल यशस्वी साहित्यकार देश मे अछि।

'मातृ मातृभाषा तथा मातृभूमि ई तीन, / एके सब सेवथि विवुध त्यागथि अधम मलीन।'

भावक सम्यक अभिव्यक्तिक कला संपूर्ण परिचित छलाह कवि 'यदुवर'। ओ अप्पन छंदक निर्माण अपन भावक उच्चता, पूर्णता आ सुन्दरताक ध्यानमे राखैत छैथ। भावसाधनाक समान हुनकर शब्द-साधना विलक्षण अछि। सुन्दर, कोमल आ भावाभिव्यंजक शब्दक चयन करहि मे 'यदुवर' सिद्धहस्त छैथ, जाहिमे ओ अपन हृदयक रस आ रंग भरिके अलंकृत क' देने अछि। कविवर यदुवर शब्दक प्रकृति सं पूर्ण परिचित छैथ। व्यंजन शक्ति, ध्वनिमयता आ चित्रोपमीता कें दृष्टि मे राखि के ओ अपन रचनामे कतेक शब्दक प्रयोग केने छैथ। ओ मैथिली काव्य-जगतमे नवीन विशेषता आ चेतना ल' क' प्रादुर्भूत भेल छलाह। हुनकर भावमे हिमगिरीक ऊंचाई आ विचारमे सागरक गहराई छलाह। ओ स्वयं छलाह सार्वभौमिक राष्ट्रीय भावनाक प्रतिपादन करहि वाली कविताक युग कवि, कोशी अंचलक महान विभूति।

'यदुवर' जी ओ हुनक जीवन

✍ ललितेश मिश्र



बनगांव, सहरसा निवासी ललितेश मिश्र बीएन मंडल विश्वविद्यालयक स्नात्तकोत्तर अंग्रेजी विभाग सं सेवानिवृत। 1968 ई मे पहिल कथा प्रकाशित। हुनक लिखित मैथिली साहित्यसं संदर्भित समालोचनात्मक निबंध संग्रहक पोथी 'प्रस्तावना' वर्ष 2000 ई मे प्रकाशित अछि।

सम्पर्क:
ग्राम+पोस्ट-बनगांव, जिला-सहरसा, बिहार-852212
मोबाइल-8877999177

आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रसंग बहुधा ई आरोपित कएल जाइत रहल अछि जे स्वतंत्रता संग्राम जनित चेतना सं उन्मन रचनात्मक प्रवृतिक समाहार एहिमे नहि भेल अछि आ जं कोनहु रचनाकार राष्ट्रीय चेतनाक अभिव्यक्ति देलहुं अछि तं से स्थूल रूपाहि मे उद्भासित होइत अछि। राष्ट्रीय जागरण बोधक जे उद्दात अभिव्यंजन मैथिली साहित्य मध्य अपेक्षित छल से दृष्टिगोचर नहि भेल।

किन्तु, एहि शताब्दीक दोसर एवं तेसर दशक मे रचल ओ प्रकाशित किछु रचनाकारक कृतिक पर्यालोचन सं ई विषय स्पष्ट रूपें बुझबा मे आबि जाइत अछि जे उपरोक्त आरोप सर्वथा निर्मूल ओ भ्रांतिपूर्ण अछि जे आन कोनहु आधुनिक भारतीय भाषा सं जं बेसी नहि तं थोइबो न्यून राष्ट्रीय चेतनाक अभिव्यक्ति मैथिली साहित्य मध्य नहि भेल अछि।

एहन जे कतोक रचनाकार छथि जनिक कृतिक पोर-पोर मे राष्ट्रीय विचारधारा प्रवहमान अछि, ओ जनिक कृति सं हुनक उदात राष्ट्रवादी व्यक्तित्वक परिचय हमरालोकनिकें भेटैत अछि, ताहि मध्यवर्गीय यदुनाथ झा 'यदुवर' निस्संदेह अग्रगण्य छथि। परंच, ई खेदक विषय थिक जे एहन महत्वपूर्ण रचनाकारक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक प्रसंग अद्यावधि अत्यल्प अनुसंधान ओ अनुशीलन भ' सकल अछि।

हमरा लोकनिक साहित्येतिहासहु मे 'यदुवर'क प्रसंग बहुत थोड़ विषय उल्लिखित भेल अछि ओ ताहू मे हुनक व्यक्तित्व संबंधी परिचय नहिएं जकां अछि। डॉ. श्री जयकान्त मिश्र आ हुनक समस्त परवर्ती इतिहासकार ओ समालोचकवृन्द तें इहो ठोकान नहि क' सकलाह जे हुनक जन्म कहिआ भेलैन्हि ओ राष्ट्रीय चेतना सं आप्लावित रचना कर्म दिस कोन परिस्थिति मे प्रवृत भेलाह। फलत: इतिहासकार लोकनि द्वारा हुनक जन्म संबंधी जे सूचना देल गेल अछि, से अशुद्ध ओ भ्रांतिपूर्ण अछि ओ ताहि पर आधृत भ' किछु दिन पूर्व 'भाखा', मैथिली मासिक, पटना द्वारा सन् 1888 ई. मे हुनक प्रादुर्भाव मानि जन्मशतीक अवसर-विशेष पर निबंधहु सभ प्रकाशित क' हमरालोकनिक हास्यास्पद स्थिति आओरो देखार भेल अछि। तें, 'यदुवर'क व्यक्तित्वक प्रसंग जे किछु प्रकाश मे आएल अछि, से सभ अनुमानित अछि ओ से विषय कतेक सत्य-सम्मत होएत से तं समयक अन्तरालाहि सं जानल जाए सकत।

हमर अपन अनुसंधान सं एतबा विषय निर्विवाद भ' गेल अछि जे मधेपुरा जिलान्तर्गत मुरहो ग्रामवासी ओ दड़िहरै रतौली मूलक काश्यपगोत्रीय यदुनाथ झा 'यदुवर'क जन्म सन् 1892 ई. ओ निधन सन् 1935 ई. चैत्र, कृष्ण, तृतीयाकें ओही जिलाक अन्तर्गत कुमारखंड प्रखण्डक गढ़िया ग्राम मे चेचक रोग सं भेलेन्हि। ओ स्वर्गीय हियालाल झाक ज्येष्ठ पुत्र ओ स्वर्गीय भानू झाक पौत्र छलाह। हुनक माझिल भ्राता स्व. योगनाथ झा ओ कनिष्ठ भ्राता स्व. पुष्पनाथ झा प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी छलथिन्ह।

पारिवारिक निर्धनताक कारणें 'यदुवर'क विधिवत् शिक्षा लोअर प्राइमरी धरि गामहिक विद्यालय मे भेलैन्हि आ तत्पश्चात् आगां पढ़बा-लिखबाक सुयोग प्राप्त नहि भ' सकलैन्हि। पछाति, विवाहोत्तर पारिवारिक भार वृद्धिगत भेला उत्तर जीवन-यापन मे असौकर्यक अनुभूति सं आकुल भ' यजमानी वृत्ति अपनौलैन्हि।

हुनक मुरहो ग्राम अदौ काल सं यादव जातिक गाम रहल अछि ओ 'यदुबर'क ताहि मध्य एकमात्र ब्राह्मण परिवार छलैन्हि।

अंग्रेजी राजत्वकाल मे मुरहो ग्राम एक गोट स्वतंत्र जमींदारी छल ओ बिहारक भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्व. विन्देश्वरी प्रसाद मंडलक पिता सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्व. रासबिहारी मंडल तकर जमींदार छलाह।

स्व. 'यदुवर'क तीन पुत्र मे सं तत्काल एक गोट जीवित पैंसठ वर्षीय पुत्र पं. ब्रजकृष्ण झाक अनुसार प्रायः एक्कैस वर्षक अवस्था मे, अर्थात् सन् 1913 ई. मे, मुरहो गामहि मे अवस्थित सब-डाकघर मे 'यदुवर' सहायक डाकपालक पद पर नियुक्त भेल छलाह। एहि ठाम ई उल्लेखनीय अछि जे उक्त डाकघर प्रखर स्वतंत्रता-सेनानी स्व. रासबिहारी मंडलक दलान पर छल ओ तें स्वाभाविक अछि जे स्व. मंडलक संसर्ग 'यदुवर'कें अधिक काल भेल होएतैन्हि।

हमरा एहन प्रतीत होइत अछि जे स्व. मंडलक निकटतम संसर्ग 'यदुवर' कें सरकारी सेवा मे रहलाक पश्चातो स्वतंत्रता संग्राम दिस उन्मुख कएने होइक। परन्तु स्व. मंडल सदृश हुनक कोनहु राजनीतिक गतिविधि नहि रहैन्हि। जीवन-यापनक विकराल समस्या सन्मुख छलैन्हि, सक्रिय भेला सं नौकरी गमएबाक ओ आनहु रूपें प्रताड़ित होएबाक भ' छलैन्हि। एतदर्थ, ओ रचनाक माध्यमे स्वतंत्रता संग्राम मे अपन अमूल्य योगदान देबाक लेल अभिमुख भेल होथि-से अनुमान करब संगत प्रतीत होइत अछि।

किन्तु, 'यदुवर' जखन सहायक डाकपालक पद पर आसीन भेलाह ओ स्वर्गीय रासबिहारी मंडलक सान्निध्य पौलन्हि, तखनहि सं रचनाकर्म दिसि प्रवृत्त भेल होएताह, से मानब कठिन अछि। संभव थिक जे रचनाकर्म दिसि ओ ताहू सं पूर्वहि अग्रसर भेल होथि।

कारण, एहि काल धरि 'यदुवर'क एक गोट साहित्यिक मित्र पंडित छेदी झा 'द्विजवर'क राष्ट्रप्रेम सं ओत-प्रोत काव्य संकलन 'मैथिली गीत कुसुम' सेहो प्रकाश मे आबि चुकल छल आ ताहि संकलनक कतिपय गीत तत्कालीन भागलपुर जिला (जकर अन्तर्गते वर्तमान सहरसा, मधेपुरा ओ पूर्णियां जिला छल) मे बेस प्रसिद्ध ओ जनप्रिय भ' गेल छल। संभव अछि जे 'द्विजवर'क एहि सठायासहुक प्रभाव 'यदुवर' पर पड़ल होइन्हि ओ ताहि सं अभिप्रेरित भ' राष्ट्रीय चेतना भावक अन्तर्भूत भ' मैथिली काव्य भंडारकें अपन ओजस्वी प्रतिभा सं संबर्द्धित करबाक लेल तत्पर भेल होथि, जे स्व. मंडलक सान्निध्य सं आओरो संबलित भेल हो।

राष्ट्रीय चेतनाजनित एहि नव भावक उन्मेष सं निमज्जित हुनक कतोक काव्य रचना मैथिली-हिन्दीक अनेक पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल अछि जो सर्वप्रथम सन् 1926 ई. मे राष्ट्रीय भाव-धारा सं अभिभूत अपन कएक गोट कविताक संग अन्यो कविलोकनिक रचनाक संग्रह कराए श्री रीतलाल मिश्रक सहयोग सं हुनकहि 'दी यूनाइटेड प्रेस लिमिटेड', भागलपुर मे 'मिथिला गीतांजलि' नामसं प्रकाशित कराओल ओ तकर प्रयोजनीयता कें स्पष्ट करैत एक गोट वृहद् भूमिका ओहि मे सन्निविष्ट कएल।

'यदुवर'क काव्यकृतिक पर्यालोचन सं घोर राष्ट्रीय भावना, मातृभाषा प्रेम, समाज सुधारक लेल हुनक अदम्य उत्साहक सुन्दर परिचय तं होइतहि अछि, हुनक वैयक्तिक जीवनहुक क्रिया-कलाप सं से विषय नीक जकां विदित होइत अछि। जाहि समय अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी स्व. रासबिहारी मंडल सम्पूर्ण देश मे यादव-समुदायक जागरणक आह्वान कएल, ओ ई मत स्थापित कएल जे यादव जन शूद्र नहि थिकह; अपितु, वैश्य आश्रमक सदस्य थिकाह ओ तें हुनकोलोकनिक मरणोपरान्त क्रियाकर्म (क्षौरकर्म) तेरह दिन पर होअए तें 'यदुवर' तकर समर्थन कएल। ताहि समय सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज एहि आह्वानक विरोध क' रहल छल। तथापि, 'यदुवर' एहि समाजिक विषमताकें तोड़बाक लेल सन्नद्ध भ' यादव समुदायक संग देल ओ हुनका लोकनिक एहि नव-जागरण मे पंडित भ' संबल प्रदान कएल।

पं. श्री ब्रजकृष्ण झाक अनुसार 'यदुवर'क एहि सामाजिक गतिविधि सं क्षुब्ध दरभंगा महाराजाधिराज स्व. रामेश्वर सिंह 'यदुवर' कें एक गोट पत्र देल जे विशिष्ट कवित्व प्रतिभाक रहितहु ओ किएक यादवजनक पराधीन भए, गरीबी अंगीकार कए, मुरहो मे पड़ल छथि। महाराजाधिराज इहो सुचित कएल जे जं 'यदुवर' चाहथि तें महाराजक जमींदारी मे पचास बीघा जमीन लए ओ परवानगी प्राप्त क' सुख सं बास करथि। किन्तु, 'यदुवर' महाराजधि राज कें की उत्तर देल से सं ज्ञात नहि भ' सकल अछि, परंच, हुनक लघुभ्राता, स्व. पुष्पनाथ झा, उपरोक्त प्रस्तावक प्रसंग जखन पूछलथिन तखन 'यदुवर' अपन उत्तर एहि उक्तिएं देल-

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।
जाति मध्ये न भोक्तव्ये जकाराः पंचदुर्लभाः॥

'यदुवर' स्व. रासबिहारी मंडल ओ पं. छेदी झा 'द्विजवर' सदृश स्वाधीनता संग्राम मे प्रत्यक्ष रूपें कहिओ भाग नहि लेलैन्हि, जहल-यातना नहि भोगलैन्हि, सामाजिक वैषभ्यकें हंटएबाक लेल सक्रिय रूपें कोनहु आन्दोलन नहि ठाढ़ कएलैन्हि। मुदा, ओ अपन वैयक्तिक जीवन मे जन्मभूमिक प्रति घोर आस्था रखैत छलाह, स्वाभिमानी छलाह, सामाजिक रूढ़िकें समाप्त करबाक लेल कटिबद्ध छलाह-एहि सभ विषयक उद्भट परिचय हुनक जीवनक उपरोक्त घटना सं होइत अछि।

मुदा, यदुनाथ झा अपन नामक संग 'यदुवर' उपनाक कहिआ ओ कोन परिस्थिति मे लेलैन्हि, ताहू प्रसंग कोनहु विशेष सूचना प्राप्त नहि होइत अछि। हुनक सुपुत्रक अनुसार तें मैथिल महासभा द्वारा एहि उपनाम सं ओ अलंकृत भेलाह। किन्तु, ई नहि विदित भ' सकल जे मैथिली महासभाक कोन अधिवेशन ओ कोन वर्ष ई अलंकरण हुनका प्राप्त भेलैन्हि।

यदुवंशी मध्य प्रायः पूजित भ' रहनिहार 'यदुवर' जीक राष्ट्रप्रेम, मातृभाषाक प्रति अनुराग वस्ततः अनिर्वचनीय अछि। विदित भेल अछि जे, जे किछु आय हुनका होइत

छलैन्हि तकर आधा भाग निश्चित रूप सं ओ मैथिली तथा हिन्दीक राष्ट्रवादी पत्र-पत्रिका कें डाक द्वारा मंगवाए पढ़बा मे खर्च करैत छलाह। हुनक राष्ट्रीय चेतनामूलक अधिकतर हिन्दी रचना कलकत्ता सं प्रकाशित आ रामलाल वर्मन द्वारा सम्पादित 'हिन्दू पंच' नामक पत्र मे प्रकाशित भेल अछि। मुदा, विधिक ई केहन विधान जे एहन राष्ट्रभक्त ओ मातृभाषानुरागी अपन जीवनक अधिकांश भाग रोगग्रस्त रहलाह ओ अर्थक असौविध्य मे अकुलाइत रहलाह।

सन् 1917 ई. मे मुरहो गाम सं सब डाकघर कें हटाए देल गेल आ 'यदुवर' आजीविकाविहीन भ' गेलाह। कोशीक भयंकर विनाश लीला सं सहरसा-मधेपुरा भूखंड तं दारिद्रयकें अंगीकार कएनहि छल। फलत: परिवारक दु:सह्य बोझ ओ अपन निरुपाय अवस्था सं सीदित भ' 'यदुवर' मुरहो त्यागि कुमारखंड प्रखंडान्तर्गत कढ़िया ग्राम जाए रहए लगलाह आ ओतहि चेचक रोग सं पीड़ित भ' मात्र चौआलिस (44) वर्षक अल्पायु मे सन् 1935 ई. मे स्वर्गारोहण कएल।

पं. ब्रजकृष्ण झाक अनुसार 'यदुवर' द्वारा प्रकाशित कृति एकमात्र 'मिथिला गीतांजलि' अछि। ओना, हुनक किछु अन्यो रचना छलैन्हि जे तीनि गोट पुस्तिका मे निबद्ध छल आ कएक वर्ष पूर्वहि शोध कार्यक प्रसंग बी.एस.एस. कॉलेज, सुपौल मे कार्यरत मैथिलीक प्राध्यापक डॉ. करुणाकान्त झा जी हुनक सुपुत्र सं लेल जे अद्यपर्यन्त हुनकहि संग अछि।

एहि प्रसंग ई ध्यातव्य जे पटना विश्वविद्यालय मे समर्पित अपन शोध प्रबंध- 'मैथिली साहित्य मे सहरसा जिलाक अवदान' - मे डॉ. करुणाकान्त झा 'यदुवर'क प्रकाशित कृति सभ मे मिथिला गीतांजलि' ओ 'बासन्ती विलास' (मौलिक)क उल्लेख कएल अछि। डॉ. झा हुनक अन्यो अप्रकाशित रचनाक सूचना देल अछि यथा, 'यदुवर-विनोद-छ: भाग', 'अन्योक्तिशतक', 'मिथिला संगीत रत्नमाला', 'साहित्य-सरोरूह' आदि।

'यदुवर' सदृश महत्वपूर्ण रचनाकारक व्यक्तित्व आ कृतित्वक प्रसंग एखनहुं बहुत अनुसंधान-अनुशीलनक प्रयोजन छैक तथा हुनक अधिक सं अधिक अप्रकाशित कृति प्रकाश मे आनल जाए, से हमरालोकनिक कर्तव्य ओ डॉ. करुणाकान्त झाजीक, जनिक जिम्मा पांडुलिपि सभ छैन्हि, विशेष कर्तव्य थिकैन्हि।

मधुबनी पेंटिंग के पर्याय बौआ देवी

✍ सीमा कश्यप



लेखिका आधुनिक आ मिथिला पेंटिंग मे सिद्धहस्त कलाकार छथि। दुनिया मे सबसं पैघ समूह पेंटिंग बनाबय केर विश्व रिकार्ड बनौनिहार टीमक सदस्य रहल छथि।

सम्पर्क:
फ्लैट नं.-एम-4ए, प्लॉट नं.-ए-4, शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-2, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उ.प्र.
मो. 9654390580
ईमेल : seema.kashyap2012@gmail.com

अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती मे भारत के नव मील के पाथर सों भेंट एक टा दुर्लभ संयोग भेल। जिनकर नामे टा सुनि क' बड़ खुश भेल छलौं आइ भोरे भोर हुनकर सोचने तै छलौं मुदा यकीन नय भ' रहल रहै। माथ पर साड़ी लेने शाल मे लिपटल बड़ गरिमामय व्यक्तित्व बूझि पड़लैन। उनक चेहरा दिस जखन नजर गेल तअ गरिमा आ संघर्ष एके संगे दिखाय पड़लन। बड़ काज करला के बाद के तेज साफ झलकैत रहैन। गोड़ त' लागलौंअ मुदा मुंह सं किछ निकैल नै सकल बेसी। खाली एकबे टा बाएज सकलौं कि बड़ इच्छा रहै एकौ बेर भेंट करै लेल; से आइ पूरा भ' गेल।

जखन उनका पद्मश्री भेटलैन रहै तखन हम हुनक न्यूज सगरे बच्चा जकां देखेने रहियैन। आय भेंट भेला पर बुझाय अछि कि ओ कतेक समर्पण सं काज करै, बाली छथि। सिमरी नैहरा सं 12 बरख के छोट उमर मे ब्याह क' क' जितवारपुर एलखिन। ई उ समय छलै जखन मधुबनी बिधा दीवार सं उतैर क' कागज पर आबैत रहै। मधुबनी बिधा के पांच रतन जे अगौएर क' राखलखिन ओय मे बौआ देवी सबसें छोट छलखिन। आगां के पीढ़ी के लेल ई कतेक पैघ गप्प अछि; जे आइ पूरा विश्व ई विधा पर मोहित अछि। जों ई विधा बचा क' नय राखल गेल त' हम सब अपन आगां के पीढ़ी क' की देखाबतौं। भगवनक कथा सुनेने बौआ देवी - अप्पन दादी आ मां सं कोहबर आ अरपन सीख क' सासुर एलथि। ऐ ठाम जे मधुबनी पेंटिंग के एक टा अलग माहौल भेटलैन ता ऊ अप्पन अलग तरीका सं रंग भरब शुरू क' देलखिन। गाछ-वृक्ष से बढ़ लागि रहने हुनकर पेंटिंग मे सेहो रंग झलकैत छैन। फूल-पत्ती, चिड़िया चुनमुन किनका नै लागतै जे प्रकृति मे बसल छथि। दुर्गा-पूजा, छैठ सब सन पाबनि त्योहार मनबय लेल गाम जितबारपुर गेने बिना हुनका मोन नै लागै छैन। मिथिला के सब रंग हुनकर पेंटिंग मे दीवार सं कागज तक आयल छैन। जितबैरपुर सं निकल क' ओ पैहलुक बेर दिल्ली आइल रहथिन। ओय जमाना लेल ई बहुत पैघ गप छलै कि घर के कनियां कतो बाहर गेलैथ। ई नाम एतै रूकै बाला रहै। भारत सं निकैल क' ई सबसे पहिने गेलेथ। वैठामन के लोको इनका बड़ नीक लागलैन। 10-11 बेर गेने इनका बोरे बुझबैत हेतेन। एते देश घुमने इनका सबसे पसंद साड़ी छैन। विशुद्ध भारतीय परिधान; सेहो हमेशा माथ पर। सूती आ सिल्क के साड़ी इनका सबसे बेसी पसंद छैन।

आयकाल ई पांत क' ल' क' किछु परेशान छथि। मुदा काज करै के इच्छा अखनो ततबे प्रबल छैन जेहेन शुरूआती दिन मे रहैन। आर्डर बाला काज हजारो लिखला के बाढ़ो आयो वैह तत्परता अगला पीढ़ी के लेल एक का पैघ संदेश छियैन। बुढ़ापा मोन के नै छै; शरीर के नय। हुनका देखेन हम यैह सीखलो, घर-परिवार सबसं पैघ सम्पति। कथा त' सब बुझ्झ छेथिये मुदा भगवानक रूप केतेक रहै से कह' बला यैह पांच गोटा छलैन- सीता देवी, जमुना देवी, महासुंदरी देवी, कर्पूरी देवी आ सबसों छोट बौआ देवी। हुनक कृति मे पौरानिक कथा, आ प्रकृति के रंग बसल छैन। सीता स्वयंवर, रामायण, कृष्ण लीला, कोहबर, उपनयन, दुर्गापूजा पर हुनक सिद्धहस्त कला के रूप लिखल छैन। नव कार्य मे नाग-नागिन के दृश्य आइल, जे पर मंजूषा कला के छाप पड़ल बुझाइत पड़ै छैन। कहानी के पात्र आ दृश्य दुनू मंजूषा कला के रंग मे किछु नया रंग लेने नव रूप मे बुझाइत पड़ै छैन। पूरा पेंटिंग देखने मंजूषा कला पर मधुबनी के अल्पना बनल सन चमकल बुझाए पड़ै छैन। पारंपरिक मधुबनी आ पारंपरिक मंजूषा दुनू बहिन संगे बैस गप्प करैत बड़ नीक लागलैन।

भाष्कर कुलकर्णी आ पुपुल जयकर जी सं शुरू सं शाबाशी लेने बौआ देवी फ्रांस, स्पेन, वार्सिलोना, जर्मनी सब देश मे जाइ क' अपन कला के प्रदर्शित केने छैन। छोट मे हुनक लिखल कागज पर डी ग्रेट भेटले सेहो हुनका कहियो खराब नय लागलैन। ऊ अपन अलग तरह के काज सब दिन करैत रहलखिन। स्टेट अवार्ड, नेशनल अवार्ड के बाद पद्मश्री से सुशोभित होय बाली ई मिथिलानी अपन हाथ सं हजारो कागज लिख चुकल छथिन। 13 साल सं 75 साल तक के सफर अविरल, अविराम चलल छैन। हुनक 5 टा बेटी आ दू टा बेटा मे एक टा बेटी आब नै छथि मुदा ओ बरगद जकां अखनो ठाढ़ छथि; सब के समेटने, दुलारने, ध्यान राखने।

सबहक अमानत छथि पुरखा सब

✍ मुख्तार आलम



सहरसा केर लछमिनिया निवासी भोगेन्द्र शर्मा अपन एकल प्रयास सं गाममे विद्यापति धाम स्थापित क' ख्यात भ' गेल छथि। विद्यापतिक धामक सौंदर्य, कलात्मक मूर्ति आ सज्जा आओर प्रति बरखक कार्यक्रम सभ मिथिला-मैथिली प्रेमी कें आकर्षित करैत अछि। हुनका सं हुनक प्रयास आ अनुभव केर विषय पर चर्चा कैलन अछि युवा साहित्यकार मुख्तार आलम। एहि चर्चाक प्रमुख अंश एतय प्रस्तुत अछि।

🎙 भोगेन्द्र शर्मा



मुख्तार आलम : अपना विषयमे किछु कहू?

भोगेन्द्र शर्मा : हमर नाम भोगेन्द्र शर्मा 'निर्मल' थिक। जन्म 1968 ई., महीना भादव। तारीख त' नहि मालूम अछि ओना माइ कहै छलीह हंस केर चान उगल छल। हम जाति सं अत्यंत पिछड़ा वर्ग बढ़ईमे अबैत छी। सहरसा शहरक उत्तर बड़िया पांजरमे कोसीक मारल-मोचरल अनेक टोल-टापर ताहिमे हमर गामक नाम लछमिनिया थिक। गामक भण्डार कोन पर नहि जानि कतैक पहिने सं गनहाइत एकटा पोखरि जकर आधिपत्य देवनाथ जादब।

मुख्तार आलम : विद्यापति धाम केर स्थापनाक लेल प्रेरणा कोना भेटल?

भोगेन्द्र शर्मा : हमरा मिथिला आ मैथिली सं बहु प्रेम अछि। चित्रकारी हमर जन्मजात संस्कार अछि आ विपन्नता हमर धरोहर। एहि विरोधाभास स्थितिमे संस्कारक बुते हम मिथिलाक मध्य दरभंगाक फाइन आर्टमे पढ़बाक लेल तत्पर भेलों। जो मोनमे हो योग तं सहजोग अवस्से भेटि जाइत छैक। दरभंगामे कवि विद्यापति नाम सं अनेक संस्थान आ मूर्ति सं प्रेरणा भेटल, जे जों हम सहरसाक छी त' मिथिलेक छी। किएक नहि ओहि महापुरुषक प्रतिमा बना अपन गामक एहि ठाम स्थापित करी, जाहि ठामक लोक जाति सं संस्कार सं सभ्य समाजक व्यवहार-विचार सं दूर छल। सभ किछु त' अपने सभ जानबे करै छी हम शुरूए सं चाहैत छलों जे अपन गाममे विद्यापति धाम बनाबी।

मुख्तार आलम : विद्यापति धामक स्थापनाक लेल अहां कहिया सं प्रयास शुरू कयलियै?

भोगेन्द्र शर्मा : ओ हो! ई तं बड्ड संघर्ष सं भरल खिस्सा अछि। हम 2001 ई. मे चौक पर जतअ धाम अछि, ओतय एकटा पीपरक गाछ रोपि देलौं। जब गाछ कने पैघ भ' गेल त' ओहि पर एकटा टीनक बोर्ड बना क' टाइंग देलौं जे पर लिख दलो – 'विद्यापति धाम, लछमिनिया' ई बात हमर मोन मे शुरूए सं छल जे मिथिला, मैथिली आ एहि ठामक सर्वांगीण विकास, मिथिलाक हेरायल, बिलाइल संस्कृतिक उत्थान लेल एकटा सांस्कृतिक संस्थाक निर्माण करी। मोन मे संकल्प गठरी बान्हि एहि महान ऐतिहासिक काज मे लगि गेलहूं।

'विद्यापति स्मृति संस्थान' नाम सं चंदा रसीद छपवा क' हम चंदा वसूली लेल समर भूमि मे कूदि गेलहूं। चंदा वसूलीक क्रम मे भटकैत उटकैत हम मदन बाबू एहिठान गेल छलों। हुनका चंदा रसीद थमहा देलियनि। रसीद कें देख ओ हमरा उपर-नीचा ताक' लगलाह आ सोच भरल दृष्टि सं कहलनि- ''एहि छोट-मोट चंदा सं ई काज नहि होमयबला अछि। एहि लेल भारी-भरकम रकम केर बेगरता अछि। आइ अहां चलि जाऊ काल्हि आबू, हम अहाकें विधायक संजीव झा लग ल' चलैत छी।'' हम मोन कें उदास करैत ओतय सं विदा भ' गेलहु आ मोनहु असली उड़ान भरैत गति क' निरंतरता दैत आगू बढ़ैत गेलहुं। ओहि समय जमीन मे गहूम लागल छल। भूमिपूजन आ शिलान्यास हेबाक छल। बाजा-गाजा, ढोल आ शहनाई बाजि क' रहि गेल मुदा आयोजन नहि भ' सकल। कारण जे आफिशियल काजक भार एकटा संस्कृति कर्मी आ मैथिली अभियानी युवक

*संपर्क : **मुख्तार आलम,** कुमेदान टोला, सिटानाबाद, सिमरी बख्तियारपुर, सहरसा, बिहार-852106, मो. 9204216204, ईमेल: nosawamukhtar89@gmail.com, **भोगेन्द्र शर्मा :** ग्राम-लछमिनिया, जिला- सहरसा, बिहार-852106, मो. 8521107704*

के' देने छलों। ओ कहलनि जे डी.एम. के आमंत्रित क' शिलान्यास एवं भूमिपूजन करा दैत छी से ओ नहि करा सकलनि तथा ध ोखा द' क' दिल्ली निकलि गेलाह। हमरा मोबाइल नहि छल, भगवान बाबू केर मोबाइल सं फोन केलियनि तं ओ कहलनि– ''हम अखैन दिल्ली जा रहल छी।'' ई सूनि हम माथा पर हाथ धए क' भोकारि पारि क' कानय लगलहुं। पुन: हुनका फोन लगाबी तं ओ युवक हमरा कहलनि जे– ''हमरा इज्जत, प्रतिष्ठा नहि चाही।'' हम अवाक रहि गेलहुं। एहि ठाम दर्शक सभ आबि–आबि के कहय– ''कहां अछि डी.एम.? कहां अछि एस.डी.ओ?'' हम अश्रुपूर्ण चित्कार कर' लगलहुं आ एहि माटि उठा क' तिलक लैत संकल्प लेलौं तथा मिथिला सं विनती केलहुं– ''हे मिथिले! हे बाबा विद्यापति! हम संकल्प लैत छी अहांक मंदिर बना क' दम लेब। चाहे जे किछु कर' पड़'...।

मुख्तार आलम : तहन भूमिपूजन तं नहि भ' सकल?

भोगेन्द्र शर्मा : हं भेले कि। गामक लोक सभ हमरा दुरदुराबै लागल। हम सहरसा चलि गेलौं मदन बाबू एहि ठाम। हुनका सब गप कहलयिन। ओ हमरा लए क' समाहरणालय चल गेलाह। डी.एम. नर्मदेश्वर लाल कें ओ सब गप कहलखिन तं ओ एस.डी.ओ. गजानन मिश्र जीक आदेश देलखिन। तब हमरा जान मे जान आयल आ शिलान्यास भ' सकल। संजीव झा विधायक सेहो आयल छलाह। ई सभ गप 2006–07 ई. के अछि।

मुख्तार आलम : विद्यापति धामक स्थापना मे कोन–कोन कठिनाइक सामना कर' पड़ल?

भोगेन्द्र शर्मा : एहि ठामक लोक बुझै छल जे विद्यापति ब्राह्मणक थिकैक। ई गप हमरा बेर–बेर कचोटै छल जे कोनो महापुरुष आकि शहीद कोनो विशेष जाति आकि धर्मक नहि होइत छैक। ओ संपूर ्ण राष्ट्रक थाती होइत अछि। मुदा विद्यापति के ब्राह्मणक थाती जानि हमरा लोक सभ बताह बूझि अवरोध करै छल। हम त' विपन्न छी। एहि योजनाक रूप देबाक लेल पैसा चाही। सम्पन्न लोक सभ उपेक्षा करैत छल, कारण हम अति पिछड़ा जाति सं अबैत छी। तें लोक सभ हमरा मदति नहि करै। हं, एकटा गप आर जे विधायक संजीव झा आ एस.डी.ओ. गजानन मिश्र हमरा आश्वासन देने छलाह जे ई काज हम करबा देब। बचन तं द' देलनि मुदा जखन हिनका पर चढ़ाई कर' लगलहुं तए ओ महोदय दौड़ा क' जान अब–तब क' देलनि। दू साल धरि दौरैत–दौरैत हमर मोन आजिज–आजिज भ' गेल। संघर्षक पथ पर हमर पयर डगमगाबए लागल। एक दिन हम संजीव झा विधायक के कहलयनि भाई जी एहि सं नीक हमर जान ल' लियो मुदा एतैक दौड़ाऊ नहि...। ओ हंसैत कहलनि जे नहि... से बात नहि अछि। जरूर होइत कने धैर्य राखू। अखैन ठंडी बहुत छै... कने भीतर आऊ ने। आब हमर धैर्यक बान्ह टूटि रहल छल। हुनका हम कहलियनि हमरा मरैये केर छैक त' एहि मे जाड़क की सवाल अछि। मोन मे संकल्प लैत मुसक दवाई लए लेलहुं आ आत्महत्या करऽ लेल तैयार भ' गलहुं। विधायक महोदयकें भ' भ' गेलनि। हमरा दिस इशारा करैत कहलनि भोगेन्दर एना नहि करू, अहांक स्टीमेट बना दैत छी। अखैन बहुत ठंडी अछि। हम कहि देलहुं ने भायजी हमरा मरबाक अछि। संवेदना जतबैत ओ कहलनि जे भोगेन्दर अहांक त्याग आ समर्पणक हम कायल छी। अखैन तुरंत हम अपना पैड पर लिख क' दैत छी। लिख त' देलनि मुदा अभियंता सच्चिदा बाबू आब हमरा दौरबै केर अभियान शुरू क' देलक। ताबत हम गणेशी सं दस हजार टाका सूदि पर उठा क' आ आठ हजार टाका पप्पु सं सहयोग रूप मे ल' क' काज शुरू क' दलों। फॉण डेशनक काज त' आरंभ भेल मुदा पुन: रुकि गेल। एक दिन हम आ पप्पुजी दिसम्बर मासक जाड़ मे कुहेसक परवाह कयने बिना अभियंता एहि ठाम पहुंचलौं तखन रातिक ठीक आठ बाजे छल। हाथों–हाथ नहि सुझै छल। अभियंतो खूब दौरैलक मुदा काज नहि कयलक। ताबत संजीव जी अभियंता सं गप क' क' कैलाश साह नामक एकटा व्यक्ति क' सुपुर्द क' देलनि। किछु दिनक बाद 2 लाख 70 हजार टाका आवंटित भेल मुदा एहि सं काज पूरा नहि भ' सकल। कतबो दौड़–धूप करी कैलाश कहथि आब अखैन कार्य नहि होइत किएक त' हमरा पूरा घाटा लागि गेल अछि। एहि बीच मे बेटीक बियाहक कथा मे जुटि गेलहुं। कथा लागि गेल। विवाहक बाढ़ डाली पर जे टाका पड़ल ओहि सं 9,000 टाका ल' क' गुम्मद ढलाई कयलहों। एकर बाद चंदा अभियान मे जुटि गेलहुं।

मुख्तार आलम : परिवार सं कोन तरहक सहयोग आकि असहयोग भेटल?

भोगेन्द्र शर्मा : शुरू मे परिवार सं मनोनुकूल सहयोग नहि भेटल। कहियो डांट त' कहियो फटकार भेटति रहल। किए त' आर्थिक तंगी सं बदहाल भ' गेलि रही। पत्नी कहैत छलीह जे गामक जुबक सभ क' देखियो दिल्ली, पंजाब कमाई के कत्तैक सुंदर सुंदर घर बना लेलकै। जमीन कीन लेलकै अहां कथी मे लागल छी। ई सभ सं की हुए बला अछि। अहां क' निशां चढ़ल अछि। एहि सं नीक ओ आदमी जे दारू पी के अपन आत्मा के संतुष्ट करै छै। हम हुनका समझैलिये ओहन आदमी के कोनो अस्तित्व नहि रहैत अछि। ओइ अन्हार मे नहि जाऊ सभ कियो घरै बनैते तहन अपन संस्कृतिक रक्षाक लेल काज के करतै? एक समयक बात अछि दान पेटी सं पत्नी 1200 टाका निकालि एक व्यक्ति क' दए देली। हमरा ई बात पता नहि छल। सपना मे हिनका हनुमान आ शंकर जी आबि अपन–अपन सवाल कयलनि जे दान पेटी सं किएक टाका लेलहुं? ई... व्यक्ति कतैक मेहनत सं चंदा क' क' आनैत छथि जों अहांक लेबाक छल त' पूछि लेबाक चाही। ई सुनैत देरी हुनक नीन टूटि गेलनि ओ डेरायल सन चेहरा बनौने भोरक पहर मंदिर आबि बाबा सं अपराध क्षमा मांगि हमरा कहलनि– ''राति मे एहन सपना देखलहुं। कान पकरि मंदिर

मे विनती केलयनि जे आब एहन गलती नहि होइत। ई टाकाक भुगतान हम अपन मेहनत सं कमा क' एहि दान पेटी मे क' देलौं। ओहि दिन सं हमर पत्नीयो हमर कार्य मे शामिल भ' गेली।

मुख्तार आलम : चन्दाक लेल सहरसा सं बाहरो जाइ छलियै?

भोगेन्द्र शर्मा : एतौका चन्दा सं विद्यापति धाम बनै छै यौ? चन्दाक लेल तए, कतय-कतय नहि जा पड़ल। दिल्ली, गुड़गांव, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आ कलकत्ताक कोनो गल्ली बाकी नहि रहल। हं एकटा बात आर छै जे अमीर लोक सं बेसी हमरा जन-मजदूर सं सहयोग भेटल अछि। घर सं बाहर धरि जकन मजदूर मैथिली बाजबो करै छै। हमरा जान पहिचानक लोक सभ अपन काज छोड़ि क' चंदा कराबए छल। हुनका सभकें हम बड़ प्रशंसा करै छियनि।

मुख्तार आलम : विद्यपति धाम मे स्थापित नायक-नायिकाक चयनक आधार की थिक?

भोगेन्द्र शर्मा : राजा सल्हेस मिथिलाक एकटा महानायक छलाह। ओ अनंग कुशमाक प्रेमक प्रकाष्ठा स्थापित कयलनि एहि कारण सं हम सल्हेसक प्रतिमा स्थापित कयलौं... मांगैन खबास शास्त्रीय संगीतक साधक छलाह आओर विद्यापति गीतक लयबद्ध हुनके स्वर मे भेल छल। ओ शास्त्रीय संगीतक माध्यम सं मिथिलाक मान बढ़ैलखिन। एकर बाद राजा जनक, मिथिला नरेश एकटा महाप्रतापी राजा छलाह जे वर्षा नहि होइत छल त' स्वयं हल चला क' अकाल सं बचौलनि ताहि लेल हुनक प्रतिमा स्थापित कयलौं। लोरिक बुराई पर सच्चाईक विजयक प्रतीक थिक आ एहिना जतेक महापुरुषक प्रतिमा स्थापित कयने छी, सभ कोनो ने कोनो रूप मे मिथिलाक लोकक प्रेरणास्रोत अछि।

मुख्तार आलम : विद्यापति धाम केर स्थापना होय सं अहांके किछु बदलाव लागि रहल अछि?

भोगेन्द्र शर्मा : बहुत बदलाव नजरि आबि रहल अछि। लोक सभक मानसिकता बदलल अछि। चौक पर सदिखन गहमागहमी रहैत अछि। सभ ठाम लछमिनियाक नाम भ' रहल अछि। कतैक लोक के रोजगार भेटल छैक। देखू ने लोक सभ दोकान खोलि-खोलि क' स्वरोजगार मे लागल छैक। धाम स्थापित होय सं आर्थिक समृद्धि सेहो आबि रहल अछि।

मुख्तार आलम : विद्यापति धामक संचालन कोना क' रहल छी?

भोगेन्द्र शर्मा : ग्रामीणक सहयोग आ हमर निजी कमाई सं प्रबंधनक काज चलै छै। वार्षिक आयोजन ग्रामीण आ बाहरी चंदा सं सम्पन्न होइत अछि।

मुख्तार आलम : आयोजन मे कोन-कोन लोग सं सहयोग भेटैत अछि?

भोगेन्द्र शर्मा : आयोजन मे त' बहुत रास लोक सं सहयोग भेटैत अछि जाहि मे सागर जी, चन्देश्वरी राय, अरविन्द सिंह, कैलाश साह, शम्भु साह, राधेश्वर झा, सुभाष चन्द्र झा, अरविन्द मिश्र नीरज ''कवि जी'', अरविन्द मुखिया आदि सं विशेष केर।

मुख्तार आलम : कोनो प्रशासनिक सहयोग भेटैत अछि?

भोगेन्द्र शर्मा : अखैन त' कोनो प्रशासनिक सहयोग नहि भेटैत अछि। एबरी अब्दुल गफूर विधायक जी विवाह भवनक लेल 14 लाख 87 हजार टाकाक योजना आवंटित कयलनि अछि।

मुख्तार आलम : अहांक कोनो प्रतिक्रिया?

भोगेन्द्र शर्मा : हम चाहे छी जी एतय एकटा मिथिला पेंटिंगक काजक लेल प्रशिक्षण संस्थान आ एकटा पुस्तकालयक स्थापना हुए।

भेंट घांट



भारत सरकारक वित्त सचिव श्री अजय नारायण झा संग अखिल भारतीय मिथिला संघक पदाधिकारीगण

'तीरभुक्ति' केर एक बरख

अखिल भारतीय मिथिला संघक त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' के एक बरख पूर्ण भ' गेल। ई पूर्ण केवल अवधि के अछि, मुदा समय पर पत्रिकाक आनब एकटा महती तपस्या छल। जाहि मे केवल एक गोटाके श्रम नहि छल, बल्कि समर्पित संपादकीय टीमक काजक आंकलन पत्रिकाके देखि क' केल जा सकैत अछि। जाहि तरहे मिथिला साहित्य सं जुड़ल विद्वतजन एही पत्रिकाक हाथों-हाथ लेलाह, पाठकक समर्थन भेटल, ताहि सं ई आश जरूर जगैत अछि जे मिथिलामे एखनो विमर्शक संभावना अछि।

एही तरहक काज पहिनो पहिलुक मैथिली ई-पत्रिका 'विदेह' के लेल हम सभ केने रही, मुदा एकटा नियमित समग्र शोध पत्रिकाक प्रकाशनक लेल मन व्याकुल छल। मिथिलाक विभिन्न विषय पर मैथिली भाषा मे पूर्ण रूपेण शोध सामग्री प्रस्तुत करेबाक खगता बहुत काल सं छल। अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंतीक अवसर पर योजना बनल जे मैथिली भाषी विद्यार्थीक लेल एहन शोध हेबाक चाही जे हुनका बुनियादी शिक्षाक संग उच्च शिक्षा मे सहयोग करय आ सस्ता दर पर नियमित अध्ययन सामग्री उपलब्ध हुए। एहि क्रम मे 'तीरभुक्ति' नाम सं ई त्रैमासिक शोध पत्रिका अपने सभक समक्ष आबि सकल। एही शोध पत्रिका लेल सहमति देबाक लेल हम सब मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा जी आ महासचिव श्री विद्यानंद ठाकुर जी के बड आभारी छी, जे सदिक्खन प्रोत्साहित केलाह। संगे संघके सबटा कार्यकारिणी सदस्यके सेहो हम आभारी छी जे ओ एही योजना पर मुहर लगयला।

तीरभुक्ति शोध पत्रिका के संरक्षक श्री प्रभात झा जी, सांसद, राज्यसभा के हृदय सं आभार व्यक्त करैत छी जे ओ अपन दिल्लीक आवास पर संपादकीय काजक लेल एकटा कमरा देलाह, जाहि सं सुचारू रूप सं 'तीरभुक्ति' केर प्रकाशन हुए। अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा जी शुरू दिन सं एकटा गार्जियन जेना छैथ, एही लेल हम हुनकर नतमस्तक छी। एकटा गप रेखांकित करय बला अछि जे भले ही अखिल भारतीय मिथिला संघ 'तीरभुक्ति' शोध पत्रिकाक प्रकाशन क' रहल अछि, मुदा 'तीरभुक्ति' के संपादकीय टीम के पूर्ण छूट अछि। कोनो भी रचनाक प्रकाशन पर कोनो तरहक दवाब या नियंत्रण आय धरि संघ दिस सं नहि रहल। संघक महासचिव आ 'तीरभुक्ति' के प्रबंधक श्री विद्यानंद ठाकुर जी सदिक्खन तन-मन सं ठार रहलाह आ मनोबल बढबैत रहलाह जे पत्रिकाक प्रकाशन समय पर होयत आ ग्राहक कें समय सं पत्रिका पहुंचत।

आय जों 'तीरभुक्ति' नियमित रूप सं पाठकक हाथमे पहुंचैत अछि तें एकर पाछां लेखक केर पत्रिका पर विश्वासक योगदान कें अनदेखा नहि केल जा सकैत अछि। पहिलुक



अंक सं ल' क' आय धरि कतेक रास लेखक अपन अमूल्य समय सं 'तीरभुक्ति' लेल समय निकलक, एही लेल हमर कोनो शब्द कम पडत। एही गणमान्य लेखक मे प्रो.(डॉ.) देवशंकर नवीन, प्रो.(डॉ.) रामसेवक सिंह, डॉ. तारानंद वियोगी, शिव कुमार झा टिल्लू, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. भवनाथ झा, डॉ. संजीत झा 'सरस', लक्ष्मण झा 'सागर', प्रवीण नारायण चौधरी, धर्मव्रत चौधरी, डॉ. गंगेश गुंजन, स्वाती शाकम्भरी, मनोज शांडिल्य, विनीत कुमार झा, प्रभात झा, भास्कर ज्योति, मिथिलेश कुमार झा, अजित झा, रमण कुमार सिंह, नारायण झा, निवेदिता झा, ऋतेश पाठक, अमरनाथ झा 'अमर', दिलीप कुमार झा, नमिता झा, कल्पना झा, कामिनी, विनीत उत्पल, रमाकांत राय 'रमा', मुख्तार आलम, महेश डखरामी, रमेश, अजीत झा, कुमार आशीष, कुमारी पल्लवी, रोमिशा झा आदि शामिल छैथ, जिनकर लेख 'तीरभुक्ति' पत्रिका मे एही बरख प्रकाशित भेल।

'तीरभुक्ति' टीमक तमाम सदस्य खास क' श्री अवनींद्र ठाकुर, श्री रौशन झा, डॉ. प्रवीण कुमार झा, श्री त्रिपुरारी कुमार ठाकुर, श्री भास्कर ज्योति, श्री ब्रह्मेन्द्र झा, श्री गोविन्द कुमार झा, श्री अंजनी कुमार झा, श्रीमती स्वाती शाकम्भरी, श्री शंकर कुमार झा सहित अखिल भारतीय मिथिला संघ के तमाम सदस्य के प्रति अमूल्य सहयोगक लेल आभार व्यक्त करैत छी। तीरभुक्ति के प्रूफ देखैक लेल वरिष्ठ कवि आ पैघ भाय श्री रमण कुमार सिंह जी सहमति देलैन, एकरा लेल हम हुनकर आभारी छी। पत्रिका कें डिजाइन श्री मणिशंकर कुमार जी केलेन छैथ, मगही भाषी भेलाह के बादो हुनका जहि तरहे मैथिली भाषाक ज्ञान अछि आ काज क' रहल अछि, एही लेल हुनकर जतेक प्रशंसा कल जाय ओ कम होयत। 'तीरभुक्ति' पत्रिका के पहिलुक अंकक आवरण बिहार सरकार सं सम्मानित प्रख्यात कलाकार श्रीमती संजू दास के पेंटिंग छल, दोसर अंकक आवरण सीमा कश्यप, तेसर अंक मे विनीत उत्पलक फोटोग्राफी आ चारिम अंकक आवरण पर प्रयुक्त मैथिली भाषाक प्रयोग क्षेत्रक मानचित्र 'मिथि मालिनी' पत्रिका केर जून, 2006 अंक सं साभार लेल गेल छल।

अखिल भारतीय मिथिला संघ एही बरख एकटा आओर नव दिस डेग बढौलक आ 'तीरभुक्ति' प्रकाशन सेहो शुरू भेल। एही बैनरक नीचां एही बेर दू पोथी डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक जी केर 'नाटक आ रंगमंच: प्रकृति आ प्रतिमान' आ दोसर विनीत उत्पल आ ऋतेश पाठक द्वारा संपादित 'मैथिली शोध संचय' केर प्रकाशन केल जा रहल अछि। पिछला एक बरख सं जाहि तरहे पाठकक फीडबैक आयल अछि, आशाक संग हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे एही शोधपूर्ण पत्रिका कें आगुओ मैथिलीक सुधी पाठक, विद्यार्थी, शोधार्थी आ साहित्यकार के लेल अत्यंत महत्वपूर्ण, उपयोगी, सहायक, प्रासंगिक आ सार्थक सिद्ध होयत आ स्वागत केल जायत। किछु प्रूफ के लेल शिकायत आयल अछि, ओहि पर हम सभ काज क' रहल छी, जेकर परिणाम 'तीरभुक्ति' की आगू अंक मे लखाह देत।

– विनीत उत्पल

एकल नाटकक प्रयोग

✍ विनीत उत्पल



प्रसिद्ध रचनाकार विभा रानी आजुक काल मे अपन एकल नाटकक माध्यम सं मैथिल समाजक वस्तुस्थिति राखैत छैथ। मैथिली के तीन साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता लेखकक चार गोट पोथी के हिन्दी मे अनुवाद केने छैथ। हुनकर प्रसिद्ध मैथिली नाटक अछि भाग रौ, मदद करु संतोषी माता आ बलचन्दा। मुंबई मे रहय वाली विभा रानी सं हुनकर संपूर्ण जिनगी पर विनीत उत्पलक गप प्रस्तुत अछि।

🎙 विभा रानी



विनीत उत्पलः अहां नाटक कियै करैत छी?

विभा रानीः नाटक हम अपना रचनाधर्मिता के विस्तृत करय लेल क' रहल छी। हम कविता लिखैत छी, कथा लिखैत छी। नाटक सेहो लिखैत छी। मुदा लेखन धर्म और नाट्य धर्म दुनू अलग-अलग चीज छै। लेखन एकांत के साधन छै, एकांत के पाठन छै। जे हम लिखलहूं एकांत मे लिखलहुं, जे पाठक पढ़लैन एकांत मे पढ़लैन। मुदा ओकरे हम सामूहिकता के प्रयास मे हम जे लिखलहूं आ जे लोक सभ लिख के गेल छैथ, हुनका सभके एक संग हम बीस गोटे, दू सौ गोटे, की दू हजार गोटेके सोझां मे एक्के समय मे आनबाक प्रयास करैत छी। तें हम नाटक क' रहल छी। नाटक आ लेखन हमर दुनू संग-संग चलि रहल अछि। एक लाइन मे कहि ते रचनाधर्मिता के नाटक के माध्यम सं अधिकतम लोक लग पहुंचेबाक प्रयास मे हम नाटक क' रहल छी।

विनीत उत्पलः मिथिला मे बहुत कम स्त्री नाटक दिस आयल छथि। अहां के एकरा दिस कोना झुकाव भेल जे नाटक मे।

विभा रानीः जे सामाजिक दवाब होयत छै, से हमरो पर छल। रेडियो दरभंगा मे काज करैत छलहुं ता धरि दू-चारि टा प्रस्ताव सेहो आयल जे अहां हमरा संगे हिन्दी रंगमंच पर नाटक करू। मुदा हमर मां जे पढ़ल लिखल छली, 1936 के गोल्ड मैडलिस्ट छलखिन, मधुबनी के मिडिल स्कूल के हेडमिस्ट्रेस सेहो छलखिन। से सामाजिक दवाब के तहत मना क' देलखिन। हमारा अपन करियर मे परफोर्मिंग आर्ट बेसी नीक लागैत छल शुरुए सं। तें बेसी सं बेसी लोक सं इंटरैक्ट क' सकी, बेसी सं बेसी लोक सं बातचीत क' सकी, हमरा नीक लागैत छल। कनि ग्लैमरस काज सेहो नीक लागैत छल, ताहि सं जब हम कहलहुं जे हम एयरहोस्टेस बनब ते लोक कहलक जे पहिने अपन मुंह देखय जे एयरहोस्टेस लायक मुंह छह। माने एयरहोस्टेस बहुत सुन्दर लोक बनय छै। तखन हम कहलिये जे हम कत्थक सीखब, हम डांसर बनब। तखन लोक कहलक जे तू घुंघुरू के थाप पर नाचबै, लोक गजरा ल' क' आबि जेतौ। तखन हम कहलहुं जे हम क्लासिकल म्यूजिक सीखब, फेर कहलक जे तू इम्हर राग अलापब', उम्हर से खिड़की सें कियो 'टें' कहत।' मने ई भेलय जे सामाजिक दवाब एत्तेक छै जे कोनो लड़की कें आगां बढ़य मे बाधक होयत छै। ई स्थिति कमोवेश आइ धरि सेहो छै। ई स्थिति पुरुष प्रधान समाज के कारण छै आ हम एक्के टा गप्प कहैत छी, सभके हेमामालिनी बड़ पसंद छै, सबके दीपिका पादुकोण या प्रियंका चोपड़ा बड़ पसंद छै, मुदा ऊ दीपिका, ऊ प्रियंका, ऊ हेमामालिनी हमरा घर से हुए, हमर समाज ओकरा सोचहि लेल तैयार नै छै। हम अपन जिद पर निकलहुं, जे अहां कहैत छिये जे स्त्रीगन ई सब नै क' सकैत छै, हम करब। हमर पृष्ठभूमि जे छै, से निगेटिव फ़ोर्स पर तैयार भेले। पढय-लिखय सं ल' क' आइ धरि एतय पहुंचे के। लोक कहलक जे एहन मुंह ल' क' कोन काज करबअ। मुंह-कान ते भगवान् के देल छै, प्रकृति के देल छै, ओकरा मे ते हम किछु नहि क' सकैत छी, हेमामालिनी, प्रियंका ते नै बनि सकैत छी, मुदा जे छी, ओकरा मे हम अपन सामर्थ्य सं क' सकैत छी। एहि जिद पर हम ओहि ठाम सं निकलहुं आ धीरे-धीरे कलकत्ता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, लन्दन जतय जे मौका भेटल, मौका छीन के, अपन काज हम केलहुंये।

विनीत उत्पलः अहां अपना नाटक के एकल प्रस्तुति कियै दैत छी? समूह मे ते हर किरदार के अलग-अलग काज होयत छै, मुदा एकल मे ते सब किरदार एके लोक के निभाबय पडैत छै?

सम्पर्कः विनीत उत्पल, ग्राम+पोस्ट- आनंदपुरा, भाया-ग्वालपाडा, जिला-मधेपुरा, बिहार-852115, मोबाइल-9911364326
विभा रानी, 302/ए, धीरज रेसीडेंसी, अपोजिट ओशिवारा बस डिपो, गोरेगांव पश्चिम, मुंबई-400104, मो.-8879770891

विभा रानीः नाटक हम दिल्ली मे शुरू केलहुं, कनि कलकत्ता मे केने रहि। तकर बाद हम बम्बई गेलहुं। बम्बई मे बीस साल पारिवारिक जिम्मेदारी आ दोसर कारण से नाटक नै केलहुं, स्टेज पर नै गेलहुं, मुदा हम लिखैय छलहुं। ओ सब नाटक के प्रस्तुति सही भेलय आ भ' रहल छै। बीस साल बाद जब हम नाटक मे प्रवेश करअ के सोचलहुं ते हमरा लागल, जे हमरा अपना लेल की चुनौती ये। मेहनत मे हम विश्वास करैत छी, मेहनत का कोई शोर्ट कट नहीं होता है। हमरा लागल जे बीस साल बाद हम फेर ग्रुप मे जाय, माय-बहीन के एकटा डायलॉग क' के। हमरा लागल जे हमर टाइम के बर्बादी छै। ई नै अछि जे हमरा कोनो ग्रुप नाटक सं परहेज ये, हमर ग्रुप नाटक क' रहल अछि, मुदा हम अपना लेल एकटा चुनौती चाहय छलहुं। हम दू टा चीज देखलहुं, नाटक के संसार देखल, ते हम देखलहुं जे एकल नाटक लेल कोनो रंगकर्मी के मन मे उत्साह नै छै, वरन एकटा निगेटिव एप्रोच छै, तखन हमरा लागल जे ई हमरा लेल पैघ चुनौती छै। जेना अहां कहलियै जे एकल नाटक मे सबसं पैघ चैलेंज ई जे अहां असगरे छी स्टेज पर आ स्टेज के अहां के बान्हि के राखअ के अछि। अहां के सोझां मे जे दर्शक छै हुनका सबके बन्हबाक छै। अहांक लग जे स्क्रिप्ट छै, ओही पर एतेक काज करैक छै, होमवर्क करैक छै, स्क्रिप्ट मे जं पंद्रह टा कैरक्टर छै, ते ऑडियंस या दर्शक के लागेक चाही जे पंद्रह टा कैरेक्टर ओहि ठाम आबि रहल छै। कलाकार एक्के टा छै, मुदा चरित्र पंद्रह टा छै। पंद्रह टा प्रतीक नाटक मे हेबाक चाही। ई कलाकार के अप्पन जिम्मेदारी हेबाक चाही। तखन 2007 सें हम एकल नाटक करब शुरू केलहुं। उद्देश्य छल जे नाटक के क्षेत्र मे एकल नाटक के स्थापित करी, सम्मानपूर्ण रूप मे स्थापित करी। आइ हमरा एही बात के प्रसन्नता ये जे सब ग्रुप, व्यक्तिगत सेहो, अपन सोलो प्रस्तुति तैयार करैत छैथ, सरकारी संस्था सेहो एकल महोत्सव क' रहल छै। कम पात्र के दू या तीन पात्र के महोत्सव क' रहल छै। ई चुपचाप जे गिलहरी प्रयास रहय ये, से हम गिलहरी प्रयास क' रहल छी, ओही मे सफलता हमरा भेटि रहल ये, एकर हमरा संतोष ये।

विनीत उत्पलः अहां के नाटक मे थीम की होयत ये? चूंकि अहां हिन्दी आ मैथिली दुनु भाषा मे नाटक करैत छी, तें की भाषा के बदलाव से अहां के नाटक के विषय मे सेहो बदलाव होयत ये?

विभा रानीः विषय ते एक्के नै रहैत छै। एक्के विषय मे दुनू भाषा मे नाटक करब के कोनो माने नै होयत छै, तखन जखन कोनो आवश्यकता नै हुए तखन। नाटक के मुख्य थीम समाज ये, हम सामाजिक नाटक करैत छी, हम पोलिटिकल नाटक नै करैत छी। मुदा बिना पोलिटिकल चेतनता के अहां कोनो काज सेहो नै क' सकैत छी। हमर नाटक के मुख्य विषय रहय ये सामाजिकता। स्त्री भेला के कारण ओही मे स्त्री के स्थिति के अथवा, आर्थिक, अथवा राजनीतिक अथवा माइथोलोजिकल स्थिति की छै, लोककथा मे स्त्री के कोण रूप सं रूपायित कयल गेल छै, स्त्री के अपन तागत की छै। स्त्री जागेत छै, तखन ओ कोण रूप मे आबैत छै, मुख्य रूप सं नाटक के ई विषय ये।

हिन्दी या मैथिली मे नाटक करय के स्थिति ते हमरा ई कहय मे संकोच नै ये, बाबा नागार्जुन के हम सेहो अपन आदर्श मानैत छी, जे कहैत रहथिन जे हमरा हिन्दी मे बेसी रेस्पोंस भेटय ये ते हम हिन्दी मे किया नै लिखी, तहिना हिन्दी मे हमरो बेसी रेस्पोसं भेटय ये तें हम हिन्दी मे नाटक क' रहल छी, मैथिली जे हमर मातृभाषा ये, दिल या ह्रदय के भाषा, ह्रदय के भाव अछि, ओहू मे हम नाटक लिखलहुं ये आ क' रहल छी। 'नौरंगी' नाटक जे छै, ऊ एकटा चैलेन्ज छलै। ओकर कथावस्तु हम लेलहुं, उदयपुर के चंदावेरनी से, ओकरा हम डेवलप केलहुं, चंदावेरनी के कथा जे छै, मिथिला के लोक के समाहित करैत ओकरा हम प्रस्तुत केलहुं। ओ अपना आप मे एकटा अद्भुत नाटक छै। आमतौर पर कहल जायत छै जे फोक नाटक मे जे छै से सोलो नै भ' सकैत छै। से हमरा लग सेहो चैलेंज छल। जे हम प्रयास करैक चाहैत छलहुं जे फोक मे सेहो एकल प्रस्तुति भ' सकैत छै। नाटक के यैह खासियत छै, लोक सब जखन देखलखिन आ कहलखिन जे इस नाटकको यदि ग्रुप मे करते तो सिर्फ यह नाटक बनकर रह जाता और चूंकि आपने इसे सोलो प्रस्तुत किया है, इस कारण यह कुछ और हो गया है।

विनीत उत्पलः अहां हिन्दी आ मैथिली मे कोन-कोन नाटक लिखने छी आ कोन-कोन नाटकक प्रस्तुति सेहो?

विभा रानीः हिन्दी मे पांच टा नाटक के किताब प्रकाशित छै, 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत', 'आओ तनिक प्रेम करें', 'मियां मुसलमान', 'पीर पड़ाई', 'अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो'। सबटा नाटक देवदत्त जी के प्रकाशन 'किताबघर' से प्रकाशित छै। तीन-चारि टा एकल नाटक और छै, जे छपलय नै। सोलो हमर और ये जकरा हम लिखने छी आ मंचित सेहो क' रहल छी हिन्दी में। मैथिली मे जे हमर एकल नाटक 'मै नई कृष्णा की', 'एक नई मेनका', 'बिम्ब-प्रतिबिम्ब', 'भिखारिन', 'नौरंगी नटिनी', 'सवाई भाई राम सिंह' आदि हिन्दी मे छै। 'चिकन चिली' जे कॉमेडी प्ले छै, 'मंटो, इस्मत दोस्त-दुश्मन' एखन हम लिखलहुं आ प्रस्तुति सेहो मुंबई थियटर फेस्टिवल मे भेल छै। ई सब नाटक एखन धरि अप्रकाशित छै, मुदा एकर मंचन भ' रहल छै। मैथिली मे हमर एकटा नाटक अछि, 'मदद करू संतोषी माई', जे चेतना समिति विद्यापति पर्व समारोह मे मंचित केलक। योजना छै जे मंचित केला के बाद अगिला साल ओकरा प्रकाशित करैत छै, हमरा सं प्रोमिस सेहो कयलनि जे हम प्रकाशित करब, मुदा ई नाहि जानी की गप छै, मुदा अपन नियम के अपने ताक पर राखि के प्रकाशित नै कयलनि अछि। दोसर नाटक छै 'भाग रौ बलचंदा', 'बलचंदा' एकल नाटक छै आ 'भाग रौ' सामूहिक नाटक छै। मुदा ओकर प्रकाशन बड दीनहीन छै। हम मैथिली मे नाटक कम लिखि के, मिथिला के गारि या जेकरा डहकन कहैत छै, ओ गीतक प्रस्तुत्ति दिस उन्मुख भेलहुं ये। ओकर उदेश्य मात्र ई छै जे हम मिथिला के कला, संस्कृति, खान-पान सबके मिथिला के बाहर बाला लोक सभके परिचय कराबी।

विनीत उत्पलः अहांके नाटक मे सिर्फ मिथिला समाज नै भारतीय समाज आबैत छै, ते अहां के नाटक के चरित्र चित्रण मे सिर्फ मिथिलाक स्त्री आबय ये या भारतक स्त्री आबय ये। कोन कांसेप्ट से आबय ये एकटा स्त्री?

विभा रानीः जखन हम कथा लिखैत

छियै ते महिला पात्र हुए या पुरुष पात्र हुए, हम कोन पृष्ठभूमि पर लिख रहल छी। जेना हम चेन्नई मे छलहुं ते हम चेन्नई के पृष्ठभूमि पर लिखलहुं। हम एकटा कथा लिखले छलहुं 'अभिनेत्रियां' जे 'हंस' मे सेहो छपल छलय, ओ चेन्नई के आ चेन्नई के चुनाव पृष्ठभूमि पर छलय। आब जखन हम चेन्नई के पृष्ठभूमि पर लिखबय तखन निश्चित रूप से कथाक पात्र ओहि ठाम सं एतय। मुदा मिथिला हमरा भीतर बसल अछि, कण-कण मे बसल अछि तें वर्णन करय मे जों सिमली मेटाफर करय के अछि ते हम हिंदी या मैथिली मे सिमली मेटाफर के प्रयोग करैत छी। मुदा लिलीजी जतय रहैत छथिन या रहलखिन ओहि ठामक परिवेशक के उठा के केलखिन। ओ हमर प्रिय आ आदरणीय लेखिका छथि, हुनका सं हम बहुत प्रेरणा लैत छी, भाषा हुनकर, स्टाइल हुनकर, विषय सब किछु। हमरो यैह प्रयास रहैत ये जे हम जतय के पात्र उठाबैत छी, ओतुका एकटा हम फ्लेवर अवश्य दी। जेना हम महाराष्ट्र के ल' रहल छी ते एकटा नाटक छल जेकर पहिनुके लाइन छले 'नको'। जे मराठी शब्द छले मतलब नहीं। ओकर बेसी प्रमाणिकता देबअ लेल जे छै, हम स्थानीयता के प्रयोग हम करैत छी। मैथिली मे लिखी व हिन्दी मे लिखी, ओकर स्थानीयता, ओकर प्रमाणिकता आ ओकर परिवेश के वर्णन करैत हम अपन भाषा के प्रयोग करैत छी।

विनीत उत्पलः अहां जे पीढी सें आबि रहल छी आ आइ के पीढी मे कोनो स्त्री कलाकार एहन काज क' रहल छै, जिनकर भविष्य उज्जवल छैण

विभा रानीः देखियो, संयोग एहन छै जे हम मुंबई मे रहय छी। मुंबई मे एखन मैथिली नाटकक स्थिति कोनो एहन नै छै। एकाध बेर हम प्रयास सेहो केलहुं। मुदा जे सब हमरा मैथिल भेटलेन, हुनक जे एप्रोच छले, से थियेटरक एप्रोच नै छलय। फिल्म आ टीवीक एप्रोच छलय। हमरा थियटर करैक लेल थियटरक एप्रोच बाला लोक चाहि। संभव नै भ' सकलय मैथिली मे नाटक केनाय। स्थिति ई अछि जे मैथिली के बेसी नाटक हम सेहो नै देखि सकलहुं मैलोरंगक नाटक हम देखने छी, पवन झा छथि, हुनका एकल नाटक के किछु अंश हमरा देखबाक मौका भेटल अछि। बहुत प्रतिभावान छथि, हमरा नीक लागल। संगीत नाटक अकेडमी के मैथिली लेखन कार्यशाला छल मधुबनी में, हमरा ओतय जेबाक अवसर भेटल, ओही ठाम एकटा लड़की देखलये सपना कुमारी झा। ओकरा मे हम एकटा स्पार्क देखलये। पूरा काज ते हम नै देखि सकलिये, मुदा ओकर जे फुल पर्सनालिटी देखलये, ते हमरा लागल जे ओकरा नीक सं तैयार कल जाय ते ओ उभरि सकैत छै। देखियो जे एकटा एक्टर केहिनो छै, डायरेक्टर ओकरा केहन भेटय छै, ओकरो पर किछु निर्भर करैत छै। मैलोरंग मे एक-दू टा नाटक सेहो देखलहु, मुदा नाम नै मोन मे ये, एक-दू टा महिला पात्र मे स्पार्क छै।

विनीत उत्पलः बीस-पच्चीस साल सें बेसी के अनुभव ये नाटक के। मिथिला सं कोनो महिला कलाकार आगू आबय ते ओकरा कोन तरहे के परेशानी होयत छै, कोन तरहे के तैयारी करबाक चाही, जाहि सं ओ देश के सम्मुख, राष्ट्र के सम्मुख मैथिली भाषा क' ल' क' आगू आबि सकय?

विभा रानीः महिला पात्र हुए या पुरुष पात्र हुए, कियो थियेटर करै लेल आबि रहल छै, ओकरा ले पहिल, पहिल आ पहिल आ आखिरी शर्त छै मेहनत। जे हुनका अपन मेहनत सं नै भागैक चाही। शॉर्टकट नै अपनैबाक चाही। शॉर्टकट मे विश्वास नै करैत छी, कम मेहनत मे विश्वास नै करैत छी। दोसर, जौं अहां मैथिली मे करय चाहैत छी, ते मैथिली के साहित्य, मैथिली आ मिथिलाक संस्कृति, लोक कलाक लोक, ऊ सब हमर सबहक तागत छै। मिथिलाक गीत, मिथिलाक खान-पान, बात-व्यवहार, मिथिलाक खेती-पथारी, मिथिलाक अनाज, चाइल-ढाल, बाजब-भूकब, जे-जे छै ओकरा पर अहां के सूक्ष्म गहन अध्ययन हेबाक चाही। मिथिलाके साहित्य पर अहां के गहन अध्ययन हेबाक चाही, हरिमोहन झा, लालदास या कुणाल जी, बिभूति आनंद, अग्निपुष्प, कामिनी के छथिन, हिनका बारे मे बहुत गहन अध्ययन नै हुए, मुदा तैयो किछु ते जानकारी हेबाक चाही। हिन्दी सं प्रभावित नै हेबाक चाही। हिन्दी मे ऐना नाटक भ' रहल छै, हिन्दी मे ऐना फिल्म भ' रहल छै, हिन्दी मे ऐना टेलीविजन भ' रहल छै, तें मैथिली मे ऐना हेबाक चाही, ते एकरा कात राखबाक चाही। अहां मैथिली मे क' रहल छी ते अहां मैथिली के सब सेट ल' क' आऊ। मैथिली मे प्लान करू आ करू। दोसर चीज जे छै, एट द सेम टाईम जौं अहां मैथिली मे करी तें ऐना नै कि खाली मैथिली मे करि। अहां भाषा के स्तर पर। अहां कहलिये जे राष्ट्रीय स्तर पर या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर। राष्ट्रीय हुए या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर या परदेशी स्तर पर। आय के समय मे तीन भाषा के बहुत महत्व छै, एकटा आपन मातृभाषा मैथिली, तकरा बाद हिन्दी आ तकरा बाद अंगरेजी। एकटा मोटा-मोटी जानकारी अहां के अंगरेजी के सेहो हेबाक चाही, काज करय के चाही। एकटा स्टैण्डर्ड हिन्दी जे होय छै, ओही हिन्दी के उच्चारण, तफल्लुज, बाजय के तरीका, ई सभ हेबाक चाही। जखन अहां चरित्र क' रहल छी, एहन व्यक्ति के जे बंगला टोन मे हिन्दी बाजि रहल छै, भोजपुरी टोन मे हिन्दी बाजि रहल छय ते ई दोसर चीज छै। मुदा एज ए पर्सन, एज एन एक्टर, एज एन इंडिविजुअल अहां केकरो सं गप करैत छी, अहां के हिन्दी मे गप करैक अवसर भेटय ये, स्थिति बनय ये ते तखन अहां ई नै कहि सकैत छी जे नै हम ते मैथिली बाजैत छी। अहां के हिन्दी मे अपन बात कहय पड़त। जौं अहां के अंगरेजी मे अपना के कन्वे करय के ये ते अहां के आपन अध्ययन हेबाक चाही, जे अपना के अंगरेजी मे कम्यूनिकेट क' सकी। ई तीन-चारि टा चीज जे छै, से कोनो कलाकार के, कोनो व्यक्ति के, अपना मे जे छै, हासिल करय पड़तै। जौं अहां नै करबय ते एक्के चीज कहैत छी जे मौका अहां छोड़ि देबय ते मौका अहां के सेहो छोड़ि देत।

विनीत उत्पलः 'अवितिको' नामक संस्था के स्थापित करैक संकल्पना मन मे कोना आयल आ ओकरा अहां कोना आगां बढ़ैलिये?

विभा रानीः हम लेखक छलहुं। जखन हम नाटक नै क' रहल छलहूं ते हम लेखन मे छलहूं। एकटा दु:ख जरूर अछि जे हिन्दी आ मिथिली के लोक कहैत छथि जे चूंकि आब अहां नाटक क' रहल छी ते आब अहां साहित्य से निकलि गेलहुं। ते हम कहय चाहब जे हम साहित्य से नै निकलल छी। नाटक हमर स्थिति के

विस्तार छै, जे हम क' रहल छी, से हम करब। अवितिको के संकल्पना के पाछां वैह लेखक छै। हम लिखैत छी ते हम आस-पासक चरित्र लैत छी। चरित्र क' ल' के हम कथा लिखलहुं, ओ छैप गेलय, हमरा वाह-वाही भेट गेल। मुदा ओ चरित्र के की भेटलय। हुनका ते किछु नहि भेटलय। हमरा लागल जे इहो this is a kind of exploitation. ओही समाज के, ओहन लोक सभ के, एक्सपोलाइटेशन हम क' रहल छिये। ते हमरा लागल जे हम बदला मे की दी। लैत छी हम सब एहि समाज सं। मुदा जखन समाज के देबअ लेल मौका भेटय ये ते समाज के खाली गारि पढ़ैत छी जे समाज ई, समाज ऊ। हमरा लागल जे हम समाज के सार्थक रूप सं की द' सकैत छी। तखन ई सोचि के हम अवितोको के स्थापना केलहुं। एकर पूरा नाम जे छै, अक्षर विश्वका तोष और कोश, एकर शार्ट फार्म अवितोको छै। फेर एकरा मे हम अपन सोचलहुं जे चलेंजिंग काज करयमे नीक लागय ये ते, हमरो किछ आत्मसंतुष्टिक मामला हेबाक चाही। फेर हमरा लागल जे हम काज किनका लेल करी। हमरा लागल जे सीनियर सिटिज़न छथि, जे तरह-तरहक वृद्धाआश्रम मे रहैत छथि, जे स्पेशली बच्चा सब छै, लोक सब छथि, एक अलग स्थिति मे ओ सब रहैत छथि। हुनका सबके संग काज केनाय बेसी चैलेंजिंग छै। तखन हम जेल के साथ हम काज केनाय, हम जेल मे जे कनी-मनी विशेषता अछि, जे हम जनित छी, से साहित्य मे जानैत छी, नाटक मे जानैत छी, चूंकि बेटी सब आर्टिस्ट अछि ते आर्टिस्ट फेटरनिटी से सेहो हमर जान-पहचान अछि ते तीन थिएटर, आर्ट और साहित्य के माध्यम सं हम हुनका बीच मे या हुनका सें इंटरैक्ट करैत छियै। तखन हमरा लागय ये जे हुनकर एमबिशन के ख़त्म क' के, निषेध के ख़त्म क' के, सबसं पहिने जे चारि घंटा-पांच घंटा बीच मे रहैत छी, हुनका चेहरा पर एकटा मुस्कान आबैत छै। हुनका भीतर किछु करय के इच्छा जागेत छै। एही सं लागैत अछि जे हम अप्पन उद्देश्य मे सार्थक छी। ओकरा आगां पढ़बय लेल जे मेन स्ट्रीमक लोक छै। थियटर के लोक जे छै या आर जे लोक छै, हुनका एकरा मे शामिल केलहुं। एखन हमर जे अलग प्रयास ये, मिथिला के जे अहां सुनने होयब हमर प्रोग्राम जे 'डहकन' जे गाली गीत गाबैत छै, मुंबई मे जे मैथिलानी जे छै, ओ सभ एही मे शामिल भ' रहल छै। हुनका ल' क' हम गारि गीत प्रस्तुत क' रहल छी।

विनीत उत्पलः अहां के तबियत सेहो ख़राब भेल। कैंसर से जूझलिये। ओकर बाद केहन तरहक परिवर्तन अहां के बुझाय रहल छै?

विभा रानी: देखियो, रोग-व्याधि ते होइते रहैत छै। देह छै ते दस तरहक रोग-व्याध हेबे करतय। संयोग के बात छै जे हम बचपन सं रोगिया किस्म के छलहुं। लोक चिढ़बैत छल जे एकर ब्याह हेतय ते एकर ससुराल बला लोक के प्रेस्क्रिप्शन थमा देबय। सबटा पाय दबाइये मे खर्च क' देलहुं ते हमरा देबाक लेल किछु नै ये। मुदा रिपोर्ट सब नार्मल होयत छलो। हम कहतो रहि जे सबटा पाय व्यर्थ भ' गेल जे रिपोर्ट ते नीके छै, किछु ते हेबाक चाही। मुदा 2013 मे जे कैंसर डायगनोस भेलय। हमरा लेल दू टा रास्ता छल जे या हम ओकर हंसि के मुकाबला करि या कानि के करी। भ' गेल छै ते भ' गेल छै। जे ओकर समय छै ट्रीटमेंट के। जे समय लागय के छै ओ लागबे करतय। हमरा लागल जे जों हम कानब ते हमर घर, हमर आसपास, हमर घर बला, हमर बच्चा, केकरो मुंह पर मुस्कान नै एतय। हमहूं जों कानब ते हमरो स्थिति निराशाजनक रहतय। आसपास सेहो निराशाजंका स्थित रहतय। तखन हम हिम्मत बान्हलहुं जे हमरा एकर मुकाबला करय के ये। पूरा हिम्मत से, पूरा सकारात्मक तरीका सं, हमरा एकर मुकाबल करैक ये। चूंकि हमरा पढअ-लिखअ के कनी-मनी सउर अछि, से बहुत पैघ हमर सहारा बनल। ओही समय मे जे छै हम अवितोको रूम थियटर के स्थापना सेहो केलहुं। एकर कोलकाता चैप्टर खुल गेल छै, वाराणसी चैप्टर खुल गेल छै, दिल्ली चैप्टर सेहो खुलि गेल छै। हम बहुत गुपचुप काज करैत छी, हां बहुत ढोल बजा के काज करय के अभ्यास नै ये। मुदा हमर जे काज होय छै ओकर दूरगामी असर पड़ैत छै। आय सब संस्था रूम थियटर पर काज क' रहल छै।

विनीतः नव लोक/युवा कोन कोन रचनाकार के पढय जे ओ थियटर मे नीक करय?

विभा रानी: हमर रूम थियटर के कल्पना सिर्फ थियटर तक नै छै। कोनो चीज अहां पढी ते ओकरा मे परफॉर्म करि। जेना अहां कविता पढ़ि रहल छी ते अहां दर्शक के देखि के पाठ करू जाहि सं दर्शक अहां से मुखातिब हुए। ते ओही हिसाब सं अहां अप्पन रुचि सं अपन काज करू। जों अहां मैथिली मे क' रहल छी ते अहां विद्यापति के, हरिमोहन झा के अवश्य पढ़ू। दू टा के पढ़ब बड जरुरी छै। जों अहां लोक पर किछु काज क' रहल छी ते अहां स्नेहलता के जरुर पढ़ियो। नाटक पर किछु काज क' रहल छी ते अहां कुण ााल जी सं अवश्य संपर्क करि। हुनका संग काज करी। हिन्दी ते अथाह छै। हिन्दी मे चूंकि सब भाषा के साहित्य छै, अनुवाद के रूप मे, तमिल, तेलुगू, बंगला, मैथिली सेहो, ते ताहू मे हम खास क' के कहय चाहैत छी जे अहां प्रेमचंद अवश्य पढ़ी आ उर्दू मे सआदत हसन मंटो के अवश्य पढ़ी। ई दुनु के जों अहां पढ़य छी ते अहां के लागत जे अहां के जानकारी आ साहित्य के समझदारी के नव-नव आयाम भेटत।

विनीत उत्पलः आख़िरी सवाल जे अहां के नाटक देखय लेल लोक कियै जाय?

विभा रानी: हमर नाटक देखै लेल लोक एही द्वारे जाय जे हम असगरे बहुत रास रास्ता प्रशस्त क' के मिथिला सं आयल छी, एतेक दुरूह रास्ता छै ओही ठाम के, ताला लागल छै, ओही ताला के तोड़ि के हम रास्ता बनेलहुं आ एही मंजिल धरि पहुंचलहुं। ओही प्रेरण ाा लेल लोक के सेहो आबैक चाही। गीत देखैक चाही।

हम जे नाटक करैत छी, ओकर जे प्रस्तुति छै, सोलो नाटक एक अलाप नै छै। सोलो प्रस्तुति मे हम कोना काज क' रहल छी। पंद्रह कैरक्टर छै या अठारह कैरक्टर छै, ओ सब देख' लेल नाटक देखी।

तेसर, जे डायलॉग डिलीवरी की होय छै,

चारिम, स्क्रिप्ट के कसावट देखय लेल नाटक देखहि लेल आव।

पांचम, प्रस्तुति के जे एकटा जीवंतता, एकता एनर्जी होय छै, ओही एनर्जी लेल लोक हमर नाटक देखय।

नारी संसार आ सीता

✍ डॉ शेफालिका वर्मा



शेफालिका वर्मा मैथिली साहित्यक प्रख्यात नाम। साहित्य अकादेमी सम्मान, फर्स्ट वर्ल्ड वीमेन अवार्ड, लाइफटाइम वीमेन एक्सीलेंस अवार्ड, इन्डो यूरोपियन चैम्बर, भारत सरकार, यात्री चेतना सम्मान, मिथिला विभूति, स्वजन सम्मान, मिथिला रत्न, अटल मिथिला सम्मान, मैथिली की महादेवी, काव्य विनोदिनी, मुरलीधर शेखर सम्मान, मैथिली कि मीरा आदि अनेको सम्मानसं सम्मानित। हिन्दी आ मैथिलीमे दर्जनों पोथी प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, मैथिली भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकार आओर बहुत रास संस्थामे से संबद्ध।

सम्पर्क:
ए, 103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स
डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो, 9311661847
ईमेल : shefalika1943@gmail.com



त विधि श्रीजी नारी जग मांहि / पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं ... मिथिलाक सीता आय मिथिलेक नै वरन समस्त विश्वक सम्मुख ज्ञान, तपस्या, त्याग आ आदर्शक प्रतिमूर्ति छथि। सीता मिथिलाक बेटी छलीह, मिथिलाक धरती सं अवतरित, राजा जनकक पुत्री भ' गेलीह। सुख आरामक छाहरि रहल ...

पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा
सीय न दीन्ह पग अवनि कठोरा...

वैह सीता जंगल जंगल, कांट कुश के नन्दन-कानन बनओने चलि देलीह अपन प्रियतमक संग चौदह बरिसक वनबासमे ...आ एकर बाद ते सम्पूर्ण रामायण अछि, सीता हरण सं सीता निर्वासन धरि। धरतीक बेटी पुन: धरतीमे समा गेलीह। --ई मिथिलेक नहि वरन भारतक प्रत्येक नारीक व्यथा-कथा छी।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो सं ल' क' अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचलमे है दूध आओर आंखोंमे है पानी --एहि दृष्टिकोण सं नारी कें देखल जाइत रहल। नारी कें देवी ते बना देल गेल मुदा ओकरा हाड़ मांस केर स्त्री केओ नै बुझलक; नारीक पांखि काटि ओकरा स्वतंत्र छोड़ि देल गेल। मर्यादा पुरुषोत्तम राम सीता कें आनबा लेल रावण सं युद्ध केलनि, असीम सागर पर ससीम पुल बान्हल गेल, बाजा गाजाक संग सीता अयोध्या प्रवेश केलनि मुदा सीता कें की भेटल--अग्नि परीक्षा--? एकटा धोबीक कहला पर सीता कें अग्नि परीक्षा। एतबे नै गर्भवती सीताक संग मर्यादा पुरुषोत्तम राम जे केलनि आइ तक नारी समाज भुगति रहल अछि, भनहि निर्वासन तलाक बनि गेल होइ। समाजक समस्त अव्यवस्थाक दोष तुलसी नारी कें बुझलनि। आ समाजमे अग्निपरीक्षाक परिपाटी बनि गेल।

स्त्री सती होइत अछि ते देश उन्नति करैत अछि। मुदा, ओहि सतीत्व के भ्रष्ट कें करैत अछि से समाजमे गौरवान्वित रहैत अछि।

सीता सेहो एहि अग्निपरीक्षा के धर्मसम्मत बुझैत छलीह। ओ मूक छलीह मुदा, उदास सेहो नै छली। ओ तखन नै बुझैत छली जे एहि अग्नि परीक्षा सं ओ समाज कें कतेक भयंकर अस्त्र द' रहल छलीह, पुरुष अन्याय क' सकैत अछि मुदा, अपन पत्नी कें आदर्शक नाम पर ओकरा मूक-बधिर बनाए त्यागक गरिमामय चोला पहिना दैत अछि। तुलसीदास सीताक प्रतिवाद कें दबाय नारी कें अपमान सहबाक परम्परा कें जन्म देलनि। एहि अग्नि परीक्षा सं स्पष्ट अछि जे ग्रहण करबा सं पहिने अग्निपरीक्षा आवश्यक अछि, यदि ओ अपवित्र भेलीह ते अग्राह्य।

राम अग्नि परीक्षा ल' सकैत छथि, सीता कें अग्नि परीक्षा देम' पड़तैक।

सब सं पैघ प्रश्न छैक जे सीता एतेक दिन रावण लग रहली त' हुनक परीक्षा आवश्यक मुदा राम सेहो ओतबे दिन सीता सं अलग रहलाह, की हुनका लेल चरित्रक कोनो परिभाषा नै? आकि पुरुष के चरित्र होइतहि नहि अछि? समाज पुरुषक बनाओल अछि तखन राम के अग्निपरीक्षा देनाय उपहासप्रद बुझा पड़ैत अछि।

राम सीता सं विवाह कयलनि, जन्म-जन्मांतर धरि सुख दु:खमे साथ रहबाक सप्पत लेलनि। सीताक रक्षाक भार राम पर छलनि। रामक कर्तव्य छल, मुदा ओ सीताक रक्षा करबामे सर्वथा असमर्थ रहलाह। मर्यादा पुरुषोत्तम? अपन पत्नीक रक्षा नहि क' एकटा धोबी कें कहला पर गर्भवती सीता के बनवास दय देलनि, की यैह पुरुष मर्यादा थीक? स्त्री कें अबला बनाए ओकरा संग अन्याय करैत चली? एकटा निरीह पशुक बलि ते सब दैत छैक, रामक मर्यादा ते तखन रहितैक जखन ओ

अपन निर्दोष पत्नी पर लगाओल लांछन के हटाए हुनक उज्ज्वल रूप प्रजाक समक्ष रखबामे समर्थ रहितैथ, नै ते दु:ख सुखमे संग रहबाक वचन निभयबा लेल ओ राजसिंहासनक मोह छोड़ि गर्भवती पत्नीक संग जंगल चलि देतियैत। ...रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाइ बरु वचन न जाइ... तखन जन्मजन्मांतर धरि वचनक कोन मोल?? मुदा, भेल की, किछु ते राम नै क' सकलाह। पत्नी तं दूर एकटा प्रजाक हैसियत सं सेहो सीताक संग न्याय नहि क' सकलाह। की यैह रामराज छल? स्पष्ट अछि समाज पुरुष प्रधान छल। तुलसी स्वयं पत्नी प्रताड़ित छलाह। ओ बिसरि गेलाह ओहि स्त्रीक कारण तुलसी तुलसीदास बनि सकलाह। हुनक मानस जन -काव्य बनि हुनका अमर क' देलक।

एकटा पतिक कारण, रामक कारण कतेक दारुण व्यथा सह' पड़ल सीता के? अंतमे धरती सेहो ने सहि सकलीह आ धरती फाटि गेलीह सीता कें अपन कोरमे ल' अंतर्लीन भ' गेली।

सीता तेजस्विनी छली, हुनक चरित्रमे एतेक पैघ गरिमा, हुनक व्यक्तित्वमे एतेक तेजस्विता छल, जे कुटिल, खल, कामी रावण अपन वासनापूर्ण दृष्टि सं हुनका दिसि ताकि नै सकल। अभिमानिनी सीता जे वाम हाथ सं शिवधनुष उठेनाइ खेल बुझैत छली ओ कोना अपन एतेक अपमान सहि सकलीह! किएक ने अपन तेज सं तीनू लोककें प्रकम्पित क' देलीह। तखनहि किएक ने धरतीमे समा गेलीह। रामचरितमानस तुलसीक लिखल छल।

युग-युग सं राम सीताक अग्नि परीक्षा ल' रहल छथि। सीताक मानसिकता कें एतेक दुर्बल बना देल गेल जे ओ एकर प्रतिकार नै क' सकैत अछि। जे राज-पाट छोड़ि अपन पतिक संग रने-बने बौआइत रहली, ओ एकटा सोनाक मृग लेल राम कें ओकरा पाछा पठा दैक। लक्ष्मणक खींचल रेखाक बाहर पयर देबा सं नारी रावण द्वारा हरण हेबाक भ' ...- आइयो ऊ रेखा नारीक चारु कात घिचल अछि। सीता के एकटा व्यक्तित्व अछि ई बुझबाक क्यो यत्न नै केलक। सब दिन सं सीता अग्नि परीक्षा द' रहल अछि मुदा कोनो युगमे कोनो राम कें अग्निपरीक्षा देबाक आवश्यकता नै पड़ल। एतबे नै मानसक उर्मिलाक दुख अकल्पित अछि। परम्परा बनेबाक अधिकार खाली पुरुखेक रहल।

आइ नारी असुरक्षित अछि, आन्तरिक भ' नारी कें जर्जर केने जा रहल अछि।

नारी पुरुख द्वारा अपवित्र कयल जाइछ मुदा, पुरुख पवित्रे रहि जायत अछि, कतेक असंगत अछि।

स्वयं राम कतेक छल-प्रपंच सं बालि के, रावण कें मारलनि, ओ सब क्षम्य अछि। यदि आइ मानस कोनो स्त्री कें लिखल रहितैक ते ओहिमे नारी शिरोमणि सीता के नाम रहितैक।

नारी अपन अस्तित्व के नै चिन्हि सकल। आय मिथिलाक महिला लेखन के क्षेत्रमे सेहो खूब आगू बढ़ि रहल छथि। विदुषी महिला के बाढ़ि आबि गेल अछि। जेना गार्गी, मैत्रेयी, भारती के युग वापस आबि गेल होइ मुदा युग आ समाजक अनुरूप। मुदा मोजर देम बाला पुरुष समाज। आख़िर कियैक पुरुषक स्वामित्व प्रत्येक क्षेत्रमे आगू आबि ठाढ़ भ' जायत अछि!!

लेखनमे केओ महिला आ पुरुष नै होइत छथि। सब अप्पन-अप्पन विचार, आस्था अनास्था, भोगल-देखल यथार्थ कें कल्पनाक रंग-बिरंगी आवरणमे लपेटि अपन-अपन रचना सबमे पसारैत छथि। लेखन लेखन थीक।

मिथिला गार्गी, मैत्रेयी, भारती आदि विदुषी के भूमि थीक। पुरुष प्रधान समाजक वर्चस्व के छिन्न भिन्न करैत भारती के तर्कक गर्जना स्यात आइ नारी मुक्ति आन्दोलनक आधारशिला बनल।

आइ नारी मुक्ति आन्दोलनक धूम मचल अछि आ ई सब एहिना नै भेल, मिथिला ते बादमे आयल। सौंसे विश्वमे कमोबेश नारीक यैह स्थिति छल। मेरी वोल्स्टन क्राफ्ट के नेतृत्वमे 1792 ईस्वीमे पश्चिमी देशमे नारी मताधिकार के लेल अपन स्वर उठौलीह, जकर फल ओकरा 20वीं शताब्दीमे भेटल।

जखन भारत लेल नव संविधान बनेबाक क्रममे पूर्व ब्रिटिश भारतक तत्कालीन सचिव ईएस मांटेग्यू एहि ठाम 1917मे दौरा पर आयल छलाह, तखन पांच महिलाक एकटा प्रतिनिधि मंडल हुनका सं भेंट क' नारीक लेल मताधिकार के मांग रखने छलीह। मुदा प्रतिफल किछु नै। 1919मे मे जखन गवर्मेंट ऑफ इंडिया बिल आयल तं एनी बेसेंट, सरोजनी नायडू आ हीराबाई सब महिलाक पक्षमे अपन विचार रखने छलीह, मुदा एहि प्रस्ताव कें चयनित सरकार के ऊपर छोड़ि देल गेल। एहि सं पहिने पहिलुक बेर ऑस्ट्रिया, जर्मनी, डेनमार्क आ स्विट्जरलैंडक लाख के लाख लोग 19 मार्च 1911मे अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष मनौने छल जाहिमे प्रदर्शनी, महिला परेड के संग संग मताधिकार के मांग संगे सार्वजनिक कार्यालय पर स्वामित्व आ रोजगारमे लैंगिक भेदभाव के समाप्त करवाक मांग राखल गेल छल। एतबहि नै नारी निरन्तर संघर्ष क' रहल छलीह।

एक बेर न्यूयार्कमे मीरा नायर, पद्मा लक्ष्मी आदि साउथ एशियन प्रोफेशनल स्त्री सभक मीटिंग भेल छल, जाहिमे नारीक कैरियरमे अस्तित्वक चुनौती सभक सामना कोना कर' पड़ैत छैक, कोन-कोन संघर्षक सामना कर' पड़ैत छैक, आदि कें विस्तृत चर्च भेल छल।

नारीक इतिहासमे साउथ एशियन वीमेन्स लीडरशीप फॉरम द्वारा कांग्रेस 2008मे गठन कयल गेल, जाहिमे नारीक केरियर, अस्मिता, अस्तित्व आ चुनौती के विशद व्याख्या भेल। चूंकि नारी आब मल्टीनेशनल कंपनीमे काज क' रहल अछि तें ग्लोबल समस्या, ओकर रीति-नीति सब पर नारी अपन अपन विचार राखल, एहिमे शाहवा अली, जी एम माइक्रोसॉफ्ट आ पुनीता कुमारी सिन्हा वरीय मैनेजिंग डायरेक्टर सब अनेकानेक महिला उपस्थित छलीह।

2003मे स्थापित स्वालफ शिकागो आ वाशिंगटन डीसी के संग न्यूयार्कमे स्थापित भेल।एकर फाउंडर सिमी आहूजा बजलीह जे चारि हज़ार सदस्य यू के, यू एस आ साउथ एशिया सं बनल अछि। ई एकटा अनुमान मात्र अछि जे सौंसे विश्वमे महिला सब अपन स्थिति के विरोधमे कतेक जागरूक भ' रहल अछि।

ओहिना नै बिगुल बाजल अंतरराष्ट्रीय नारी संघर्ष आंदोलन के। ब्रिटिशमे बेटीक ब्याह चर्चमे होइत अछि ते पिता अपन बेटीक हाथ पकड़ने पादरी लग जायत अछि, आस्ते-आस्ते डेगा-डेगी दैत, नहुं नहुं कोबरक कनियां जकां आ पादरी के सोझा पति के हाथमे बेटीक हाथ दैत अछि, लड़का सं पादरी पूछत अहां तैयार छी ब्याह करवा लेल, लड़का हं कहैत अछि, फेर ओकर परिवार सं पूछत अहां सब तैयार छी एहि विवाह लेल समस्त बराती समवेत स्वरमे बाजत, हं हं हम सब तैयार छी, यैह क्रिया बेटी आ बेटीक सर समाज, परिवार सं। मुदा, बेटी के माय आ बेटाक माय के कोनो मोल नै।

किन्तु, ओहियो ठाम किछु वर्ग मिथिलाक पुरान विचारधाराक परिपोषक, हम सब सेकेंड क्लासमे आबै छी, पुरुष लोकनि एखनो फर्स्ट क्लासमे अबैत छथि, आन, केओ बजलीह, अहां की अपन माय के, अपन पति के माय के सेकेंड क्लास के प्राणी बुझैत छी, ओ बेचारी ठकमका गेल छलीह, सरिपों सब केओ इक्वल छी, बराबर छी। हम सब, अपना कें संतोष दैत छी।

यैह पुरुषप्रधान समाज सौंसे विश्वमे प्रायः रहल। जखन कि हिन्दू विवाहमे सात वचन देल जायत छैक, अंग्रेजमे सब मिला जुला कें चारि वचन वर कनियां लैत अछि, कहबाक तात्पर्य जे संस्कार संस्कृति सभक मिलैत जुलैत अछि, किन्तु, परिवेश अलग-अलग होइत छैक, बाट अलग अलग, लक्ष्य एके ब्याह, परिणय। जेना सत्यनारायण भगवान के कथाक पोथीमे कोनोमे पांच अध्याय ते कोनोमे सात अध्याय रहैत अछि, मुदा कथा सौंसे ओहिना सात वचन ली आ कि चारि वचन --मिला जुला सब एक्के।।

सौंसे विश्वमे सब ठाम छोट मोट मिथिला बसल अछि। मिथिलाक बेटी, मिथिलाक नारी कतेको मल्टीनेशनल कंपनीमे काज क' रहल। विश्वक खेल-कूद प्रतियोगिता सबमे भाग ल' रहल अछि, आब ते लड़ाकू विमान, हवाई जहाज, ट्रेन सब चला रहल अछि मिथिलाक बेटी, औटो रिक्शा, टैक्सी सब किछु...

ई ते एक वर्ग अछि मिथिलाक नारी के जे विश्वक नारी संग ताल मेल बैसबैत जा रहल अछि किन्तु, ओ स्यात ई नै बुझैत छथि जे नारी मुक्ति आंदोलन ककरा ले, ककरा सं मुक्त हेबा ले नारी चाहैत अछि, जिनका स्वयं मुक्त करबाक क्षमता अछि ओ मुक्ति कियेक मांगत?

पिता सं, पति सं, पुत्र सं, कथमपि नै, तखन ककरा सं, एहि ठाम मिथिलांचल के नारी ठकमका जायत अछि।

मुदा, परिवर्तन भ' रहल अछि, कियेक ते दोसर वर्ग गाम घरमे रह' बाली विशाल नारी समाज सेहो कम नै अछि। जमाना कें हवा ओहि ठाम सेहो पहुंचि चुकल अछि। नारी अपन अस्तित्व के चिन्हबाक प्रयासमे लागल। तरह तरह के ग्रामीण उद्योग धन्धा सब शुरू भ' गेल, मुखियामे सेहो ओकरा स्थान भेटि रहल अछि, ई दोसर गप जे ओहिठाम सेहो पुरुषक विचार थोपल रहैत अछि। गाम गाममे शिक्षा मित्रक कारण गृहिणी स्कूल जाय लागल, कान्हा पर बैग लटकाय, उनटा आंचर में, चट्टी पर फर्र फर्र चलैत, सौंसे गाम के उपेक्षित करैत, परम्परा अपरम्परा कें ध्वस्त करैत नारी आगू बढ़ि रहल अछि।

किन्तु, दहेजक आगिमे आइ आन ठाम जकां मिथिला सेहो जरि रहल अछि। बेटा बिकि रहल अछि, दहेज लेनाय स्टेटस बनि गेल अछि। मुदा, माता पिता नै बुझय छथि जे दहेजक कारण वृद्धावस्थामे अपन पूतहु बेटाक द्वारा ओल्ड एज होम के शरण लेब पड़ैत छैक आ नै ते अपने घरमे ओल्ड एज होमक दुख भोगता। एहि ठाम खाली पुरुषेक दोख नै रहैत अछि, पुरुष कें दोख देनाय हमर प्रकृति नै, प्रवृति बनि गेल अछि। सांच ते ई अछि जे कतेक ठाम नारिये नारीक दुश्मन बनि जायत छैक। दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, पुतहु के हरदम ठोकरा देनाय, माय बाप की देलक, कोन लुरि सिखेलक ई सब एकटा नारिये द्वारा यानी सासु ननदि द्वारा कहल जाइत अछि। नारी के चरित्र पर कन्ना फुस्सीमे सेहो नारी कम नै।

कतेक बात अछि किन्तु यदि नारी नारी के सहयोग देम लागय तं सृष्टि के रंग किछु आर रहितैक। समाजक समस्त बुराई नारी खत्म क' सकैत अछि, ओकरामे एतेक शक्ति अछि, खाली समाजक सहयोग, सहृदयता ओकरा भेटक चाही। पराधीन सपनेहु सुख नाहि, एहिठाम पराधीनता के अर्थ समुचित रुपे विश्लेषित नै कयल गेल। पराधीन ओ सब केओ भेलाह जे ककरो अधीन काज करैत छथि। चाहे सरकारी वा कि गैर सरकारी होइ। अवकाश प्राप्त हेबा सं पहिने सब पराधीन छथि। पिता, पति आ पुत्रक अधीन खाली बेटी नै बल्कि बाल्यकालमे बेटा बेटी दुनू पिताक अधीन रहैत छथि, जिनका संस्कार, संरक्षण आ पोषणक आवश्यकता छैक। पतिक अधीन नै, पति आ पत्नी दुनू एक दोसराक स्नेहक, प्रेमक अधीन रहि एक दोसराक परिवार के स्नेहसिक्त करैत अछि। पुत्रक अधीन मात्र नारी यानी माता नै वरन पिता के सेहो वृद्धावस्थामे रह' पड़ैत छैक जिनगी भरिक थाकल ठेहिएल जीबन पुत्रक स्नेहक छाहरिमे सुस्ताए लेल चाहैथ अछि।

सब सं पैघ गप्प अछि जे नारी के अपन कमजोर मानसिकता सं मुक्ति लेबाक चाही। जाहि दिन नारीमे सुरक्षाक बदले स्वरक्षाक भाव, स्वयं युक्तिसंगत निर्णय लेबाक क्षमता आ आर्थिक रूप सं स्वाधीन हेबाक भाव आबि जायत, नारी मुक्त भ' जेतिह। नारी अपन शक्ति कें जनैथ। विद्या आ विवेकक अधिष्ठात्री सरस्वती, शक्तिक अधिष्ठात्री दुर्गा आ ऐश्वर्यक अधिष्ठात्री लक्ष्मी, एहि तीन रूपमे नारी कें राखि भारतीय मनीषाक समस्त संस्कृति कें बान्हि देल गेल। पढ़ि लेलक वेद इतिहास सब, नारी कें मन कें पढ़ी ने, सकल युग युग सं भीत चकित नारी स्वयं अपना कें चिन्हि ने सकल हमर संस्कृति सीता अछि, ओ अवमानना नहि सहि सकत, कहीं एहेन नै जे सीता जकां हमर सभक संस्कृति सेहो एक दिन पतालमे चलि जाइ...

बिगड़ैत युवा सम्हारैत संस्कार

✍ सुरेन्द्र राउत



मैथिली भाषा साहित्य विशेषज्ञ। वर्ष 2006 मे संघ लोक सेवा परीक्षामे मैथिली सं पहिल सहभागी, 2008 सं मैथिलीक शैक्षणिक काजमे जुटल। संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग मे हिनक योगदान सं 100 सं बेसी विद्यार्थी चयनित। अहि लेल 2015 मे बिहार शिक्षा शिरोमणि पुरस्कार सं पुरस्कृत भेलाह। 2018 मे मैथिलीक योगदानक लेल विश्व मिथिला संघ द्वारा सम्मानित भेलाह। एकर अतिरिक्त मैथिली आ सामान्य अध्ययन पर हिनक कतेको रास पोथी लिखल अछि।

संपर्क :
206, तीसरी मंजिल, जैना हाऊस कॉम्पलेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मो. 9015277823



थिलाक शिरोमुकुट मिथिलाक संस्कार अछि। यैह प्रभाव अछि जे कोनो नेना शिक्षारम्भ काल मां पार्वती कें नमन करैत कहैत छथि जे-

साते भवतु सुप्रिता देवी शिखरवासिनी।
उग्रे जतप्सा लब्द्धो जाया पशुपतिः पतिः॥

अर्थात्, शिक्षा तमो आ रज्जो गुणक समाप्ति आ मायाक बंधन सं मुक्ति प्राप्त क' क सतो मार्गक प्राप्तिक लेल होइत अछि। सतो गुण ब्रह्म तत्व होइत छै, जे ब्रह्म तत्वक ज्ञान प्राप्त करैत छथि वैहक 'ब्राह्मण' छथि। ब्राह्मण ओ छथि जे ब्रह्माण्डक प्रति 'वसुधैव कुटुम्बकम'क अवधारणा रखैत छथि, जे अपन ज्ञानक अखण्ड ज्योतिसं समाजक अंधकार तिरोहित करैत छथि, जे ज्ञानक चक्षु पर पड़ल धुल-गड्ढाक जमावट सं बढ़ल अज्ञानता कें अपन ज्ञानक दीप सं साफ करैत अछि। तें ओ संसारक धारक छलाह तथा गुरु रूपमे मार्गदर्शक छलाह। एहि कारण सं संसारमे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कयलनि। जे एहि स्तुति मे वर्णित अछि-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अर्थात् गुरु ईश्वर सं श्रेष्ठ छथि। जहिया मिथिलाक धरती पर गुरुक ई स्थान प्राप्त छलनि आ शिक्षाक ई उद्देश्य छल तहिया मिथिलाक संस्कार विश्वक शिरोमुकुट बनल। यैह धरती विश्वकें न्याय सिखौलक, संसारक उत्पत्तिक व्याख्यान कयलक, वेदक ज्ञान देलक तथा ब्रह्मक विशिष्ट ज्ञानसं अवगत करौलक। अर्थात्, ई वैह धरती अछि, जाहि ठाम न्याय दर्शन, सांख्य दर्शन, मीमांसा दर्शन एवं वैशेषिक दर्शनक जन्म भेल। याज्ञवालक्य ऋषि अपन स्मृति सं गृस्थात्रक कर्तव्य सं अवगत करौलनि। मिथिलाक धरती पर एहन ज्ञानी आ संस्कारित पुत्र एतेक रास जन्म लेलनि, जिनकर वर्णन करि त' समुद्रक पाइनक सिहायी कम पड़ि जायत। एहि सं अहां अपन प्राचीनतम गौरव आ मिथिलाक संस्कारक अनुमान सहजही लगा सकैत छी। अर्थात्, जतय संस्कार छै ओतय मेधा आ विद्वताक कमी कथमपि नहि भ' सकैछ।

एहि धरतीक बड्ड रास देन छैन्हि जाहि पर हम अखनहुं अभिमान करैत छी। मुदा, वर्तमान कालमे शिक्षा आ गुरु दुनक उद्देश्य बदलि गेल अछि। आजुक संदर्भ मे प्रकाश दैत ई कहि त' अतिश्योक्ति नहि होइत जे-

शिक्षा माध्यमे अर्जित धनम्।
गुरु ज्ञाने व्यवसायम॥

अर्थात्, शिक्षाक उद्देश्य धन अर्जित करवाक मात्र रहि गेल अछि तथा गुरुक ज्ञान ब्रह्म ज्ञानक प्राप्तिक लेल नहि बरु एकटा बनिया बनबाक लेल छनि। बनिया लाभ-हानि पर चलैया तखन लोभ आ लालचक केन्द्रमे हम अपन शिक्षाक उद्देश्य कें बिसरि गेलहूं। अतः जखन साधन बिगड़ैत छै त' साध्य अवश्य प्रभावित हेतै। नीमक गाछ मे ईखक रस नहि भ' सकै छै तहिना बिगड़ल उद्देश्य सं देल गेल शिक्षा संस्कारित समाजक निर्माण किन्हुं नहि क' सकैछ आ संस्कारित समाज बिनु संस्कारित युवाक कल्पना महत्वहीन आ व्यर्थ अछि।

शिक्षाक पहिल पाठशाला परिवार छैक। जाहि परिवारमे नेनाक जीवनक फर्मा तैयार होई छैक। आब ओ परिवार नहि रहि गेल छैक, जाहिमे त्याग, धैर्य आ बलिदानक भावना होइक आ एक-दोसराक खुशीक लेल अपन प्राण धरिक त्यागि देबाक शुभेच्छा होइ। जहिया सं धर्म आ सदाचारी समाजक स्थान भौतिकवाद ल' लेलक, तहियासं समाज उपयोगितावादी भ' गेल आ ओकर संस्कार खसल। एहि

पतन होयत संस्कारक बीच हमरा लोकनिक नेना पलै आ बढ़ै छैक तखन हुनका सं अयाची ऋषिक संस्कारक कल्पना करि त' मूर्खता होइत। अमाचीक लेल धैर्य आ त्याग आवश्यक छैक, जे भौतिकवादी संसारमे कतहु स्थान नहि रखैत छै। छद्म शक्तिक प्राप्तिक कामनामे जीवनक यथार्थ कें त्यागीकऽ वासनाक संसारमे मातल अछि। हुनक जीवनक उद्देश्य ब्रह्म मिलन नहि बरु इन्द्रीय सुखानुभूति छन्हि।

एहि युगमे युवासं हम संस्कारक उम्मीद करि त' पहिने परिवार कें सम्हारे आ संस्कारित करै पड़त। आजुक युग एहन छै जे व्यक्ति अपन विकासक लेल नेना आ बुढ़ा दुनूकें नजर अंदाज करैत अछि। एकटा हमर भविष्य छथि त' दोसर हमर काल्हिक जीवन। नेना परिवार सं पहिल प्रेम आ संस्कार सिखैत छै मुदा माय-बाप दुनूकें हिनका लोकनिकें देबाक लेल समय नहि छैन्हि। नुनु कनै छै तखन ओकरा दुलारक आवश्यकता छै, मुदा माय-बाप अपन जीवनक व्यस्तताक दुहाई दैत मोबाइल पकड़ा दैत छथिना एहि टच मोबाइल कें टच करैत-करैत नुनु पैघ होइत छथि। तें ओ मोबाइलकें टच त' करैत छथि मुदा समाजक हृदय कें कहियो ने टच क' पबैत छथि। यैह कारण छै जे जीवनक अनमोल मूल्य त्याग, धैर्य आ बलिदान आब युवा आ समाज मे नहि रहि गेल। फलतः युवा वर्ग हतासल-पियासल रहैत अछि, छोटे-छीन परिस्थितिमे निराश भ' जायत अछि आ हुनका जीवन सं संघर्ष करबाक कोनो क्षमता नहि रहि पाबैत अछि। जकर दोषि के छैक? युवा पीढ़ी या की माय-बाप? जकरा जन्मक काल सं ही नीमक रसक टीका लगाओल गेलै ओहि युवामे ईखक रसक कल्पना करि त' मूर्खता होइत की नहि?

बुढ़ापा त' सहजही लोथ होइ छै, मुदा आजुक परिवेश मे परिवारक उपेक्षाक कारणें डरावना भेल जा रहल अछि। जाहि आंखिमे युवा अवस्थामे अपन संतानक लेल स्नेह छलनि, प्यार छलनि आ अग्निक दिप्त प्रकाश छलनि आई हुनका ओहि आंखिमे नोर भड़ल छैन्हि आ दयाक भीख भड़ल छनि। ऊपर सं देखबामे लगै छैक जे संसार भ्रष्ट भ' गेल, युवा पीढ़ी घोर पापीष्ठ भ' गेलाह, घोर कलियुग आबि गेल मुदा गऽर करि त' लागत जे युवा त' निमित मात्र छथि असल अपराधी त' ओ स्वयं छथि। बब्बुर रोपिकऽ गुलाबक कल्पना करैत छथि।

ई गप्प अपने लोकनि कें अटपटा जरूर लागल हैत, मुदा सोचियो जे बब्बुर क गाछ मे कखिनो आमक फर लागि सकै छै? जखन ई संभव नहि छै तखन ई कल्पना अहां कोना क' सकैत छी जे एकांकी जीवन जीबैत नेना आ खाट पर एसगर टाई-टाई करैत दादा-दादी कें देखय वाला नेना युवा भेला पर अहां कें अपन हृदयमे बसा लेता! अपन जीवन मे अहांकें स्थान दैताह!

शिक्षाक उद्देश्य धन अर्जित करवाक मात्र रहि गेल अछि तथा गुरुक ज्ञान ब्रह्म ज्ञानक प्राप्तिक लेल नहि बरु एकटा बनिया बनबाक लेल छनि। बनिया लाभ-हानि पर चलैया तखन लोभ आ लालचक केन्द्रमे हम अपन शिक्षाक उद्देश्य कें बिसरि गेलहूं। अतः जखन साधन बिगड़ैत छै त' साध्य अवश्य प्रभावित हेतै। नीमक गाछ मे ईखक रस नहि भ' सकै छै तहिना बिगड़ल उद्देश्य सं देल गेल शिक्षा संस्कारित समाजक निर्माण किन्हुं नहि क' सकैछ आ संस्कारित समाज बिनु संस्कारित युवाक कल्पना महत्वहीन आ व्यर्थ अछि।

असल गप्प ई छै जे जीवनक नेटवर्क पकड़ैत-पकड़ैत हमरा लोकनिक जीवन एतबा व्यस्त भ' गेल अछि जे हमरा लोकनिक परिवार, धिया-पुता, माय-बाप सभ लोकनि जीवनक नेटवर्क सं बाहर भ' गेल छथि। हम सभ दुहाई दैत अछि जे महगाई बड्ड छै, जीवनमे आगु बढ़बाक छै तखन मेहनत करहिटा पड़तै, एहिमे बच्चा-बुतरू मे फंसिकऽ रहि जाएब त' कहियो आगु नहि बढ़ि पायब! हमरा लोकनिक आगु बढ़बाक मतलब अछि जे- ''खुब पाई कमेनाइ आ व्यर्थ खर्चाकऽ क' पड़ोसी कें ई देखेनाई जे हम बड्ड पाई कमाई छी, बड्ड रास काज करै छी, हम अपन बेटाकें पैघ स्कूल मे पढ़बैत छी, बड़का गाड़ी घुमै ला देने छियैन्हि आदि बड्ड रास संसाधन हमर धीया-पुताक पास अछि। यैह संसाधन धीया-पुताकें एकांगी बनौने जा रहल अछि। अहां सं ओकरा दूर कयने जा रहल अछि। जे अहां जीवनक मधुर बिख अछि।

एहि गप्पकें कहिकऽ हम कोनो विशिष्ट ज्ञान नहि देलहूं। मात्र एतबा टा सचेत करबाक प्रयास कयलहुं जे नेना अहांक भविष्य छथि। तें अपन वर्तमान समस्यामे हुनका सामाजिक संस्कार सं दूर नहि करियौन। जौं ओ संस्कार सं दूर भ' जयताह तखन सभ व्यर्थ भ' जायत। एकटा गप्प त' सुननेहि हेबै जे- ''पूत कपूत त' की धन संचय, पूत सपूत त' की धन संचय।'' असली धन अहांक नेना छथि, तें प्रत्येक माय-बाप सं ई हमर अनुरोध अछि जे अपन नुनुकें समय दियौन, मोबाइल दियौन त' ज्ञान बढ़ेबाक लेल दियौन मुदा परतरबाक लेल किनहू नहि दियौन जौं एहि गप्प पर ध्यान नहि देबे त' असंस्कारित धीया-पुता हयत। जे अहांक जीवनक सभसं पैघ असफलता होयत।

फलत जबानीमे काज-करैत-करैत थकान सं कुहरैत छी आ बुढ़पामे धीया-पुता वैह करता जे अहां अपन माय-बापक संग क' रहल छियन्हि, माय-बापक जे आय वर्तमान छैन्हि वैह काल्हि अहांक वर्तमान होयत, ताहि दुःख-भोग सं बुढ़पामे अहां कुहरब। जं एहन जीवन नहि चाहैत छी तखन अपन नुनु आ माय-बापक लेल व्यस्तताक बावजुदो किछु समय निकालु। जाहि सं अहांक धीया-पुता समहरता आ परिवारमे खुशहाली बनल रहत। संस्कारित परिवारक युवा कखनहुं पदभ्रष्ट नहि भ' सकैया, तें संस्कार बढ़ाउ युवा सम्हारू।

मिथिलाक धरोहर राजमहल

✍ विपिन कुमार झा



बिहार राज्यक मिथिला प्रान्तक मधुबनी जिलाक अंतर्गत एक छोट शहर राजनगर अछि। एतैह बनल अछि एकटा भव्य राजमहल।

खंडवाला राज-वंशक राजा के द्वारा एहि राज्यमहलक निर्माण संभव भेल। एहि महलक निर्माण महाराजा महेश्वर सिंह के पुत्र रामेश्वर सिंह के कार्य-भार के लेल कयल गेल। 1870 के आस-पास महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह अप्पन-अनुज रामेश्वर सिंह के लेल एहि राजमहलक सजोएलाह।

एहि महलक खूबसूरती देखैत बने छल। एहि राज्यमहल बनाबेमे ब्रिटिश के वास्तुविद एम. ए. कोरनी के सम्पूर्ण योगदान छल। राज्यमहलक चारों तरफ दीवाल सं घेराव भेल छल। महलमे प्रवेश करे के लेल दुगो मुख्यद्वार छल। जे एखनो स्थित अछि। प्रमुख द्वार सं प्रवेश करैत दुर्गा मैया के भव्य मंदिर अछि। जे आइयो अपना-आपमे एक अलग सौंदर्य बिखेरेत अछि। एहि मंदिर के दीवाल सभ पर बहुत सुंदर चित्रकारी भेल अछि। जे मंदिरमे चारि चांद लगा देएत अछि। राज्यमहलक चारो तरफ गहन-शील मंदिरक निर्माण भेल अछि। जाहि सं पूरा-वातवरण सदिखन शांतिमय रहैत छल। महलक अंदर एकटा विशाल पोखरि अछि। एतय केर नौ-लखा मंदिर विश्वप्रसिद्ध छल। एहि मंदिर के लागत ओही समयमे नौ लाख रुपया लागल छल, ताहि लेल एहि मंदिर कें नौ-लखा मंदिर कहल गेल। जकर सुंदरता के कोनो वर्णन नइ छल। फुलवारीक सौंदर्यीकरण एहि राजमहलक शौभा बढ़ाबेमे अहम भूमिका निभाबै छल। एहि मंदिर सभके सुंदरता पूर्णिमाक चांदनी सन छल। अन्नपूर्णामाताक मंदिर भेल या, दुर्गा जी, हनुमान जी आओर काली जी के मंदिर सभ अद्‌भुत पत्थर सं बनाओल गेल अछि। माता काली के मंदिर 1889 ई.मे बनाएल गेल। तदुउपरांत एखनो एही मंदिरक सौंदर्य ओहिना बरकरार थिक। राज्यमहलमे ऊंच-ऊंच मकान सभके निर्माण भेल। जतय राज्य के राज्यकर्मी सभहक ठहराव कक्ष छल। आइयो ऊंच-ऊंच दीवार ठाढ़ अछि।

भारतमे सीमेंट सं बनल पहिल ढांचा भी एते अछि। जे एते कें सचिवालय भवन के द्वार पर हाथीक रूपमे आओर सचिवालयक भीतर सीमेंटक खम्बा एखनो एकर जीवित गवाह अछि। जे एखनो सम्पूर्ण विश्वमे हाथी घर सं प्रसिद्ध अछि। एही राजमहलक सौंदर्यीकरण देखै लेल देश-विदेश सं लोक सभ आबै छल। भारतक सभसं सुंदर राजमहलमे सं एक छल राजनगरक राजमहल।

समयक दोख कहु या बिलायरिक नज़र। जे 15 जनवरी 1934 ई. क 2:39मिनटमे जे भयानक-भूकंप आयल आ एते के सुंदरता कें घ्वस्त क' आओर खण्डहरमे तब्दील क' देलक। तदुपरांत एहि राजमहलक मरम्मत केएल गेल। फेर सं ओहि सौन्दर्यीकरण कें बरकरार रखबाक कोशिश कयल गेल। ताहि समय सं एखन-धरि राजमहल कतेको भूकम्पक झटका झेललक। आओर एक-एक भ' खण्डहरमे तब्दील भ' रहल अछि। आओर एखुनका समयमे सैनिक-बल पूरा तरह सं अपन अस्तित्व जमा चुकल अछि।

एखनो राज्य सरकार अथवा केंद्र सरकार निसगर कदम लैथ। आओर मरम्मत करवथुन तं ई पहिले के तरह पर्यटन स्थल भ' जाएत, जाहि सं सैकड़ों घरक चूल्हा जरत आओर राज्यक आर्थिक स्थिति सेहो मजबूत हैत। पर सरकार एहि तरहक सहासिक कदम नइ उठाओत। जाहिमे किछु जयचंद्र सभहंक सेहो हाथ थिक।

किंतु एहि तरहक महल देशक कोनो दोसर भागमे रहैत तं ओकरा अरबों रुपया के लागत सं मरम्मत करबा क' ओकरा पर्यटन स्थलमे परिवर्तित क' देल जाएत। आओर बड़का अभिनेता सं सेहो एहि महलक ओहि राज्यक रोल-मॉडल जकां परोसल जाएत। पर दुर्भाग्य मिथिलाक जमीन पर ई विरासत अछि।

ई चुपी शायद तहिया तक रहत जहिया धरि सम्पूर्ण मिथिलामे जतेको धरोहर थिक ओ खण्डारमे तब्दील नइ भ' जाए। ई चुपी ता-धरि बुझी जखन एहि पर कोनो राजनेता अप्पन गद्दीक स्वार्थ नइ देखौता। कियैकि हमर सभकें अस्तित्व आब खत्म भ' रहल अछि। हम एकटा मैथिल छी शायद सेहो बिसैर गेलियै। तं करू पलायन देखु अनकर घरक सुमन। बिसैर जाऊ अहू घरमे रौशनदानी अछि। जहिया ई पूरा कारिख सन भ' जाएत, तहिया अपना-सभ विरासतक नाम पर बस एकटा सपना देखब।

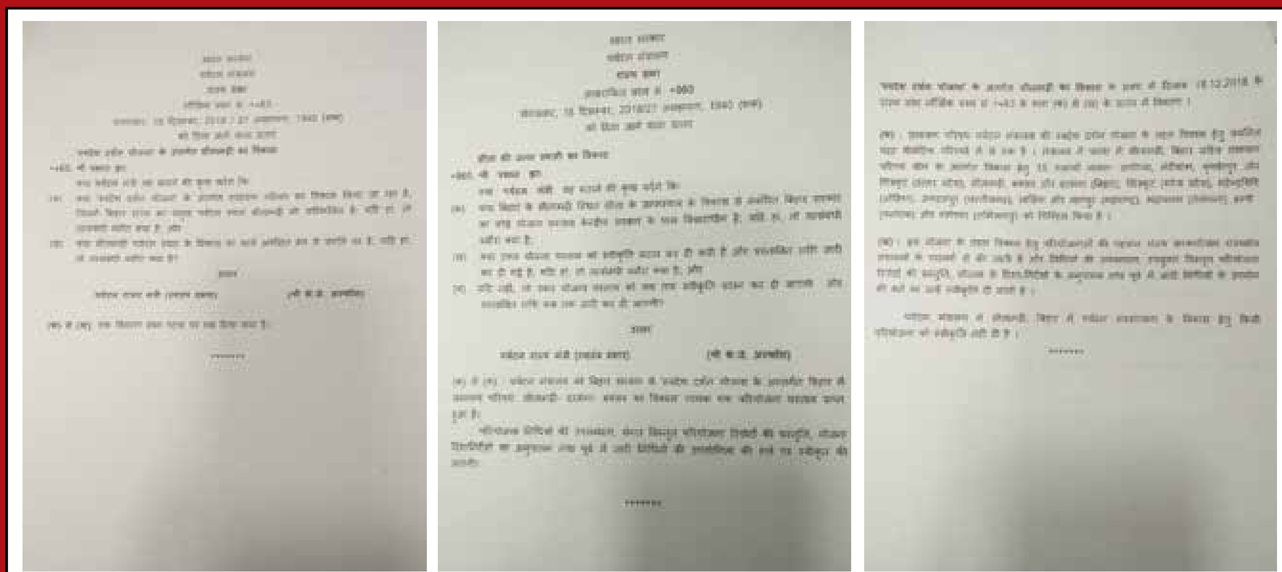
सम्पर्कः ग्रामः-परिहारपुर, मधुबनी (बिहार) मो. 7532871208

रामायण परिपथः सीतामढ़ी, बक्सर आ दरभंगा के होयत विकास

राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा जी स्वदेश दर्शन योजनाक अंतर्गत सीतामढ़ीक विकासक संबंधमे दिनांक 18 दिसंबर 2018 के राज्यसभा मे पर्यटन मंत्री सं पूछने छलैथ जे की 'स्वदेश दर्शन योजना' केर अंतर्गत रामायण परिपथक विकास कएल जा रहल अछि, जाहिमे बिहार राज्यक प्रमुख पर्यटन स्थल सीतामढ़ी सेहो शामिल अछि, जों हां, त' तत्संबंधी ब्यौरा की अछि? की सीतामढ़ी पर्यटन स्थलक विकासक कार्य अपेक्षित रूप सं प्रगति पर अछि, जों हां, त' तत्संबंधी ब्यौरा की अछि?

एकर उत्तर दैत पर्यटन राज्यमंत्री श्री के. जे. अल्फोंस जबाव देलखिन जे रामायण परिपथ पर्यटन मंत्रालयक स्वदेश दर्शन योजनाक तहत विकास हेतु चयनित पंद्रह थीमेटिक परिपथमे सं एकटा अछि। मंत्रालय प्रारंभमे सीतामढी, बिहार सहित रामायण परिपथ थीमक अंतर्गत विकासक लेल 15 गंतव्य – नामतः अयोध्या, नंदीग्राम, श्रृंगवेरपुर आ चित्रकूट (उत्तर प्रदेश), सीतामढ़ी, बक्सर आ दरभंगा (बिहार), चित्रकूट (मध्य प्रदेश), महेन्द्रगिरि (ओडिशा), जगदलपुर (छतीसगढ़), नासिक आ नागपुर (महाराष्ट्र), भद्राचलम (तेलंगाना), हम्पी (कर्नाटक) आ रामेश्वर (तमिलनाडु) के चिन्हित केल गेल अछि। इस योजनाक तहत विकासक लेल परियोजनाक पहचान राज्य सरकारक संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनक परामर्श सं केल जायत आ निधिक उपलब्धता, उपयुक्त विस्तृत परियोजना रिपोर्टक प्रस्तुति, योजनाक दिशा-निर्देशक अनुपालन आ पूर्वमे जारी निधिक उपयोगक शर्त पर हुनका स्वीकृति देल जायत अछि। पर्यटन मंत्रालय सीतामढी, बिहारमे पर्यटन अवसंरचनाक विकासक लेल कोनो परियोजनाक स्वीकृति नहि देने अछि।

श्री प्रभात झा 18 दिसंबर, 2018 अतारांकित प्रश्न सीताक जन्मस्थलीक विकास लेल पूछने छल। हुनकर प्रश्न छल जे, की बिहारक सीतामढ़ी स्थित सीताक जन्मस्थलक विकास क' ल' क' बिहार सरकारक कोनो योजनाक प्रस्ताव केन्द्रीय सरकारक लग विचाराधीन अछि? जौ हां, त' तत्संबंधी ब्यौरा की अछि? ओ उहो पुछलखिन जे जों उक्त योजना प्रस्तावक स्वीकृति प्रदान कएल गेल अछि आ प्रस्तावित राशि देल जा चुकल अछि। जों हां, त' तत्संबंधी ब्यौरा की अछि, आ जों नहि, त' एही योजना प्रस्ताव के कहिया धरि स्वीकृति प्रदान कएल जायत आ प्रस्तावित राशि कहिया धरि जारी कएल जायत? एही सभ प्रश्नक जवाब पर्यटन राज्यमंत्री श्री के. जे. अल्फोंस देने छलाह ओ कहलखिन जे पर्यटन मंत्रालयकें बिहार सरकारसं स्वदेश दर्शन योजनाक अंतर्गत बिहारमे 'रामायण परिपथः सीतामढ़ी-दरभंगा-बक्सर'क विकास नामक एकटा परियोजना प्रस्ताव भेटल अछि। परियोजना निधिक उपलब्धता, सांगत विस्तृत परियोजना रिपोर्टक प्रस्तुति, योजना दिशानिर्देशक अनुपालन आ पूर्वमे जारी निधिक उपयोगिताक शर्त पर स्वीकृत कएल जायत।



अद्‌भुत अछि मिथिलाक्षरक इतिहास

✍ हरि मोहन झा



लेखक सम्प्रति दिल्ली मे रहैत छथि आ भारत सरकार मे अनुभाग अधिकारी छथि। "दूर्वाक्षत (मिशन मिथिलाक्षर)" संस्थाक सह-संस्थापक सेहो छथि।

सम्पर्क:
पुत्र: श्री शैलेन्द्र मोहन झा,
ग्राम+पोस्ट: भंडारिसम (भगवती वाणेश्वरी स्थान) थाना: मनीगाछी,
जिला: दरभंगा
मो.: 9310475355

मनुष्य कें भगवानक बनाओल प्राणी सभमे सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानल जाइत अछि, तकर एक मात्र कारण इयैह अछि जे मनुष्य एक-दोसर सं अपन विचारक आदान-प्रदान कै सकैत अछि, आओर कोनो विशेष चिह्न वा प्रतीकक माध्यम सं अपन वक्तव्यकें स्पष्ट सेहो क' सकैत अछि। दू वा दू सं बेसी मनुक्खक बीच जे गप होईत अछि, तकरा यदि कोनो विशेष चिह्न वा प्रतीककें माध्यम सं निरुपित नहि कयल जाय त' ओ गप ओतहि समाप्त भै जायत। कतेको ज्ञान सम्बन्धी ग्रंथक रचना सेहो असंभव छल, यदि लेखन के कोनो कला नहि होईतै। जहिया सं मनुक्खक उत्पति एहि धराधाम पर भेल तहिये सं ओ अपन मनोभाव वा विचार कें तत्कालीन समयानुसार शिलाखंड, भित्ति, तालपत्र, ताम्रपत्र वा कागज पर कोनो रेखा, कोनो कल्पित चिन्ह वा कोनो विशेष प्रतीककें माध्यम सं व्यक्त करैत रहल अछि, जाहि सं आनो लोक सभ कें ओहि मनुक्खक विचार वा भाव के ज्ञान होइत रहलैक अछि। कालक्रमें एहि तरहक चिह्न वा प्रतीकमे अनेकानेक परिवर्तन होईत रहल और धीरे-धीरे प्रत्येक अक्षरक लेल एकटा मानक रूप सामने आयल। इयैह मानक रूप कें लिपि कहल गेल अर्थात लिपि एकटा एहन महत्वपूर्ण साधन बनि गेल जाहि माध्यम सं मनुक्ख अपन चिंतन, अपन विचारधारा आ अपन ज्ञानक धरोहरकें आगू के पीढीक वास्ते सुरक्षित क' सकल, आओर मानव सभ्यताक महान परंपराक मार्ग प्रशस्त कयलक।

बहूतों सभ्यताक अध्ययन कयला सं ई जानकारी सामने आयल जे प्रारम्भमे लिपि लिखबाक तरीका चित्रात्मक छल। तत्पश्चात् जेना-जेना मानव-सभ्यताक विकास होइत गेल, तेना-तेना लिपिकें व्यक्त करबाक तरीका सेहो विकसित होइत गेल। चित्रात्मक-लिपिक जगह पर प्रतीकात्मक-लिपिक प्रयोग होमय लागल। एहि क्रममे आर्य लोकनि ब्राह्मी लिपिक आविष्कार कयलनि, जाहि सं पठन-पाठन सम्बन्धी काज आसान भ' गेल आओर कतेको पुराण, मुख्य-मुख्य ग्रंथ सभ एहि लिपि मे लिखल गेल। एहि ब्राह्मी लिपि सं कतेको लिपि केर जन्म भेल। मिथिलाक्षर लिपि अर्थात तिरहुता लिपि कें जन्म सेहो ब्राह्मी लिपि सं भेल अछि अर्थात मिथिलाक्षर लिपि भारतक पुरातन लिपि मे सं एक अछि।

मिथिलाक्षरक ऐतिहासिक व्यप्ति

अपन स्वर्णिम काल मे मिथिलाक्षर लिपिक क्षेत्र बहुत व्यापक छल। प्राचीन कालमे मिथिला, शिक्षा आओर ज्ञान-विज्ञानक अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्र छल। अधोलिखित कथानक सं मिथिलाक्षर लिपिक व्यापकताक आओर समृद्धिक अनुमान लगाओल जा सकैत अछि।

प्राचीन कालमे नालन्दा विश्वविद्यालय शिक्षाक अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र छल। देश-विदेशक अनेको विद्यार्थी एहि ठाम शिक्षा ग्रहण करैक वास्ते अबैत छलाह। ई विश्वविद्यालय अपना समयक समग्र विश्वक सभसं पैघ शिक्षाक केन्द्र छल। धर्मान्धता के कारण जहन खिलजी वंशक तत्कालीन मुस्लिम शासक बख्तियार खिलजी नालन्दा विश्वविद्यालय कें जरबैक आदेश देलक, तहन ओहि समयक कतेको विद्वान् आचार्य आओर विद्यार्थीगण संस्कृतक कतेको प्रकारक ग्रन्थ ल' क' तिब्बत दिश भागि गेलाह। ओहि ग्रंथ सबमे अधिकतर ग्रन्थ शोधक लेल पटना संग्रहालयमे स्थित पुस्तकालय मे आनल गेल। ओहि ग्रन्थ सभकें जहन देखल गेल त' पाओल गेल कि ओहिमे सं कतेको ग्रन्थ मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल गेल छल। एहि प्रकरण सं ई सिद्ध होइत अछि जे प्राचीन कालमे मिथिला, शिक्षा आओर ज्ञान-विज्ञानक अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र छल। जखन बाहरी विद्यार्थी लोकनि ओहि ग्रन्थ के पढ़ै चाहैत छल त' ओकरा पहिने मिथिलाक्षर लिपि सीखै पड़ैत छल। एहि प्रकारे मिथिलाक्षर-लिपिक प्रचार-प्रसार

मिथिला क्षेत्र सं बाहर बहुत दूर-दूर तक भेल छल। प्राचीन मिथिला दर्शन, संस्कृति, धर्म, आचार-विचार आदिकें प्रमुख केन्द्र छल। ओहि समयमे संस्कृत भाषाक प्रमुख लिपि मिथिलाक्षर लिपि छल।

मिथिलाक्षर मे संकेताक्षर

मिथिलाक्षर लिपि एतेक समृद्ध लिपि छल जाहि सं बांग्ला, असमिया आ उड़िया आदि विभिन्न लिपिक जन्म भेल। मिथिलाक्षर लिपिमे कुल 82 टा संकेताक्षर अछि:

तालिका 1 : मिथिलाक्षरक संकेताक्षर	
स्वर अक्षर	14
व्यंजन अक्षर	33
स्वर चिन्ह	15
चिन्ह	5
विराम चिन्ह	3
विशेष चिन्ह	2
अंक	10

सम्पूर्ण विश्वमे शायदे कोनो एहन लिपि अछि जकरा ल'ग अक्षर आओर चिन्ह आदि के एतेक समृद्ध भण्डार होयत। एकटा मूर्धन्य विद्वान् के कहब छनि जे मिथिलाक्षर लिपिमे ओ सब क्षमता अछि जे मनुक्खक सब तरहक भंगिमा कें स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित कै सकैत अछि। मुदा एकरा विडम्बना कही जे एतेक समृद्ध लिपि एखन लुप्त होमय कें कगार पर पहुंच गेल अछि। एकरा हेतु शासकीय उदासीनताक संग-संग हम सब मैथिलगण सेहो बहुत दोषी छी। एहि समृद्ध लिपिकें नष्ट करबाक कोशिशमे तत्कालीन मैथिल विद्वद्गण आओर किछु अन्य ताकतवर लोक सब बराबर के दोषी छथि। संक्रमण काल मे कोनहुं समृद्ध परम्परा, समृद्ध-भाषा, समृद्ध-संस्कार, समृद्ध-ज्ञान आदिक रक्षाक भार तत्कालीन विद्वज्जन सबहक रहैत छनि। तत्कालीन विद्वज्जन आओर सहृदय लोकनिक प्रमुख कर्तव्य रहैत छनि जे ओ पारम्परिक ज्ञानक समृद्ध परम्पराकें नष्ट होमय सं बचेबाक हेतु ओहि ज्ञानक बीजतत्वकें सुरक्षित राखि लैथ जाहि सं उपयुक्त समय अयला पर ओहि बीजतत्व सं ज्ञानक दीप पुन: प्रज्वलित भ' सकय। जाहि लिपिकें कतेको बरखक गुलामी नष्ट नहि क' सकल ओ लिपिकें मात्र एकटा भ्रम पर भारतक आजादीकें समय नष्ट करबाक पूर्ण प्रयास भेल आओर ई लिपि सम्प्रति लगभग नष्ट भै गेल अछि।

प्राचीनताक अनेक प्रमाण

बांग्ला भाषाक तत्कालीन विद्वान् डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी अपन पुस्तक "The Origin and Development of the Bengali Language" मे स्पष्ट रुप सं उल्लेख कैने छथि जे बांग्ला लिपिक उत्थानमे मिथिलाक्षर-लिपिक अविस्मरणीय योगदान अछि। एहि सं पैघ दुर्भाग्य की भ' सकैत अछि जे मिथिलाक्षर-लिपि, बांग्ला, असमिया आ उड़िया लिपिकें मातृलिपि रहितहुं, मृत अवस्था मे पहुंचि गेल अछि, आओर बांग्ला, असमिया आ उडिया लिपि बहुत विकसित भ' गेल अछि।

एखन मिथिलाक्षर-लिपिक प्रमुख श्रोत पाण्डुलिपि अछि। पाण्डुलिपि कें मातृकाग्रन्थ सेहो कहल जाइत अछि। पाण्डुलिपि मातृकागन्थ्र ओहि दस्तावेजकें कहल जाइत अछि जे एक या एक सं अधिक मनुक्खक द्वारा हाथ सं लिखल गेल हो। प्राचीन समयमे ऋषि-मुनिगण जखन विचार-मीमांसा करैत छलाह तै अपन ज्ञानकें अनेकों तरीका सं जेना - भित्तिचित्र, शिलापत्र, ताड़पत्र, ताम्रपत्र, कागज आदि पर लिपिबद्ध करैत या कराबैत छलाह। एकर मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञानक अति पुरातन आ समृद्ध परंपराक संरक्षण छल। वेदक गंभीर आ महत्वपूर्ण ज्ञान सं पञ्चतन्त्रक बाल-कथा आदि सब ज्ञानागार रूपी ग्रन्थक रचना संस्कृत भाषा मे अनेकों लिपिमे हाथ सं लिख क' कएल गेल अछि। एहि पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्रक इतिहासकें भारतीय परंपराकें इतिहास मानल जाइत अछि। पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्र मात्र एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज नहि होइत अछि, बल्कि देश मे घटल घटनाकें साक्ष्य मानल जाइत अछि। सबसं बढ़िके ओ ओहि देशक वैचारिक परंपरा आ अनुभवक प्रतिनिधि होइत अछि। एहि पाण्डुलिपि सबकें देखि प्रख्यात जर्मन विद्वान मैक्समूलर अपन पुस्तकमे लिखने छथि "एहि संसारमे ज्ञानी आ पण्डितक देश केवल भारते अछि, जतय विपुल ज्ञानसम्पदा मातृकागन्थ्रमे सुरक्षित अछि"। एहि पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्रक संरक्षण बहुत जरूरी अछि। पाण्डुलिपि अपन रक्षाक विषयमे स्वयं कहने अछि-

जलाद्रक्षेतैलाद्रक्षेद्रक्षेच्छिथिल बन्धनात्।
मुर्खहस्ते न मां दद्यादित वदति पुस्तकम्॥

अर्थात् हमरा पानि सं, तेल सं, ढ़ीला बन्धन आओर मुर्ख व्यक्ति सं बचाके राखू।

पांडुलिपिक विकल भंडार

मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल कतेको पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्र केवल मिथिला-क्षेत्रमे नहि, बल्कि देश-विदेशक कतेको प्रतिष्ठित शिक्षण-संस्थान, संग्रहालयमे, एकाध सौमे नहि, बल्कि हजारोंमे राखल गेल अछि। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बनारस); सर गंगानाथ झा परिसर (प्रयागराज); पटना संग्रहालय (पटना); कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय (दरभंगा); नागार्जून बौद्ध संस्थान (गोरखपुर); भंडारकर शोध संस्थान (पुणे), संस्कृत महाविद्यालय (रायपुर) आदि अनेक संस्थान अछि जतय मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्र, एहि संस्थान सभक पुस्तकालयकें शोभा बढ़ा रहल अछि। जापान, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशमे सेहो मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्र राखल गेल अछि। किछु दिन पहिने, हम स्वयं सर गंगानाथ परिसर, प्रयागराज गेल रही। ओहि ठाम पाण्डुलिपिक संकलन पर बारह (12) खंडमे एकटा पुस्तक "विवरणात्मिका हस्तलेख सूची" प्रकाशित कयल गेल अछि। कने कालक वास्ते, काव्य पर लिखल खंड देखैक मौका हमरा लागल। मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल ग्रन्थक सूची देखिके, हम दंग भ' गेलहुं आ स्वयं के गौरवान्वित महसूस केलहुं जे हमर मिथिलाके लिपिकक एहन समृद्ध एवं गौरवशाली इतिहास रहल अछि। किछु पाण्डुलिपि आ पाण्डुलिपिकार सभक नाम तालिका 2 मे देल गेल अछि।

लिपि बचेबाक व्यक्तिगत प्रयास

कतेक एहनो व्यक्ति छथि जिनका घरमे मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्र राखल छन्हि मुदा मिथिलाक्षर-लिपिक जानकार नहि हेबाक कारणे ओहिमे लिखल तत्व सं ओ अनभिज्ञ छथि। मुदा किछु गोटे एहनो छथि जे अपन घरमे राखल पाण्डुलिपि या मातृकागन्थ्रक विषय-वस्तुक जानकारी दुनियाक सोझां

तालिका 2 : मिथिलाक्षर मे लिखित प्रमुख पांडुलिपि

क्र.	काव्य	रचनाकार
1.	अमरूशतकम्	अमरूकवि
2.	कुमारसम्भवम्	कालिदास
3.	रघुवंशम्	कालिदास
4.	मेघदूतम्	कालिदास
5.	ऋतुसंहार	कालिदास
6.	नलोदयकाव्यम्	कालिदास
7.	राक्षसकाव्यम्	कालिदास
8.	श्रृंगारतिलकम्	कालिदास
9.	श्रृंगारतिलकम्	टीका : रूद्रभट्ट
10.	मेघदूतव्याख्या	मल्लिनाथ
11.	कुमारसम्भवटीका, शिष्यतोषिणी	चूड़ामणि
12.	कुमारसम्भवव्याख्या, भागीरथी	भगीरथ मिश्र
13.	कीरदूतम्	रामगोपालभट्ट
14.	गीतगोपीपति: (सटीकम्)	कृष्णदत्त (टीका: हर्षनाथ झा)
16.	लक्ष्मीगुणमणिमाला	कृष्णदत्त
17.	कृष्णलीला	कृष्णदत्त
18.	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष
19.	शिशुपालवधम्	माघ
20.	पाण्डवचरितम्	लक्ष्मीदत्त
21.	विद्वन्मोदतरंगिणी	चिरंजीव भट्टाचार्य
22.	कीरातार्जुनीयम्	भारवि
23.	नृसिंहचम्पू	केशवभट्ट
24.	विदग्धमुखमण्डन टीका, विद्वन्मनोहरा	ताराचन्द्र

स्रोत : सर गंगानाथ झा परिसर (प्रयागराज)

राखैक वास्ते अद्‌भुत प्रयास केलनि। एहिमे रांची विश्वविद्यालयक अवकाशप्राप्त व्याख्याता श्री राजकुमार झा (गाम-पद्मा) आ सब बंधु-बांधव सहित श्री मोहनाथ मिश्र (गाम-जमुथरि) कें नाम प्रशंसनीय अछि। श्री मोहनाथ मिश्रक बाबा स्व. (श्री) भवनाथ मिश्र बहुते ग्रन्थक प्रतिलिपि अपने लिखलनि कारण ओहि समयमे उत्तम हस्तलेखमे धार्मिक ग्रन्थक प्रति करबाक मिथिलामे परम्परा छल। श्री भवनाथ मिश्र अपना समयक प्रकाण्ड पंडित छलाह। ओ दुर्गा सप्तशती, श्री श्री हरिवंश-पुराण, मिथिला शब्द प्रकाश, विषयावली आदि अनेको ग्रन्थक प्रतिलिपिक अपन हस्तलेख तैयार कयलनि। मिश्रबन्धु प्रकाशनक माध्यम सं श्री मोहनाथ मिश्र मिथिलाक्षर-लिपिमे लिखल दुर्गा सप्तशती कें अपन अथक प्रयास सं मिथिलाक्षर आ देवनागरी दुनू लिपिमे प्रकाशित करबौलनि। श्री राजकुमार झा ओहि दुर्गा सप्तशतीकें मातृकाग्रन्थक किछु प्रतिलिपि हमरा देलन्हि जे कि चित्र 1 मे देखल जा सकैत अछि।

ग्रियर्सनक अवदान

मैथिली आ मिथिलाक विषयमे संपूर्ण जानकारी समग्र विश्वक सामने रखबामे सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सनक नाम उल्लेखनीय अछि। सर ग्रियर्सन, जे कि अंग्रेजक शासनकालमे भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) कें अधिकारी छलाह आओर तत्कालीन बिहारक मधुबनी अनुमंडलक परगना अधिकारी (एसडीओ) छलाह, हुनक नाम "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया"क प्रणेताक रूपमे अमर छनि। मैथिली भाषा आ मिथिलाक्षर लिपि पर, हिनक कयल गेल काज अविस्मरणीय अछि। हिनके सुझाव पर जनगणनाक संगहि-संग भाषागणना सेहो कयल गेल छल आ ओ स्वयं एकर संकलन आ संपादन कयलनि। हिनका सं पहिने एहन अभूतपूर्व काज कियौ नहि केने छलाह। सर ग्रियर्सनक लिखल पुस्तक "इंट्रोडक्शन टू दि मैथिली लैंग्वेज" आ "मैथिली ग्रामर" मिथिला-मैथिलीक अमूल्य धरोहर अछि। मैथिल कोकिल कवि विद्यापतिक लिखल "कीर्तिलता" आ "कीर्तिपताका" नामक दुनू ग्रन्थक परिचय साहित्य जगतकें करबाबै बला इयह ग्रियर्सनजी छलाह। मैथिली भाषाक प्रति हिनक अगाध श्रद्धाकें देखैत मधुबनी जिलाक बीचो-बीच स्थित बजारक नाम ग्रियर्सन बजार राखल गेल छल जकरा हम सब एखन गिलेसन बजारक नाम सं जनैत छी।

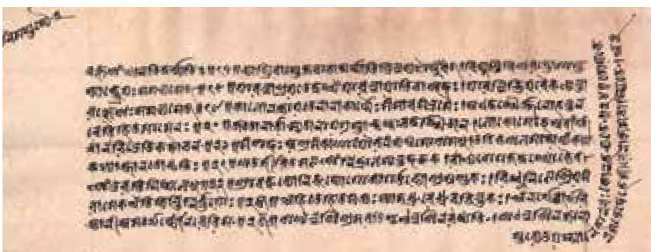
दुनिया सं सीखू लिपि प्रेम

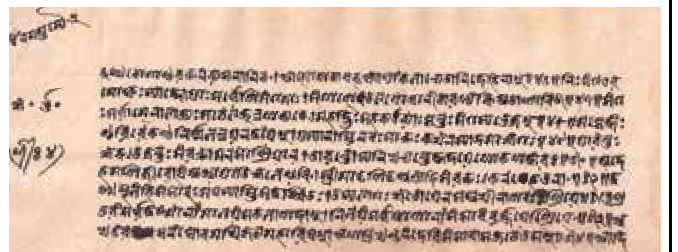
विश्व-इतिहासमे आई सं मात्र 47 बरख पहिने एकटा एहन अविस्मरणीय घटना घटल जे संपूर्ण विश्वकें स्तब्ध कै देलक। बांग्लादेश नामक एकटा स्वतन्त्र देश विश्व पटल पर आयल। संपूर्ण विश्वमे इएह एकटा पहिल आओर असाधारण घटना छल, कारण जे एहि देशक स्थापना केवल आओर केवल अपन भाषा आ लिपिकें बचैबाक हेतु भेल छल। तत्कालीन पाकिस्तान सरकार उर्दू भाषाकें बांग्लाभाषी जनता पर थोपैक कोशिश कयलक मुदा जनता एकर विरोध कयलक आओर अपन भाषा आ लिपिकें संरक्षणक वास्ते विद्रोह क' देलक। परिणाम सबहक सामने अछि। विश्व संस्था "संयुक्त राष्ट्र संघ", हुनकर सबहक अपन भाषा आ लिपिकें प्रति सम्मान देखि, हुनकर सभक सम्मानमे, बांग्लादेशक स्वतंत्रता दिवसकें विश्व मातृभाषा दिवस घोषित क' देलक। एहि मुक्ति संग्राममे कतेको बांग्लादेशी लोकनि अपन प्राण न्योछावर क देलनि।

सरकारी प्रयास

इन्हर, कतेको मैथिलवृन्द एहेन छथि जिनका सबकें मैथिली बाजै मे ग्लानिक

चित्र 1 : दुर्गा सप्तशतीक पुरान मिथिलाक्षर मातृकाग्रन्थक श्री भवनाथ मिश्र द्वारा कएल गेल प्रतिलिपि





स्रोत : श्री राजकुमार झा द्वारा उपलब्ध कराओल गेल प्रतिलिपि

अनुभव होइत छनि। कतेको मैथिल सज्जनवृन्द एहन छथि जे अपन घरहुमे मैथिली बाजै सं परहेज करैत छथि आओर अपन बच्चा लोकनिकें मैथिलीक ज्ञान नहि दैत छथिन्ह। एहि ठाम, यहूदी राष्ट्र इजराइलक नागरिकगण सेहो हमरा सबहक लेल प्रणम्य छथि कारण ओ सभ अपन लुप्तप्राय भाषा आ लिपि 'हिब्रु' के पुनर्जीवित क' अपन देशमे पूर्णरुप सं लागू क' देलनि। एहि दुनू उदाहरण सं ई त' स्पष्ट होइत अछि जे यदि हम सभ मैथिलगण ठानि ली त' ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक्षर-लिपि सम्पूर्ण मिथिला-क्षेत्रमे समग्र रुप सं पसरि जायत आओर पुनः अपन समृद्ध अवस्था कें ग्रहण क' लेत।

संस्कृतक अधिकांश पुस्तक मिथिलाक्षर लिपि मे लिपिबद्ध अछि जाहि मे ज्ञानराशिक अपार भंडार अंतर्निहित अछि। ई सब पाण्डुलिपि अपन मैथिल आ भारतीय समाजक अमूल्य धरोहर अछि। हम सभ मैथिलक ई परम कर्तव्य अछि जे एहि पाण्डुलिपिमे अंतर्निहित ज्ञानकें विश्वक समक्ष राखी जाहि सं एहि ज्ञानक प्रकाश सं मिथिलाक संगहि-संग संपूर्ण विश्व आलोकित भै सकय। एहिक वास्ते हम सब मैथिलकें मिथिलाक्षर लिपि सीखै पड़त आओर निष्णात होमय पड़त। यदि हम सभ मिथिलाक्षर लिपि सीखि कें अपन पूर्वज द्वारा रचित पांडुलिपि मे अंतर्निहित ज्ञानराशि के प्रकाशित आ ओकर प्रचार-प्रसार करबामे सक्षम होयब तै हमरा लोकनिक पूर्वजगण, जे अपन बहुमुल्य श्रम ओ समय द' क' विविध शास्त्रक जे पांडुलिपि तैयार कयलनि, हुनक महती प्रयासकें सार्थकता भेटतन्हि संगहि-संग हमरा लोकनि ओहि पितृ-ऋण सं मुक्त भ' सकब अन्यथा अक्षर-बोध भेलहुं पर हम सभ 'पामर' कोटि मे परिगणित होयब।

भारत सरकार सन् 2003 मे मैथिली भाषाकें संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कयलक। एकर अर्थ भेल जे मैथिली भाषाक उत्थानक वास्ते भारत-सरकार सेहो आब तत्पर भेल अछि मुदा नहि जानि कोन कारणवश मैथिली भाषाक लेल प्रयोग होमय बला लिपिमे देवनागरी लिपिक मान्यता देल गेल, न कि मिथिलाक्षर लिपिकें। मुदा यदि हम सभ मैथिलगण ठानि ली तैं काज हम सभ कै सकैत छी मिथिलाक्षर-लिपिकें सीखिके आओर दैनिक जीवनमे एकर प्रयोग कएला सं तहन भारत-सरकारक सेहो बाध्य भ' क' एहि लिपिकें मान्यता देब परतनि। सन् 2005 मे यूनिकोड तकनीकी समिति मे मिथिलाक्षर/तिरहुता-लिपि पर देल गेल प्रस्तुति (Presentation) देखला पर भारत-सरकारक सूचना-प्रौद्योगिकी विभागक डॉ ओम प्रकाशक ध्यान एहि लिपिकें ऐतिहासिक महत्व पर गेलनि आओर यूनीकोड मानक स्थापित करबामे ओ अपन विभागक रूचि देखौलनि। एखन मिथिलाक्षर लिपिक 3-4 तरहक फॉण्ट इण्टरनेट पर उपलब्ध अछि मुदा एकहुटा फॉण्ट खूब नीक सं शुद्धतापूर्वक कम्प्यूटर आ मोबाइल पर काज नहि क' रहल अछि। मिथिलाक्षर-लिपिक शुद्ध फॉण्टकें विकसित करै मे बहुतो गोटे लागल छथि, एहि दिशामे आदरणीय श्री विनय झा, जे कि संन्यास ग्रहण क' चुकल छथि, हुनक नाम अग्रगण्य अछि। ओ एहन तरहक फॉण्ट बनैबा मे लागल छथि जाहि सं आसानी सं मोबाइल आ कम्प्यूटर मे मिथिलाक्षर मे टंकण कयल जा सकै। अमेरिकामे रहनिहार श्री अंशुमान पाण्डे सेहो एहि फॉण्टक विकासमे महत्वपूर्ण काज क' रहल छलाह, एखन ओ एहिक वास्ते तत्पर छथि कि नहि, से जानकारी नहि अछि।

सम्प्रति भारत-सरकार सेहो किछु महीना पहिने चारि सदस्यीय कमिटीक गठन कयलक जे मिथिलाक्षर-लिपिकें विकास, संरक्षण, संवर्द्धन आओर फॉण्ट निर्माण पर अपन रिपोर्ट भारत-सरकार कें प्रस्तुत करत।

गैर सरकारी सांगठनिक प्रयास

मिथिलाक्षर-लिपिकें पुनर्स्थापित करब आओर उचित सम्मान दियाबैक वास्ते "मिशन मिथिलाक्षर (दूर्वाक्षत)" [पंजीकृत संस्था] बहुत महत्वपूर्ण काज कै रहल अछि। "मिशन मिथिलाक्षर", मैथिलवृन्द के मिथिलाक्षर सीखेबाक वास्ते ई-पाठशालाक रूप मे काज कै रहल अछि। ई-पाठशाला, ह्वाट्सएप आ यूट्यूब चैनलक माध्यम सं लिपिक प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन पर काज क' रहल अछि। एहि पाठशालाक माध्यम सं कोनो मैथिलवृन्द पूर्णतः निःशुल्क रूपे मिथिलाक्षर-लिपि सीखि सकैत छथि आओर एहि संस्था सं जुड़ि कें एहि काजकें आगू बढ़ा सकैत छथि। मिथिलाक्षर-लिपिकें आगू बढ़बैमे सबसं बेसी महत्वपूर्ण भूमिका मैथिलानी समाजकें छन्हि। स्वामी विवेकानन्दजीक शब्दमे- "यदि एगो पुरुख शिक्षा ग्रहण करैत छथि तै केवल एक्कहि गोटा शिक्षा ग्रहण करैत छथि मुदा यदि एगो महिला मिशिक्षा ग्रहण करैत छथि तै एकटा परिवार शिक्षा ग्रहण करैत अछि"। संयोग एहन जे एहि संस्थाक माध्यम सं, बेसी मैथिलानी लोकनि मिथिलाक्षर-लिपि सीखि रहल छथि। देखना गेल जे मैथिलानी लोकनि अपने तै सीखिते छथि, संगहि-संग अपन संतानआ आन परिचित महिला सभकें सेहो सिखा रहल छथि।

एहिक अलावा किछु आओर एहन संस्था अछि जे मिथिलाक्षर-लिपि के प्रचार-प्रसारमे अपन योगदान द' रहल अछि। मिशन मिथिलाक्षर के अलावा किछु आओर संस्था अछि जे मिथिलाक्षर लिपि के प्रचार-प्रसार, पुनर्स्थापन आ विकास मे प्राणपण सं लागल अछि। जेना पं. श्री अजयनाथ झा शास्त्री द्वारा संचालित "मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान" आ श्री मुकेश कुमार द्वारा संचालित "मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान"। कहबाक अर्थ जे किछु मैथिल, मिथिलाक्षर लिपि के संपूर्ण मिथिला मे प्रचार-प्रसारमे अपन अमुल्य योगदान द' रहल छथि। जरूरत एहि बातक अछि जे वर्तमानमे जीर्ण-शीर्ण अवस्थामे पहुंचल मिथिलाक्षर-लिपिकें जनमानसमे पहुंचेबाक वास्ते जे संस्था सभ काज कै रहल अछि ओकरा मैथिल समाज, प्रवासी मैथिल लोकनि अपन सहयोग दैथि। संगहि-संग, सभ मैथिलवृन्द ई भीष्म-प्रतिज्ञा करैथ जे स्वयं मिथिलाक्षर लिपि सीखब आ अपन धरोहरकें अगिला पीढ़ी तक पहुंचायब।अगर एहन भेल तै ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक्षर-लिपि अपन आन-बानक संग पुनः मैथिल जनमानस मे पुनर्स्थापित भै जायत आ अपन समृद्ध ज्ञान सं संपूर्ण विश्व कें मार्गदर्शन करत आओर मिथिला पुनः अपन गौरवशाली इतिहास कें पुनर्जीवित करत।

जय मिथिला, जय मैथिली आ जय मिथिलाक्षर।

नेपालदेशीय मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक स्थिति

✍ प्रवीण नारायण चौधरी



अपन भाषा आ संस्कृतिक प्रति असीम लगाव सं लैस, दुनू राष्ट्र नेपाल आ भारत बीच मित्रताक मुख्य आधार एकरे मानि जनस्तर पर एकरा कायम रखैत मिथिला केर अस्तित्व दुनू सम्प्रभु राष्ट्र मे हो से सदिच्छा सं कार्य, सामाजिक कार्यकर्ता केर रूप मे कार्यरत। ऑनलाइन आ ऑफलाइन दुनू मीडिया मे मिथिला-मैथिलीक विषय पर सतत लेखन।

सम्पर्क:
निर्यात प्रबंधक, एशियन थाई फूड्स प्रा. लि., पोस्ट बॉक्स 133, जानकी पथ, विराटनगर, नेपाल
मो. 977.901722981,
ईमेल : pravin112@hotmail.com



थिलाक वर्तमान भूगोल संवैधानिक रूप सं मान्यता नहि पाबि सकल अछि, ई संघर्ष नाममात्र लेल जहिना भारतदेशमे जारी अछि किछु तहिना नेपालदेशमे सेहो। पिछला करीब तीन दशकमे नेपाल केर राजतंत्र सं गणतंत्रमे परिणतिक विभिन्न आन्दोलनमे मिथिला राज्य संघर्ष समिति (जनकपुर) द्वारा संविधान सभामे 'मिथिला राज्य निर्माण' केर प्रस्ताव प्रवेश करेबाक मांग राखल गेल छल, एहि लेल आयोजित जनकपुरक रमानन्द चौकक धरनामे मिथिला विरोधी तत्त्व द्वारा बम विस्फोटक घटना इतिहासमे दर्ज अछि, जाहिमे रंगकर्मी रंजू झा सहित कुल 5 गोटे शहीद भेल छलाह तथा करीब 40 गोटे घायल सेहो भेल छलाह, जिनका सभ कें 'जिन्दा शहीद' केर दर्जा लोकभाषामे देल जाइत छन्हि। हालमे नेपालदेशमे राजतंत्र कें जैड़ सं उखाड़ि देल गेल अछि आर एतय संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्रक स्थापना कयल गेल अछि। संघक अपन नव संविधान काफी जद्दोजहद उपरान्त लगभग 10 वर्षक समयमे जारी कयल जा सकल आर आब संविधान लागू करबाक पहिल शर्त जे तीन तह केर जन-निर्वाचित सरकार सं एतुका शासन व्यवस्था चलत, केन्द्र, प्रदेश तथा स्थानीय - ताहि तीनू निकायक चुनाव सम्पन्न भ' नेपाल आ 'समृद्ध नेपाल - सुखी नेपाली' केर नारारूपी अभियानमे शनैः-शनैः डेग बढा रहल अछि। एहि नव नेपालमे 7 गोट प्रान्तीय प्रदेश जेकर नामकरण स्वयं प्रदेश सभा (राज्यक विधानसभा) द्वारा कयल जेबाक संवैधानिक प्रावधान संग कुल 7 गोट प्रान्तीय सरकार पर निर्णय छोड़ि आगू बढि चुकल अछि।

एखुनका प्रदेश 2 मिथिलाक प्राचीन परिभाषा अनुरूप कोसी आ गंडक केर बीचक कुल 8 जिला कें 'राज्य' केर दर्जा भेटल अछि। हालांकि एकर नामकरण आ राजकाजक भाषा - एहि दुइ महत्वपूर्ण बातक निर्णय लम्बित अछि। प्रदेश सरकार एहि लेल आयोग केर गठन सेहो केलक अछि। एम्हर सामाजिक संजाल व मीडियामे ई बहस सेहो समानान्तर ढंग सं चलि रहल अछि जे 'मधेश' लेल आन्दोलन आ शहादति कें कोना केवल प्रदेश 2 सं गूंथिकय तुष्टीकरण करैत एहि प्रदेश 2 केर नाम मिथिला नहि हुअय, राजकाजक भाषा सेहो मैथिली कें नहि बनय देल जाय। एहि लेल तरह-तरह केर हावाबाजी आ कुतर्कपूर्ण बहस सामाजिक संजालमे नित्य देखय लेल भेट जाइछ। प्रदेश 2 अन्तर्गत कार्यरत मीडियामे सेहो एहि सब विन्दु पर जोरदार तर्क-वितर्क होइत देखल जा सकैत अछि। मैथिलीक विभिन्न बोली कें अलग भाषा होयबाक दम्भ आ दावी करैत एहि ठाम एक तरहक राजनीतिक विभाजन करि सत्ताभोग केर बाट ओहिना प्रशस्त कयल जा रहल अछि जेना भारतीय गणराज्यमे बिहार प्रान्त संग भेल। आयोग केर प्रतिवेदन प्रकाशित होबय धरि ई बहस किछु एहि तरहें निरन्तरतामे रहत, वोट बैंक पोलिटिक्स कयनिहार एहि तरहक कुतर्कपूर्ण प्रहार सं मैथिली-मिथिला कें पुनर्स्थापित होय सं रोकैत रहत आर समाज कें अपन भाषा, संस्कृति, पहिचान, मौलिकता आदि सं दूर राखि सिर्फ राजनीतिक मोहरा बनाय अपन गोटी लाल करैत रहत।

पूर्वक शासन व्यवस्था द्वारा मिथिला सहित अन्य भारतीय सीमा सं सटल प्रदेशक लोक कें 'मधेशी' कहिकय दोसर दर्जाक नागरिक मानैत रहल, ईहो सच्चाई थिकैक। नेपालमे माओवादी क्रान्ति द्वारा 'मुक्ति आन्दोलन' कें जखन 'जनयुद्ध'

मार्फत लागू करेबाक दबाव बढल आर देशक प्रमुख राजनीतिक दल भारतक मध्यस्थतामे जखन माओवादी नेतृत्व सं शान्ति समझौता क' देशक राजतंत्र कें सत्ताच्युत कयलनि, तदोपरान्त वैह शान्ति समझौताक विभिन्न बिंदुगत निर्णय मुताबिक देशमे नव संविधान निर्माण सं लैत संघीय प्रणालीक प्रक्रिया चलल आर ताहिमे 'मधेश आन्दोलन' प्रमुखता सं 'समग्र मधेश एक स्वायत्त प्रदेश' केर राजनीतिक एजेन्डा संग मुखर भ' उठल। माओवादी क्रान्ति सेहो मधेशीक मुक्ति आ समान नागरिक अधिकारक ओकालति कएने छल, अन्य राजनीतिक दल सेहो मधेश आ मधेशीक उत्पीड़ण सं मुक्तिक बात के समर्थन केलक। परंच मधेश आ मधेशी पहिचान कें परिभाषित करबाक क्रममे समस्त मधेशमे रहनिहार कें 'मधेशी' नहि मानि एहिमे दुविधापूर्ण स्थिति बनि जेबाक कारण कियो पहाड़ी मूल, त' कियो आदिवासी, कियो जनजाति, कियो मुसलमान, कियो दलित - एहि तरहें मधेश आ मधेशीक समग्रता कें खण्ड-खण्डमे खण्डित क' देलक। आब मधेशी कें बचि गेल? मधेशीक संख्या अचानक 50% केर दाबी सं बामोस्किल 20% तक खसि पड़ल। मधेशक नाम पर राजनीति आरम्भ त' भेल, लेकिन आखिरकार एहि मधेशवाद केर चरित्र कें शासक वर्ग द्वारा लगायल आरोप जे ई 'राष्ट्रक अस्मिताक विरुद्ध विखंडनकारी' मुद्दा थिक, किछु तहिना सिद्ध केलक जखन मधेशवादक नाम पर कियो स्वतंत्र देशक निर्माणक मांग आगू क' देलक, त' कियो मधेशक भीतर थरुहटप्रदेश केर मांग आगू राखि देलक, किछु तहिना मधेशवादक वकालत कयनिहार द्वारा मिथिलाक मांग कें सेहो मधेश-विरोधी कहिकय आपसमे अविश्वास केर स्थिति उत्पन्न क' लेलनि।

मिथिला राज्यक मांग 'मैथिल' पहिचान कें स्थापित करबाक आ विश्वक एक प्राचीनतम सभ्यता - युगों-युगों सं चलैत आबि रहल आ वेद-पुराणमे वर्णित पहिचान कें शिरोधार्य क' जनक-जानकी सं लैत अद्यतन समय धरिक विद्वान् परम्परा कें पोषण करैत समस्त मानव समुदायक हित लेल चिन्तन, कर्म आ कर्तव्य निर्वहनक परिकल्पना कें आगू बढायल गेल। लेकिन वेद विरोध, ब्राह्मण विरोध, हिन्दू-मुसलमान व अन्य धर्मावलम्बी सहितक समाज लेल परिकल्पित 'धर्म-निरपेक्षता' आदिक परिणाम सं मिथिला आ मैथिलीक सर्वस्वीकार्यता पर प्रश्न चिह्न लागल अछि। ताहि पर सं कुतर्क आ झूठक दुष्प्रचार क' एहि क्षेत्रक विशाल निरक्षर ओ पिछड़ल वर्गक लोकमानसमे अनेको भ्रान्ति पसारल जेबाक

प्रदेश 2 केर सरकार द्वारा संविधानक दायरामे रहिये क' शासन व्यवस्था संचालित होयत। केन्द्र सरकार द्वारा सेहो संविधानक प्रावधान अनुसार अपन बौद्धिक, सामरिक, आर्थिक पृष्ठपोषण कयल जायत। तें, पहिचान कें 'मैथिल' रूप सं मानी अथवा 'मध्य-मधेशी', राजकीय सुख-सुविधा संविधानप्रदत्त प्रावधान अन्तर्गत प्राप्त हेब्बे करत।

कारण स्थिति बद सं बदतर अछि। एक त' ओहिना कलियुग, ताहिमे त्रेता, द्वापर या सत्ययुगक परिकल्पना 'मिथिला' कें आत्मसात करबाक बदला घोर अन्तर्जातीय विद्वेष भावना कें भड़केबाक खेला-वेला; नेपालमे प्राप्त सीमा-आधारित मिथिला एखन 'मध्य-मधेश' बनिकय 'मधेशी शहीद' आ हुकुमत वर्गक पहिचान 'पहाड़ी मूल' लेल एकटा चुनौतीपूर्ण नियति बनाकय रखबाक क्रीड़ास्थल मात्र देखाइत अछि। विद्या, वैभव, धर्म, शान्ति, मूल्य, मान्यता, ईत्यादि सब बात प्राथमिकतामे नहि अछि। बल्कि मधेशी उत्पीड़ण सं न्याय पेबाक लेल मिथिलाकेन्द्रित मधेशीकरण मात्रमे लागल अछि।

एकटा तर्क ईहो अछि - नाम सं कि हेतैक जखन लोकहित लेल राज्य आ राजकाजक कोष व्यवस्थापनक अधिकार स्वत: मिथिला लेल भेट गेल। बिल्कुल - यैह यथार्थ छैक आर यैह अन्तिम संतोष सेहो। प्रदेश 2 केर सरकार द्वारा संविधानक दायरामे रहिये क' शासन व्यवस्था संचालित होयत। केन्द्र सरकार द्वारा सेहो संविधानक प्रावधान अनुसार अपन बौद्धिक, सामरिक, आर्थिक पृष्ठपोषण कयल जायत। तें, पहिचान कें 'मैथिल' रूप सं मानी अथवा 'मध्य-मधेशी', राजकीय सुख-सुविधा संविधानप्रदत्त प्रावधान अन्तर्गत प्राप्त हेब्बे करत। दुइ विशाल पड़ोसी मित्रराष्ट्र भारत ओ चीनक बीच केर एकटा सुन्दर सन फूल - हिमालयक कोरामे अवस्थित आ कोसी, कमला, बलान, गंडक, सहित अनेकानेक छोट-पैघ नदी सं निरन्तर प्रक्षालित सुन्दर भूमि पर उपलब्ध सुन्दर वन-उपवन आ खेत-खरिहान केर भोग कयनिहार आइयो ओतबे जनक-जानकीक आशीर्वादक अनुभूति करैत छथि, जतेक युगों पहिने करैत छलाह। अत: नेपालदेशीय मिथिलाक लोक आइयो अपन निजता यानी विद्या आ वैभव संग स्वाभिमानक रक्षा करैत धर्म-कर्म-कर्तव्य हरेक विन्दु पर विजय हासिल कएने छथि, एतबा कहयमे कोनो हर्ज नहि बुझा रहल अछि। हम विदेहक सन्तान, सदैव विदेहक गुण आ धर्म कें धारण क' अपन महानता कें कदापि मलिन नहि होबय देब। राजनीतिक षड्यन्त्र भले हमरा जातिवादक दहकैत आगिमे नित्य झरका रहल अछि, लेकिन निमिक मृत शरीर जेना हमर राजा मैथिल कें मथला सं जन्म देलनि, ठीक तहिना आइ नेपालदेशक मिथिलामे भाषा, संस्कृति, पहिचान आदिक निरन्तर मंथनमे हमरा लोकनि ताजा-ताजा 'मैथिल' मात्र बनि रहल छी। हमर सम्पत्ति आइयो शिक्षा, संस्कार, आध्यात्म, त्याग, बलिदान आ समर्पण कायम अछि। जय मिथिला - जय जानकी!!

दक्षिण कौशल (छत्तीसगढ़)-मिथिलांचल अन्तर्संबंध

✍ आचार्य रमेंद्र मिश्र



इतिहासवेत्ता और पुरातत्वविद्।
संप्रति पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी शोध पीठ (छत्तीसगढ़ सरकार) केर अध्यक्ष छथि।
पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग।
संपूर्ण एशिया मे सबसं बेसी संख्या मे पीएचडी शोध करेबाक श्रेय हिनके नाम छनि।

सम्पर्क:
सृजन पी 4 बी,
सड़क 33, सेक्टर-9, भिलाई पूर्व
मो. 9827179479

अतीत सं आइधरि कोसल आ मिथिलांचलमे अटूट संबंध रहल अछि। भगवान राम आ सीता के चरण जाहि दिन दण्डकारण्य के धरती पर पड़ल तहिये सं अवध, मिथिलांचल कोसल, दण्डकारण्य के आपसमे संबंध स्थापित भ' गेल।

अगस्त सत्यऋषि जखन विंध्याचल के लांघिक' अंचलमे अयलाह तखन आर्य आ आरण्यकी संस्कृति के समन्वय भेल। कालांतरमे मगध राजा ओनेदं, मौर्य, शुंग कालमे उत्कल आ कोसल के प्रभावित कयलाह। समुद्र गुप्त के सेना सेहो कांकरेय महाकालांतर के वनांचलमे आयल छल। सिरकट्टी पाण्डुकामे पैरी - महानदी मार्ग सं उत्कल व्यापार होइत छल, ओतय सं बिहार आ बंगाल सेहो सम्बद्ध रहल। सिरपुर के शक्तिशाली शासक महाशिवगुप्त बालार्जन के माय वासदा मगध के सूर्यवर्मा के बेटी छलीह, जिनका समयमे मिथिलांचल के विद्वान कलाकर एतय आयल छलाह। उत्तर भारतमे सम्राट हर्षवर्धन पूर्वमे बंगाल के शासक शशांक आ दक्षिणमे पुलकेसी द्वितीय राज्य क' रहल छलाह। हिनकर दरबारमे सेहो मिथिलांचल के विद्वान सबहक प्रभाव छल, एहन मान्यता अछि।

छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय राजवंश सबहक दरबार मे सेहो विद्वान सबहक महत्वपूर्ण भूमिका छल।

आदि शंकराचार्य के गुरु अमरकंटकमे आयल रहथि। मंडन मिश्र के परिवार माहिष्मती मंडलमे छल, जे दार्शनिक मैथिल विद्वान पत्नी भारती के शास्त्रार्थमे भाग लेने छल। मंडलामे आई नर्मदा के कछैरमे मंडन मिश्र के नाम पर संग्रहालय भवन अछि। ओतुका झा वार्ड आइयो विराजमान अछि।

छत्तीसगढ़मे कएक साल सं मैथिल के निवास रहल अछि। रायपुर, दुर्ग, खैरागढ़, राजनादगांवमे मैथिल परंपरा रहल अछि। राजगुरु राज ज्योतिषी, राजपुरोहित, राजतांत्रिक मिथिलांचलीय ब्राह्मणे रहैत अयलाह। कांकेर सं मैथिल रामचरण के एकटा ताम्रपत्र भेटल छल, जे सन् 1650 के अछि। संवत् 1707

गोंडवाना के रानी दुर्गावती के राजपुरोहित महेश ठाकुर छलाह, जिनकर वंशज दरभंगा राजपरिवार छथि। पं रघुनंदन राय, जे कि हुनकर शिष्य रहथि, प्रकाण्ड विद्वान छलाह। हुनकर विद्वता सं सम्राट अकबर प्रभावित भेल रहथि। महेश ठाकुर के भाई के परिवार बस्तर राज, खैरागढ़ राज, रायपुर राजमे राजगुरु रहथि।

रतनपुर के गोपाल मिश्र, माखन मिश्र, माधव पंडित, शंकर दत्त मिश्र, संस्कृत हिंदी के प्रकांड विद्वान छलाह, जे भक्तिभाव के कवि छलाह।

छत्तीसगढ़ भाषा के प्रथम प्रमाण दन्तेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिरमे लागल शिलालेख अछि, जकरा मैथिल पंडित भगवान मिश्र राजगुरु बस्तर देशमे पहिल हिंदी गजेटियर के लेखक बस्तर भूषण विनोद चंद्रिका सत्यनारायण छलाह। रंगनाथ ठाकुर, लोक नाथ ठाकुर, मित्रनाथ राजगुरु सेहो बहुत किछु लिखलाह।

आजादी के लड़ाईमे अंग्रेज सं असहयोग करैत नार्मल स्कूल बिलासपुर के पढ़ाई छोड़ि पंडित रघुनाथ मिश्र रतनपुर, रायपुर खम्हरिया, गुजरा, दुर्ग अंचलमे जनजागृति के काज कयलनि। हुनकर कनिया श्रीमती बेनबती मिश्र सिंगार झा, अमेदा के संग

प्रस्तुत आलेख मूल रूप सं हिंदी मे मैथिल प्रवाहिका पत्रिका (रायपुर) मे छपल अछि। एकर मैथिली अनुवाद एतय प्रस्तुत कएल गेल अछि। ***अनुवाद : रौशन कुमार झा***

मिलिक' विदेशी वस्त्र के विरोध कयलनि। मैथिलपारा, रायपुरमे जुलाई 1933 नवंबरमे जखन गांधीजी रायपुर नया मंदिरमे छूआछूत निवारण आंदोलन के अंतर्गत आयल छलाह। तखन श्रीमती बेनबती मिश्रा हुनका सं भेंट कयने रहथि। हुनका कोरामे एकटा गोल मटोल नेना के देखि गांधीजी ओकरा अपना कोरामे लय लेलाह। वैह नेना आगू चलिकय छत्तीसगढ़ के एकटा जुझारू जनसेवी नेता जनकवि सुरेंद्र नाथ मिश्र बनलाह। श्री सरयूकांत झा प्राथमिक कक्षा के बच्चा के संग ओतय उपस्थित छलाह। जखन एकटा बच्चा, जकरा लोग अछूत बूझैत छल, ओकरा द्वारा इनार सं बाल्टी लय पानि निकालि लोक सब पर छीटल गेल त' सब लोकमे सामाजिक स्वभाव के आत्मसात क' रहल छलाह। पंडित यदुवंशनाथ ठाकुर रायपुर, पंडित रघुवंशनाथ ठाकुर बिलासपुर, ई. राघवेंद्र राव के गुरु पंडित रत्नाकर झा दुर्ग, पंडित दोलेश्वर झा खैरागढ़ जनचेतना के विकासमे संलग्न छलाह। पंडित चेडिकास्त झा सेहो सहभागी छलाह।

रायपुर षडयंत्र के क्रांतिकारी पंडित देवीकांत झा छलाह, जे जहलमे अंग्रेजक यातना सहने रहथि।

पंडित हीरानंद शास्त्री, पंडित हलधर शास्त्री, पंडित भैरदत्त झा, कु बिहारी झा, पंडित प्रीतिनंदन मिश्र, पंडित नगेंद्र नाथ ठाकुर वा डीपी मिश्र के सहपाठी पंडित शंकरानंद झा, पंडित रतनलाल झा, पंडित ध्रुवनाथ ठाकुर आ हुनक परिवार राष्ट्रीय आंदोलनमे सक्रिय छल। मैथिली के गाम परखंडा खोरपा, बोरिद, सेलूद, खम्हरिया, मोतीपुर दुर्ग, डंगनिया, रतनपुर, खूंटाघाट बिलासपुरमे जनचेतना विकास हुनका द्वारा कयल जा रहल छल।

मध्यप्रांत आ बरारमे 1912मे एल.एल. एम. के डिग्री हासिल करय बला पहिल व्यक्ति पंडित उमेशदत्त पाठक, मंडला छलाह। जिनकर विवाह रायपुरमे आ राजगुरु परिवार जगदलपुरमे भेल छल। संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी के प्रकांड विद्वान छलाह। ओ मैथिल समाज पहिल एम.एल.सी. आजुक एम.एल.ए. 1924-26में मंडला सं बनला। ओ अस्पृश्यता निवारण के काज मध्यप्रांत आ बरारमे कयलनि। हुनक अग्रज पंडित गणेश दत्त पाठक, मंडला के इतिहास के पहिल इतिहास लेखन आ अर्थशास्त्र प्रर्वधिकता लेखक छलाह। पंडित उमेश दत्त पाठक देश के नामी ओकील तेज बहादूर सप्रू के मार्गदर्शनमे काज कयने रहथि। पंडित रविशंकर शुक्ल, ई. राघवेन्द्रराव कैलाश नाथ काटजू हुनकर लंगोटिया मित्र छलाह। हुनकर भातीज प्रो. रमेशदत्त पाठक सी. पी. एंड बरारमे हिन्दी के पहिल प्रोफेसर 1928मे नियुक्त भेलाह। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ओहि पद के एकटा उम्मेदवार छलाह। पंडित उमेश दत्त पाठक मंडलामे रहैत छलाह। सप्ताहमे एकटा व्याख्यान नागपुरमे आ एकटा व्याख्यान जबलपुरमे दैत छलाह। बेगार प्रथा के खिलाफ आ धर्मातरण के खिलाफ मोकदमा दायर कयने छलाह, जाहि सं बेरियर एलिन प्रभावित भेल रहथि। मंडला अयला पर महात्मा गांधी सं भेंट कयने रहथि। एल्विन त्रिपुरारी जबलपुर कांग्रेस अधिवेशनमे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सं हुनकर भेंटवार्ता भेल छल। 1912 ई. मंडला अंचलमे स्वतंत्रता आंदोलन के शुरुआत पंडित उमेश दत्त पाठक कयलनि।

मध्यप्रदेश विधानसभा के कार्यवाहक अध्यक्ष दुर्ग के पंडित रत्नाकर झा बनलाह जे सबसं कम खर्चमे चुनाव जीतय वला एकटा विधायक छलाह। ओ सहकारिता पुरुष आ नगरपालिका दुर्ग के कतेको बेर अध्यक्ष रहलाह, ओहिना जहिना रायपुर त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह छलाह। पंडित काशीदत्त झा, पंडित हेमदत्त झा, राजेश्वर झा, खैरागढ़मे जनचेतनामे सक्रिय छलाह। शैल पाठक, चंद्रकला पाठक चंद्रकांता ठाकुर, शिक्षामे सक्रिय छलाह।

जगदलपुर-बस्तरमे पंडित विद्यानाथ ठाकुर आ विध्येश दत्त मिश्र डोंगरगांव, राजनादगांव सं विद्याभूषण ठाकुर, मंडला सं सुरेंद्र लाल झा, नारायणी देवी झा, विधायक रहलीह। भाटापारा नगरपालिका अध्यक्ष पंडित ध्रुवनारायण ठाकुर आ डोंगरगढ़ सं शंकर लाल झा रहलाह। पंडित दरबारी लाल झा, पंडित विनायक दत्त ठाकुर, पंडित लक्ष्मीनाथ ठाकुर, पंडित जगन्नाथ ठाकुर, मधुसूदन डॉ जितेंद्र ठाकुर, श्रीमती प्रेमा झा, श्रीमती श्याम झा पहिल स्नातक।

छत्तीसगढ़ के कर्मचारी, शिक्षक मजदूर संगठन सं जुड़ल सर्वश्री सुरेंद्रनाथ मिश्र, विजय झा, डॉ रमेंद्रनाथ मिश्र आ निर्मल कुमार झा मिली संगठन के नव दिशा देलनि। मिश्र बंधु के अध्यापन समाज सेवा भाव के विस्तृत नहिं कयल जा सकैत अछि।

जनकवि सुरेंद्र मिश्र आशु कवि छलाह। अनवरत कवितामय भाषण दैत छलाह। छात्र जीवन मे सेहो ओ अग्रणी छात्रवक्ता आ सेंटपाल स्कूलमे छात्र सचिव रहलाह। हुनकरे नेतृत्वमे 1967-68मे देश के एकटा प्रसिद्ध हड़ताल नगर निगम रायपुरमे भेल। 200 लोक जहल गेल, 65 टा शिक्षक नौकरी सं निकालल गेल छलाह। हुनका सबके शासन के आपस लेबय पड़ल। डाकतार, बैंक, रेल कर्मचारी सब सेहो एहि मे सहयोग देने रहय। कलकत्ता के नेता सबके कहय पड़लै जे रायपुर सन सफल हड़ताल देशमे दोसर नहि देखने रही। विजय झा छत्तीसगढ़ तृतीय वर्ग कार्यकारी संघ के नेता, निर्मल झा छत्तीसगढ़ के शिक्षक सबहक नेता आ डॉ. रमेंद्र नाथ मिश्र, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय प्राध्यापक सबके मध्यप्रदेश आ छत्तीसगढ़मे नेतृत्व क' ओकरा नव दिशा देलनि। सार्वजनिक हितचिंतन के काज कयलनि।

छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन के सर्वश्री सुरेंद्र मिश्र, विद्याभूषण ठाकुर, आचार्य सरयूकांत झा, नीतिन झा, सक्रिय रहलाह। सुरेंद्र मिश्र राज्य आंदोलन सर्वदलीय मंच के संयोजक छलाह। डॉ. रत्नकुमार ठाकुर, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालयमे कुलपति रहल छथि। 36 बरख धरि छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलनमे सक्रिय डॉ. रमेंद्रनाथ मिश्र

(शेष पृष्ठ 90 पर ....)

राजनैतिक और व्यक्तिगत नेतृत्व क्षमता सं मिथिलाक विकास

✍ संकेत शेखर



लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय मे वाणिज्य विषय केर लेक्चरर छथि।

सम्पर्क:
ईमेल–
sanket.shekhardbg@gmail.com
ट्विटर–
https%//twitter.com/
sanketshekhar1

विकास आ नेतृत्व के परिभाषा सं पता चलैत अछि जे दुनू सं जनमानस के जीवन स्तर मे सुधार आ हुनका गरिमामय जीवन सुनिश्चित करैत अछि। दुनिया के कोनो क्षेत्र पर शासन या आजादी नेतृत्व क्षमता सं प्राप्त भेल। नेतृत्व क्षमता सं केवल चुनाव टा नहि जीतल जाएत अछि बल्कि जनमानस के मदद राष्ट्र, क्षेत्र आ संस्थागत समस्या के निवारण के लेल होएत अछि। गांधी, अम्बेडकर, लोहिया गणमान्य नेतृत्व सेहो चुनाव सं ज्यादा सामाजिक समस्या के निवारण के प्रयास केला। चुनाव जीतला सं या कोनो पद भेटला सं कार्य क्षमता आ बैढ जाएत अछि। आब गप छै जे विकास आ नेतृत्व के केहन संबंध अछि? सीधा संबंध अछि की विपरीत।

मिथिला के विकास आ नेतृत्व

आब बात करि मिथिला के, की मिथिला मे नीक नेतृत्व नहीं रहलै, की मिथिला मे विकास नहीं भेलइ। देखल जाए तह दुनू भेलइ, ई सिद्धांत अछि जे जातय नेतृत्व होएत अछि ओतहि विकास होएत अछि। प्रश्न ई अछि कि मिथिला के परिपेक्ष्य मे नेतृत्व आ विकास मे सीधा सम्बन्ध रहल या विपरीत। अगर मिथिला के वर्तमान स्तिथि देखि त' ई प्रतीत अछि जे ई सिद्धांत किछु काल तक वैध रहल आ किछु काल तक विपरीत दिशा मे चलल। मिथिला मे कौशल आ प्रतिभा के कहियो कमी नै रहल विशेष तहियो विकास के स्थिति मे कोनो सुधार नहीं भेलइ। मिथिला के पवित्र भूमि सं एहन एहन गणमान्य व्यक्ति सब जनम लैला आ राष्ट्रे नै बल्कि पूरा विश्व के समस्या के निवारण केला, मुदा मिथिला क्षेत्र बेरोजगारी, पलायन, बाढ़ि आ अनेको समस्या सं भरल रहल। एकटा गणमान्य व्यक्ति सं गपसप के क्रम मे कहला जे बिना पद या चुनाव लड़ने मिथिला के विकास संभव नहीं अछि। आहि गप के परिभाषित कएल जाए त' कमोबेश 20 टा जिला मे जे जनप्रतिनिधि चुइन क संसद या विधानसभा या परिषद् मे गेला ओ की केला? अगर चुनावी प्रक्रिया सं विकास होएत अछि त' मिथिला विकसित या विकासशील रहैत। देखि ता ई क्षेत्र विकासशील नहीं अपितु अविकसित अछि। कारण जे विकास के मतलब मिथिलांचल मे पैघ कोठी मकान आ विकसित मॉल आ बाजार सं नहीं कएल जाए। विकास के सही अर्थ अछि जे पूर्ण रोजगार, शिक्षा आ स्वास्थय के समुचित व्यवस्था, नारी सशक्तिकरण, नीक कानून व्यवस्था, शान्ति आ तनाव मुक्त जीवन आदि आदि। ई लाजक गप जे अपन माटी के छोड़ि के लोग दोसर प्रदेश मे जा क' ओ क्षेत्र के सामूहिक विकास मे योगदान दैत अछि। ई दोष हम नेतृत्व के नै द' क' जनमानस के सोच आ नेतृत्व दुनू के देब, कारण जे दुनू समस्या के निवारण के प्रयास केला। किछु नीक लोग आ संसथान के सरहानीय प्रयास रहल मुदा जनमानस के आभाव मे ओहो किछु खास नहीं क' पेला। मिथिला के एहि पावन धरती पर दर्जनों भरि राज्यमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्री आ केंद्रीय मंत्री रहला हुनका मे अगर नेतृत्व क्षमता नै छलई त' ओ पद पर केना पहुचला। सवाल ई अछि आ ई कही जे सब कोनो समस्या के निवारण नहीं केलाह सेहो गलत हैत। हुनक सार्थक प्रयास रहलै मुदा समस्या अनंत अछि जाहि से हुनक प्रयास सेहो पूर्ण रूप सं सार्थक नहीं मानल गेलई। दिक्कत

मिथिला मे स्थित अवसर के चीन्हइ मे भ' गेलइ। कोनो क्षेत्रक विकास ओकर अवसर के खोजै मे, ओकरा सं विकास करए मे होय छै। विश्व मे कत्तो विकास भेलै ओ बिना अवसर के खोजने नहीं भेलए। कहैत जाएत अछि जे अवसर हमेसा रहैत अछी जरुरी आअछि ओकरा खोजइ के मिथिलाक विकास नेतृत्व सं संभव अछि मुदा सिर्फ चुनावी नेतृत्व सं नहि बल्कि युवा, महिला, के नेतृत्व क्षमता सं संभव होयत। 1991 के जे आर्थिक निति आयल त' किछु राज्य जेना की गुजरात, कर्नाटक आदि राज्य सब ओकर फायदा उठेलक आ बिहार आ विशेष रूप सं मिथिला सामाजिक अगड़ा-पिछड़ा, मुस्लिम-हिन्दू, भ्रष्टाचार के शिकार भ' गेल। ई कही त' 1991 के बाद स्थिति आ खराब भ' गेलै। शिक्षा आ स्वास्थ सेवा मैनीजिकरण बढि गेल जाहि सं सामाजिक असामान्यता बढ़ि गेल आ आपराधिक घटना सेहो बढि गेल।

मिथिलाक अवसर आ चुनौती

आब बात करि जे मिथिलाक देखाइत अवसर के। पहिने क्षेत्र के बात करि त' बाढ़ि आबइत रहैत अछि आ बाढ़ि के पानि सं पनबिजली उत्पन्न करि क्षेत्र मे बिजली आ लोग सब लेल रोजगार सहित अर्थव्यवस्था के मजबूत कएल जा सकैए। मिथिला क्षेत्र के भूमि विभिन्न फर-फूल आ अनेक जड़ी-बूटी के लेल उपयुक्त अछि। एहि के अलावा मिथिला मे तालाब, नदी के कोनो कमी नहि अछि जाहि सं मत्स्य, मखान के भरी मात्रा मे उत्पादन भ' सकैत अछि जाकर पूरा विश्व मे सस्वास्थ लाभ आ अनेक व्यंजन लेल प्रयोग कएल जाएत अछि। मिथिलाक खान पान जेना की आचार, तिसिअउरी, कंच, कुम्हरौरी, ठकुआ, पीरिकीया, भुस्बा अतेक स्वादिष्ट होएत अछि, एकर विपणन (मार्केटिंग) के जरुरत अछि। आई जे हम बर्गर पिज्जा, पास्ता जे खाए छी, ओ सब मार्केटिंग के कमाल अछि। आही सं नहि सिर्फ रोजगार आ आर्थिक व्यवस्था मई सुधार हेतै बल्कि नारी सशक्तिकरण सेहो हेतै। चरखा सं जेनउ, मिथिला पेंटिंग के नवोन्मेषी प्रयोग सं रोजगार आ सशक्तिकरण बढ़तै। मिथिला क्षेत्र मे तालाब, झील आ महल के सौन्दर्यकरण करि राजस्व सृजन भ' सके अछि। अहि कदम सं नै सिर्फ रोजगार सृजन बल्कि पलायन रुकते। जनमानस के सोच अछि जे कंप्यूटर पर आठ घंटाक ड्यूटी मात्र सं रोजगार होएत अछि से गलत छै।

निम्नलिखित डाटा 2007 मे बिहार मे पलायन के मुख्य कारण, बिहार मे मिथिलांचल के बहुत पैघ अंश छै। ई डाटा के देखि त' सबस पैघ कारण रोजगार के खोज या नीक विकल्प के लेल ओकर अलावा शिक्षा, व्यवसाय केलेल पलायन होएत अछि। ई सभक व्यवस्था अगर मिथिला मे उपलब्ध भ' जाए त' बहुत समस्या के निवारण भ जेतै ताहि लेल निवेश, एन्त्रेप्रेंयूर्शिप, सैनिटेशन, पर्यटक क्षेत्र, शिक्षण संसथान, स्वास्थय सेवा के क्षेत्र मे प्रयास केनाइ बहुत जरुरी छै।

(स्रोत : एन.ऐस.एस.ओ. 2007)

व्यक्तिगत नेतृत्व क्षमता आ मिथिलाक विकास

ई कही त' विकास नेतृत्व सं हेतइ मुदा सिर्फ राजनेता सं नहीं बल्कि जनमानस के बीच सं जनमानस के समस्या के निवारण करए ओहेन नेतृत्व चाही। उद्योग, नीक शिक्षण संसथान ओहि ठाम स्थापित होएत अछि जतय अवसर होएत अछि आ कनि अवसर देखाएल जाएत त' सब आएब जाइत। कहलो जाएत अछि जे कोनो निति तखने सफल होएत अछि जखन ओहि मे सत प्रतिशत नागरिक सहभागी होएत अछि। आई जे मिथिलाक युवा सब छथि ओ सब अपन अधिकांश समय फेसबुक, व्हाट्सप्प आ अन्य नकारात्मक चीज सब मे बितबए छथि ओहि जगह पर उदहारण के तौर पर कोनो सामाजिक या क्षेत्रगत समस्या के सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से ट्रेंड क' के सरकार के संज्ञान मे सेहो लेल जा सकैत अछि। की हुनका सब मे नेतृत्व क्षमता विकसित नहीं कएल जा सकैत अछि? हुनका मे नेतृत्व क्षमता छैन मुदा ओ पाहिले रोजगार सुनिश्चित करता तखन नेतृत्व आ समाजसेवा। नेतृत्व सामाजिक समस्या के निवारण के लेल होए ओहि सं सिर्फ रोजगार टा नहि बल्कि दोसरो लेल रोजगार के सृजन भ' सकैत अछि। हिंदी भाषा मे कहलो जाएत अछि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। जतय समस्या छई ओहिठाम रचनात्मकता आ नवोन्मेष संभव अछि। मिथिलाक विकास नीके नेतृत्व क्षमता सं होयत, ध्यान देल देल जाउ जे नेतृत्व राजनेते टा नहि बल्कि एकटा उद्यमी, शिक्षक, नौकरशाह, युवा, महिला, बुजुर्ग, ब्राह्मण – डोम, मुस्लमान, अगड़ा-पिछड़ा, छोट पैघ सब क' सकैत अछि। महान लेखक शिव खेरा कहला जे "विनर्स डोंट डू डिफरेंट थिंग्स, डे डु थिंग्स डिफरेंटली अर्थात नेतृत्व क्षमता युक्त व्यक्ति कोनो काज के अलग ढंग सं करए छथि जाहि सं उद्देश्य पूरा भ' जाए। मिथिला के सन्दर्भ मे विकास के लेल परम्परागत नेतृत्व मे बदलाव के आवश्यकता अछि। मिथिलाक जखन समावेशी आ रचनात्मकता नवोन्मेष सं पूर्ण हुए तखने क्षेत्रक विकास संभव अछि। अगर मिथिलाक समस्या के साहित्य के बात करि, खूब रास साहित्य समस्या, संस्थान विद्यमान अछि मुदा समस्या के निवारण के बात नहीं कएल गेल। लोकतंत्र मे जनता भगवान् होए छईथ, लोकतंत्र मे लोकक जिम्मेदारी बढ़ पैघ होएत अछि। जखन सरकार नीक रहैत अछि त' लोकक जिम्मेदारी बढ़ि जाएत अछि। जिम्मेदारी ई जे सरकार के नीति के कोना जमीनी स्तर पर क्रियानवित कएल जाए। पूरा दुनिया सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल पर चर्चा क रहल अछि जाहि मे 17 टा उद्देश्य अछि जाहि मे

लाचारी, बेरोजगारी, भुखमरी, कानून व्यवस्था, तनाव मुक्त जीवन, जीव-जंतु सहित अनेक समस्या के निवारण के बात कएल गेल अछि जकरा 2030 तक पूरा कय के बात कएल जा रहल छै मने जे एखन सं एक दसक तक पूरा करय के छै त' की ई सिर्फ सरकार के प्रयास सं संभव होयत। जतय पूरा विश्व स्तर पर ई चर्चा भ' रहल त' एकर अलख मिथिला मे कियैक नहीं देखाई दै छै। एही गप मे कोनो दोमत नहि जे उपरोक्त कार्य संयुक्त राष्ट्र के एक टा इकाई यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम क' रहल अछि जाहि मे ओहो मे अनेको मैथिल हेता तखनो मिथिला के हाल बेहाल अछि।

मिथिला मे राजनैतिक नेतृत्व क्षमता

लोक सहभागिता पर बेसी जोर देला के बाद अगर चुनल जनप्रतिनिधि के बात कएल जाए त' एहेन बात नहीं छै जे राजनीति मे सब लोग भ्रष्ट होए छथि। किछु लोग नीक होए छथि। भारत देश मे कोनो एहन काज नहि छै जे संसदीय कार्यप्रणाली नहीं होए। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप सं सब ओहि प्रक्रिया सं होएत अछि, मुदा ओ कड़ी लगातार नै जुड़ि पैल कत्तो नै कत्तो मिथिला क्षेत्र मे राजनैतिक नेतृत्व मे कुशलता आ प्रभावी छवि मे कमी रहलइ। एकर बहुत कारण अछि पहिल त' केंद्र सरकार, राज्य सरकार, जिला परिषद्, नगर पालिका, पंचायत समिति मे सामंजस्य के कमी, नियमित संचार मे कमी जाहि सं बहुत काज आ योजना सही समय आ सही तरीका सं क्रियान्वित नै भ' पबैत अछि। दोसर, जनप्रतिनिधि, चाहे पंचायत स्तर या संसदीय स्तर पर अपन क्षेत्र के समस्या के मुखर रूप सं प्रकट करए मे सक्षम नहीं रहलैथ। तेसर कारण जे स्वाभाविक इच्छाशक्ति आ क्षेत्र विकसित करए के लेल सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के कमी। चारिम अपन कार्यकाल के अंदर तर्कसंगत के कमी। पांचम, जे जिनका

विहार स पलायन के मुख्य कारण

पलायन के मुख्य कारण	पुरुष	महिला	कुल
रोजगार के खोज मे	30.7	1.9	27
नीक रोजगार के खोज मे	23.8	0.5	20.8
व्यवसाय	2.6	0	2.2
रोजगार के लेल	34.3	2.1	30.2
स्थानांतरण	0.9	0	0.8
अध्ययन	1.5	4.5	1.9
स्वास्थ्य	0.2	0	0.2
विवाह के कारण से	0	29.1	3.7
पारिवारिक सदस्य या कमाय वाला के पलायन	3.9	61.1	11.2
अन्य कारण स	2.1	0.8	2
कुल	100	100	100

लग उपरोक्त चीज छलै ओहो मैनपावर आ प्रबंधन के आभाव के कारण कम समय मे ज्यादा जनमानस के प्रभावित नै क' पेला। मिथिला मे राजनेता के चाही आपस मे नियमित रूप सं संचार आ सामंजस्य होय। हुनका सबके अपन क्षेत्र के समस्या सदन मे मुखर भ' क' उठाबए परते। नेतृत्व क्षमता मे इच्छाशक्ति आ सकारात्मक प्रतिस्पर्धा होए आ तर्कसंगिक आ मैनपावर के सही ढंग सं क्रियानवित करि। पूर्व मे मिथिलाक नेतृत्व आ विकास के बात करी त' बहुत रास लीडर भेला! जेना कि ललित नारायण मिश्रा, भागवत झा आज़ाद, जगन्नाथ मिश्रा, इत्यादि भारत स्तर पर नाम केलाह आ मिथिला के विकास सेहो केला। मिथिला मे ट्रेन के सुविधा, मैथिलि भाषा के अष्टम सूची, कोशी क्षेत्र सं नेपाल के जोरनाइ। नीक सड़क के व्यवस्था सब नीक राजनीति के प्रतिफल अछि। वर्तमान मे क्षेत्र मे एयरपोर्ट, एम्स, स्किल यूनिवर्सिटी, मिथिला हाट लेल जे प्रयास भ' रहल छै ओहो अवसर के खोज एवं नीक नेतृत्व क्षमता सं होयत।

मिथिला मे उदारवाद के आवश्यकता

ई सभक प्रयास सं संभव होयत। दर्शनशास्त्र के अनुसार सामाजिक संस्कृति मे समय के हिसाब सं कनेक बदलाव भेनाइ जरुरी अछि, कनि उदारवाद जरुरी अछि। प्रायः उदारवाद के गलत मतलब बुझि लेल जाए छै। उदारवाद सं संस्कृति के बिसरइ के नहीं अपितु ओकरा नया आ रचनात्मक ढंग सं प्रस्तुत करि जाहि मे लोक, समाज आ देश के स्वीकृति होए। उदारवाद आर्थिक क्रिया मे सेहो जरुरी अछि। समाज मे सफलता आईएएस, डॉक्टर, इंजीनियर टा सं नहि बल्कि हर तरहक काज केला सं भेटइ छै, युवा सब विकल्प के देखि आ अपन रुचिक हिसाब सं चुनाव करि। उदारवाद नारी शिक्षा जरुरी अछि, मानल जाएत अछि जे शिक्षा ककरो आर्थिक आ सामाजिक रूप सं स्वतंत्र बनबैत छै। शिक्षा सं नेतृत्व क्षमता के विकास होएत अछि, विघ्न-बाधा मे तटस्थ हुअ के शक्ति प्रदान होइत ऐ। विकसित आ समृद्धि मिथिला के लेल नेतृत्व क्षमता के साथ उदारवाद सोच बहुत जरुरी अछि। व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व क्षमता, उदारवाद सोच आ देश, समाज आ क्षेत्र के सेवा के प्रेरणा घरे सं भेटइ छै। कहलो जाएत

अछि जे "चैरिटी बिगिन्स फ्रॉम होम" अर्थात दान घर सं शुरू होइत अछि। ई सब सोच शक्ति, संस्कृति घर सं विकसित करए के जरुरत छै आ मिथिला के विकास अपने आप भ' जाएत। उपरोक्त राजनैतिक सं ज्यादा व्यक्तिगत नेतृत्व पर चर्चा भेल तकर ई कारण जे मिथिला या विश्व के कोनो क्षेत्र मे लोकतंत्र विद्यमान अछि तखनो विकास नहीं भ' रहल अछि तखन बूझल जाए जे लोक सहभागिता के जरुरत अछि आ लोक सहभागिता तखने भ' सकए या जखन समाज सेवा के रोजगार सं जोड़ल जाय या कियो आर्थिक रूप सं स्वतंत्र छथि। प्रबंधन मे एकटा सिद्धांत "मास्लो हेयरची नीड" के अनुसार कोनो व्यक्ति अपन मौलिक आवश्यकता, अपन सुरक्षा सुनिश्चित केला के बाद समाज के बारे मे सोच सकैत छथि ताहि लेल नीक शिक्षा के साथ साथ सामाजिक समस्या आ समाज सेवा के रोजगार सं जोड़नाइ बहुत जरुरी अछि। कल्पना करल जाय जे क्षेत्र मे राजनीतिक नेतृत्व के अलावा व्यक्तिगत नेतृत्व होए छै ओ क्षेत्र अपने आप विकसित भ' जाएत अछि आ ओ विकसित कियैक नहि हेतै। उदहारण के लेल नॉर्वे सन देश मे लोकक सरकार के नीति, विकास, शिक्षा, स्वस्थ्य आ व्यवस्था सुधार मे खूब सहभागिता रहैत छनि ताहि कारण सं नॉर्वे के मानव विकास सूचकांक मे प्रथम स्थान प्राप्त अछि। जाहि मिथिला क्षेत्र मे मानव व्यक्तिगत नेतृत्व क्षमता आ राजनीतिक नेतृत्व क्षमता के मेल होए त' विकास जरूर हेतइ। जरुरत अछि जे एकर शुरुआत छोट स्तर सं होइ। घर सं शुरू होए आर विश्वपटल तक जाए। ई सामूहिक प्रयास सं संभव होयत।

सन्दर्भ

1. रिकेरत (2005), द रिलेशनशिप बिटव. ीन लीडरशिप डेवलपमेंट एंड क्रिटिकल थिंकिंग, जर्नल ऑफ़ लीडरशिप एजुकेशन, वॉल -4
2. मासलो (1943)। द थ्योरी ऑफ़ ह्यूमन मोटिवेशन
3. ग्रीक फिलोसोफर प्लेटो
4. इकनोमिक टाइम्स (जुलाई 2018) https://economictimes.indiatimes.com/ind ustry/transportation/railways/indian-railways
5. भगत एंड कुमार (दिसंबर, 2012), इमीग्रैशन फ्रॉम बिहार एंड कोंसेकुएंसेस, जर्नल ऑफ़ इकनोमिक एंड सोशल स्टडीज 2012;

... पृष्ठ 86 का शेष

दक्षिण कौशल (छतीसगढ़)–मिथिलांचल अन्तर्सम्बन्ध

तीन बेर गिरफ्तारी देलनि, रायपुर, दुर्ग, दिल्लीमे लाखो लोकक संग ओ पहिल प्राध्यापक छलाह जे कि अपन प्रोफेसर के नौकरी के परवाह धरि नहि कयलनि। छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ संस्कृति आ छत्तीसगढ़ लेल हुनकर जीवन समर्पित रहल अछि।

सर्वश्री सुरेश ठाकुर, डॉ. देवेश दत्त मिश्र, सुरवारी ओझा बिलासपुर, अशोक झा रायगढ़, अरुण ठाकुर जगदलपुर, राजगुरु बस्तर, डॉ. जे. जी. झा, श्री प्रमोद ठाकुर कीर्तिनाथ ठाकुर, अभिनवानंद झा, सुलेखा ठाकुर, अनुराधा झा चौकी, पंडित राजेश्वरी झा आ ठाकुर बाबू झा खैरागढ़, तारानाथ झा, विद्यानंद झा, चन्द्रनाथ झा, पंडित बेतूलाल झा, पंडित महेंद्र लाल झा, पंडित वंशनारायण झा के व्यक्तित्व प्रभावशाली छल, हिनकर योगदान विस्तृत नहि कयल जा सकैत अछि।

मंडलामे पंडित लक्ष्मण दत्त पाठक, भरत दत्त पाठक, शत्रुघ्न दत्त पाठक जी, जे कि ओतुका राष्ट्रीय आंदोलन के प्रणेता पंडित उमेश दत्त पाठक के भातीज छलाह। राष्ट्रीय आंदोलन के सहभागी रहलाह। पंडित सुरेंद्र लाल के भूमिका महत्वपूर्ण रहल। विजय दत्त झा के व्यक्तित्व दबंग बला छल। छत्तीसगढ़ प्रदेशमे पहिल जीवनी लेखक धर्मवंश, खैरागढ़ पंडित बालशास्त्री झा के पुत्र श्री शिवकुमार शास्त्री मंडल के महामना कहल जाइत छथि। ओतय महिला महाविद्यालय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञान इंग्लिश मीडियम स्कूल, संस्कृत पाठशाला सन शैक्षणिक संस्था खोलिक' एकटा बौद्धिक जागृति उत्पन्न कयलनि। पंडित रूपनाथ झा मंडला के प्रकाण्ड विद्वान छलाह।

मध्यप्रदेश आ छत्तीसगढ़मे ग्वालियर के ओझा परिवार, सिंधिया दरबार आ राधोगढ़ मे प्रभावशाली रहल। पन्ना के मिश्र झा परिवार मंडलामे आंखों ओझा, वल्लभ जी ओझा, नारायण दत्त झा परिवार, अंजनियां, कवर्धा के झा परिवार प्रतिष्ठित आ प्रभावशाली अछि। सिरी मालगुजार पंडित नीलमणी झा के पुतोहु श्रीमती यशोदा देवी झा, जे परखन्दा गाम वाली समाधि दाई के नाम सं प्रसिद्ध छलीह, जे 23 समाधि जमीनमे लेलनि आ 9 समाधि नर्मदा पट पर लेलनि ओ आध्यात्मिक आ धर्म के क्षेत्रमे मैथिल समाज के लेल एकमात्र मातृशक्ति के प्रतीक छलीह। हम अपना आंखि सं रायपुरमे समाधि लैत देखने छलियनि। शिक्षा के क्षेत्रमे विश्वम्भरनाथ ठाकुर, सत्येंद्रनाथ ठाकुर, डॉ. देवेश दत्त मिश्र, इंद्रेश दत्त मिश्र, सुरेंद्र मणि झा अग्रणी छथि।

समकालीन मैथिली सिनेमाक समक्ष चुनौती

✍ रूपक शरर



युवा फिल्म लेखक-निर्देशक रुपक शररक कविता, कहानी, निबंध आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित, प्रशंसित होइत रहैछ। हिनक मैथिली फिल्म 'प्रेमक बसात' हाल मे रिलीज भेल आ खूब चर्चित रहल।

सम्पर्क:
204, दोसर मंजिल, प्लॉट नं.-147, स्वजन कॉपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लिमिटेड, मॉडल टाउन, ऑफ जे. पी. रोड, वर्सोवा मेट्रो स्टेशन समोर, 7 बंगला, अंधेरी वेस्ट, मुम्बई-400053
मो. 9324282778
ईमेल : rupaksharar@gmail.com

ओना त' कागज पर मैथिली सिनेमाक इतिहास सन् 1964 सं प्रारम्भ भ' जाइत अछि जखन मिथिलाक तीन टा उत्साही युवक, जाहिमे महंथ मदन मोहन दास, उदयभानु सिंह आ केदारनाथ चौधरीक संयुक्त सपनाक साक्षी बनल, ''नैहर भेल मोर सासुर'' नामसं शुरू होई वला पहिल मैथिली फिल्म। जहिना आरम्भमे एहि तीनू गोटेक नाम बदलि क' समाज 'अबारा नहितन' बजबय लागल, तहिना बादमे अहू सिनेमाक नाम बदलि क' 'ममता गाबय गीत' क' देल गेल। कहल जाइ छैक जे पहिल संतानक लालन-पालनमे बड्ड बेसी कष्ट होइत छैक, आ ई कहावत बनय वला पहिल मैथिली सिनेमा पर अक्षरशः चरितार्थ भ' गेल। 'ममता गाबय गीत' क' निर्माण प्रक्रियामे बाधा पर बाधा उत्पन्न होइत चल गेल आ पहिल मैथिली सिनेमा हेबाक गौरव 1971मे रीलीज, 'कन्यादान' के भेटि गेल।

सम्प्रति मैथिली सिनेमा एकटा पैघ सफर तय क' लेने अछि आ एकर विशिष्ट उपलब्धिक रूपमे मात्र दू गोट नाम उल्लेखनीय अछि। 28 मार्च 2016मे जखन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारक घोषणा भेल त' समस्त मिथिलावासीक नाम पर छल 'मिथिला मखान' क' नाम। नीतू चन्द्रा आ समीर कुमार द्वारा संयुक्त रूप सं निर्मित आ नितिन चन्द्रा द्वारा निर्देशित एहि फिल्म कें सर्वश्रेष्ठ मैथिली फीचर फिल्मक पुरस्कार भेटल। एहिसं पूर्व प्रवीण कुमार द्वारा निर्मित आ निर्देशित 'नैना जोगिन' (2005) कें राष्ट्रीय पुरस्कारक 'रजत कमल' श्रेणीमे पुरस्कृत कएल गेल जकर घोषणा 7 अगस्त 2007 कें भेल छल। स्व. विभूतिनाथ झा कें एकर सम्पादन लेल सेहो पुरस्कृत कएल गेल छल।

मैथिली सिनेमाक लेल आब एहिसं पैघ विडम्बना दोसर आर की भ' सकैत अछि जे एकमात्र राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार सं सम्मानित सिनेमाक प्रदर्शन सार्वजनिक रूपसं दर्शकक समक्ष आई धरि नहि भ' सकल। ई दोसर गप्प अछि जे भारतक अलग-अलग शहरमे 'फिल्म फेस्टिवल' क' माध्यमसं किछु लोक तक मिथिला मखान पहुंच सकल।

एखन धरिक मैथिली सिनेमाक सफरमे जं एकटा सिनेमाकें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल भेल अछि त' दर्शकक पुरस्कार सेहो एकेटा सिनामाकें भेटबाक गौरव प्राप्त भेल अछि, जेकर नाम थिक 'सस्ता जिनगी महग सेनूर'। सन् 1999मे प्रदर्शित एहि फिल्मकें देखबा लेल लोक हुजूम बान्हि क' घरसं बहराइत छल। बालकृष्ण झा निर्मित आ मुरलीधर निर्देशित एहि फिल्मकें व्यावसायिक रूपसं सर्वकालीन सफल फिल्म जनसमूह द्वारा मानल गेल अछि। मुदा तकरा बाद? तकरा बादे ई सवाल मुंह बौने आइ धरि ठाढ अछि जे समकालीन मैथिली सिनेमाक समक्ष की सभ चुनौती अछि...किएक ने एखन धरि मैथिली सिनेमाक बाजार स्थापित भेल अछि? जहां धारि बाजारक गप्प अछि त' सिनेमा की, कोनो उत्पाद क' बाजार ताधरि स्थापित नहि भ' सकैत अछि, जाधरि ओकर उत्पादनमे निरंतरता नै हो। आ दोसर गप्प जे उत्पादनमे निरंतरता तखन कोना हो, जखन दर्शकमे उदासीनता हो! आब एकरा दर्शकक उदासीनते कहल जा सकैत अछि जे 'सस्ता जिनगी महग सेनूर' क' बाद 'आऊ पिया हमर नगरी', 'सेनुरक लाज', 'कखन हरब दुख मोर', 'दुलरुआ बाबू', 'सिन्दूरदान', 'पिया संग प्रीत कोना हम करबै', 'सजना के अंगनामे सोलह सिंगार' इत्यादि कतेको रास सिनेमा मैथिली दर्शक कें रास नहि एलनि। एकर सभहक निर्माता अपार घाटामे गेलाह आ पलटि क' दोसर सिनेमा नहि बनेलाह। मिथिला आ मैथिलीक लेल कार्यरत किछु तथाकथित सिनेमा विशेषज्ञक ई

कहब जे जा धारि तकनीकी रूपसं उच्च स्तरीय सिनेमा नहि बनाओल जायत ताधरि मैथिली फिल्म इंडस्ट्री स्थापित नहि भ' सकैत अछि, सुपाच्य नहि अछि! कारण जाहि मिथिलाक धरती पर एक के बाद एक मैथिली सिनेमा धराशायी होइत चलि गेल, भोजपुरी सिनेमा ओही ठाम सं अपन कमाई के आकाश छूलक आ दर्शकक संग विशेषज्ञ सभ सेहो नीक जकां परिचित छथि भोजपुरी सिनेमाक स्तरसं। एना कहल जाइत अछि जे सर्वकालीन सुपरहिट मैथिली फिल्म 'सस्ता जिनगी महग सेनूर' सेहो तकनीकी रूपसं कोनो उच्चस्तरीय सिनेमा नहि छल।

विगत किछु बरखमे एकटा शोर उभरल जे हॉल मालिक मैथिली सिनेमा लगेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि। आ ई सवाल मैथिली सिनेमा निर्माता सभलेल एकटा गंभीर चुनौतीक रूपमे आगां आयल। सुनबामे आयल जे कएकटा सिनेमा एकर दंश झेललक। एहि विषम परिस्थितिमे युवा वर्ग एकरा लेल कतेक ठाम आंदोलन वास्ते रूपरेखा तैयार करबाक संग-संग सोशल मीडिया पर सेहो अपन पुरजोर आवाज उठेलनि, मुदा हुनकर एहि आवाजक पाछू कोनो मैथिली सिनेमा बनि क' ठाढे नहि छल जे, हॉल मालिक सभहक अग्निपरीक्षा ल' सकतनि!

हालहि रीलीज भेल निर्माता वेदांत झा आ लेखक-निर्देशक, रूपक शररक' मैथिली फिल्म, ''प्रेमक बसात''। ई सिनेमा एक संगे बहुत रास मिथ कें तोड़बामे सफल भेल, जाहिमे सभसं उल्लेखनीय अछि जे 'हॉल मालिक मैथिली सिनेमा लगेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि!'' राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तरकें कलाकार सं सजल फिल्म, 'प्रेमक बसात' भारत आ नेपालक लगभग पचास गोट थियेटरमे एक संगे रीलीज भेल। एहि तरहें मैथिली सिनेमाक इतिहासमे एकटा नव कीर्तिमान स्थापित करैत अछि 'प्रेमक बसात'। मुदा की, जाहि स्तर पर ई सिनेमाक प्रदर्शन कएल गेल ओही अनुपातमे ई दर्शक तक पहुंच सकल? आकि व्यावसायिक रूपसं एकरो सफल सिनेमाक श्रेणीमे राखल जा सकैत अछि?

सांच कही त' एतेक बरख बीत गेलाक बादो मैथिली सिनेमा अपन शैशवावस्थासं गुजरि रहल अछि, जतय सभसं पैघ चुनौती अछि दर्शककें सिनेमा हॉल तक हकारि क' अननाइ। एहि ठाम हकारि क' जानि बूझिक' कहल अछि। कारण एक त' कोनो गाम वा कोनो शहर एहन नहि अछि जे पलायनवादक शिकार नहि भेल हो, दोसर, गाममे उपस्थित सम्भ्रान्त परिवारक लोक आब हॉलसं विमुख भ' गेल छथि। एक त' हुनका ल'ग पासमे हॉल उपलब्ध नहि छनि आ दोसर जे हुनकर मोन माफिक सिनेमा नहि लागल रहै छनि। एहन परिस्थितिमे जं मैथिली सिनेमा लगाओल जाय, त' हुनका लोकनिकें हकारे देमय पड़त ने!

ई त' भेल मिथिलांचलक शहर आ ग्रामीण स्तरक चुनौती। आब बात करय छी मैथिली सिनेमाक लेल महानगरीय चुनौतीक। भारतक कोनो राज्य जं पलायनवादक शिकार भेल अछि। ताहिमे बिहारक नाम अग्रगण्य अछि। आ जं बात मिथिलांचलक करी तखन त' ई कहबामे हमरा कोनो अतिशयोक्ति नहि बुझा रहल अछि जे कोनो गामक जनसंख्या आंगुर पर गिनती क' सकैत छी अहां। एहनमे जे मैथिली सिनेमाक प्रदर्शन कोनो निर्माता महानगरमे करबा लेल सोचबो करताह त' हुनका लेल सभ सं दुरुह काज ई अछि जे बेसी-सं-बेसी मैथिल तक कोना पहुंचल जाय, कारण पूरा समुदाय कोनो एक मोहल्लामे त' बसल नहि छथि। दोसर, जे भोजपुरी सिनेमाक एतेक विस्तृत बाजार रहितहुं ओकरा 'मल्टीप्लेक्स'मे स्थान आई धारि नहि भेटि सकल अछि, तखन बाजाररहित मैथिली सिनेमाकें कोना भेटत? दरअसल 'मल्टीप्लेक्स'मे सिनेमा चलेबाक लेल ओकर 'बुकिंग' पहिने करय पड़ैत अछि, बादमे अहांक दर्शक आबैथ वा नै आबैथ। एहन परिस्थितिमे कोनो निर्माता, खास क' मैथिली फिल्मक निर्माता दोसर बेर दुस्साहस कोना क' सकैत छथि! पहिल दुस्साहस त' ओ मैथिली सिनेमा बनाइए क' क' चुकल छथि।

एकटा सिनेमाक निर्माणमे कतेको साल लागि जाइत अछि मुदा ओकर भविष्य सिनेमाक पहिल शो क' समयावधि समाप्त भेला पर तत्काल तय भ' जाइत अछि वा पहिल तीन दिन ओकरा लेल अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। सिनेमाक सफलता-असफलता एहि बातसं निर्धारित कएल जाइत अछि जे बॉक्स ऑफिस पर ओकर कमाई केहन भेलै? हम पूछय छी, जखन मिथिलांचलमे बेरा-बेरि सिनेमा हॉल बंदे' भ' रहल अछि, तखन बॉक्स ऑफिस कोन आ केहन? सिनेमा हॉलक संरक्षण सेहो मैथिली सिनेमाक समक्ष सशक्त चुनौतीक रूपमे ठाढ भ' गेल अछि।

हम सभ सूचना क्रांतिक एहन दौरमे जीबि रहल छी जतय एक 'क्लिक'मे समूचा संसारक समाचार उपलब्ध भ' जाइत अछि, सिनेमा कें के पूछैया! शुक्र दिन सिनेमा, हॉलमे रीलीज भेल आ ओकर अगिला दिन लोकक 'एन्ड्रॉयड' फोनमे! हॉलमे नहि जाकें घरे बैसल सिनेमा देखि ली, एहन सोचय वला दर्शकक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। ई समस्या आई सभ भाषाक सिनेमाक समक्ष राकस जकां मुंह बौने ठाढ अछि, तखन मैथिली सिनेमा एहिसं अछूता कोना रहि सकैया! 'यू ट्यूब' पर दर्शकक संख्या लगातार बढ़ल जा रहल अछि। आई-काल्हि लोककें झटपट मनोरंजनक संग चलैत-फिरैत सिनेमा हॉल बेसी आकर्षित क' रहल छनि। एहन परिस्थितिमे 'इंटरनेट-फॉर्मेट'मे मैथिली सिनेमाक निर्माण केनाई सेहो अत्यावश्यक आ चुनौतीपूर्ण कार्य कहल जा सकैत अछि।

अंततः हमरा बुझने कोनो भाषाक संरक्षण आ संवर्द्धनमे सिनेमाक बड्ड पैघ योगदान होइत अछि। चुनौती चाहे कतबो पैघ हो समग्र सहयोगसं ओकर समाधान आसानीसं निकालल जा सकैत अछि। कहल जाई छै, 'मनुक्खमे सभसं बेसी एकता 'राष्ट्रीय आपदा' क' समय देखल जाइत अछि। तें मैथिली सिनेमाक समक्ष जे कोनो चुनौती अछि, तकरा 'राष्ट्रीय आपदा' घोषित क' देल जेबाक चाही, ताकि समस्त मैथिल एकत्र भ' एकर समाधान अनिवार्य रूपसं निकालैथ।

मिथिलामे खेलक भठ्ठा बैस गेल

✍ ईश्वर नाथ झा



लेखक पत्रकार छथि। अंग्रेजी दैनिक 'द स्टेट्समैन' सं संबद्ध छथि। मुख्य रूप सं खेल पत्रकारिता।

सम्पर्कः
ई-132, द्वितीय तल, गली नं.-5,
गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्पलेक्स,
नई दिल्ली-110092
मो. 9871577193
ईमेल : ishwarnjha@gmail.com

ओना त' बिहार राज्य अपन आपमे एक टा अप्रतिम अतुलनीय के संग-संग अलौकिक जगह अछि, मुदा जं मिथिलाचल के बात करल जाय त' ई सबसे अलग आओर अद्भुत स्थान अछि। बिहार के कण-कणमे बौद्धिकता भरल रहलाक बावजूद, किछु एहन क्षेत्र छैक जाहिमे बिहार अखनौ बहुत पाछु अछि।

प्रतिभा पलायन बिहारक लेल कोनो नव गप्प नै, बहुत समय सं बिहार एकर दंश झेल रहल अछि, आओर आगुओ ई समस्याक समाधान होयत तकर सम्भावना दूर-दूर तक नै अछि।

बिहार सं पलायन सर्वहारा के संग-संग बौद्धिक लोकनि कें सेहो भेल आओर ओ सब अपना संगे खेल आओर खिलाड़ी कें सेहो ल'कें चैल जायत रहलाह, नतीजा बिहारमे खेल आओर खिलाड़ी आब डिबिया ल'कें ताकब तैयौ नहि भेटत।

खेल के मामिलामे मिथिलाक कहानी बिहार सं अलग नै छैक। दुखक गप्प ई जे मिथिलामे खेलक इतिहास एतेक समृद्ध रहलाक बावजूदो आजुक समयमे मिथिलामे खेलक नाम लेनिहार केओ नै छथि।

भारतीय खेलक इतिहासमे राजबहादुर विशेश्वर सिंह के नाम बड्ड आदर आ श्रद्धा भाव सं लेल जायत अछि।

मुदा भारतीय खेल इतिहास राजबहादुर विशेश्वर सिंह के योगदान कें बिसरा देलक, (कारण या त' इतिहासकार कें जानकारी केर आभाव या मिथिला केर प्रति दुर्भावना), ओहिना मिथिला सं खेल गायब भ' गेल।

भारतमे फुटबॉल महासंघक संस्थापक सदस्यक रूपमे विशेश्वर सिंह कें जानल जायत अछि। हुनकर नाम पर कतेको टूर्नामेंट्स के आयोजन हाल धरि होइत छल मिथिलामे, लेकिन बिहार सरकारक उदासीन रवैयाक कारण कोनो टूर्नामेंट्स बेसी दिन तक नै चैल सकल।

जे व्यक्तिक बदौलत बिहारमे या ई कहू कि मिथिलामे फुटबॉल मैचक आयोजन हर साल बड्ड नीक जेकां होयत छल, ओ व्यक्तिक योगदान के कोना मिथिला बिसैरि गेल, ई शोधक विषय भ' सकैत अछि।

दरभंगा शील्ड नामक टूर्नामेंट्स के आयोजन एक समयमे बड्ड प्रतिष्ठा के बात छल मिथिलाक लेल। 5 सितम्बर 1934 कें मोहन बागन आओर ईस्ट बंगाल के बीच मैचमे अमियों देब नामक एक खिलाड़ी भारतीय इतिहास के पहिल हैट-ट्रिक गोल केने रहैथ।

आजुक मधुबनी जिलाक राजनगरमे मोहन बागन आओर ईस्ट बंगाल एहन पैघ टीमक बीच फुटबॉल मैच सामान्य गप छल। आओर ई सब सिर्फ विशेश्वर सिंहक सौजन्य सं होयत छल, लेकिन आजुक दौरमे क्यो सोइच नै सकैत छथि कि कोनो बड़का टीम मिथिला आ कि बिहारमे आइब के खेलत।

विशेश्वर सिंह भारतीय फुटबॉल संघक पहिल सचिवक संग-संग बिहार इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट (दरभंगा नगर निगम)के निदेशक सेहो छलाह। ओ एगो बेहतर पोलो, टेनिस, हॉकी आओर शानदार निशानेबाज के संग-संग फूटबॉलक मांजल खिलाड़ी छलाह।

जतअ आइ भारतीय फुटबॉल संघ संतोष रियासतक नाम पर संतोष ट्राफीक आयोजन क' रहल अछि, ओतय भारतीय फुटबॉलक संस्थापक विशेश्वर सिंह सन खेल प्रशासक आ खिलाड़ी के भारतक संग-संग मिथिलांचल सेहो बिसैर चुकल अछि।

आइ पूरा विश्व फुटबॉलक दीवाना अछि, परंतु भारतीय फुटबॉलक इतिहासमे

दरभंगा, जतय सं एक छोट गाछ फुटबॉल महासंघ के रूपमे रोपल गेल छल ओ गाछ आइ एकटा बटवृक्षक रूप ध' कें अखिल भारतीय फुटबाल संघ बनि चुकल अछि। मुदा फुटबॉल संघमे दरभंगा आओर विशेश्वर सिंह के नाम लेनिहार तक नै कियौ रहलई, ई अपने आपमे मिथिलामे खेलक दुर्दशा कैह रहल अछि।

बिहारमे एकटा आओर खेलक विभूति भेलाह, जिनकर नाम बड्ड आदरक संग लेल जायत अछि, हुनक नाम थिक विश्वनाथ सिंह। कहल जायत अछि जे हिनका सं पैघ ओई समयमे कुश्ती के कोनो पहलवान देश विदेशमे नै छल।

विश्वनाथ सिंह जी बिहार के आरा जिला के दमहरपुर गांव के निवासी छलाह आओर सेनामे काज करैत छलाह। कुश्तीमे हुनकर लोहा पूरा विश्व मानैत छल, 1961मे ओ विश्व कुश्ती चैंपियनशिपमे सेहो भाग लेने छलैथ, जखन भारतक बड्ड कम पहलवान कुश्तीक बारेमे सोचैत छलाह।

वर्तमानमे बिहार सं पलायन क' के कोनो दोसर राज्य सं खेलनहारमे अनुकूल रॉय आओर पृथ्वी शॉ केर नाम प्रमुखता सं लिखल जायत अछि। अनुकूल रॉय समस्तीपुर जिला के छैथ आओर पृथ्वी गया जिला के। दुनु व्यक्ति के क्रिकेटमे नाम छैन। पृथ्वी सम्प्रति भारतीय टीमक हिस्सा भ' गेलाह आओर अनुकूल अखनो संघर्ष क' रहल छथि।

बिहार क्रिकेटक विवाद केकरो सं नुकाइल नहि अछि। विवादक कारण बिहारमे क्रिकेट के रसातलमे बैसा देल गेल। सैह हाल बैडमिंटन आओर दोसर खेलक सेहो छैक।

एहन गप्प नै अछि जे बिहारमे या मिथिलामे प्रतिभाक कमी छै। कमी अछि खेल आओर खिलाड़ी कें प्रोत्साहित करैत रहइ के। हालमे बिहार सरकार द्वारा पूर्णिया के कॉलेजमे उच्च कोटि के बास्केटबॉल कोर्ट के उद्घाटन ई बात के संकेत अछि कि खेलक प्रति सरकार के दृष्टिकोणमे कनेक बदलाव जरूर आयल अछि।

ग्रामीण स्तर पर खेल आओर खेलक प्रतिभा के प्रोत्साहित कायल जाय जाहि सं बच्चा सभ के खेलक प्रति रुझान बेसी होई। स्कूल आओर कॉलेज स्तरीय प्रतियोगिता के बढेबाक प्रयास मिथिलामे खेल कें पुनश्च स्थापित क' सकैत अछि, अन्यथा खेलमे प्रतिभा पलायन सेहो होयत रहत आओर हम सब एहिना दोसर राज्यक मुंह तकैत रहब।

✍ **सबिता झा 'सोनी'**



मैथिली आ हिंदीक प्रसिद्ध कवयित्री/गीतकार, हिंदी मे साझा संग्रह, 'आखर', 'मृगनयना', 'हिंदी सागर', 'भारत के नवोदित कवि एवं कवयित्रियां' अनेक पत्रिका मे प्रकाशित। मैथिली मे 'अरिपन', 'जरैलिया समारोह स्मारिका' आर बहुत रास पत्रिका मे प्रकाशित।

दहेज मुक्त मिथिला

कने सोचियौ...जे मिथिला सम्हरतै कोना
धिया सियाक नैहर दीप' जरतै कोना
हम धिया छी माय-बाबुक' दरेग बुझैत छी
आंखि नोरे, ठोर मुस्की' नित्तहुं देखैत छी
मोने गुणबै जे धिया के, पोसलैनि कोना
शील-गुण द अंहा घर,पठौलनि कोना
कने सोचियौ...
धिया सियाक...
बेटीक जन्में ध' खाई नहिं, कर्मे डेराई
अम्मा बाबा' कहू आब की करता गे' दाई
जत्था' बेचियो पढाबी जे धिया सोना
त' दहेजक रुपैया, जोगाबी' कोना
कने सोचबै...
धिया सियाक...
दूई संतति सं ई, जीवनधारो बहइ
बिनु धिया कें सृष्टि, कोना क' हेतइ
हम धिया' छी' ने आन, हमर राखब यौ मान'
"दहेज़ मुक्त मिथिलाक''
करू सबमिलि आह्वान
कने सोचियौ जे...
धिया सियाक नैहर...

भगवती गीत

कतेक दु:ख कहू काली, सुनियौ अकानि यै
हमरा लेल मैया कोना, भेलियै बीरान यै
अहींक चरण सेबी, सब बिसराओल
फूल पान लए मैया कतेक मनाओल
अपन करेजा कोना, केलियै पाषाण यै
हमरा लेल मैया...

बोने बोन अड़हुल, लोढ़ि हम गांथल
अपन मनोरथ मैया, अहीं केर सांठल
एना नहिं करियौ मैया, करू नहिं आन यै
हमरा लेल मैया...

कल जोड़ि मिनती 'सोनी'क...जगत्रजानी
बेटी तोहर हम, छीयौ...अज्ञानी
सभ अपराध मैया, दीहें क्षेमादान यै
हमरा लेल मैया...
कतेक दु:ख कहू काली...

सम्पर्क: नैहर/सासुर-अरेड़/जरैल,
जयनगर, मधुबनी, बिहार

मिथिला के वर्तमान जलवायु : एक समीक्षा

✍ धीरेन्द्र कुमार



लेखक नई दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय केर पर्यावरण विज्ञान संस्थान मे शोधार्थी छथि।
हिनक शोध के रूझान छन्हि: भारतीय दक्षिण पश्चिम मानसून, जलवायु परिवर्तन के विज्ञान, न्यूमेरिकल मॉडलिंग एवं हिमालयन जलवायु।

सम्पर्क:
ब्रह्मपुत्र हॉस्टल
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी
मो. 9910778043
ईमेल: dhirendra.cub@hotmail.com



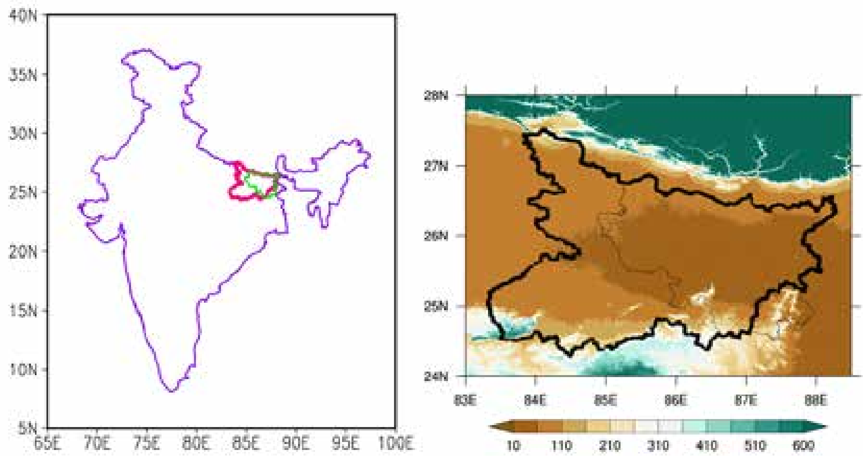
मिथिला क्षेत्र मूलत: बिहार के उत्तरी भाग एवं नेपाल के तराई क्षेत्र मे अवस्थित भौगोलिक भूमि के कहल जाइत अछि। ई क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, कूटनीतिक सामरिक व अनेक दृष्टिकोण सं महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। एहि क्षेत्र के जलवायु प्रमुख रूप सं उष्णदेशीय अथवा उप-उष्णदेशीय प्रकार के मानल जा सकैत अछि। मिथिला क्षेत्र के भौगोलिक प्रसार लगभग 23-28° अक्षांश एवं 83-89° देशान्तर के बीच मानल जा सकैत अछि। अक्षांश के विभाजन के अनुरूप बिहार के मध्य सं निकसैत गंगा नदी और सुदूर उत्तर मे नेपाल के अंतर्गत अवस्थित हिमालय के तराई के बीच के मैदानी इलाका मुख्यतया उष्ण जलवायु तंत्र सं प्रभावित कहल जा सकैत अछि। अनेक नदी तंत्र सं सिंचित मैदानी क्षेत्र के ई खंड जलोढ़ माटि के बहुलता के कारण उर्वरता सं भरपूर मानल जाइत अछि। अनेक नदी के संजाल मे स्थित होयबाक कारण, नदी के नियमित वा अनियमित गतिशील व्यवहार के कारण एहि क्षेत्र मे अनेक बेर भौगोलिक घुमाव और अतिप्रवाह के कारण अस्थायी झील, दलदल एवं आर्द्रभूमि समान भौगोलिक आकृति के निर्माण होइत अछि (Sinha 2008)। एहि प्रकार के आकृति नहि मात्र कृषि के प्रभावित करैत अछि, बल्कि स्थानीय जलवायु के सूक्ष्म स्तर पर सेहो नियंत्रित करैत अछि। एहि के अतिरिक्त, जल के प्रचुरता एवं उर्वर भूमि के उपलब्धता के परिणामस्वरूप एहि क्षेत्र मे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्राचीन काल सं प्रभावी रहल अछि। उपरोक्त आर्द्रभूमि के जल पुनर्भरण मुख्यतया समीप के नदी के अतिप्रवाह अथवा मानसून ऋतु के वर्षा पर आधारित होइत अछि। अतएव, मानसून वर्षा एहि क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कार्यशीलता के हेतु बहुत जरूरी अछि।

निकट भूत मे, वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के चर्चा बहुत व्यापक स्तर पर कयल गेल अछि। IPCC के पांचम मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक सतही तापमान मे पछिला सदी मे भूमि और सागर के ऊपर मे औसतन लगभग 0.74° सेल्सियस के बढ़ोत्तरी दर्ज़ कयल गेल अछि (IPCC 2013)। एहि प्रकार के परिवर्तन के मूल श्रोत नहि सिर्फ प्राकृतिक कारक के मानल जाइत अछि बल्कि मानव जनित कारक मुख्यत: अनियमित एवं अनियंत्रित ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन सेहो कहल जाइत अछि। विश्व भरि मे लगातार विकास सं सम्बंधित गतिविधि के अंतर्गत औद्योगिक, जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग, वन भूमि के ह्रास तथा भूमि उपयोग -भूमि आवरण आभ्यास मे परिवर्तन के एहि प्रकार के कारक मे गिनल जा सकैत अछि। विभिन्न अध्ययन सं ई तथ्य विदित अछि जे, एहि सब प्रक्रिया के परिणामस्वरूप वैश्विक के संगहि क्षेत्रीय एवं स्थानीय जलवायु पर सेहो विपरीत प्रभाव पड़ैत अछि। भारत के ऊपर मे अध्ययन मे देखल गेल अछि जे, पिछला समय मे दैनिक वर्षा के वितरण मे परिवर्तन दर्ज़ कयल गेल अछि। एहि के अंतर्गत मानसून ऋतू मे कम एवं मध्यम तीव्रता वाला वर्षा के आवृत्ति मे सतत घटाव एवं अत्यधिक तीव्रता वाला वर्षा के आवृत्ति मे महत्वपूर्ण वृद्धि के सूचना देल गेल अछि (Goswami et al. 2006). संगहि पूर्णकालिक सामान्य रूझान के अभाव मे पूरा भारतवर्ष के ऊपर वर्षा के ऋतुवार औसत मे कोनो रुझान के उपस्थिति के स्थिति अस्पष्ट बतायल गेल अछि। तथापि

क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तर पर जलवायु के अलग अलग मानक मे बदलाव के सूचना अनेक अध्ययन मे प्रेषित कयल गेल अछि। एहि स्थिति मे जखन कि जलवायु परिवर्तन के अलग-अलग मानक मे अलग-अलग संकेत देखल जा रहल अछि, स्थानीय स्तर पर जलवायु के रुझान एवं ओहि के संगत अनिश्चितता के रेखांकित केनाई अपरिहार्य देखल जा सकैत अछि। वैश्विक आंकलन के अनुरूप भारत के ऊपर सेहो निकट समय मे औसत तापमान मे अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज़ कयल गेल अछि (Subash and Sikka 2014)। मौजूदा प्रयास मे उपलब्ध डाटासेट के आधार पर मिथिला क्षेत्र के ऊपर एक गोट प्राथमिक जलवायु के रूझान एवं व्यवहार के चिन्हांकित करबाक प्रयास कयल जा रहल अछि। आगामी भाग मे अध्ययन क्षेत्र, डाटासेट, कार्य प्रणाली, प्रतिफल, सारांश एवं निष्कर्ष के क्रमवार विवरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

अध्ययन क्षेत्र

एहि अध्ययन मे उत्तरी बिहार के अनेक जिला के संयुक्त रूप सं एक इकाई मानल गेल अछि। पूरा अध्ययन क्षेत्र के निरूपण आकृति 1 मे कयल गेल अछि। आकृति मे पहिल पैनल मे भारत एवं दोसर पैनल मे इनसेट मे बिहार ले राजनीतिक सीमा देखाओल गेल अछि।



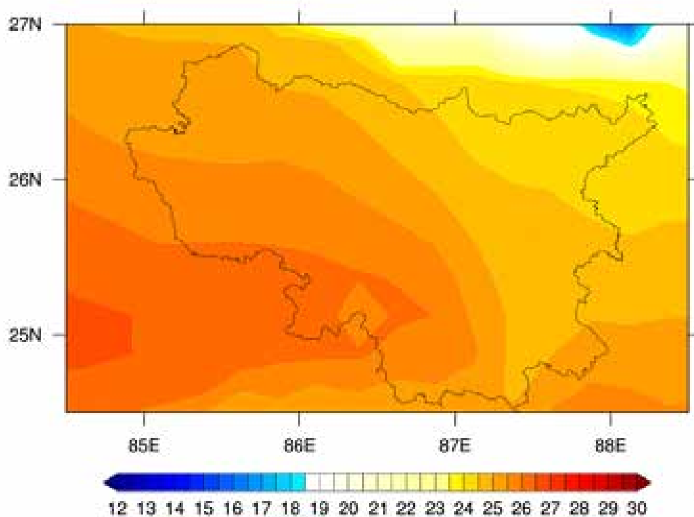
आकृति 1 : अध्ययन क्षेत्र, रंग आच्छादित क्षेत्र स्थलाकृति (मीटर) के निरूपित क रहल अछि

दोसर पैनल मे उत्तरी भाग मे आंतरिक सीमा भौगौलिक रूप सं इकाई रूप मे मिथिला क्षेत्र के निरूपित क रहल अछि। दोसर पैनल मे अध्ययन क्षेत्र के ऊपर वर्ण आच्छादित स्थलाकृति प्रदर्शित कयल गेल अछि। पूरा क्षेत्र के ऊपर स्थलाकृति कमोबेश समतल मानल जा सकैत अछि कारण जे औसत समुद्र तल सं क्षेत्र के ऊंचाई 10-100 मीटर तक देखल जा सकैत अछि, एहि कारणवश कोनो पर्वत सम्बन्धी जलवायु पर प्रभाव कोनो प्रमुख कारक नहि अछि। सुदूर उत्तर मे नेपाल हिमालय के तराई क्षेत्र सं आबैत किछु नदी अथवा उपनदी के कारण धरि जलवायु पर किछु प्रभाव मानल जा सकैत अछि। आगां प्रदर्शित आकृति एवं विश्लेषण सब मिथिला क्षेत्र मात्र पर आधारित अछि।

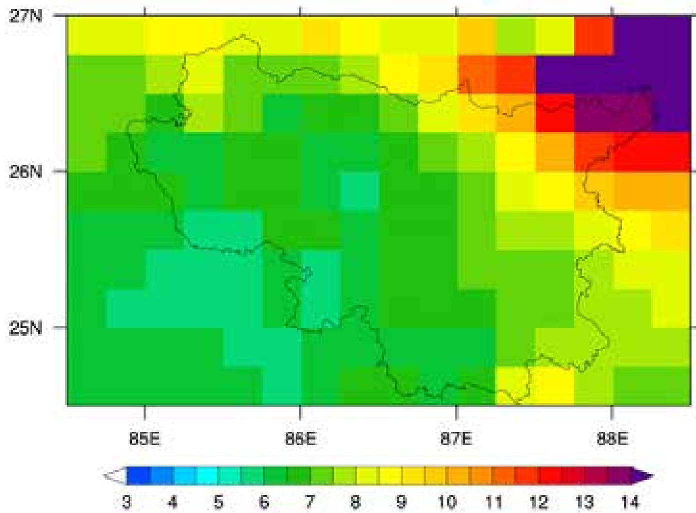
डेटासेट एवं कार्यविधि

वर्तमान प्रयास मे मिथिला क्षेत्र के ऊपर निकट भूत मे जलवायु के रुझान एवं व्यवहार के अध्ययन करबाक प्रयास कयल गेल अछि। एहि क्रम मे औसत तापमान एवं वर्षा के विभिन्न मापक के प्रयोग कयल गेल अछि। सर्वप्रथम दुनू चर राशि अर्थात दैनिक तापमान एवं दैनिक वर्षा के मान APHROTEMP एवं APHRODITE डेटासेट सं 0.25 ग्रिड रिजोल्यूशन पर प्राप्त कयल गेल। उपलब्ध डेटा के समय अवधि दैनिक अंतराल पर 1961-2007 तथा 1951-2007 संगत रूप सं तापमान एवं वर्षा के लेल अछि।

तापमान के अध्ययन हेतु वार्षिक औसत के प्रयोग कयल गेल तथा वर्षा के अध्ययन हेतु मात्र मानसून ऋतु के चयन कयल गेल चूंकि मानसून एहि क्षेत्र के ऊपर कुल वार्षिक औसत वर्षा के प्रमुख संघटक अछि। सभ सं पहिले वार्षिक औसत तापमान एवं औसत मानसून वर्षा एवं ओहि के अनुसार रुझान के आंकलन कयल गेल। एहि के बाद, साल दर साल बदलाव के जांच हेतु औसत विसंगति के



आकृति 3 : अध्ययन क्षेत्र पर 1951-2007 अवधि हेतु मॉनसून ऋतु के लेल औसत वर्षा (मिमी प्रतिदिन)



आकृति 3 : अध्ययन क्षेत्र पर 1951-2007 अवधि हेतु मॉनसून ऋतु के लेल औसत वर्षा (मिमी प्रतिदिन)

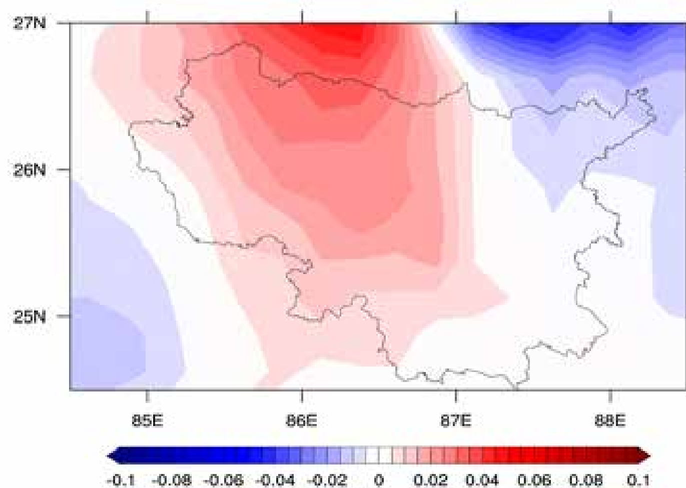
संगणन सेहो कयल गेल। अंततः, पूरा क्षेत्र के ऊपर औसत परिवर्तन वा रुझान के निर्धारण हेतु क्षेत्रीय औसत समय अनुक्रम सेहो परखल गेल। एहि के आधार पर उपलब्ध सूचना परिणाम के खंड मे प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

परिणाम

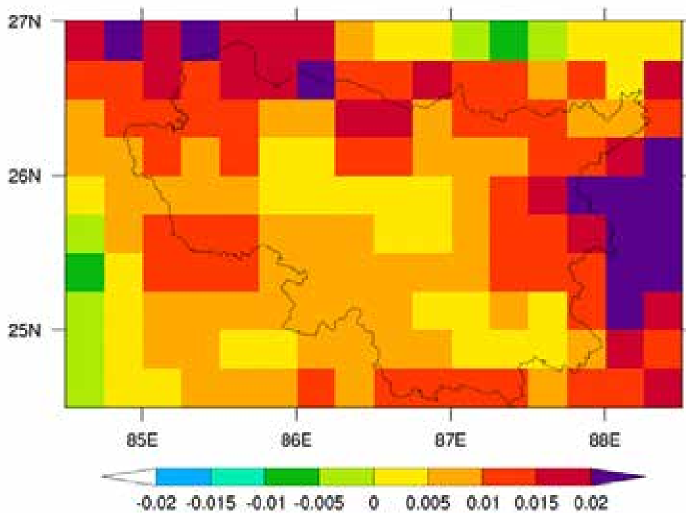
सर्वप्रथम अध्ययन क्षेत्र के ऊपर औसत वार्षिक तापमान आकृति 2 मे प्रदर्शित कयल जा रहल अछि। यद्यपि कोनो क्षेत्र विशेष के ऊपर तापमान जलवायु के विशिष्ट सूचक मानल जाइत अछि, चूंकि ई सतह और ओहि के आसपास मे ऊर्जा के संचरण अछि एवं संबद्ध प्रक्रिया के परिचायक होइत अछि। एहि कारणवश तापमान के ऋतु आधारित वितरण देखेनाइ यथोचित होइत छैक, धरि वार्षिक औसत तापमान एक समस्त निरीक्षण के आधार प्रदान करैत छैक जाहि मे विशिष्ट ऋतू के व्यवहार सामान्यतया समाहित रहैत छैक जाहि सं सम्पूर्ण व्यवहार के सूचना भेटैत छैक। आकृति के अनुसार 1961-2007 के अवधि मे अध्ययन क्षेत्र के ऊपर तापमान औसतन 24-29° सेल्सियस रहल अछि। एहि के अतिरिक्त पूर्वी और पश्चिमी भाग मे द्विध्रुवीय संरचना देखल जा सकैत अछि, एहि के अंतर्गत पश्चिमी भाग के औसत तापमान पूर्वी भाग के तुलना मे अधिक रहल अछि। साथ मे नेपाल के तराई और उत्तरी क्षेत्र मे औसत तापमान पूरा अध्ययन क्षेत्र मे सब सं कम रहल अछि, जेकर कारण स्थलाकृति के तुलनात्मक रूप सं बेसी ऊंचाई पर अवस्थिति कहल जा सकैत अछि। यद्यपि पूरा क्षेत्र के ऊपर मे तापमान के श्रेणी मे बहुत विशिष्ट अंतर नहि कहल जा सकैत अछि।

आगां आकृति 3 मे पूरा मिथिला क्षेत्र के ऊपर मे औसत दैनिक मानसून वर्षा के वितरण दर्शओल गेल अछि। पूरा क्षेत्र के अधिकतम भाग मे दैनिक औसत मानसून वर्षा 6-8 मिमी/प्रतिदिन पाओल गेल अछि। मूल रूप सं दक्षिणी एवं पश्चिमी भाग मे सदृश व्यवहार बाहुल्य मे निरूपित होइत अछि। एहि के संगत उत्तरी एवं पूर्वी भाग मे औसत वर्षा के दर अधिक पाओल गेल अछि। उपरोक्त व्यवहार के कारण संभवतः मॉनसून के बंगाल के खाड़ी सं उत्पन्न ऊपरी क्षोभमंडल (850 hPa) जेट द्वारा लाओल जलवाष्प के रूप मे कहल जा सकैत अछि। औसत रूप मे पूरा क्षेत्र के ऊपर के वर्षा, पूरा भारत वर्ष के औसत दैनिक मानसून वर्षा (~7 मिमी प्रतिदिन) के समरूप पाओल गेल अछि।

अध्ययन क्षेत्र के ऊपर मे साधारण औसत के अवलोकन के पश्चात पूरा अवधि के बीच घटाव या वृद्धि के व्यवहार के जांच करबाक हेतु रैखिक रुझान प्रदर्शित कयल जा रहल अछि। रैखिक रुझान कोनो राशि के घटनाइ अथवा बढनाइ के दर के निरूपित करैत अछि, एहि कारण सं पूरा अध्ययन अवधि मे तापमान मे निहित व्यवहार के चिन्हित करबा मे उपयोगी सिद्ध होयबाक साथ जलवायु परिवर्तन के एकटा महत्वपूर्ण मापक उपलब्ध करायत अछि। आकृति 4 के माध्यम सं ई विदित अछि जे लगभग पूरा मिथिला क्षेत्र के ऊपर मे प्रतिवर्ष तापमान के रुझान बढ़ैत



आकृति 4 : 1961-2007 के दौरान अध्ययन क्षेत्र मे तापमान (डिग्री सेल्सियस प्रति वर्ष) के रैखिक रुझान

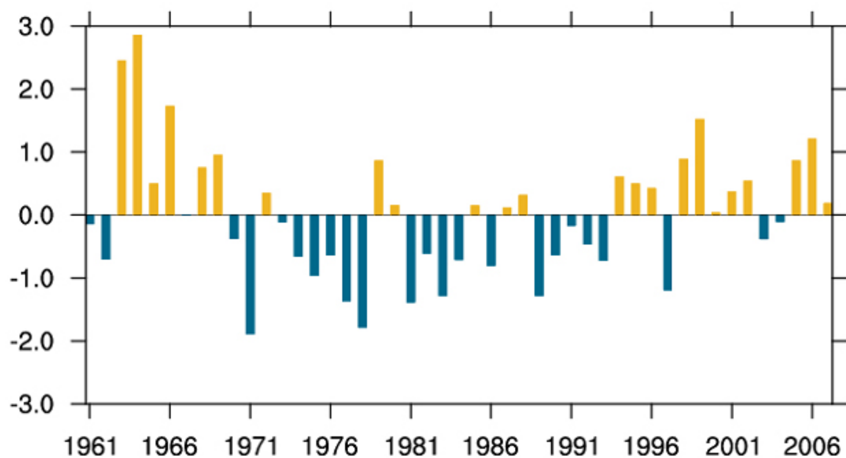


आकृति 5 : पूर्व आकृति के स्वरूप परंतु दैनिक मॉनसून वर्षा (मिमी प्रतिदिन प्रतिवर्ष) के रूझान

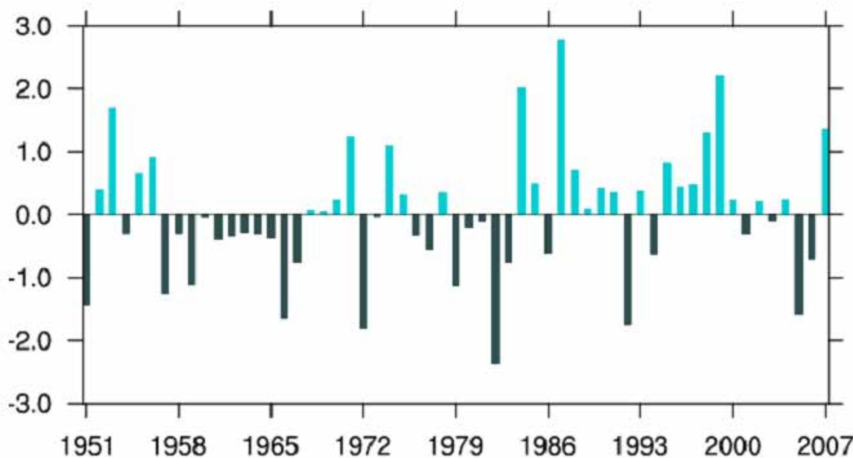
प्रतीत होइत अछि। तथापि अधिकतर भाग मे वृद्धि के दर 0.02-0.06 सेल्शियस प्रति वर्ष पाओल गेल अछि, पूर्वी भाग मे एहि वृद्धि के दर कम पाओल गेल अछि। एहि कथन के अभिप्राय अछि जे विगत 47 साल मे मिथिला क्षेत्र के ऊपर मे लगातार वार्षिक औसत तापमान मे वृद्धि दर्ज कयल गेल अछि। एहि के अंतर्गत अलग अलग ऋतु मे दिन वा राति के तापमान मे वृद्धि होयबाक संभावना अछि। संगहि अलग अलग ऋतु मे तापमान के अनियमित व्यवहार होयबाक सेहो संभावना अछि। औसत तापमान के साथ एहन परिवर्तन के दैनिक न्यूनतम एवं अधिकतम तापमान के सेहो प्रभावित करबाक संभावना व्यक्त कयल जा रहल अछि। हालांकि एहि राशि एवं व्यवहार के सांख्यिकीय रूप सं निर्धारण एवं सत्यापन के आवश्यकता अछि। पुनः, उत्तर पूर्वी क्षेत्र एवं तराई भाग मे तापमान के घटैत रुझान देखबा मे आयल अछि। उपरोक्त व्यवहार के विभिन्न कारण कहल जा सकैत अछि जाहि मे निकट भूत मे अधिक ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन, जनसंख्या के प्रसार, भूमि आवरण एवं उपयोग मे बदलाव इत्यादि निहित अछि।

एहि क्रम मे आगां औसत दैनिक मानसून वर्षा के 1951-2007 अवधि मे रैखिक रूझान आकृति 5 मे प्रदर्शित कयल गेल अछि। पूरा अध्ययन क्षेत्र मे उपरोक्त अवधि के अंतर्गत दैनिक वर्षा के बढ़ैत वितरण देखल जा सकैत अछि। एहि आकृति मे वर्षा के रुझान मिश्रित रूप सं बढ़ैत देखल जा सकैत अछि। उत्तरी पश्चिमी एवं उत्तरी पूर्वी मिथिला के ऊपर मे वर्षा के बढ़बाक दर शेष भाग सं बेसी पाओल गेल अछि। एहि के तात्पर्य अछि जे संभवतः संगत भाग मे मानसून ऋतु के अंतर्गत नियमित रूप सं वृष्टि के वितरण उपरोक्त अवधि मे रहल अछि अथवा मानसून माह मे उच्च तीव्रता वाला वृष्टि घटना के आवृत्ति मे वृद्धि भेल अछि। तथापि एहि प्रकार के निष्कर्ष के सत्यापन केनाई आवश्यक अछि जाहि लेल दैनिक वर्षा के प्रायिकता वितरण फलन आधारित जांच सं कयल जा सकैत अछि। एहि प्रकार के वृद्धि के दर केर श्रेणी 0.005-0.01 मिमी प्रतिदिन प्रतिवर्ष तक देखल गेल अछि। पुनः एहि राशि के सांख्यिकीय विश्वसनीयता के बेशी सुदृढ़ रूप सं स्थापित करबाक आवश्यकता अछि।

अध्ययन क्षेत्र के ऊपर मे साल दर साल औसत तापमान परिवर्तनशीलता के जांच हेतु वार्षिक मानकीकृत औसत तापमान विसंगति के समय अनुक्रम प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। आकृति 6 मे प्रदर्शित विसंगति सं ई विदित अछि जे अध्ययन अवधि के अंतिम दशक मे लगातार तापमान विसंगति धनात्मक रहल अछि जे तापमान के बढ़ैत स्वरूप के निरूपित क रहल अछि। मध्यावधि मे लगातार घटैत विसंगति अनिश्चितता कर परिचायक अछि। संभवतः पूर्वी व पश्चिमी क्षेत्र मे विपरीत स्वभाव क्षेत्र के ऊपर औसत करबाक कारण विसंगति के स्वरूप के प्रभावित क रहल अछि। एहि के अतिरिक्त, निकट के समय मे लगातार प्रतिवर्ष धनात्मक विसंगति के उपस्थिति ध्यानार्थ अछि जे



आकृति 6ण अध्ययन क्षेत्र मे 1961-2007 की अवधि के लिए ।च्भ्ल्ज्म्डच डेटासेट से वार्षिक तापमान विसंगति



आकृति 7ण अध्ययन क्षेत्र मे 1961-2007 की अवधि के लिए च्म्त्व्क्ज्न डेटासेट से मॉनसून वर्षा विसंगति

अक्षुण्ण तापमान वृद्धि के ओर इंगित के रहल अछि।

एहि के सदृश, दैनिक मानसून औसत वर्षा के विसंगति आकृति 7 मे प्रदर्शित कयल गेल अछि। यद्यपि वर्षा के मिथिला के ऊपर बढ़ैत स्वरूप देखल गेल अछि, विसंगति के समय अनुक्रम मे कोनो विशेष बढ़ैत व घटैत प्रवृति के अभाव देखल जा सकैत अछि। पूरा अवधि के अंत के दशक द्वय मे प्रबल रूप सं धनात्मक विसंगति के उपस्थिति वर्षा के बढ़ैत स्वरूप के ओर इंगित क रहल अछि।

एहन स्वरूप मे मिथिला के संगत बाहर के क्षेत्र के योगदान के सेहो निहित मानबाक आवश्यकता अछि। जेना आकृति 5 मे मिथिला सं लागल पूर्व के क्षेत्र मे प्रबल रूप सं बढ़ैत वर्षा के रुझान देखल जा सकैत अछि, एहन विशिष्ट आकर वर्षा विसंगति के प्रमुखता सं प्रभावित क सकैत अछि। एहि के साथ, वर्षा विसंगति के आधार पर विभिन्न अतिवृष्टि, सामान्य एवं अनावृष्टि मानसून ऋतु के वर्गीकरण सेहो कयल जा सकैत अछि।

आकृति 7 सं स्पष्ट रूप सं देखल गेल अछि जे अतिवृष्टि या अनावृष्टि के प्रवृत्ति मिश्रित रूप सं पूरा अवधि के ऊपर वितरित अछि। सम्प्रति उपरोक्त निष्कर्ष सब के वैकल्पिक एवं अधिक सुदृढ़ स्थानीय डेटासेट के संग सत्यापन आवश्यक अछि। अंततः साल दर साल के क्षेत्रीय औसत के आधार तापमान एवं वर्षा के समय श्रेणी आकृति 8 मे प्रस्तुत कयल गेल अछि। स्थानीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर विपरीत रूझान के कारण समय अनुक्रम मे समष्टि रूप मे कोनो विशेष प्रवृत्ति के उपस्थिति के अभाव देखल जा सकैत अछि (आकृति 8) हालांकि दैनिक मानसून वर्षा मे साल दर साल विशिष्ट परिवर्तनशीलता स्पष्ट देखल जा सकैत अछि। एहि क्रम मे क्षेत्रीय औसत मानसून वर्षा के रुझान माध्यम रूप सं बढ़ैत प्रतीत भ रहल अछि।

निष्कर्ष एवं सारांश

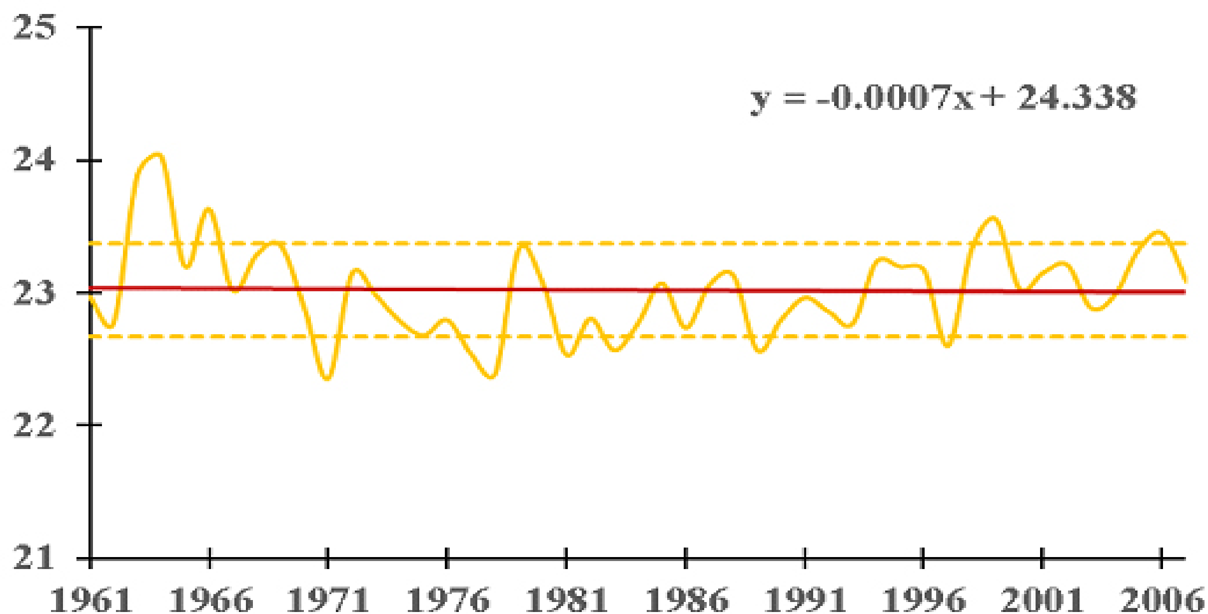
वर्तमान अध्ययन मे मिथिला क्षेत्र के ऊपर मे जलवायु के चित्रण के प्रारंभिक प्रयास कयल गेल अछि। एहि क्रम मे मिथिला क्षेत्र के सीमा के अंतर्गत आधारभूत चर राशि अर्थात औसत तापमान एवं वर्षा के स्वरूप के चर्चा विविध मापक के आधार पर कयल गेल अछि।

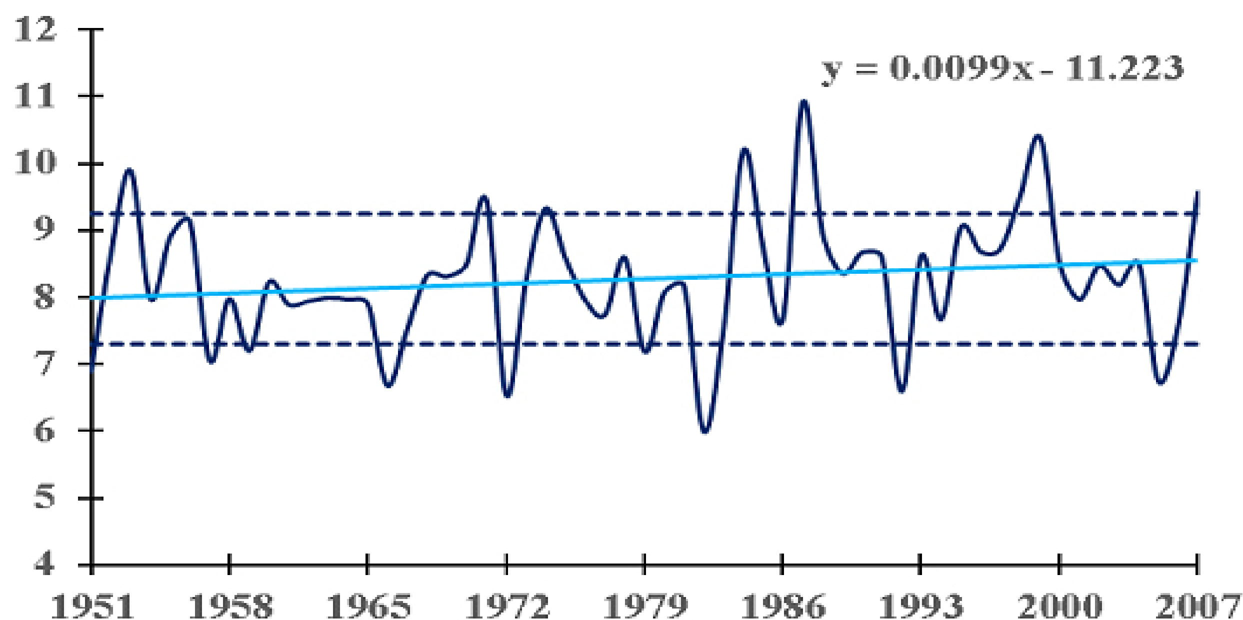
अध्ययन हेतु उपलब्ध APHROTEMP एवं APHRODITE डेटासेट जे की 0.25 ग्रिड पर उपलब्ध अछि, के उपयोग कयल गेल अछि। विभिन्न विश्लेषण के आधार पर प्रमुख निष्कर्ष नीचां सूचिबद्ध कयल जा रहल अछि। औसत वार्षिक तापमान 24-29 डिग्री सेल्शियस के बीच रहैत अछि जाहि मे पश्चिमी भाग के औसत वार्षिक तापमान पूर्वी भाग के तुलना मे अधिक पाओल गेल अछि। कुल दैनिक औसत मानसून वर्षा के स्वरूप पूरा मिथिला के ऊपर मे लगभग 7-8 मिमी प्रतिदिन पाओल गेल जे कि समस्त भारत औसत के अनुरूप अछि। वार्षिक तापमान के वृद्धि दर सेहो मिथिला के पश्चिमी भाग मे पूर्वी भाग के तुलना मे अधिक पाओल गेल, संगहि औसत दैनिक मानसून वर्षा समान रूप सं सम्पूर्ण मिथिला के ऊपर मे बढ़ैत देखल गेल। पूरा अध्ययन अवधि मे अंतिम दशक द्वय मे तापमान एवं वर्षा दुनु के धनात्मक विसंगति दर्ज कयल गेल अछि जे की दुनु के बढ़ैत व्यवहार के परिचायक अछि। वार्षिक तापमान के तुलना मे दैनिक औसत मॉनसून वर्षा मे बेशी परिवर्तनशीलता देखल गेल जाहि के तात्पर्य अछि जे वर्षा के औसत साल दर साल बेशी अनिश्चित अछि।

उपरोक्त निष्कर्ष के अन्य सुदृढ़ मापक, डेटासेट एवं सांख्यकीय विश्लेषण के आधार पर सत्यापन के आवश्यकता अछि। सम्प्रति, उपरोक्त व्यवहार के कारक के अधिक अन्वेषण हेतु उच्च क्षमता जलवायु मॉडल के उपयोग सेहो आवश्यक अछि। जाहि मे अलग अलग राशि के आधार पर प्रक्रिया आधारित अन्वेषण के संबल एवं विश्वसनीयता भेटत। वर्तमान प्रयास आगां के अध्ययन हेतु एक गोट प्रारंभिक आधार उपलब्ध करा रहल अछि। भविष्य मे मिथिला क्षेत्र के ऊपर मे अलग अलग उपलब्ध डेटासेट, मॉडल इत्यादि के आधार पर उच्च तीव्रता एवं आवृत्ति के घटना के अध्ययन के विचार प्रस्तावित अछि, ताकि उपलब्ध समझ के और संगठित रूप सं प्रस्तुत कयल जा सकय।

संदर्भ

- Rajeevan, M., Bhate, J., Kale, J. D., & Lal, B. (2006). High resolution daily gridded rainfall data for the Indian region% Analysis of break and active. Current Science, 91(3), 296&306.
- Goswami,B.N.,Venugopal,V.,Sengupta,





आकृति 8 : अध्ययन क्षेत्र मे तापमान एवं वर्षा के औसत क्षेत्र समय अनुक्रम

D., Madhusoodanan, M. S., & Xavier, P. K. (2006). Increasing trend of extreme rain events over India in a warming environment. Science, 314(5804), 1442&1445.

- Stocker, T. F., Qin, D., Plattner, G. K., Tignor, M., Allen, S. K., Boschung, J., ... & Midgley, P. M. (2013). IPCC, 2013% Climate Change 2013% The Physical Science Basis. Contribution of Working Group I to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change, 1535 pp.
- Sinha, C. P. (2011). Climate change and its impacts on the wetlands of North Bihar, India. Lakes & Reservoirs% Research & Management, 16(2), 109&111.
- Yatagai, A., Kamiguchi, K., Arakawa, O., Hamada, A., Yasutomi, N., & Kitoh, A. (2012). APHRODITE% Constructing a long&term daily gridded precipitation dataset for Asia based on a dense network of rain gauges. Bulletin of the American Meteorological Society, 93(9), 1401&1415.
- Yasutomi, N., Hamada, A., & Yatagai, A. (2011). Development of a long&term daily gridded temperature dataset and its application to rain/ Wsnow discrimination of daily precipitation. Global Environ. Res, 15(2), 165&172.

साहित्य अकादेमी सं आय धरि पुरस्कृत मैथिली पोथी सबहक सूची

साहित्य अकादेमी (मूल पुरस्कार)

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2018	परिणीता (कहानी संग्रह)	वीणा ठाकुर
2017	जहलक डायरी (कविता संग्रह)	उदय नारायण सिंह 'नचिकेता
2016	बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम (कहानी)	श्याम दरिहरे
2015	खिस्साक (कहानी)	मनमोहन झा
2014	उचाट (उपन्यास)	आशा मिश्र
2013	संघर्ष आ सेहन्ताय (संस्मरण)	सुरेश्वर झा
2012	किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा)	शेफालिका वर्मा
2011	अपक्ष (कविता-संग्रह)	उदय चंद्र झा 'विनोद'
2010	भामती (उपन्यास)	उषाकिरण ख़ान
2009	गंगा-पुत्र (कहानी-संग्रह)	मनमोहन झा
2008	कतेक डारिपर (संस्मरण)	मंत्रेश्वर झा
2007	सरोकार (कहानी-संग्रह)	प्रदीप बिहारी
2006	काठ (कहानी-संग्रह)	विभूति आनंद
2005	चानन घन गछिया (कविता-संग्रह)	विवेकानंद ठाकुर
2004	शकुन्तला (महाकाव्य)	चंद्रभानु सिंह
2003	ऋतंभरा (कहानी-संग्रह)	नीरजा रेणु (कामाख्या देवी)
2002	सहसमुखी चौक पर (कविता-संग्रह)	सोमदेव
2001	प्रतिज्ञा पांडव (प्रबंधकाव्य)	बबुआजी झा 'अज्ञात'
2000	कतेक रास बात (कविता-संग्रह)	रमानंद रेणु
1999	गणनायक (कहानी-संग्रह)	साकेतानंद (एस.एन. सिंह)
1998	तकैत अछि चिड़ै (कविता-संग्रह)	जीवकांत
1997	ध्वस्त होइत शांति स्तूप (कविता-संग्रह)	कीर्तिनारायण मिश्र
1996	आइ काल्हि परसू (कहानी-संग्रह)	राजमोहन झा
1995	कविता कुसुमांजलि (कविता-संग्रह)	जयमंत मिश्र
1994	उचित वक्ता (कहानी-संग्रह)	गंगेश गुंजन
1993	सामाक पौती (कहानी-संग्रह)	गोविन्द झा

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
1992	विविधा (निबंध-संग्रह)	भीमनाथ झा
1991	पसिझैत पाथर (नाटक-संकलन)	रामदेव झा
1990	प्रभासक कथा (कहानी-संग्रह)	प्रभास कुमार चौधुरी
1989	पाराशर (महाकाव्य)	काञ्चीनाथ झा 'किरण'
1988	मंत्रपुत्र (उपन्यास)	मायानंद मिश्र
1987	अतीत (कहानी-संग्रह)	उमानाथ झा
1986	नातीक पत्रक उत्तर (रम्य रचना)	सुभद्र झा
1985	जीवन-यात्रा (आत्मकथा)	हरिमोहन झा
1984	सूर्यमुखी (कविता-संग्रह)	आरसी प्रसाद सिंह
1983	मैथिली पत्रकारिता का इतिहास (सर्वेक्षण)	चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'
1982	मरीचिका (उपन्यास)	लिली रे
1981	अगस्त्यायिनी (महाकाव्य)	मार्कण्डेय प्रवासी
1980	ई बतहा संसार (उपन्यास)	सुधांशु शेखर चौधुरी
1979	कृष्ण-चरित (कविता-संग्रह)	तंत्रनाथ झा
1978	बाजि उठल मुरली (कविता-संग्रह)	उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'
1977	अवहट्ठ : उद्भव ओ विकास (साहित्येतिहास)	राजेश्वर झा
1976	सीतायन (महाकाव्य)	वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'
1975	किछु देखल किछु सुनल (संस्मरण)	गिरीन्द्रमोहन मिश्र
1973	नैका बनिजारा (उपन्यास)	ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'
1971	पयस्विनी (कविता-संग्रह)	सुरेन्द्र झा 'सुमन'
1970	राधा विरह (महाकाव्य)	काशीकांत मिश्र 'मधुप'
1969	दु पत्र (उपन्यास)	उपेन्द्रनाथ झा
1968	पत्रहीन नग्न गाछ (कविता-संग्रह)	यात्री (वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन')
1966	मिथिला वैभव (दार्शनिक प्रबंध)	यशोधर झा
(1967, 1972 आओर 1974मे कोनो पोथीकें पुरस्कार नञ भेटल)		

मैथिली अनुवाद पुरस्कार

(1966 से)

वर्ष	अनुवाद का शीर्षक	अनुवादक	मूल कृति का शीर्षक (भाषा/विधा)	लेखक
2017	अंगलियत	इंद्रकांत झा	अंगलियत (गुजराती उपन्यास)	
2016	मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका	रेवती मिश्र	इंट्रोडक्शरन टु द फोक लिटरेचर ऑफ़ मिथिला (अंग्रेज़ी आलोचना)	जयकांत मिश्र
2015	बदलि जाइछ घरेटा	देवेन्द्र झा	बाड़ी बदले जाय (बाङ्ला उपन्यास)	रमापद चौधुरी
2014	मलाहिन	राम नारायण सिंह	चेम्मीरन (मलयाळम् उपन्यारस)	तक्षी शिवशंकर पिल्लैश
2013	बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह	गुणनाथ झा	बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह (बाङ्ला एकांकी-संग्रह)	संक. एवं संपादन: अजीत कुमार घोष (विभिन्न लेखक)
2012	कार्मेलीन	महेन्द्र नारायण राम	कार्मेलीन (कोंकणी उपन्यास)	दामोदर मावज़ो
2011	उपरवास कथात्रयी	खुशी लाल झा	उपरवास कथात्रयी (गुजराती उपन्यास)	रघुवीर चौधरी
2010	प्रज्वलित प्रज्ञा	नित्यानंद लाल दास	इग्नाइटेड माइंड्स (अंग्रेज़ी निबंध संग्रह)	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
2009	बीछल बेरायल मराठी एकांकी	भालचंद्र एस. झा	निवडक मराठी एकांकिका, (मराठी एकांकी संग्रह)	विभिन्न लेखक
2008	संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र	ताराकांत झा	साख्तियात, पस-साख्तियात आओर मशरिक़ी शेरियात (उर्दू समालोचना)	गोपीचंद नारंग
2007	युद्ध अओर योद्धा	अनंत बिहारी लाल दास 'इंदु'	युद्ध र योद्धा (नेपाली कविता)	अगमसिंह गिरि
2006	कालबेला	राजानंद झा	कालबेला (बाङ्ला उपन्यास)	समरेश मजूमदार
2005	बिहारक लोककथा	योगानंद झा	फ़ोकटेल्स ऑफ़ बिहार (अंग्रेज़ी लोककथा)	पी.सी. रायचौधुरी
2004	प्रेमचंद : चयनित कथा भाग-1	प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	संकलन (हिन्दी खिस्सा)	प्रेमचंद
2003	मनोज दासक कथा ओ कहानी	(स्व.) उपेन्द्र दोषी	मनोज दासनक कथा ओ कहिनी (ओड़िया खिस्सा)	मनोज दास
2002	पतझड़क स्वर	प्रबोध नारायण सिंह	पतझड़ की आवाज़ (उर्दू खिस्सा-संग्रह)	कुर्रतुल-ऐन हैदर
2001	अंतरिक्षमे विस्फोट	सुरेश्वर झा	अंतरालतीळ स्फोट (मराठी विज्ञान कथा)	जयंत विष्णु नार्लीकर
2000	तमस	अमरेश पाठक	तमसं (हिन्दी उपन्यास)	भीष्म साहनी
1999	आरोग्य निकेतन	मुरारी मधुसूदन ठाकुर	आरोग्य निकेतन (बाङ्ला उपन्यास)	ताराशंकर बंद्योपाध्याय
1998	परशुरामक बीछल-बेरायल कथा	चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'	चुनी हुई कहानियां (बाङ्ला खिस्सा-संग्रह)	राजशेकर बसु 'परशुराम'
1997	माटिमंगल	नवीन चौधरी	मरलि मन्निगे (कन्नड उपन्यास)	के. शिवराम कारंत
1996	अबुल क़लाम आज़ाद	फ़ज़्लुर रहमान हाशमी	अबुल क़लाम आज़ाद (उर्दू जीवनी)	अब्दुल क़वी दसनवी
1995	रवीन्द्रनाथ नाटकावली खंड-1	सुरेन्द्र झा 'सुमन'	चिरकुमार सभा, विसर्जन आओर चित्रांगदा (बाङ्ला नाटक-संग्रह)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
1994	सगाई	रामदेव झा	एक चादर मैली-सी (उर्दू उपन्यास)	राजिन्दर सिंह बेदी
1993	नेपाली साहित्यक इतिहास	गोविन्द झा	हिस्ट्री ऑफ़ नेपाली लिटरेचर (अंग्रेज़ी)	कुमार प्रधान
1991	शरतचंद्र : व्यक्ति एवं कलाकार	शैलेन्द्र मोहन झा	शरतचंद्र : मैन एंड आर्टिस्ट (अंग्रेज़ी समालोचना)	सुबोधचंद्र सेनगुप्त
1990	विप्रदास	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	विप्रदास (बाङ्ला उपन्यास)	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

(1989 आओर 1992मे कोनो पुरस्कार नञ भेटल।)

भाषा सम्मान

वर्ष	व्यक्ति	क्षेत्र
2007	डॉ. शशिनाथ झा	क्षेत्रीय व मध्यकालीन साहित्य (मैथिली)

बाल साहित्य पुरस्कार

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2018	खिस्सा सुनुबाउ (लघुकथा संग्रह)	विद्यानाथ झा
2017	लालगाछी (उपन्यास)	अमलेन्दु शेखर पाठक
2016	भारत भाग्यय विधाता (भाग-1) (जीवनी)	प्रेम मोहन मिश्र
2015	हंसनी पान आ बजन्ताव सुपारी (उपन्याहस)	रामदेव झा
2014	हमर अठन्नीआ खसलइ वनमे (कविता-संग्रह)	(स्व.) जीवकान्त
2013	हमरा बीच विज्ञान (निबंध-संग्रह)	धीरेन्द्र कुमार झा
2012	पिलपिलहा गाछ (कहानी-संग्रह)	मुरलीधर झा
2011	जकर नारि चतुर होइ (कहानी-संग्रह)	मायानंद झा
2010	ई भेटल तं की भेटल (कहानी-संग्रह)	तारानंद वियोगी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार

वर्ष	मूल कृति का शीर्षक	लेखक
2018	वर्णित रस (कविता संग्रह)	उमेश पासवान
2017	धरतीसं अकास धरि (कविता-संग्रह)	चंदन कुमार झा
2016	जे कहि नईं सकलहुं (कविता)	दीप नारायण 'विद्यार्थी'
2015	प्रतिवादी हम (कविता)	नारायण झा
2014	विषदंती वरमाल कालक राति (कविता-संग्रह)	प्रवीण कश्याप
2013	अंकुरा रहल संघर्ष (कविता-संग्रह)	दिलीप कुमार झा 'लूटन'
2012	एतबे टा नहि (कविता-संग्रह)	अरुणाभ सौरभ
2011	हठात् (नाटक)	आनंद कुमार झा



साहित्यकार रमाकांत राय रमा कें 'पूर्वोत्तर मैथिल' द्वारा गुवाहाटी मे प्रथम राजकमल चौधरी सम्मान प्रदान करबाक अवसर पर उपस्थित अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा

✍ स्वाती शाकम्भरी



मैथिली कविताक क्षितिज पर एकटा नवोदित पुंज। 'मैसाम युवा सम्मान 2018' सं सम्मानित। पहिल कविता संग्रह 'पूर्वागमन' 2017 मे साहित्य अकादेमी, दिल्लीसं प्रकाशित। काका साहेब कालेलकर साहित्य सम्मान-2017 सं सम्मानित।

सम्पर्क:
ग्राम+पोस्ट : खानपुर,
जिला : समस्तीपुर, बिहार,
मो. 9213152822
ईमेल :
shakambhariswati2016@gmail.com

चंदा झा

व्यतीत शत
बरखक बाद
अतीत आय
मोन परल
अपन संस्कारक
धरोहक प्रतीक-पुरुषक
स्मृति मे
आयोजन संगोष्ठीक
चर्चा-परिचर्चाक
माध्यमे
जीवंत होयताह
हमर पुरुखा
ओना ओ
अपन कीर्ति मे
जीबैत छथि
मिथिला भाषा
रामायण मे
बताहवान मे
लोकोक्तिक संग
उचित उक्ति मे
अजस्र सुक्त आ
सुक्ति मे
भजन ल'
भगवानक भक्ति मे
संगहि सर्वहारा
निर्धनक पक्षधर
बनि शिव कें कहैत
''निर्धनपन बड़ दोष
हे शिवा''
आ ओ
जिबैत छथि
बरगामक
पाली-परोपट्टाक
गामक वर्णन मे
ओ जिबते छथि
आ जिबते रहताह,
मुदा हमहु
ताधरि जीबैत रहब
जाधरि अपन
एहन-एहन
पुरुखाक स्मृति मे
संस्कार आ
संस्कृति केर
संरक्षण मे
हुनक साहित्य सं
किछु सीखैत रहब
आ लिखैत रहब
हुनक पदचिन्ह पर
चलैत रहब
आगू बढ़ैत रहब
आ ओहि
पुरुखाक मूर्ति
केर आकृति कें
जे ब्लेक एंड
व्हाइट छथि
अर्थात्
श्याम आ
श्वेत अछि
तकरा
आधुनिकताक
रंग मे रंगि
वर्तमानक प्रगतिक
सूचक होयत रहब
प्रगति कें जतेक रंग
चढ़ाओल जाएत
मुदा आकृति
वैह रहत
जे हमर
अतीत पुरुषक
यथार्थ थिक
हम चान पर
चढ़ि गेल छी
तें कि गामक
मचान कें
बिसरि जाएब
यैह मचान तें हमरा
चान पर चढ़बाक
ज्ञान आ शक्ति
देने अछि
जौं गामक मचान
मोन परत
त' हमर ओ पुरुखा
स्मृति पटल पर एबे करताह
किएक तें महापुरुष कें
स्मरण करबे जागृति अछि
पढलहुं किताब मे
जोड़लहुं हिसाब मे
आ जानलहुं जे
ओ एहि बरगामक
नाति छलाह
आ तखने महिमा
मातृकक प्रतीत भेल
योग कहू
संयोग केहू
वर्तमान हम
हुनकहि छी
ओ जे अतीत भेलाह।

राजकमल चौधरी

धरती सं
मुक्त आकाश धरि
अहांक साहित्यक उन्मेष
समुद्र सन
तकर गंभीरता
जीवन सन यथार्थ
मृत्यु सन सत्यता
अहांक साहित्यक
यैह मूलभूत
उत्स थिक
अहांक शब्द मे
विशाल भावक
परिकल्पना
यैह ते
दर्शन थिक

छान्हि नञि
बान्हि नञि
प्रवहमान भाव अछि
छांटल नञि
काढ़ल नञि
परम्पराक सांच पर
गढ़ल नञि
थाहि-थाहि
सीढ़हि पर
चढ़ल नञि

जिनक सहजहि
स्वभाव अछि
दल-दल मे
जे नञि
खसल
सैह भेलखिन
राजकमल।

✍ अरविंद कुमार मिश्र 'नीरज'



अरविंद कुमार मिश्र 'नीरज' आर. एम. कॉलेज, सहरसाक मैथिली विभागमे कार्यरत व्याख्यता छथि। विविध साहित्यिक सांस्कृतिक मंच सं जुरल साहित्य जगतमे अरविंद नीरज कें नाम सं ख्यात विविध पत्र-पत्रिकामे छपैत मैथिली मंचक जानल-मानल कवि छथि। हिनका द्वारा प्रणीत अनेको पोथी प्रकाशित आ प्रकाशनाधीन छन्हि।

संपर्क :
हटिया गाछी, मानस नगर,
वार्ड नं.-32, सहरसा-852201
मो. 9771006810

गजल

हम गामे मे गाम अपन ताकि रहल रही।
नाम कतय बिलागेल नाम ताकि रहल छी।।
अपन पुरुषाक पोखरि ओ बारी केर साग।
गाय कपिलाक दूध मेटी ताकि रहल छी।।
मास अगहन केर धान खरिहान कतय गेल।
पूस गायक बथान घूर ताकि रहल छी।।
ओ पुरना झमटगर जे गाछ पिपर केर।
ताकि गामक चौबटिया पर थाकि रहल छी।।
बाबा पण्डितकदलान राजा सिंहक मकान।
काका मण्डलक मचान आम ताकि रहल छी।।
अकलू जूम्मन केर प्रेम जे सामाजिक छल नेम।
बटन दाबि कंप्यूटर पर ताकि रहल छी।

विलमि जो हमरे गाम

विलमि जो हमरे गाम गुजरिया कऽले कनय आराम
दिन भरि चलि तोर थाकल तन, आ मन छौ पानि लय प्यासल
मुरुझि गेलौ ये सुंदर देहिया, बुझलौ तू छै उपासल
मिथिला नगर मे एहि तरु तर मे कऽ ले कनय विराम
विलमि जो हमरे गाम।
शस्य श्यामला परती धरती मन तोर हरतौ छन मे
नन्दनकानन सन ई मिथिला जा वसतौ तोर मन मे
स्वर्गक उपवन सन ई मिथिला सरिपहुं ललित ललाम
विलमि जो हमरे गाम।
कवि कुल श्रष्ठा विद्यापति केर मिथिला भेल महान
जिनकर टहल टिकोरा करइछ उगना आठोयाम
स्वर सुनि जिनकर कोइली कैरकी दैछै पंचम तान
विलमि जो हमरे गाम।
मण्डन केर इनारक जल सं आत्मा अपन जुराले
साग अयाचिक बडीक खा कें सरिपहुंभाग मना ले
लक्ष्मीनाथक राखल खड़ाम कें कर जोरि कऽ ले प्रणाम
विलमि जो हमरे गाम।
देह अछैत विदेह कहावै राजा जनक सुजान
योग-भोग जे संगहि राखल जानल सगर जहान
जिनक सुआसिन सिया धिया सन वसै अयोध्या धाम
विलमि...।

विद्यापति

मधुर-मधुर स्वर ताल लयाश्रित
गेय गुणक रसधार
सहज प्रसाद स्वाद सुगंधित
शब्द सुमन श्रृंगार
राधा माधव मिलन विछोहक
गीत सुधा सं सिक्त प्रसंग
वैष्णव भाव प्रभाव प्रलक्षित
प्रमुदित पुलकित अंग
शैव्य सकल जन शिवक भक्ति मे
गीत नचारी गावि सुनाय
शिवा शिवक शुभ परिणय पल केर
मैथिल मिथिला रीति लखाय
तेहि दिन राज समाजक विघटन
अरु संघर्षक चित्रण
हिनक प्रणीत पुस्तक कें पढ़ि-पढ़ि
होय यथार्थक दर्शन।
शाक्त सकल दक्षिण वा वामक
सभहक मन अनुराग
जय-जय भैरवि असुर भयाउनि
गवइत मनवथि भाग
हो अनुरागी वा वैरागी
सभहक मन मे हर्ष
सांस्कृतिक व्यवहार गीत मे
मिथिला केर उत्कर्ष।
हिनक गीतसं भेल प्रभावित
प्रान्त कतेको देश-विदेश
लोक सकल सं इतर महादेव
सुनथि नचारी उगना भेष।

ऋतु गीत

मन केर अंगना खुशी केर सिहकी
हंसि केर झहरै सिंगरहार
तन केर गाम सगर भेल पुलकित
हिय भरि भरि उदगार।
भरल सांझ भेल आय सुहागिनी
गमकि उठल कचनार
शरद हृदयमे हर्ष हिलोरल
पाहुन हेमंत एला द्वार।
पहुनक पैर एहेन शुभ लक्षण
भरि गेल खेत पथार
भरल चंगेरा नबका चूरा
पहुन हेमंत लौला भार।
कन्त हेमन्त कें नजरि नै लागै
शिशिर शौतीन भेल काल
आबि रहल अछि एमरहि ससरल
पसरल चहुदिस जाड़।
तें धनि कन्त हेमन्त लग कानै
कानैत बितौलैथ भोर
दुभिक दल पर पसरल सगरो
शरदक दृग केर नोर...।

✍ रमण कुमार सिंह



वैचारिक पत्रिका 'समयांतर', प्रतिष्ठित प्रकाशन गृह 'राजकमल प्रकाशन' के संपादन काज केला के बाद टीवी पत्रकारिता आ सम्प्रति 'अमर उजाला' दैनिक मे मुख्य उपसंपादक पर कार्यरत। एकटा हिंदी कविता 'बाघ दुहने का कौशल' आ मैथिलीमे कविता संग्रह 'फेर सं हरियर' प्रकाशित।

हे हमर प्रिया!

(1)

राजा हमर सपनाक शिकार करैत अछि
अफसर हमरा विरोधमे ठाढ़ अछि
दियाद-बाद दालि जकां
हमर गलबाक करैत अछि प्रतीक्षा
मित्र संबंधी सभ एखन छथि मुंह फेरने
हमरा सं पता नहि कियैक
छथि देवी-देवता सेहो बाम
बाट चलैत केओ धांगि के
मारि सकैत अछि हमरा
मुदा हे हमर प्रिया,
जा धरि अहांक हाथ मे
अछि हमर हाथ
तखन डरबाक अछि कोन बात?

(2)

हवा बचबैत अछि हमरा
पानि बुझबैत अछि पियास
गाछ-बिरिछ भरैत अछि हमरा मे
दुर्दिनोमे अडिग रहबाक साहस
चिड़ै-चुनमुनी भरैत अछि
हमर जीवनमे संगीत
चान हमर आवारगीक अछि संगी
आ तरेगन अछि पथ-प्रदर्शक
हे हमर प्रिया,
अहांक मुख पर मधुर मुस्की देखि
जिनगीमे भरि जाइत अछि उजास
आ घर उम्मीद सं गमकए लगैत अछि
एत्तेक रास संग-सहयोग
यैह तं थिक हमर मजबूती।

(3)

जखन जिनगीक सभ सपना भखरि गेल
आ मौलाए गेल सभटा उम्मीद
जखन सुखद संदेश अयबाक
नहि रहल एकहुटा आस बांचल
ओहन विकल समय मे
हे हमर प्रिया,
अयलहुं अहां बनिकें उजास
आ पछिला सभटा दुख-संताप कें
धोय-पोछि कें बना देलहुं
जिनगी कें एत्तेक सुंदर आ मनोरम
जेना ई कोनो उपहार हुअय।

(4)

अहां जहिया नहि भेटल छलहुं
तहियो हमरा लग छल
जीबाक लेल खेनाय, नुआ आ घर
मुदा ने खेनायमे ओ स्वाद छल
आ ने नुआमे तेहन चमक
आ घरोमे नहि भेटैत छल चैन

नहि छल जीवनमे रंग-रभस
सभ किछु निष्प्राण सन लगैत छल
ई दुनिया तहियो एहिना छल
मुदा नहि बुझाइत छल
अपना लेल कोनो काजक

हे हमर प्रिया,
अहांक आबिते देरी
रूखलो-सूखल खेनाय मे
भरि गेल अपूर्व स्वाद
बढ़ि गेल हमर नुआक चमक
ऊ देहक रक्षे टा नहि कयलक
बरु बनौलक हमरो सन
लोक कें देखनुक
आ हमर छोट सन घर
हमरा लागय लागल
स्वर्ग सं सुंदर

हे हमर प्रिया,
अहांक आबिते देरी
बहुत रास शिकायतक अछैतो
ई दुनिया हमरा लागय लागल सुंदर
एना बुझना गेल जे ई प्रकृति
हमरे लेल क' रहल अछि महारास
फूल हमरे लेल फुलाएल अछि
चिड़ै हमरे लेल गबैत अछि
चान हमरे मोन बहलाबय लेल
बदलैत रहैत अछि अपन रूप
आ सूर्य हमरे लेल उगैत अछि

हे हमर प्रिया,
ई अहींक प्रेमक प्रताप थिक
जे शब्दक खुजि रहल अछि
नित नव-नव अर्थ आ
जीवन बनि गेल अछि कविता।

(5)

हे हमर प्रिया,
अहां छी त' खूनमे नून
आ आंखिमे पानि बांचल अछि
अंगनाक तुलसी गाछ अछि हरियर
आ खुट्टा पर अछि धेनु गाय
हे हमर प्रिया,
अहां छी त' गीत-नाद बांचल अछि
बांचल अछि संझा-पराती
फूलमे सुवास बांचल अछि
आ सुखद भोरक आस बांचल अछि

हे हमर प्रिया,
जखन अहां संग रहैत छी
त पता नहि कतय सं
आबि जाइत अछि हमरा मे
पहाड़क ताकति आ हम
उठि ठाढ़ होइत छी
चुनौती सं भिड़य लेल।

स्वास्थ्य रिपोर्ट

सब खबर रिपोर्ट होइत अछि
मुदा सब रिपोर्टक खबर नहि बनैत अछि
भने ओ कतेक जरूरी कियै ने हो
अहांक जिनगी लेल

ओना त' जिज्ञासा के भाव
सब रिपोर्टक मादे होइत छैक
मुदा स्वास्थ्यक मादे जांच रिपोर्ट
बढ़ा दैत छैक लोकक कौतुहल

ई एकटा रिपोर्ट अहांक जीवनीशक्ति कें
द' सकैत अछि संबल आ ऊर्जा
त' अहांक जिनगीक सब योजना कें
क' सकैत अछि तहस-नहस

ई एकटा रिपोर्ट
घरक खाम्ह हिला सकैत अछि
त' केनो नैना सं छीन सकैत अछि
ओकर भविष्य बना सकैछ टुग्गर

जिनगीक सब रंग-रभस
भ' जाइत अछि महत्वहीन

रहि जाइत अछि कतेको बात अधखरू
पूर्ण हेबाक अंतहीन इंतजार मे
कतेको कविता पूर्ण हेबाक
करैत रहि जाइत अछि प्रतीक्षा
जखन जिनगीक प्रवाह पर
प्रश्नचिन्ह उठबैत अछि
कोनो स्वास्थ्य संबंधी रिपोर्ट।

संपर्क :
जी-1305, ऑफिसर्स सिटी-1, राज नगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मो. 9711261789

✍ नीलमाधव चौधरी



सहरसा जिलान्तर्गत महिषी गामक निवासी। प्रख्यात साहित्यकार राजकमल चौधरी के सुपुत्र। मूल रूप सं कविण पहिलुक बेर जमालपुर सं प्रकाशित होय बला पत्रिका 'कारखाना' मे गजल प्रकाशित। मैथिली कविता संग्रह 'एब पर इतरैब' आ हिन्दी कविता संग्रह 'थका हुआ ठहराव' प्रकाशनाधीन।

संपर्क:
के-962, सेक्टर-23,
संजयनगर, गाज़ियाबाद
(यू.पी.) 201002
मो. 9818757445
ईमेल: nkc4967@gmail.com

पाथर पर बसंत

आयल बसंत मुदा
भेल कहां कष्ट केर अंत
छिरिआयल डेग डेग पर
ओहिना अछि बाधा अनन्त
कोनो बातक असर नहि
एहनो कतहुं भेलइए
पाथर पर कहुं
बसंत कतहुं एलइए
ज्ञान-बोध कुंठित
ताकि रहल छी मेवा
सब तरि तकैत छी मां के
अछि बिसरि गेल सेवा
एहि हालमे ककरो
संपूर्ण सुख भेटलइए
पाथर पर कहुं
बसंत कतहुं एलय
फूल बनबाक कहां
सेहन्ता बचल अछि
गाछ काटि प्रगतिक सड़क बनय
सभक इच्छा बनल अछि
कल्पनाक सागर मे
नव नव कमल खिलइए
पाथर पर कहुं
बसंत कतहुं एलय
अछि उपजल मधुबन
बस कांट कूस भारी
काल कोठरीमे बंद
गरीबक सोहारी
कहां ओकर चूल्हि सं
एखन धधरा उठलइए
पाथर पर कहुं
कतहुं बसंत एलइए
चाही बसंत तं भाय
गाछ फूल बन पड़त
बिसरि कुरहरि टेंगारी
मज्जर सं देह भर' पड़त
फूलक जिनगिमे कहुं
कतहुं' कालि भेलइए
पाथर पर कहुं
कतहुं बसंत एलइए

बीच मुहान छोड़ि क'

आंखि लगले छल
ओ कहलनि
भोर भ' गेल
नाम सुनतहि भोरक
मोन घोर भ' गेल
एना किएक
जे रातिए राति
नीक लगैत अछि
बीच मुहान छोड़ि क'
कोन कात
ठीक लगैत अछि
सब तरि
पसरि रहल अछि आगि
आ मोम
भेल जा रहल छी
आकांक्षाक बजार गरम
जेब नरम
रुकब कि झूकब
कहां ककरो मंजूर
पाछू लागल आगि अछि
बस उड़ल
जा रहल छी।

गाम गाम थिक

भारतक कोनो गाम हो
गाम गाम थिक
एक दिन एहिना पहुंचि गेल रही
गाजियाबादक समीप
रावणक गाम विशरख आ
राजेश पायलटक गाम वेदपुरा
कम्पलेन भिजिट छल
संगमे कम्पनीक इंजिनियर,
ड्राइवर, गाड़ी
शर्मा जी जतबे कुशल किसान
ततबे कुशल व्यापारी
बात फरियेने नहि फरियाबै
क्लेम पचास के
पांचो मुनासिब नहि
शर्माजी के मृदुल स्वभाव,
सत्कार स्वागत देखि
ई त' निश्चित जे
शर्माजीक नुकसान नहि होइन
मुदा अपन प्रतिष्ठा
आ कम्पनीक प्रति निष्ठा
सेहो देखनाय जरूरी छल
अंतत: सब बात ठीके रहल
मुदा जे मूलत: आकर्षित कयलक
ओ छल ग्रामीण समाज
एखनो ग्रामीण समाज मे
पर्दा अछि प्रेम अछि
अक्षर बोध भने नहि होय
मुदा बचल संस्कार अछि
जौं बिगड़ल अछि किछुओ त'
ओ सरकारी संस्थाक
सरकार अछि
चारि पांच घंटाक बीच
जाहि तरहक परिवेश देखलहुं
गाम घर सं हजारो मील दूर
मिथिले सन कोनो देश देखलहुं
किछ बात जरूर अजगुत जे
इंजीनियर सिन्हा जी कें पसिन्न ने
कुमार-वार छथि
एतइ रातिमे निन्न ने
मौगी सब मुंह तं झपने छल
मुदा छाती उघार छलैक
व्यवहारमे शालीनता
बोली लट्ठमार छलैक
बहुत किछ अन्तर होइतहुं
मिथिले के कोनो गाम सन
लाल काकीक अंगना
पढुआ काकाक मचान सन
कएक बेर कदीमा साबुत कि
कदीमाक फूल
तरूआ लेल ल' गेल छी
याद
आबैत छल स्कूल
ई त' छल उजड़ल प्रदेशक
उजड़ल कोनो गाम
अपन मिथिला त' स्वर्ग अछि
ओहिना ने कहाइत अछि
ई मिथिला धाम
तखन बात पहिलुका
आब कहू कोना रहत
गाम की शहर अपने नहि
पेट रहैत अछि
पेटक संग कएक टा जुड़ल
छेंट रहैत अछि

✍ पूनम झा "सुधा''



सम्पर्क:
मुरलियाचक, फरीदाबाद, हरियाणा
मो. 9015993573
ईमेल : jhapoonam789@gmail.com

मयूर तन थिरकत

देखू सखि ...
साओन आयल
मयूर तन थिरकत
नाचत आर नचायत
अंग-अंग हुलसायत
देखू सखि...
साओन आयल।

पंख-पंख श्याम सन लागत
श्याम रंग झलकायत
श्यामहिं मोर नचायत
देखू सखि ...
साओन आयल।

कारी-कारी मेघ
गगनमे छाड़ल
अमृत बून्द टपकायत
कारी रंग मोहिं ने भायो
माया श्याम देखाओत
देखू सखि...
साओन आयल।

देखि प्रबल हरि के माया
तन मयूर भिजायत
वरुण प्रबल होय धरती पर
गगनहिं नाद डरायत
देखू सखि...
साओन आयल।

देव असुर नर किन्नर डोले
सबकें काम सतायत
नाच मयुरहिं देखि नयना
मोर मन घबरायत
देखू सखि...
साओन आयल।

रोम-रोम मोहें
श्याम समायल
काया अग्नि लगायल
मयुरहिं नृत्य नैन सतायल
श्याम मोर रिझायल
देखू सखि...
साओन आयल।।

कर्त्तव्य

एक दिस आंहा,
आ दोसर दिस,
हमर कर्त्तव्य,
परिवार आ समाज के प्रति
निम्हाबैत बीचमे हम,
असगर, असहाय,
आ अनजान सन,
केमहर जाइ से,
मोन मे,
सोचैत,
आ
कोना हेतै, एकर
निराकरण,

बस क' सकैत छी?
अहीं,
कियैक ते
उत्तरदायी छी
अहीं,
हमर ई दशा कें!
आ द' सकैत छी
अहीं,
शान्ति,
हमर ई अस्थिर,
मोन कें!

अहीं सं बान्हल अइ,
प्रेम के सूत्र,
हमर,
आ तैयो,
विचलित,
करैत अछि, हमरा,
चिन्ता, शंका,
व्याकुलता,
मोन हमर
मोन हमर!!

संग

संगे संग एलौहुं हम ऑहाके,
आ फेर चैलि गेलौहुं आंहा,
हमरा छोड़ि के
हम कहि नहि सकलहुं,
अपन मोनक बात।

आ
देखा नहि सकलौहुं,
अपन दुख दर्द,
जे भेटल अइ हमरा
एहि समाज सं।

किछु अपनो लोक सं,
किछु आनो लोक सं,
हम कोना जीबू,
आ कतेक नोर पिबू
आब,

पुछलौहुं नहि कहियो आंहा,
हमरा सं आबि के
कोना बितैत अइ,
राइत दिन हमर,
ऑहाकें इयाद क' के

आंहा भेटबो केलौहुं,
तैयो,
रहलौ हमरा सं अनजान बैनि,
हसैत ते सदिखन रहि आंहा,
मगर दिल सं,
कानैत रहलौं हम,
आ
दूर चलि गेलौहुं,
संसार सं हम,
संसार सं हम।।

✍ कल्पना झा



लेखिका मैथिली संस्कृतिकर्मी, लेखिका आ कवयित्री छथि।

अप्पन गाम

देखल बहुत शहरक समृद्धि
विलासिताक बहुविछी प्रकार
मन करै अछि धूरि जाई आव
शाविकक ओहि घर द्वारि
शुद्ध अन्न-जल भेटए जाहिठाम
अप्पन पुरणा गाम
माटिक चुलहा, माटिक बरतन
केरा पातक थार
गोट पेड़ा हम खांटी पौष्टिक
तेल राखी भरि टाड़ी
मरुआ, मक्कई, जौ केर रोटी
संग दालि तरकारी
ढेकी जॉतक कूटल पीसल
बिना खाद उपजाओल अन्न
उसिनि कूटि के सैंतल राखल
शुद्ध सुपाच्य रंगबिरहा चाऊर
दूध दही आ माखन मेवा
पाबि बनी हम पुष्ट
गाय माए के सेवा क' के
पाबी खूब आशीष
ऊस समटि (कपड़ा) पहिरन चमकानी
मॉटि रगड़ि कऽ करी स्नान
शैम्पू, साबुन सं रही फराके
सभ थिक रोगक खान
कपिला गायक गोबर सं हम
नीपि राखी घर द्वारि
जर्म-विषाणु सं रहए फराके
अप्पन प्रियगर ठाम
रोग व्याधि के दए तीलांजलि
जन-जन बनि जाई स्वस्थ
स्वच्छ मोन (मन) मे स्वच्छ भावना
पावन मिथिला धाम,
प्रियगर पावन अप्पन गाम।।

पढ़ती बेटी

मध्यम-मध्यम सिहकल बसात
आब धूंध छंटल देखु रुढ़िवाद
बढ़ि रहली बेटी सम्हारि चाप
नहि रुकत डेग ककरो रोकने
आशीष माथ छन्हि माए-बाप

नहि राखब टाका जोड़ि आब
तिलकक नहि कोनो काज आन
पढ़ती बेटी बढ़ती बेटी
भए सबल ठाढ़ हेती बेटी

बूझू नहि हिनका भार आब
नहि अबला कहि अपमान करू
देख, हाथ दुन्दुभि थामि लेलनि
दुश्मन के नाशक प्रण केलन्हि

समूलहि सं तोरती सभ कुरीति
आब ठानि लेलनि संकल्प केलनि
बेटा सं कर्मठ छथि बेटी
मन वचन कर्म सं छथि निष्ठित

शंका नहि हिनकर निष्ठा पर
रण, वन हो चाहे कला, नृत्य
छथि सभ मे पारंगत बेटी
छथि सभ खन नतमस्तक बेटी

आन मान दियनु सम्मान दियनु
समुचित हिनकर अधिकार दियनु
बेटी बेटा समतूल बुझि
मिलि-जुलि के ई जयघोष करू।

सम्पर्क:
सी-43, पॉकेट-7, केंद्रीय विहार
नोएडा, सेक्टर-82, उ.प्र.
मो. 9873442999

✍ नृपेश चंद्र झा



संप्रति, कलावती उच्च विद्यालय, बनगांव, सहरसा मे प्राध्यापक।

मंच पर मैथिलीक डिंग

मैथिली ते माय थीक
हिंदी मातृ बहिने
प्रिया भेली अंग्रेजी
कंठ लागली ओहिने।

फैशन परस्त भेलहु
सभ्यता बिसारि देलहुं
संस्कृतिक बात कोन
प्रिया मे रमि गेलहुं।

बिसारि देलहुं माय बहिन
बिसारि देलहुं नानी
भेटि गेल प्रियतमा
भ गेल मनमानी।

माय मैथिली के त्यागि देलहुं
विवेक गेल ताख पर
टूटल जूता सन
फेकि देलहुं बाट पर।

चूसल नेबो सन
संस्कृत भेल तिरस्कृत
कैल दातून सन
संस्कार निज घृणित।

लाज ते मेटाय गेल
मेटाय गेल संस्कृति
चिबायल पान केर
हिंदी भेल पिरकी।

भाषा के तोड़ि - मरोडि
सिखौलक नीति
प्रणाम कें छोड़ि करू
गुड मॉर्निंग संग प्रीति।

पाग कें उतारि फेकू
हैट लिय माथ पर
दुपट्टा त' तुच्छ अछि
टाईक स्थान पर।

रनिवास कें छोड़ि चलू
क्लबमे रोमांस करू
रोमांसक परिभाषामे
क्लबक महत्व बुझब।

बच्चा कें पालब थीक
सौन्दर्यक बाधा
नरसरीमे द दियो
ई भेल मर्यादा।

जं गोटेको छथि विभूति
मैथिली कें राखने समेटि
घरमे ओकर इज्जत कोना
जेना टोर्चक जरल बैटरी।

वस्तुत:
श्रेष्ठ वर्गमे फ्यूज बल्ब सन
मैथिली निज स्थान पबै छथि
घरमे नित अपमान करैत जे
मंचपर मैथिलीक डिंग हंकैत छथि।

जागु मैथिल एक बेर

क्षरित होइत अपन संस्कार
भाषा आओर बुद्धि विचार
जाएगा मैथिल एक बेर
करू एकरा पर पुनर्विचार।

भाषा, मधुर साहित्य समृद्ध अछि
मेधा केर ई क्षेत्र उर्वर अछि
जतय अथितिक भव्य स्वागत अछि
जकरा सं गर्वित संसार
जागु मैथिल एक बेर
करू एकरा पर पुनर्विचार।

राजनीतिक पांचर पांछा अछि
भाषा कें बोली भाषेत अछि
ई अरि चिंतन सं करू उद्धार
धरि नृसिंह रूप हरिक आकार
जागु मैथिल एकबेर
करू एकरा पर पुनर्विचार।

सिया जतय शिव पिनाक उठाबथि
मृदु कुसुम सन गुरुतर भार
जकरा लेल सुर क्षत्रप मापल
अपन भुजा केर शक्ति अपार
जागु मैथिल एक बेर
करू एकरा पर पुनर्विचार।

शिव रूप धरि चाकर बनि आयल
भक्तिमे शक्ति जतय अपार
कवि कोकिल विद्यापतिक धाम ई
मंडन भारतिक जतय अवतार
जागु मैथिल एकबेर
करू एकरा पर पुनर्विचार।

मति प्रखर गोनू जतय छलाह
पन भरिनि शुक बांचेत वेद
जाहि धरा सं सिया प्रकट छथि
से थिक पावन मिथिला देश
जागु मैथिल एक बेर...

सम्पर्क:
ग्राम-सुखसेना,
भाया-भटोतर चकला,
जिला-पूर्णिया
फोन : 9472448079

✍ अमित कुमार मिश्रा



प्रकाशित पोथी
नव अंशु (मैथिली गजल)
अंशु बनि पसरि जाएब (बाल कविता)
प्रकाशक- शेखर प्रकाशन पटना
दू दर्जन भरि पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता, गजल प्रकाशित
लगभग पांच दर्जन भरि एलवममे गीतकारक रूपमे गीतक प्रसारण

सम्पर्क:
ग्रा.+पो.-करियन, भाया-इलमासनगर,
जिला-समस्तीपुर, बिहार
मो. 9122105183

गजल

हमर रचना एखन धरि कांच अछि
मुदा जे अछि से सब टा सांच अछि

अहां उगलै छी ज्वाला बाटपर
हमर घर शब्दक लहरल आंच अछि

पिछरि रहलै रिश्ता मनुखक बहुत
लगै छै सगरो समतल खांच अछि

रसे-रस रथ घुसकत मिथिलाक यौ
अहां सिखबू बरु पाठक पांच अछि

हमर नामे सप्पत खा ले "अमित''
हमर सत हमरे झूठक जांच अछि

खांच=खाधि चेनकें नचेबाक लेल पैडिलक जेहन बनाबट होइत अछि।

गिन्नी जी

गिन्नी जी! यै गिन्नी जी!
लिअ पैसा गिन्नी जी
गुड्डी आनू
डोरी बान्हू
उप्पर खूब उड़ेबै हम
चन्ना धरि पहुंचेबै हम

गिन्नी जी! यै गिन्नी जी!
लिअ पैसा गिन्नी जी!
रस्सी आनू
तकरा तानू
ताहिपर कूद लगेबै हम
संगे खेल खेलेबै हम

गिन्नी जी! यै गिन्नी जी!
लिअ पैसा गिन्नी जी
मुरही आनू
कचरी छानू
देखा देखा क' खेबै हम
सभक मन ललचेबै हम

अपरिमेय संख्या

जहिया हम बियाहि क' आएल छलहुं
एकटा एहन घरक पुतौह भेलहुं
जत' छलै संस्कारक संख्या रेखा
जकर एकहकटा बिन्दुपर
छलै एकहकटा शर्त
एकटा नियम
ओहि नियमसं बन्हाइत गेलौं
मोने-मोन औनाइत गेलौं

भगवान साक्षी छथि
ओहि रेखाक सभटा बिन्दु
हमर जीवन संग संरेख रहलै
कहियो कोनो नियम नै टुटलै

आइ फेर बियाहि क' आनलौं
अपन आशाक पुतौह
आशाक पेंसिलसं फेर बनेलौं
एकटा झकझकाइत संख्या रेखा
जाहिपर बनेलौं फेर बिन्दु
शर्त आ ओहने नियम

मुदा ई की?
एकरा एहि रेखापर आनब असंभव अछि
ई एकटा अपरिमेय संख्या अछि
जे नै अटि सकैए
कोनो बिन्दुपर।

✍ पं. कौशल झा



दरभंगा जिलान्तर्गत ठेंगहा निवासी पं. कौशल झा नई दिल्ली मे रहैत छैथ। दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर केर संस्थापक अध्यक्ष। बिरला समूह मे कार्यरत।

सम्पर्क:
डी-9, नन्हे पार्क, उत्तमनगर,
नई दिल्ली-110059
मोबाइल: 9999327551

लिपि जगाउ

लिपिक प्रति ममता अपार,
एकरा बिनु जीवन अहि वेकार।
लिपि बिनु सुना अहि संसार,
लिपि लौटा दिय' यौ सरकार।।1।
गाछी मे ताकू जेहन फल,
घनघोर राति या बेड़ू काल।
मन हीन भेल नहि भेटल फल,
हरहाल मे रहलौंह हम निश्छल।2।
कहलौं हम बच्चा कि अहि दोष,
जल्दी मे उत्तर नहीं अहि मोन।
मानुह हमरा चुभल अहि कांट,
बच्चा भागल अहि दोसरक गाम।3।
चंचल मन के समझेलौं हम,
मनुखक मोन त' बुझलौं हम।
मनुख मनुखक खून केलक,
अपनैहि लिपिक अन्त केलक।4।
कहलौं ओ अंग्रेज छला,
जे सबटा भाषा खा गेला।
तमसा क' हल्ला केलौंह जखन,
वो अपनैंह देश सं भागि गेलाह।5।
लिपि सं एकबेर ममता जगाउ,
लिपिक प्रति सब भ्रांति मिटाउ।
गाछीम रहैत जेना आम बचाउ,
अपनैंह मायक लिपिक शान बढ़ाउ।6।

गिरहथ

धरा हमर अछि कर्मक्षेत्र
रोपि ओहि मे प्रेमक बिया
श्रम स्वेद स' भीजा भीजाक'
अंकुर अनलिह धरती धीया ।।1।

जीवन हमर फलक गाछ
नैं भेद भाव नैं रंज मात्र
फूल स' पुष्पित हमर बाग
चिड़ै चुनमुन अछि मुख्य पात्र।2।

जतेक करब अपन श्रमदान
मेहनत क' केर बनू महान
सुन्नर फल भेटत सदिखन
निर्बलकें अहॉं करु सम्मान।3।

भरल खेत आ' भरल खरिहान
गिरहथ सभ क' रहल गुमान
हंसी ख़ुशी जीवनके आश
श्रमशक्ति संग अहां करु प्रयास।4।

कर्म क्षेत्र

धरती हमर होउ कर्मक्षेत्र
रोपि ओहि मे प्रेमक बीज
श्रम स्वेद सं भीजा भीजा
अंकुर आनलौह धरती सं खींच।1।

जीबन हमर होय फलक गाछ
नै भेद भाव न रंज मात्र
फूल सं पुष्पित हमर बाग
चिरै चुनमुन करै विहार।2।
जतेक करब श्रमदान अपन
सुन्दर फल भेटत हरदम
मेहनत करि कैं बनु महान
निर्वलक करु सम्मान। हरदम।

डोबरा मे अहि धान अपार
चरबाहा सब करै अभिमान
हंसि हंसि के जीवनक आश
धरतीये हमर घर संसार।4।

अलख

लिपि क' प्रति ममता अपार
बिन एकरे जीवन बेकार
देश दुनियॉ स' बिला' रहल आइ
घूरा लियअ एकरा सरकार

आबि ताकि किछु अपन
कतए हेरायल ओ सपन
प्रयास करु ताकू ओ फल
साध्य सार्थक अहां सुफल

अहीं कहू नेनाके की दोष
संस्कार बिसरलहुं भेलहुं मदहोश
बिसरि रहला ओ अपन धाम
देखू पड़ायल दोसर गाम

बुझूं जागू चेतू अखनो
सूतल मोनकें फेर उठाऊं
सजग सिपाही बनूं अहां यौ
फेर लिपि केर अलख जगाऊ

कोनो घमर्थन नहि की' कहिया भेलै
पैघ छोट आ नेना बौअ
ममता केर उद्गार देखा क'
अपन लिपि क' मान बढ़ाऊ।

✍ प्रीती झा



सम्पर्क: पति: श्री रमेश झा ऋषिकुंज कालोनी, गली नं. 2, ऋषिकुल स्कूलक पाहु, देवरू रोड, सोनीपत, हरियाणा-131001, मो. 9467151736

हमर सेहन्ता

आहांक
पवित्र सन
मोनक आंगन
नैनक स्वप्न मे
मुस्कीक नोर मिला
नीपल कोरे कोर
मिलनक उत्कंठामे
सुखक आस मिला
कयल उद्गारक ठांव
ठांवक मध्य पारल
सेहन्तगर एहिपन
आ एहिपन के
जगजियार करत
संबंधक ललका सिन्दुर
ताहि पर राखल
भावक कलश
संगहि ओहि पर
जरैत सिनेहक
अखण्ड दीप
जे सदिखन रहय
एहिना प्रदीप्त होइत
दैव पितर कें आशीष सं
जाहिमे आजीवन
सोलहोश्रृंगार केने
नवकनियां जकां
विंहुसति रही हम

सिंगरहार

हम सिंगरहार नै छलौं
मुदा सदिखन छिड़िया
जाइत छलौं
आहांक स्नेहक बाट पर

जाहि के अनुभुति अहुं कें छल
आ तें अहुं माति जाइ छलौं
भिनसरे भिनसरे ओकर
मनमोहक सुगंध सं

नैन आ हृदय दुन्नु जुड़ाइत रहल
हमर आ आहांकें
आहांक सुखमे झुमैत छलौं हम आ
हमर सुगंध कें सदति मौनमे बसा चुमैत
छलौ अहां

मुदा प्रकृति के कोरमे छै आनो आन फूल
भरिसक ओकरा तें नहि छै सब दिन
सिंगरहारक खगता
अनमन ओहिना जेना कनिये मौलेलौ हम आ
लतखुरदन केलौं आहां हमर भाव रूपी एहि
सिंगरहार कें

आब जहिना कुमासमे हरनठ्ठ भेल
ठाड़ रहैत अछि आसिनक बाट जोहैत
सिंगरहारक गाछ
आ ओकरा छै विसवास जे आसिनक ओस
सं फेर
धरतै कोढ़ी लुबुधि जायत फूल आ फेर
ओहिना
सृष्टि कें सुवासित करब हम

तहिना अपन मोनमे नीक बेजाय कें घोटि
हेरैय छी हमहु सदिखन आहांक बाट
हमर सेहन्ता हम फेर सं छिड़ियायब
आहांक
सिनेहक बाट पर जाहि के सुगंध सं
भाव विभोर होयब आहां आ सगरो पसरि जेतै
सिनेहिया पराग अनमन सिंगरहारे सन

स्मृति

कखनो कोमल
कखनो कठोर
कखनो ठोरक मुस्की
कखनो आंखिक नोर
कखनो दुख कें सुखमे मिझराओल
कखनो दुख सं सुखक सब छन
बिसराओल

स्मृति
जखन कोनो हर्षक उद्गार
बदैलि जाइ स्मृतिमे त'
हृदय समेटि लेबय चाहै छै
ओहि अपार अनुभूति कें
आ साटि लेब' चाहै छै दरेग सं
करेज लगा

मुदा जखन कोनो बेजायक होइ छै
अनुभव
त विचलित हिया बिसरि जाइ चाहै
छै ओ प'ल
लेकिन एक बेर स्मृति पटल पर जे
चलि जाइ छै
बितलाहा दिन ...बितल घ'ड़ी ओकरा
की किन्नहु मिटा
सकैत छी हम आ आहां ...नै
कखनों नै

स्मृति त' स्मृति अछि
जिनगीक संजोगल छन
फेर कि नीक की बेजाय
ओ अयना जकां झलकैत रहत
सदति काल
चाहै पसरैय मुस्की ठोर
चाहै नोर नैनमे मारै हिलकोर

✍ उगना शंकर



शिक्षाः स्नातक चारिम वर्ष प्रवेश (वाणिज्य), लेखा
वर्तमानः महोत्तरीक गौशाला सं संबद्ध

ई अछि गाजियाबाद

निंहार'
लगैत अछि नयन
एखनो आंहाक फोटोके
विराम लेमए सं पूर्व
थाकल ठेहियाएल रहितो
बीनु नयन पलखएने
आ क' लैत अछि रसपान।
नूरियाइ लगैत अछि अतीत
घेरि' क' पछारि दैत अछि हमरा
आंहा संग बिताओल
गाजियाबादक पार्कके ओ ईयाद।
एकान्त लागि
भ' जाइत छलहुं औढ
लोकक' सोझा सं
आ रहैत छलहुं एक दोसरके
सिनेहक पांजामे पजियाएल।
बिसरि' क' निज स्वयमके
सौंपि दैत छलहुं आंहाक सोझा
आ जी' लैत छलहुं
एकहि उखरनमे सम्पूर्ण जीवन।

बहकब

मोन छटपटाइत व्याकुल होइत
आधा रातिमे धनकल इजोरियाकें पोहमे
बहैक जाइत छी आ लगैत छी
हथोरय सगर ओछानपर,
हाथ पकरि घिंच लेमए चाहैत छी
अपना दिस आ साटि ली अपनामे
पोरे-पोर सिनेह सं सुगन्धित तन
अधर सं चुबैत नशायुक्त मधुरस
जे पिबते भ' जाइत छलहुं
नशाबाज आ अपना सं बेकाबू,
होइत छल भान परमानन्दके तखनहि
जं क' लैत छलहुं अपनाधिन हाथ फेरिक'
हम नि:शब्द रहितो आंहा बुझि लैत छलहुं
आ भ' जाइत छलहुं तैयार सौंपिक' स्वयमके
हमर आलिङगनमे गतिमन्द करबा लेल हमर
बेगवान भ' बहैत सिनेहक धारके।

तरि जाइत छलहुं हमहूं थाहति-थाहति
एहि अथाह सागरमे
संगे तारिक पार लगबैत छलहुं अहूंक'
एकहकटा कएलश्रृंगार,
तान होइतो स्तब्ध बनल
छनकैत पायलके,
खनकैत कंगन आ चुरीके
आश लगौने बैसल हाथक मेंहदी
केशक गजरा कानक बाली
आ ठोरक लालीकें
सगर राति बिता दैति छलहुं
जागिक अहींक संग प्रेमालाप पश्चात्
प्रेमस्पान करैत, ओरियान करैत छलहुं
अन्हरौखामे ओहि रातिक बिदागरी हेतु
चेहा क' भक्क द' आंखि फूजल
आ लगलहुं चकूयाई चहुंदिस बाम-दांहि
कि परल नजरि आ देखलहुं
बिदाह भेल जा रहलहुंहें अहूं
ओहि रातुक संग।

ससरति चान

ल' जा रहलैए
घिंचिक अजुका रातिके
फरिचक मुहं धरि
नहि होमए देमए चाहि रहल अछि
हमर आंहाके मिलन
राखि देमए चाहैत अछि
हमरा आंहाके पियासल।

आउ क' दी समर्पण एक दोसरके
उफनैत अछि सिनेहक सागर
जागि उठल अछि तन
उतारि हटाबू लाजक पर्दा
आ तकियौ हमरा दिस एक नजरि
निहांरि क' लेमए दिय रसपान
विधनाक गढनिके
कब्जा कर' दिय
तनकश्रृंगार
बमकैत जवानीपर
आ सुगन्धित करय दिय आंहाक सांसके
अपन सांसक सुगन्ध सं
जे औचित्यहीन अछि हमर
स्पर्श बीनु, ओहिना
जेना चान एखन धरि चकोरक स्पर्श बीनु।

हकारि आमन्त्रित क' रहल अछि आंहाके
हमर फूजल बांहि आ सजल सेज
परमानन्द आ जीवन सार्थक बनएबाक हेतु
चुअति अधर सं मधुरसकें बुन्न
उठा' दैत अछि सगर गात हिलकोर
आउ संग पुरू
आ जोडि़ लेमय दिय
हाड़क संगमे हाड़क सम्बन्ध
तखनहि, हर्षित हएतनि प्रकृतिक मोन।

सम्पर्कः ग्रामः जनकपुरधाम-15, (रामपुर) धनुषा, नेपाल
ईमेलः shankarthakur2049@gmail.com, *सम्पर्कक धारः +9779865118020*

समृद्ध शब्द सम्पदाक मातवर पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यास

✍ रमाकान्त राय 'रमा'



सेवानिवृत्त शिक्षक। मैथिली साहित्य संस्कृति विकास परिषद, समस्तीपुरक सचिव। पहिल कविता 1965 ई. मे 'बटुक' मे छपल। दू वर्षक अभ्यन्तरे ओही पत्रिकामे टालस्टायक अनुदित एकटा कथा 'तीनिटा बाबाजी' छपल। पांचटा मौलिक, तीनटा अनुदित आ दूटा सम्पादित कृति प्रकाशित। आधा दर्जनसं बेसी रचना प्रकाशन हेतु तैयार अछि, जाहिमे चारि फर्मांक बाल-कथा संग्रहसं लऽकऽ पचीस फर्मांक गवेषणात्मक रचना सभ अछि।

सम्पर्क:
श्री रमा निवास, मानाराय टोल,
पोस्ट-नरहन, जिला-समस्तीपुर,
पिन-848211,
मो0 9430441706/8051788976,
ईमेल :
ramakantrama35@gmail.com



प त्रक रूपमेमे लिखल गेल साहित्यकें पत्रात्मक साहित्य कहल जाइत अछि। ओ साहित्यक जाहि विधाक रचना रहैत अछि, पत्रात्मक शब्दक संग ओहि विधाक नाम जोड़ि देल जाइत अछि। जेना -पत्रात्मक कथा, पत्रात्मक कविता। कालान्तरमे मैथिलीमे उपन्यास आ आलेखो पत्रक रूपमे लिखल जाइत रहल अछि आ लोकप्रियताक चरम धरि पहुंचैत रहल अछि। एतख धरि दू-दूटा पत्रात्मक साहित्यिक कृति देशक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमीसं पुरस्कृत भ' अपन विधागत श्रेष्ठताक प्रमाण प्रस्तुत क' चुकल अछि-उपेन्द्रझा 'व्यास'क 'दू पत्र' तथा सुभद्र झाक 'नातिक पत्रक उत्तर'।

एहन पत्रात्मक साहित्य जे कोनो पत्र-पत्रिकामे पहिने धारावाहिक रूपमे प्रकाशित भेल होइक, ओकरा पत्रात्मक धारावाहिक साहित्य कहल जाइत छैक। जहिना उपेन्द्र झा 'व्यास'क 'दू पत्र' एकटा पत्रात्मक उपन्यासक बानगी अछि, तहिना किछु पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यासो प्रकाशित भेल अछि। एहन मात्र पांचटा उपन्यास हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि। ओ अछि-अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पांखिपर, सोनदाइक सोहाग आ जोड़ल आखर : पसरल भाव'।

मैथिली भाषा साहित्यमे प्राय: छओटा पत्रात्मक उपन्यास एवं एकटा उपन्यासिका प्रकाशित अछि, जाहिमे पत्रक माध्यमे सम्पूर्ण कथानक प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग, रामजोड़ी कागतक पांखिपर, (तीनू-रामदेवझा), सोनदाइक सोहाग (दयानन्द मल्लिक), जोड़ल आखर 'पसरल भाव (विद्यानाथ झा 'विदित'), दू पत्र (उपेन्द्र झा 'व्यास') आ आंगनक रेखा (गिरिधरझा 'विकल') यैह नाम अछि पत्रात्मक सातो उपन्यासेक। एहिमे पहिल पांचो उपन्यास पटनासं प्रकाशित मैथिली साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'मे स्त्रीगण समाज' स्तम्भक अन्तर्गत धारावाहिक रूपमे 1960 ई. सं 1964 ई. धरि छपल छल। तें एकरा पत्रात्मक धरावाहिक उपन्यासक नामे अभिहित कयल जाइत अछि। प्राय: चारि दशक बाद एहि एकैसम शताब्दीक दोसर वर्ष (2002मे) रामदेवझाक तीनू उपन्यास मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय (दरभंगा)सं प्रकाशित भेल। दयानन्द मल्लिकक 'सोनदाइक सोहाग' आधा शताब्दीसं अधिक बिलम्बें श्रीभैरवलालदासक सत्प्रयासें, मल्लिकजीक सुपुत्रक आर्थिक सहयोगें एवं हमरे सम्पादनमे इसमाद प्रकाशन, कटहलबाड़ी, दरभंगासं 2016ईमे छपल अछि। विदितजीक उपन्यासिका 'जोड़ल आखर: पसरल भाव' पुस्तकाकार नहि छपल अछि।

चर्चित पांचों पत्रात्मक धरावाहिक उपन्यास अनेक अर्थमे विशिष्ट कृति अछि। ओहि महक अनेक आन-आन विशिष्टताक संग मैथिली भाषाक पारम्परिक ग्राम्य, ठेठ आ काल बाह्य शब्दक प्रयोग स्वत:-स्वभावत: पाठकक ध्यान अपना दिस आकृष्ट क' पुस्तक पढबा लेल बाध्य करैत अछि। एहि उपन्यास सभक शब्द-संपदापर जं हम ध्यान दैत छी त' कृतिकार लोकनिक अनुपम सामर्थ्यपर एकटा सुखद आश्चर्य होइत अछि। विवेच्य पुस्तक सभक शब्द-संपदा निश्चित रूपसं अत्यन्त समृद्ध, स्वाभविक आ जन-सामान्यक लेल अधिक बोधगम्य अछि। एहिसं ई पत्रात्मक कृति सभ एक दिस कृत्रिम आ बोझिल भाषाक दोषसं सर्वथा दूर अछि त' दोसर दिस अपन स्वाभाविक लय आ सामान्य गतिमे आगां बढैत देखल जाइत अछि।

एहि उपन्यास सभमे व्यवहृत शब्द सभ पात्रक स्वभाव, वातावरण आ ओकर बुद्धि-विवेकक अनुकूल त' अछिए, एहिसं

समाजक सामान्य लोक सभक गप्प-सप्पमे सदति, अनायास आब' वाला ठेठ, अपभ्रंश आ देहाती शब्दक होइत धुरझार आ प्रचूर प्रयोग सर्वत्र आकर्षणक केन्द्र कहल जा सकैत अछि। एकरा मैथिली भाषाक ठेठ शब्दक ठाठ, किंवा अपन मौलिक शब्द-संपदाक सदुपयोगक विशिष्ट कृति कहल जाय त' अत्युक्ति नहि होयत।

एहि पांचो उपन्यासक पत्र सभमे व्यवहृत भाषा दिस जं एक विहंगम दृष्टि दी, त' निधोख कहि सकैत छी जे पत्र सभमे व्यवहृत भाषा अपन स्वाभाविक प्रवाहमे भसियाइत भावाम्बुधिमे भसिआइत उबचुभ करैत रहैत अछि। एहि शब्द सभक स्वभावसं कोनो वाक्यांश अथवा किनको कोनो उक्ति अपन कथ्य बिना कोनो ताम-झामक कहैत देखल जाइत अछि। पत्र सभक शब्द पत्रलेखिका गणक अपन-अपन मनोगत भावक मधुर चासनीमे छानल आ पूर्णत: परिपक्व अछि, जाहिसं पाठक ओकरा पढ'काल् अगिला पत्र किंवा ओकर उत्तर पढ़बा लेल उताहुल किंवा व्यग्र भेल आगां बढैत जयताह। ई ओहि पत्र सभमे व्यक्त कयल गेल भाषेक प्रभाव अछि जे जे केओ एकरा हाथमे ल' क' पढब आरम्भ करैत छथि ओ आवृति पूर्ण कयने बिना दम नहि धरैत छथि।

हं, किछु विद्वानक दृष्टिएं पत्र सभक सम्बोधन, कुशल-समाचार, पहुंचनामाक सूचना आदिसं किछु कालक लेल कथा प्रवाहमे व्यवधान आबि जयबाक संभावना अवश्य बूझि पड़ैत अछि-'पत्रक आरम्भिक पांति सभ यद्यपि प्रत्येक पत्रमे किछु व्यति-क्रम उत्पन्न करैत अछि।'[1]

मुदा एहन स्थिति बहुत थोड़ काल रहैछ, अत्यल्प समय मात्र। लगले कथानकक प्रवाह, भाषाक माधुर्य, पद एवं पदबंध, ठेठ शब्दक मिठास, लोकोक्ति एवं वाग्धाराक प्रचूर एवं अनुशासन-बद्ध प्रयोग आ उपन्यासक क्रमिक विकास, ओहि अवरोधकें पाटैत, महत्त्वहीन बनबैत कूदैत-फानैत पाठकक समक्ष आबि क' भाव-अभिव्यंजनाक मायाजालमे ओझराक' सरसराइत आगां बढैत चल जाइत अछि।

पाठक एक दिस जं अपन लग-पासक आम बोल-चालक भाषाक प्रवाहमे अवगाहन क'कय अपन थाकल-ठेहिआयल मनकें निर्मलक', एकटा नव टॉनिक पीबिक' मानसिक रूपें हृष्ट-पुष्ट, संतुष्ट होयबाक अनुभव करैत छथि, त' दोसर दिस किछु एहन पार्श्वचर ठेठ शब्दक तानी-भरनी पाबिक' अपन भाषाक शब्द-संपदापर अपनाकें गौरवान्वित सेहो अनुभव करैत छथि। एक-एकटा पत्रमे हुनका एहन-एहन दू-चारिटासं दर्जनो शब्द अभरतनि, जाहिसं पाठककें अपन मातृभाषाक समृद्ध शब्द-संपदा आ ओकर सदुपयोग देखिक' लेखकक रचना-चातुर्य, लेखन-कला एवं अभिव्यक्ति-कौशलसं ओ विस्मय-विमुग्ध होयबे करताह।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पांखिपर एहि तीनू उपन्यासक लेखक एक्के व्यक्ति थिकाह श्रीरामदेवझा। पत्रात्मक धारावाहिक स्तम्भक रूपमे लिखल हिनक तीनू रचना एतेक रोचक-प्रेरक आ तत्कालीन समाजक दर्पण जकां पाठकक दृष्टि-पथपर अभरलनि जे ओ एकरा अपन हृदयक बात जकां बुझ' लगलाह, विशेष क' क' युवा एवं किशोर पाठक-पाठिका। एहि तीनू उपन्यासक जे कथानक अछि से तीनू तीन तरहक वयसक नारी वर्गक मानसिकता व्यक्त करैत अछि। अवयस्क, विवाहिता नव कनियां आ सासुरवासु युवतीगण। तें तीनू उपन्यासक भाषा तीन वयस वर्गक होइतो प्राय: मैथिलीक आम जन-जीवनमे प्रचलित भाषा अछि जे लोककें अपन क्षेत्रक सोन्ह माटि आ मीठ पानि जकां अत्यन्त प्रियगर बुझाइत छैक। एकरा लोक भाषा कहल जाय त' अत्युक्ति नहि होयत।

एहि पांचो पत्रात्मक उपन्यासक पत्राचार महिले गणक बीच भेल अछि। स्वभावत: एकर सभक भाषा स्त्रीणक बीचक होयत, मुदा एहि पुस्तकमे प्रयुक्त शब्द सभक अर्थ-ब्यंजना, भाव प्रकट करबाक भंगिमा नीक-सं-नीक पुरखाही भाषाकें चुनौती देबामे सक्षम अछि।

प्रो. रमाकान्त मिश्र एहि तीनू पुस्तकमे प्रयुक्त 'स्त्रैण' भाषाक शब्द सभक प्रयोगकें असली मैथिली मानैत आधुनिक पुरखाही मैथिली शब्दकें फूसि मानैत लिखैत छथि-'श्री रामदेवजीक अंगरेजी-फूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पांखिपर भाषाक दृष्टिसं विस्मित कयलक। सोच' लगलहूं जे कोन मैथिली असली? उपर्युक्त पुस्तक सबमे प्रयुक्त 'स्त्रैण' मैथिली असली किंवा ओ पुरखाही मैथिली जे हम अहां आइ-काल्हि प्रयोगमे अनैत छी। खोभाटब, ठरड़, परभाच्छय, अनकठल, संसने, महिरम, असली मैथिली वा तकर स्थानपर जे कोनो तत्सम वा तद्भव शब्द हमरा लोकनि प्रयोगमे अनैत छी से असली? 'खोभाटब' आइ-काल्हि कहां प्रयोगमे अबैत अछि? जाहि प्रकारक अर्थक ध्वनि आ नाट्य भंगिमा एहि शब्दक अंतर्गत छैक, से की एकर स्थानापन्न आन कोनो शब्दमे अहांकें भेटत? अंग्रेजीमे एकरा लेल शब्द छैक Poke अर्थात् प्रच्छन्नतासं देहमे आंगुर गड़ा-गड़ा कोनो बातक स्मरण करायब। पत्राचार विधिक माध्यमे लिखित उपर्युक्त तीनू पोथीक गल्प सभमे, श्रीरामदेवझा मैथिलीक एहन अनेक शब्दकें विस्मृतिक पौती-पेटार सं निकालि आ ओकर प्रयोगसं, पाठककें विस्मित-चकित कयलनि अछि।'[2]

पाक्षिक 'विद्यापति टाइम्स'क संपादक श्री विनोदकुमारक भाषाक प्रसंग विचार सेहो द्रष्टव्य अछि- 'उपन्यासक शिल्प पक्ष जेना नवीन ओ स्वयंमे मौलिक अछि' तहिना एकर भाषा पक्ष सेहो ततबे विलक्षण अछि। एहिमे पत्राचारक स्वाभाविकता त' अछिए, ताहिपर सं एकटा अंचल विशेषक नारी भाषा (स्त्रैण), विशिष्ट शब्दावली, लोकोक्ति ओ वाग्धाराक प्रयोग मैथिली उपन्यासकें एकटा बेछप परिचिति प्रदान करैत अछि।'[3]

आकाशवाणीक पूर्व मैथिली प्रोड्यूसर आ विद्वान चिंतक श्री सुरेन्द्रझाक अभिमतें 'भाषा आ शिल्पक दृष्टिएं अंगरेजीफूलक चिट्ठी सेहो आधुनिक मैथिली साहित्यक विशिष्ट उपलब्धि थिक। मध्यम वर्गीय मैथिल परिवारक पारिवारिक आ सामाजिक सरोकारक सहज, सरल, सर्वथा अकृत्रिम अभिव्यक्ति जाहि विशिष्ट वाचिक भंगिमामे भेल अछि ओ अन्यत्र नहि भेटैछ। बुझना

जाइत अछि जेना मिथिलाक हृदय अपन सम्पूर्ण संवेदनाक संग पत्र सभमे साकार भ' उठल हो। भाव आ भाषामे कतहु कोनो फेंट-फांट नहि। विचारक आ भाषा शिल्पीक रूपमे लेखककें 'प्यूरिष्ट' कहल जा सकैत छनि।'[4]

नव मिथिला मिहिरक प्रथम संपादक प्रसिद्ध उपन्यासकार स्व. सुधांशु 'शेखर' चौधरी, जनिका संग विचार-विमर्शक उपरान्त पहिल पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यास (ओहि समयक स्तम्भ) 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' लिखबाक ओ सुर-सार कयने छलाह, ओहो हिनक 'स्त्रैण', फुदकैत भाषाकें देखिक' हृदयक अन्तरतमसं कहने छलथिन-'आपे दूनू तरफ का चिट्ठी लिखिये। मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं।'[5]

एक आन ठाम शेखरजी लिखैत छथि-'ज्ञान-पिपासु रहलाक कारणें आरम्भेसं अपन प्रतिभाकें मंजैत-चमकाबैत रहलाह अछि। मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक सहज स्नेह हुनक कार्यक्षेत्रकें विशाल बना देने छनि। निबंध, नाटक, कविता ओ कथाक क्षेत्रमे त' हुनक प्रतिभा नीक जकां प्रतिभासित भेले अछि, संगहि अनुसंधानक क्षेत्रमे सेहो हुनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म रहलनि अछि। वस्तुत: एतेक अल्प वयसमे अपन प्रतिभा आ अध्यवसायक बलें मैथिली जगतक विद्वत् समाजमे ओ अपन नीक स्थान बना लेने छथि।

मिथिला मिहिरक त' ओ लेखक रहबे कयलाह अछि, विशेषतया हुनक लिखल मिथिला मिहिरक स्थायी स्तम्भ अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग ओ रामजोड़ी कागतक पांखिपर आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि।'[6]

पत्र-पत्रिकामे अनेक लेखक-लेखिकाक रचना रहैत अछि-नव आ पुरान, दुनू पीढीक। मुदा ओहि सबमे रामदेवझाक साहित्यकें विशेष आदर प्राप्त करबामे हुनक पत्रोचित सम-सामयिक, समाजमे प्रचलित, आमलोकक अपन आ अपन लगपासक गढल (अव्यवहृत वा थोड़ व्यवहृत) शब्द आ ठेठ, अप्रशस्त मौलिक, जकरा ठेठ देहाती अथवा पूर्णत 'गमार' (ग्रामीण) शब्द कहल जाइछ, केर चहटगर प्रयोग करबाक विशेष महत्त्व अछि।

प्रो. कमलानन्दझा 'विभूति'क शब्दमे डा. रामदेवझाक 'भाषा अद्भूत आ विलक्षण अछि। भाषाक सामर्थ्यसं लेखक नारीक अन्तर्मनक कतेको तहकें खोलैत चल गेलाह अछि। सरल, सहज आ गोली जकां चलैत चिट्ठीक भाषा अन्य विधाक भाषासं भिन्न होइत अछि। रामदेवबाबू चिट्ठीक भाषाक असली नाड़ी पकड़लनि अछि। चिट्ठी लिखखमे छोट-छोट बातकें स्मरण राखख पड़ैत छैक। लेखक एक-एकटा सधल दृष्टि रखलनि अछि।....रामदेव बाबूकें स्त्री शब्दावली पर महारत हासिल छनि...,शब्दावलीक कमाल अछि जे ओहि समयमे लोक ई अनुमान नहि लगा सकल जे ई पत्र कोनो पुरुष लिखि रहल अछि। एहि शब्दावलीमे खांटी मैथिली मोहाविरा आर लोकोक्तिक झांसि, भाषा सौन्दर्यकें चारि गुणा बढ़ा दैत अछि।'[7]

जं श्रीरामदेवझाक एहि तीनू पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यासमे ठेठ शब्द, लोकोक्ति आ वाग्धराक प्रयोगक विस्तारमे जाइ त' ई छोट सन आलेख अत्यधिक पैघ भ' जायत। एकटा पैघ निबन्धक रूपमे मैथिली भाषाकक ख्यातिलब्ध विद्वान् आ समीक्षक प्रो.रमाकान्तमिश्र 'सव्यसाची: रामदेवझा अभिनन्दन ग्रन्थ'क पृष्ट 279 सं 283 पांच पृष्ठ (रॉयल संस्करण)मे एहि विषयपर लिखलनि अछि, जाहिमे ओ किछु विशेष शब्द मात्रपर विचार क' सकलाह अछि, मुदा जाहि-जाहि शब्दपर विवेचन कयल गेल अछि-से सम्पूर्णतामे, पूर्णत: खोंइचा छोड़ाक'।

कोनो कार्य यदि पूर्ण आत्मविश्वाससं कयल जाय त' ओहिमे सफलता असंदिग्ध रहैत छैक, आ विद्वान् लोक प्राय: ओहने कार्यटा करबा लेल तत्पर होइत अछि जाहिमे ओ अपनाकें सक्षम बूझैत अछि। श्रीरामदेवझा कें पहिले-पहिल जखन एहि स्तम्भ (आब उपन्यास) लिखबाक बाध्यता भ' गेलनि त' ओ एकर कठिनताकें अनुभव करितो एकर लेखनकें एकटा चैलेंजक रूपमे स्वीकार कयलनि। हुनकहिं शब्दमे-'महिलाक मनोवृति ओ भाषाकें ठीक-ठीक व्यक्त करब कठिन काज छल। किंतु तीन गोट पत्र लिखलासं एकटा आत्म-विश्वास बनि गेल छल, कथानकक एकटा सिरखार सेहो बनख लागल छल। हम अंगेरेजीफूलक चिट्ठी स्तम्भ लिखख लगलहुं।'[8]

रामदेवझाक तीनू उपन्यासक शब्द-संपदा, शब्द-सौन्दर्यक प्रसंग सव्यसाचीमे रमाकान्त मिश्र कहलनि अछि जे 'हमरा श्रीरामदेवजीक उपर्युक्त कृति सभमे असली मैथिलीक आत्माक दर्शन भेल आ भाषाक दृष्टिसं ई रचना सब अनमोल लागल। एकर भाषामे जमाइन सं छौंकल पटुआ सागक झोर, जमीरी नेबो गारल खेरहीक सन्ना आ उलबा राहड़िक दालिक स्वाद भेटल।'[9]

रामदेवझाक तीनू उपन्यास अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पांखिपर 'मिथिली मिहिर'मे पहिनहि, आरम्भिके अंक सभमें प्रकाशित भेल छलनि। तें वस्तुत: ओ सर्वप्रथम एहन-एहन शब्दक प्रयोग क' क' अपन भाषाकें धारदार अवश्य बनौलनि। मुदा बादक पत्रात्मक धारावाहिकक लेखक द्वय दयानन्द मल्लिक आ विद्यानाथझा 'विदित' सेहो अपन-अपन कृति सोनदाइक सोहाग एवं जोड़ल आखर: पसरल भावमे ओहि परंपराकें आगां बढेबामे नीक योगदान कयने छथि। उक्त दुनू धरावाहिक पढलापर सेहो अहांकें एतेक संतोष अवश्य बूझि पड़त जे परवर्ती लेखक द्वय सेहो ओहि परंपराकें किछु गमे-गमे, रस्से-रस्से आगां बढौलनि अछि, आ पूर्व वयवहृत शब्द-संपदाकें अक्षुण्ण रखबाक गुरुतर दायित्वक निर्वहन सेहो कयलनि अछि।

एहि पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यास सभक महत्त्व जाहि-जाहि कारणसं अछि, ताहिमे एकटा महत्त्वपूर्ण कारण अछि-एहि पत्र सभमे व्यवहृत मैथिलीक पारंपरिक शब्द सभक सटीक-सफल प्रयोग। मिथिलाक निठढ ग्रामीण क्षेत्रमे बाजल जायवाला ठेठ शब्द जाहि सं मैथिली साहित्य एवं साहित्यकारकें विशेष परिचिति नहि छलनि, आ जकर व्यवहार बन्न प्राय: भ' गेल छल, ओकर पुन:-पुन: व्यवहार शत प्रतिशत पत्रमे नहि नहि, त' 90-95, 97 प्रतिशत पत्रमे अवश्य

कयल गेल अछि। एहन सोधल शब्द सभ साहित्य-चेताक हृदयकें अवश्ये अभिभूत क' लैत अछि। स्वभावत: एहने शब्द सभ देखिक' मिथिला मिहिरक संपादक सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मुंहसं सहसा बजा गेल होयतनि- 'आपे दुनू तरफ का चिट्ठी लिखिये। मौगियाही बात सब नीक लिखते हैं।'[10]

एहन-एहन हेरायल-भुतिआयल शब्द सभक पुन: प्रयोगसं रमाकान्तमिश्र सन विशिष्ट विद्वान् प्राध्यापककें एहिठामक, सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक लोक जीवनमे सांस्कृतिक सुगन्धि बिल्हैत प्रतीत होइत छनि-'शब्द संवादक विकल्पहीन माध्यम अछि, मुदा समयक अनन्त प्रवाहक संग ओहिमे सं अनेकक अवसान, आ ओकर स्थान पर नव-नव शब्दक उत्थान होइत रहलैक अछि। भाषा विज्ञानक दृष्टिसं ई भाषाक एकटा स्वाभाविक प्रतिक्रिया छैक। युग परिवर्तनक संग मैथिलीमे सेहो एहन अनेक शब्द हेरा-भोतिया गेलैक अछि जाहिमे एहि ठामक जन-जीवनक सांस्कृतिक सुगन्धि छैक।'[11]

एहि उपन्यास सभमे अहांकें ओहने-ओहने शब्द सभसं, ओही हेरायल-भुतिआयल शब्द सभसं लेखक साक्षात् करबबैत छथि जे अपन त' छले, दूर भ' गेने अनचिन्हार भ' गेल छल। जेना लोक अपन चिर-परिचितो लोककें बहुत पैघ अन्तरालपर देखलापर पहिने नहि चिन्हबाक कारणे ओकर नव-नव विशिष्टतासं अभिभूत भ' उठैत छथि, बादमे नीक जकां परिचय-पात भेलोपर ओहि सामान्यो सन लोकक प्रभाव ओ विशिष्टतासं ओ अभिभूत रहितहिं छथि।

मैथिली भाषा एवं साहित्यक निविष्ट विद्वान्, प्रसिद्ध भाषाविद, कोषकार गोविन्द झा सेहो एहि पुस्तक सभमे प्रत्युक्त ठेठ शब्दसं विशेष प्रभावित छथि आ ओकर ठाम-ठीम उपयोगो कयलनि अछि। महत्वपूर्ण आश्चर्यक गप्प त' ई अछि जे एहि पुस्तकमे व्यवहृत किछु उपयोगी शब्द सभ हुनक लिखल व्याकरण आ शब्दकोषहुंमे छूटल छनि। ओ स्वयं एहि पुस्तक सभक महत्त्व स्वीकार करैत, ओकर दूटा प्रमुख कारण मानैत एकटा पत्रमे लिखैत छथि-'तथापि दू अंशमे ई पढ़ब सार्थक भेल। पहिल ई जे बहुत रास एहन पद, पदबंध आ वाक्यबंध भेटल जे हमर कोष आ व्याकरणमे छूटल अछि। यथा-विरोग, हमरा तइे, तिरेजन, गुड़ोंत, महजरो, परधान, अरमज, सिरखार, आओर कतेक गनाउ। दोसर ई जे महिलामुखी (मौगियाही) भाषाक नीक उदाहरण भेटल।'[12]

एहि पत्रात्मक धारावाहिक उन्पयास सभमे प्रयुक्त उपर्युक्त 'मौगियाही' शब्द सभक प्रसंग 'रामदेवझा अभिनन्दन ग्रंथ सव्यसाची'मे रमाकान्तमिश्र द्वारा 'अहां मौगियाही बात नीक लिखते हैं' शीर्षक आलेखमे खूब नीक जकां आ विशेष प्रकाश देल गेल अछि(जकर चर्च हम पहिनहिं क' चुकल छी। ओहि आलेखक एकटा महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद ललित निबंधक आनन्द दैत अछि। हम ओहि सम्पूर्ण अनुच्छेदकें एहि ठाम साभार उद्धृत करबाक लोभ संवरण नहि क' रहल छी :-

'बोरसि लग बैसलि आ अपन पुतोहूक हाथें अपन दूनू सुखायल छाबामे कड़ू तेल औंसबैत अपन बाबी मन पड़लीह आ ताहि संग मन पड़ल हुनक टीका-टिप्पणीक भाषा ग्लानिसं गरानि, चर्यासं चरजा, प्रताड़नासं ताजन, प्रचारितसं परचारल, लिप्तसं लिपित, प्रबोधनसं परबोधन, रुधिरसं लिधुर आदि त' स्पष्टत: संस्कृते शब्दक अपभ्रंश थिकैक। ओहिसं पूर्व उर्दू-फारसी भाषासं सेहो मैथिली प्रभावित भेल छलैक। लोक कोशिशसं कोरसिस क' लेलक। तकिया गेरूआकें ठेलिक' खसा देलकैक। चौकीक स्थानपर तख्तपोश आबि गेलैक। मुसलमानी सलतनत कालक अनेको शब्दकें बीछिक' जं एकट्ठा करी त' तकर पथार लागि जायत। अकिद्दा आ पोत (मालगुजारी) त' उर्दूए अछि। लवेजान (मार्फत रामदेवजी) अपन शुद्ध रूपमे मैथिलीमे रहि गेलैक। भरसाहा (चिट्ठी पाबि भरसाहा होयत) भरोसक अर्थमे आजुक कालक मैथिलीक लेल अपरिचिते अछि। भ्रमक अर्थमे भटमाह, गम्भीरताक अर्थमे भारखम्भी (भारखम्भी होअह), बुधियारक अर्थमे बौध (बड़ बौध अछि), प्राय: कबुलाक अर्थमे उछाही (तोहर उछाहीमे हम पातरि देलियनि), छोट घघरीक अर्थमे पुतली (पुतली पहिरि धाप-धुप खेलायत), शोणितक अर्थमे संस्कृतक रुधिर शब्दसं बनल लिधुर (बड़ लिधुर बहल) त' आब लुप्ते अछि। मैथिलीक पाठककें आइ-काल्हि बहिकिरनीसं सेहो साक्षात्कार होयब कठिन, कारण ओकर स्थान पर आब दाइ काज करैत छैक। अधलाहक अर्थमे हिच्छैत अछि, आने-मानेसं (घुमा-फिराक') भरकछ लागब (जानिक' अनठयबाक अर्थमे), बहिनौत (बहिनक बेटा), मन हदियायब (व्यक्त करबा लेल मन छटपटायब), हृदयक लेल ही (ही लटकि गेल अछि), साहसीक अर्थमे दिदगरि (देयादनी दिदगरि छथिन), अंग निघुमैत छैक अस्पतालमे, बच्चाक पातर दस्त होयबाक अर्थमे चुरकी, रसदार तरकारीक लेल तीमन, जिज्ञासाक लेल जिगेसा आ व्यवहारक लेल बेबहार त' सब बुझैत होयताह, मुदा स्वीकारक अर्थमे सुहकार शब्द आजुक कालमे प्रचलित नहि छैक। देखभालक अर्थमे तकमीना, सेहो आजुक कालमे उपेखले जकां भ' गेल छैक। आजुक मैथिली गद्यक पाठककें खिधांश, फेदरति, सधौरि, सुठौरा, आपट सेहो नवे जकां लगतनि। 'एकरे जकां'क वा एहि तर्ज परक अर्थमे पघड़ा-पघड़ाक' खायब सेहो अनभोआर लगैछ। लोक कहत जे कनियां नेपियाहि छैक केर नेपियाहि सेहो केतेकहुं कें अर्थक बेगरताक अनुभूति करौतनि। प्राय: नीरसं नोर आ ताहिसं नेप भेलैक अछि की ? शब्दक गोत्र-गाम ताकब एकटा व्यसन छैक ओहिना जेना पजियारसं वंशवृक्ष बनबायब। शब्द स्वरूप आ अर्थक दृष्टिसं जले जकां तरल होइछ। जाहिठाम आ जाहि वासनमे ओकरा रखबैक ओ ओहेन आकार ध' लेत। पंडितक चतुर्थीचन्द्र गिरहतक कण्ठमे चौठचन्द आ कनिया काकी आ हुनक बहिकिरनीक कण्ठमे अबैत-अबैत चौरचन भ' जाइत छैक। यैह थिकैक अपभ्रंश। आप माने जल। पंडितक 'सप्रतिभ' पंडिताइनक सपरतीव। एहि रूपें अपवित्रसं अपैत, महानससं भानस आ उत्कीर्णसं उतकिरना। तें जखन पता चलल जे मदोदरि शब्द रावणक

उदार ह्रदया पत्नी मन्दोदरिक अपभ्रंस थिक तं सुखद आश्चर्य भेल। मनमे प्रश्न उठल उपर्युक्त शब्द सब समयक प्रवाहमे कोना भासि गेलैक ? मदोदरिकें पुन: मैथिलीमे घुरि अयबाक संभावना छैक की? उत्तर नकारात्मके छल जाहिसं मनमे कचोट भेल। .....पुस्तकमे जाहिकाल खण्ड आ परिवेशक वर्णन-विवरण छैक, ओहि सब ठाम, उपर्युक्त विवेचित शब्द सभ अपन सांस्कृतिक सुवास आ निजताक संग उपस्थित छैक।'[13]

उपर्युक्त अनुच्छेद पढ़लासं एना बूझि पड़ैत अछि, जेना ई कोनो ललित निबंधक अंश होअय। मुदा वस्तुत: रामदेव झाक तीनू उपन्यासमे त' एहन-एहन शब्द, लोकोक्ति आ वाग्धरा (मुहावरा)क प्रयोग त' प्रचुर मात्रामे अछिए, परबरती दूनू धारावाहिक सोनदाइक सोहाग' आ जोड़ल आखर : परसल भाव मे सेहो पर्याप्त अछि। एकटा अनुमानक अनुसार एहि पांचो पुस्तकमे व्यवहृत एहन-एहन प्राय: दू हजार शब्दक संग दू अढ़ाइ सय वाग्धारा एवं शताधिक लोकोक्ति सेहो सन्निहित अछि।

यद्यपि एहि उपन्यास सभमे लिखल गेल पत्र सभ दू पत्र (उपेन्द्रझा 'व्यास') आ आंगनक रेखा (गिरिधरझा 'विकल')क पत्र जकां बहुत पैघ आकारक नहि अछि, तथापि कथानकक विकासक क्रममे यत्र-तत्र छोट-छीन कथनोपकथन अभरिते अछि (जाहिसं पत्रात्मकताक एकरसतासं हटिक' नाटकीयता अवश्य मनकें उत्फुल्लक' दैत अछि। बहिनाक विरोगक चौदहम पत्रक एकटा कथनोपकथन द्रष्टब्य अछि-

''.........मोन हमर खसि पड़ल छल। ओ कहलनि जे एना मोन खसौने रहब ताहिसं त' काज नहि चलत!'

-'त' हम की करू!' हम कहलियनि।

-'हंसू, आर की!' ओ बजलाह।

हम कहलहुं-'इह, हंसू! आंखि नोर दांत निपोड़!'

'नहि हंसब त' हम गुदगुदी लगबैत छी।' ई कहि ओ हमरा पांजरमे गुदगुदी लगब' लगलाह आ मारि कहूं उकठ कर' लगलाह। बड़ अधलाह छनि हुनकर उकठ करबाक अभ्यास।...'[14]

पत्राचारोमे एहन छोट-छोट वाक्य आ सहज नाटकीय भंगिमाक संग लोकोक्तिक सटीक उपयोग, कतेक आकर्षक, मनमोहक हास्योत्पादक संग-संग समृद्ध शब्दावलीक परिचायक अछि!

रामजोड़ी कागतक पांखिपरक दोसरे पत्रमे ग्रामीण बाला सोनाकें पटनामे मन नहि लगैत छैक त' माय ओकरा प्रबोधैत छैक। माय बेटीक गप्प-सप्पक स्वाभाविकता एवं आपकता त' देखू-

'माय कहलक-'कियेक कनैत छें?'

हम कहलियैक-'हम अपना गाम जायब। बाबी हमरा लेल मारि कनैत होयतीह।'

-'अंय गे! बाबीये तोहर सब किछु छथुन? हम तोहर माय नहि छियौक?' माय हमर नोर पोछैत कहलक-'हम तोरा नहि नीक लगैत छियौक?' हम 'हं'मे मुड़ी डोला देलियैक। एहिपर माय कहलक-'तखन एना कियेक करैत छें?'

-'हमरा एहि ठाम नहि नीक लगैत अछि।' हम कहलियैक।

-'ए मा! कहू!! लोक पटनामे रहबा लेल कबुला-पाती करैत अछि आ तोरा नहि नीक लगैत छहु?'

-'हमरा बाबी बिना नहि नीक लगैत अछि।'[15]

जें कि दयानन्द मल्लिकक 'सोनदाइक सेहाग' आ विदितजीक 'जोड़ल आखर : पसरल भाव' पूर्वसं पुस्तकाकार नहि छपल छल, तें आलोचक-समालोचकक ध्यान एहि कृतिक समालोचना दिस नहि गेलनि। जत' 'सोनदाइक सोहाग' सन् 2016 ई.मे पुस्तकाकार छपल अछि, ओतहिं 'जोड़ल आखर : पसरल भाव' पुस्तकक रूपमे सर्वथा अप्रकाशिते अछि। कोनो रचनाक स्थायित्व एवं महत्ता, विद्वत् समाज द्वारा ओकर गुणावगुणक निरूपन-मूल्यांकन पुस्तकाकारे भेलापर होइछ।

नव 'मिथिला मिहिर'क सत्ताइस अंकमे प्रकाशित पत्रात्मक धरावाहिक उपन्यास 'सोनदाइक चिट्ठी'क लेखक दयानन्द मल्लिक उर्फ जयवल्लभ मल्लिक सेहो मैथिलीक ठेठ, अपभ्रंश शब्द, मोहाबिरा आ लोकोक्तिक सटीक प्रयोग करबाक लेल सर्वथा प्रतिबद्ध बूझि पड़ैत छथि। उपन्यासक शुरुआतमे जेना ओ आमिल पीबिक' मैथिलीक भाषाक ठेठ, सर्वजन प्रिय सम्बोधन 'भौजी अय भौजी' शब्दसं कयलनि अछि-से देखब आ विचारबे योग्य अछि। आ से ओ (सोनदाइ) अपन पहिलसं अन्तिम पत्र धरि ओहिना लिखैत रहि गेलीह, मुदा पाठकक मनमे कनिको पुनरुक्ति जन्य दोषक रूपमे नहि अखरलैक ई सम्बोधन।

लेखक सम्पूर्ण पुस्तकमे अंग्रेजी, उर्दू, आ मैथिलीक असंख्य तत्व, ठेठ ग्राम्य बोल-चालक शब्दक प्रयोगक' अपन पुस्तक, तत्कालीन स्तम्भकें सर्वजन प्रिय बनेबाक प्रति सावधान छलाह। जरे-जर, बघजर, भोरहरबा, हद, फड़ीछ, 'ओटिंगरूम, लाटफारम, सक, खरुहान, डरेबर, मोन माफिक, जगरना, पुरापन, सहरीक, मिसियोभरि, अखोर-बखोर, महोजरो, डाकडर, जगौनी घड़ी, खुटरी, इत्यादि हुनक लिखल आरम्भिक दू-चारिटा पत्रक बड़ थोड़ शब्द सभक बानगी हम बीछिक' आनलहुं अछि जे स्वय अपन 'गुण-ग्राम' कहितहिं अछि। ओटिंगरूम, लाटफारम, खरुहान, डरेबर, मोन माफिक, फाजुल सन ठेठ-अपभ्रंश शब्दक व्यवहारसं लेखक मैथिली भाषाक वैशिष्ट्यक संग अपन अभिव्यक्ति कौशलक परिचय नीक जकां देलनि अछि।[16]

स्वर्गीय मल्लिकजी आवश्यकतानुसार मैथिली वाग्धारा (मोहाबिरा) आ लोकोक्तिक प्रयोगक प्रति सेहो पूर्ण सचेष्ट आ जागरूक छलाह। सोनदाइ सोहागक आरम्भिक पत्र सभसं बीछल 'चूमे-चू मिलब, सिंउथ छूअब, कान फुकब, लाजे पानि-पानि होयब, जी जुड़ायब, गोटी लाल होयब, बिष उतरब, हवा भ' जायब, मिस पड़ब, राजाकें मटियाक दु:ख, आंती उठब, लाजें कठौत होयब, लाज धाख उठाक' पीबि जायब, तीनमे की तेरहमे' आदि वाग्धाराक प्रयोग जत' एक दिस पत्रक भाषाकें प्रभावी बनबैत अछि, ओतहिं दोसर दिस ओहि पत्रसं पाठककें एकात्मकता स्थापित करबामे महत्वपूर्ण

योगदान दैत अछि।[17]

तहिना 'चटपटी बियाह कनपटी सिनुर, जेहेन कोइली सनक बोल ने तेहेन अमोले बड़, कुकरक पेटमे कतहु घी अरघय, ओझा लेखें गाम बताह, गामक लेखें ओझा बताह, गोनू झा बार' लगलाह सौंसे गामकें तं बरा गेलाह अपने' सन दर्जनों लोकोक्तिसं 'सोनदाइक सोहग'क पत्र सभ मिथिलाक माटि-पानिक सुवाससं महमह क' रहल अछि![18]

डा. योगनन्दझा पुस्तकक 'दू शब्द' शीर्षक भूमिकामे लिखलनि अछि-'सरल-सहज भाषा, सुष्टु शिल्प, मनोरम उपस्थापन, मोहावरा ओ लोकोक्तिक सटीक प्रयोग एवं नारी विषयक आदर्श तथा राष्ट्रीय भावना निवेशक कारणे पठनीय ओ संग्रहनीय अछि।[19]

'मिथिला मिहिर'क आठ अंकमे प्रकाशित श्रीविद्यानाथझा 'विदित'जीक मात्र आठ पत्रमे समेटल, एकटा छोट सन उपन्यासिका कही वा दीर्घकथा 'जोड़ल आखर : पसरल भाव' अछि। ई पत्रिकाक अतिरिक्त स्वतंत्र रूपमे किंवा कोनो आन संकलनमे नहि छपि सकल अछि। एहूमे कुफ्फ, निचेन, पलखति, नंग-फंग, तरी-घटी, सोह, सुमरि, अनमना, खड़भड़ा, झीक, चाट, संच-मंच, टोबि- टोबि, फदिअबितहु, दिपली, अगरधत्त, निमस्तिन इत्यादि भूलल-बिसरल, अपभ्रंश किंवा ठेठ ग्रामीण शब्दक प्रयोग-उपयोग धुरझार क' अपन पूर्ववर्ती स्तम्भ किंवा पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यास लेखकक परम्पराक रक्षा करैत मैथिली शब्द-सम्पदाक प्रति पूर्ण साकांक्ष प्रतीत होइत छथि।[20]

तहिना हिनक उक्त रचनामे स्थान-स्थानपर उपयुक्त मोहाविरा आ लोकोक्तिक प्रयोगक प्रति सदति सजग बुझाइत छथि, जाहिसं मैथिली शब्द-संपदाक रक्षा होइक किंवा विकासक प्रशस्त बाट खुजल रहय। बरद जकां बहैत, सट्ट द' जी घीचि लेब, हाथी चढिक' गौर पूजब, खोंइचा छोड़ाक', देसी मुर्गी बिलेंती बोल, हाय जगरनाथ, ढाबुस बेंग जकां गाल फुलायब, करिया मेघ चलब, बुत भेल रहब, लाजें कठौत भ' जायब, कोंढ फाटि जायब, सासुर मान त' नहिरो मान इत्यादि किछु बानगीसं हुनक लेखकीय कौशल एवं दायित्वक अवबोध नीक जकां होइत अछि।[21]

एहि प्रकार प्रभावी कथोनोपकथन, ठेठ किंवा अपभ्रंश किंवा प्राचीन तद्भव शब्द अपन भाषाक किंवा मिलैत-जुलैत प्रचलित आन भाषाक लोकोक्ति एवं वाग्धाराक सटीक प्रयोगसं पुस्तकक भाषा प्रवाहमय, स्वभाविक आ प्रभावोत्पादक त' भेल अछि, पाठककें कथानकक संग-संग अपन हेरायल-भुतिआयल भाषाक खटमिट्ठीक आकर्षण सेहो बेर-बेर एकरा पढ़बा लेल प्रेरित करैत अछि।

अतएव भाषाक दृष्टिसं पांचो पत्रात्मक धारावाहिक उपन्यास एकटा विशिष्ट कृति कहल जाय त' कोनो अत्युक्ति नहि होयत।

संदर्भ

1. सव्यसाची : रामदेवझा अभिनन्दन ग्रंथमे हीरेन्द्रकुमारझाक आलेख, पृ .275. प्रकाशक-डा.रामदेवझा अभिनन्दन ग्रंथ समिति, कबिलपुर, लहेरियासराय (दरभंगा)।
2. 'सव्यसाची'मे प्रो.रमाकान्तमिश्रक आलेख, पृ.249.
3. तत्रैव, श्रीविनोदकुमार, पृ.246.
4. तत्रैव, श्रीसुरेन्द्रझाक आलेख पृ.251
5. अंगरेजीफूलक चिट्ठीक भूमिका, पृ.10.
6. तत्रैव, पृ.14, 26, बहिनाक विरोग, पृ.6, एवं रामजोड़ी कागतक पांखिपर, पृ. 10.
7. 'सव्यसाची'मे श्रीकमलानन्दझा 'विभूति'क आलेख,
8. तत्रैव, रमाकान्तमिश्रक आलेख, पृ.283.
9. तत्रैव, पृ. 279..
10. अंगरेजीफूलक चिट्ठी-भूमिका, पृ.10.
11. 'सव्यसाची'मे रमाकान्त मिश्रक आलेख, पृ.279.
12. तत्रैव, शंकरदेव झाक आलेख, पृ. 396.
13. तत्रैव, रमाकान्त मिश्रक आलेख, पृ. 279.80.
14. बहिनाक विरोग, पृ. 30.
15. रामजोड़ी कागतक पांखिपर, पृ.
16. सोनदाइक सोहागक आरम्भिक चारि पांचटा पत्रसं, पृ. 1सं 17 धरि.
17. तत्रैव.
18. तत्रैव.
19. तत्रैव, दू शब्द भूमिका.
20. जोड़ल आखर : पसरल भावसं.
21. तत्रैव।



भाषाक स्वरूप आ मैथिली भाषाक विकास

✍ डॉ. राम चैतन्य धीरज



लेखक राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे प्राध्यापक छथि।
प्रकाशित कृति : पहिल कृति मैथिली मे 'द्विपर्णा' (गीत-ग़ज़ल संकलन), भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य, अन्य कृति हिंदी मे 'जब आंखें खुली', 'तारा तंत्र दर्शन', 'रक्तकाली दर्शन', 'वीनेश्वरी', 'विज्ञानमक्षरम्' (मण्डन मिश्र का विज्ञानवाद), 'साक्षीलक्ष्मीनाथ', संस्कृत मे 'तारा स्तोत्रम्' एवं अंग्रेजी मे ओह, कारगिल (कविता)।
'मिथिला मिहिर', 'आरंभ', 'देशकोस', 'संकल्प', 'सूत्रधार', 'अंतिका' पूर्वोत्तर मैथिल आदि मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित आलेख गीत-गजल एवं कविता।

सम्पर्क:
मानस नगर, वार्ड नं.-32,
हटियागाछी, सहरसा
मो. 6203681693



थिली भाषाक इतिहास पर चर्चा करबा सं पूर्व हम भाषाक स्वरूप आ एकर विकास पर चर्चा करब समीचीन बझैत छी। हम जनैत छी जे भाषा सार्वजनिक उपयोगक वस्तु होइत अछि आ व्यक्ति एकर उपयोग निजी प्रयोजनक हेतु करैत अछि। एहिमे बुद्धिक सभ आयाम होइत अछि। जेना विचार, भाव, चिंतन, परिकल्पना, कल्पना, संवेदना आदि। तें भाषा सर्वदा अपन सार्थकते कें द्योतित करैत अछि। एहि लेल भाषा कें ओ सार्थक मानसिक क्रिया-व्यवहार कहल जाइत, जाहि सं विचार आ अन्य बौद्धिक क्रिया-व्यवहार कें अलग नहि कयल जा सकैत अछि। वस्तुतः भाषा सार्थक शब्द-समूहक ओ अभिव्यक्ति होइत अछि, आहि सं विचार आ व्यवहार कें परस्पर (वक्ता आ स्रोता) अलग तें नहिए कयल जा सकैछ, अपितु एको आयाम सं भाषाक स्वरूप निर्धारित होइछ, कहल जा सकैछ। भाषा अभिव्यक्तिक माध्यम थिक, ई तें कहले जाइत अछि, संगहि इहो कहल जयबाक चाही जे भाषा सं मनोभाव के अलग नहि कयल जा सकैछ।

ऐतिहासिक विकासक दृष्टिएं भाषा के तीन भागमे विभाजित क' सकैत छी-

1. सांकेतिक अवग्राही भाषा
2. संभाष्य अवग्राही भाषा तथा
3. लेख्य अवग्राही भाषा

हम जनैत छी जे भाषा परस्पर (वक्ता एवं स्रोता) अवग्राही होइत अछि अर्थात् परस्पर बोधगम्य होइत अछि। जा धरि बोधगम्य नहि होयत ता धरि ओकरा भाषा नहि कहल जा सकैत अछि। अर्थात् भाषा वैह थिक जे हमर चेतना आ चिंतनमे भासय, माने प्रत्यक्ष होअए। तें भाषा कें ऐतिहासिक दृष्टिएं एही तीनू वर्गमे बांटल जा सकैछ। वस्तुतः सांकेतिक अवग्राही भाषा सं मानव जीवनक प्रारंभ होइत अछि। संकेतक माध्यम सं जे भाषा परस्पर अवबोधमे आबय, सं सांकेतिक अवग्राही भाषा कहबैत अछि। संभाष्य अवग्राही भाषा मौखिक, परस्पर आदान-प्रदान योग्य भाषा होइत अछि। अर्थात्, संभाषणक द्वारा जे भाषा परस्पर अवबोधमे आबय, ओकरा संभाष्य अवग्राही भाषा कहल जायत तथा लेखनक द्वारा जे भाषा परस्पर अवबोधमे आबय, तकरा लेख्य अवग्राही भाषा कहल जायत।

भाषाक ऐतिहासिकता संभाष्य अवग्राही भाषा व लेख्य अवग्राही भाषा सं नहि होइत अछि, अपितु ई संकेतिक अवग्राही भाषा सं होइत अछि। अभिव्यक्ति आ विचारक दृष्टिएं मौखिक रूपमे संभाष्य अवग्राही भाषाक प्रयोग होइत अछि तं साहित्यादि लेखनक दृष्टि सं लेख्य अवग्राही भाषाक प्रयोग होइत अछि। सांकेतिक अवग्राही भाषामे ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति नहि होइत अछि, अपितु सांकेतिक तथा शारीरिक भाषाक प्रयोग होइत अछि। संभाष्य अवग्राही भाषाक इतिहास ओहि दिन सं अछि, जहिया सं मनुष्य बाज' लागल। ई सत्य जे जहिया सं मानव लिपिक निर्माण कयलक तहिये सं लेख्य अवग्राही भाषा विकास भेल। संभाष्य अवग्राही भाषा सं पूर्व मानव सांकेतिक अवग्राही भाषाक प्रयोग करैत छल, किएक तं ओकरा समक्ष नहि तं शब्द छलै आ नहि विचार आ एकर व्यापक आयाम। इहो सत्य जे मानव शब्दक अविष्कार क' सांकेतिक अवग्राही भाषा कें संभाष्य अवग्राही भाषामे रूपांतरित कयलक तथा लिपिक विकास क' संभाष्य अवग्राही भाषा कें लेख्य अवग्राही भाषामे लिपिगत कयलक। एहि तरहें भाषाक विकास सांकेतिक अवग्राही भाषा सं लेख्य अवग्राही भाषा धरि गेल। आब तं कंप्यूटराइज्ड भाषाक रूप सेहो देखबामे अबैत अछि। तें लेख्य अवग्राही भाषा सं भाषाक विकास नहि

मानल जयबाक चाही। मानवक आदिम रूप जंगली छल आ मानव, समुदायमे एहि क' परस्पर जे अपन आवश्यक आवश्यकता वा दैनिन्दिन आवश्यकता हेतु सहयोगक अपेक्षामे क्रिया-व्यवहार करैत छल होयत, ओहि भाषाक रूप सांकेतिक हेतैक, किएक तं ओरा लग संभाष्य अवग्राही भाषा नहि हेतैक। ओ मात्र अस्तित्व रक्षाक क्रिया-व्यवहारक लेल सांकेतिक अवग्राही भाषाक प्रयोग करैत होयत। जेना फल देखि क' केओ समुदाय कें हाथ वा आओर सं इशारा क' संकेतमे देखबैत हेतैक। एहिना जलाशय देखि कें समुदाय कें इशारामे देखबैत हेतैक।

वस्तुतः संभाष्य अवग्राही भाषाक उत्पत्ति एकर आवश्यकता सं बेशी प्रकृति कें जनबाक जिज्ञासा सं भेल। माने आदि वैज्ञानिकक मोनमे प्रकृति कें जनबाक विचार आयल होएत आ यैह विचार ओकरा एहन गति देलकैक जे ओकर चेतना सं शब्द परिकल्पित होअए लागल हेतैक। धीरे-धीरे वैज्ञानिकक समुदाय बनल होयत आ प्रकृतिक चिन्हान क' ओकरा नाम रूप बनाओल गेल। जल, थल, आकाश, तारा, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्रादिक संगहि जलचर, थलचर, नभचर, वनस्पति जगत, देवी-देवता, ईश्वरादिक नामकरण मनुष्यक वैज्ञानिक योजना थिक। जहिना-जहिना ई लोकनि प्रकृतिक रहस्यमे जाइत गेलाह, तहिना-तहिना प्रकृतिक रहस्य सेहो खुलैत गेल। एही क्रममे प्रकृतिक भ' सं प्रकृतिक पूजा सेहो आरंभ भेलैक। गाछ, बिरिछ, पशु-पक्षी, संपादिक संग नदी, पहाड़ादिक पूजा सेहो प्रारंभ भेल हेतैक। जतय एक दिसि एकर कारण भ' आ आश्चर्यक भाव अछि, ततहि दोसर दिसि एकर कारण एहि विज्ञान कें जानिलेब छल जे मानवक अस्तित्व एहि प्रकृतिक बिना संभव नहि। जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा माटिक पूजाक पाछू यैह कारण छैक, जे मानव धरिक अस्तित्व एकरे सं छैक अर्थात् एकरा बिना जीव-जन्तु तथा वनस्पति संसार भइये नहि सकैत अछि। तें ई कहब समीचीन होयत जे मानवक विज्ञान दृष्टि सं शब्द अर्थात् भाषाक उत्पत्ति भेल। तें शब्द कें वस्तु आ भावक प्रतीक मानल जाइछ। शब्दक बिना संसार अज्ञान अछि, अज्ञेय अछि। ई शब्द थिक, ई भाषा थिक, जकर सार्थकता वस्तु एवं एकर भावमे वा विशेषतामे वा क्रियामे दृष्टिगत होइत अछि। तें शब्दक संगहि वा भाषाक संगहि लोक शब्दक सांकेतिक वस्तु वा भावक प्रत्यक्षण क' ओकरा बूझि जाइत अछि।

एतबा निश्चय जे भाषा श्रुतिमे होयत। कानो-कान भाषा सीखल जाइत होयत। प्रकृतिक गुणी चेतनामे गीत-नाद, नाच, आदि मनोरंजनार्थ क्रिया-कलाप आयल होयत आ ओ लोकनि वन्य प्राणी होइतो नाचैत होयताह, गबैत होयताह। प्रकृति पूजा आरंभ भेल होयत तं विधि-व्यवहारक निर्माण सेहो कयने होयताह। एहि तरहें लोक संभाषणमे विधि-व्यवहारक क्रियान्वयन भेल होयत। आदि कालमे जखन मानव लग संभाष्य अवग्राही भाषा नहि रहल होयत तं ओ अपन दैनिक उपयोगक लेल सांकेतिक अवग्राही भाषा सं काज लैत होयत। जहिना-जहिना शब्द आविष्कृत होइत गेल, प्रकृति कें नाम रूप प्रकृतिमे बदलल जा लागल, तहिना-तहिना मनुष्य प्रकृतिक प्रति जिज्ञासु तथा एकर रहस्यक प्रति उत्साहवर्धित होइत गेल होयताह आ मानव प्रकृति पूजाक अवधारणा तथा एकर विधि-विधानक मनोभाव पूजा हेतु सेहो बना लेने होयत आ एही क्रममे लोक विधि व अन्य प्रकृति पूजाक विधि-विधान बनल होयत। मनोरंजनार्थ नाच, गीत आदि बनल होयत।

वस्तुतः प्रकृतिक रहस्य जनबाक क्रममे आस्था आ विश्वासक जन्म भेल होयत। भ' तथा आश्चर्यक भाव मनुष्य कें एहन विश्वास दियौने हेतैक जे मनुष्य अपन रक्षा देव-पितरे सं मांग' लागल होयत। आ एही क्रममे विधि-बनल होयत। तें भाषामे एहन भाव निहित अछि। हमरा जनैत संभाष्य अवग्राही भाषा एही वैज्ञानिक प्रक्रियाक उत्पाद थिक। भयाक्रांत मन प्रकृति आ ईश्वरक पूजा क' मन कें शांत तथा भ' रहित होएबाक मनोवैज्ञानिक उपाय ताकि लेलक। संभाष्य अवग्राही भाषा एही क्रममे लिपिक अविष्कार सं लेख्य अवग्राही भाषामे संगठित होअए लागल। तें सभ सं पहिने सांकेतिक अवग्राही भाषा, फेर शब्दक अविष्कार सं संभाष्य अवग्राही भाषा आ तत्पश्चात् लेख्य अवग्राही भाषाक विकास भेल।

ओना भाषा अर्थात् शब्द अविनाशी आ अनादि तत्व थिक। शब्देमे शरीर आकृत भ' क्रियाशील होइत अछि। प्रत्येक संकेत वा शारीरिक भाषा शब्दे आ एकर क्रियात्मक रूप थिक। लोक जखन मरि जाइत अछि, तं शब्दक क्रिया समाप्त भ' जाइत अछि। माने जीवित लोकक चेतना शब्द थिक, तें शब्द कें नित्य आ अनादि कहल जाइत अछि। आदि तं एकर अनुभव आ शब्दक अविष्कार थिक। सभ किछु एहि प्रकृतिमे अव्यक्त अछि, जे अनुभव प्रमाणमे व्यक्त होइत अछि। अस्तु, शब्द अविनाशी, अनादि अर्थात् नित्य होइत अछि, जे अनुभवक माध्यमे आविष्कृत होइत अछि। तें एकर आदिकाल संभाष्य अवग्राही भाषा सं होइत अछि। वस्तुतः हमर अचेतनमे जन्म-जन्मान्तरक संस्कार होइत अछि आ ई संस्कार शब्द व भाषा रूपमे होइत अछि, तें प्रतिभाक नव-नव प्रमाण मन ढूंढ़ि लैत अछि। अचेतन बाजैत अछि आ चेतन ओकरा व्यक्तें करैत अछि। अचेतनमे ज्ञानक भंडार अछि, जे पूर्वजन्मक संकलन होइत अछि। वैज्ञानिक वा विचारक एकरा अनुभव करैत अछि तथा चेतन क्रिया सं व्यक्त करैत अछि। यैह कारण थिक जे कोनो विचारक वा चिंतक अपन अचेतन सं नव-नव जिज्ञासाक नव-नव समाधान प्राप्त करैत अछि। शब्द वा भाषाक उत्पत्ति अचेतन सं चेतनक क्रिया थिक। सभ नवता अचेतनमे होइत अछि आ ओ चेतन क्रिया सं व्यक्त होइत अछि। वस्तुतः संभाष्य वा लेख्य अवग्राही भाषा अचेतन सं चेतनक क्रिया थिक।

संभाष्य अवग्राही भाषा अलिखित भाषा प्रमाण थिक तथा लेख्य अवग्राही भाषा लिखित भाषा प्रमाण थिक। ओना ऋग्वेद सं हमरा, जे श्रुति छल, लेख्य अवग्राही भाषा भेटैत अछि जे लिखित भाषा प्रमाण थिक, मुदा एकर अतिरिक्त संस्कारोत्सव तथा पाबनि-तिहारमे जे

विधि संभाष्य अवग्राही अछि, ओ अलिखित भाषा प्रमाण थिक। वेदकाले सं लिखित आ अलिखित-दुनू समानान्तर रहल अछि। लिखित कें वेद कहल गेल अछि तथा अलिखित कें लोक। लोक आ वेद-दुनूक प्रयोग हजारो वर्ष सं भ' रहल अछि। एकरा संस्कारोत्सव अतिरिक्त पाबनि-तिहारमे नीक जकां देखल जा सकैत अछि। तें ई मानब समीचीन जे मैथिली भाषाक अस्तित्व वेद काले सं अछि। हम जनैत छी जे बाल्मीकि रामायण मे, सभ भाषाक ज्ञाता हनुमान जी मां सीता सं जे वार्ता कयलनि ओ मानुषी भाषाक रूपमे उद्धृत अछि। अर्थात् मानुषक भाषा मानुषी कहबैत अछि। ऋग्वेद प्रथम मण्डलमे मानुषक मानुषी भाषाक स्वभाव उद्धृत अछि-

अध स्वनान्मरूतां विश्वमा सद्म पार्थिवम्। अरेजन्त प्र मानुषाः॥ 1/38/10

अर्थात् जे ध्वनि (स्वन) वायुक (मरुतां) अनन्तर (अध) बलाघात सं (अन्) प्रकाशित (विश्वमा) होइत अछि। जे पार्थिव शरीरक (पार्थिवम्) शब्द आ प्राणवायु थिक (सद्म) एकरे प्रवृत्ति (प्रकृति) योग (प्र)। जेना-माया, मोह, ममता आ मधुरता सं मनुष लोकनि (मानुषाः) अर्जन करैत अछि (ओजन)। मानुषक स्त्रीलिंग मानुषी होइत अछि, जेना-मैथिलक स्त्रीलिंग मैथिली। अर्थात् मानुषमे इकारान्त कयला सं मानुषी होइत अछि। तें मानुषक मातृभाषा मानुषी कहबैत अछि, ओहिना जेना मैथिलक मातृभाषा मैथिली।

ऋग्वेदमे मानुषी भाषाक जे स्वभाव देखाओल गेल अछि, वस्तुतः ओकरे आइ हम मैथिली भाषा कहैत छिएक, जकरा विद्यापतिक 'देसिल बयना' कहलनि, तकरे 1801 ई.मे कोलब्रुक मैथिली कहलनि आ आइ मानुषी भाषा मैथिली कहबैत अछि। हम जनैत छी जे ऋग्वेदमे बहुत रास वैचारिक जातिक उल्लेख अछि- देव, दानव, असुर, राक्षस, मानुष, पिशाच, गंधर्व आदि ताहिमे मिथिलाक जन समूह कें मानुष (मनुष,(ख) कहल गेल अछि, तें मानुष सं मानुषी भाषा सहजहि आदि मैथिली प्रमाणित होइत अछि।

एहिमे संदेह नहि जे संस्कृत भाषा देवभाषा थिक आ एकर लिपि देवनागरी। हमरा जनैत भाषा ऋग्वेद कालमे लेख्य अवग्राही भाषा भेल तथा मानुषी (मैथिली) भाषा संभाष्य अवग्राही भाषा बनि क' रहि गेल। महत्वपूर्ण तथ्य ई अछि जे ऋग्वेदमे मानुषी भाषाक मानुष प्रवृत्ति कें आ ओकर क्षेत्र विशेष कें सेहो रेखांकित कयल गेल अछि-

नि ओ मामाय मानुषो दघ्र उग्राय। जिहीत पर्वतो गिरिः॥ 1/36/6

अर्थात् प्रवृत्तिमे रत मानुष (यामाय मानुषो) निश्चित रूप सं (नि वो) उग्र होइत छथि (उग्राय), जाहि लेल ओ दण्डित (दघ्र) सेहो होइत छथि। हुनक जीवन (जिहीत) पर्वत क्षेत्रमे (पर्वतो) व्यतीत होइत अछि आ ओ पहाड़क ऊंचाइ (गिरिः) मे जिबैत छथि। वस्तुतः ई क्षेत्र जनकपुर आ ओकर लग-पासक अछि। जनक जी इच्छवाकु मनु कुलक छलाह, तें हुनका तथा हुनक प्रजा कें मानुष कहल गेल अछि आ हुनक भाषा कें मानुषी भाषा। मानुषक प्रवृत्ति व प्रकृत्ति उग्र एही कारणें रहल अछि, किएक तं काम, कामना, लोभ, मोहादि तत्व कें ई अपन जीवनक आधार मानलनि। अस्तु, मैथिली भाषाक उत्पत्ति लोक रुचिमे प्रवृत्तिमूलक वा प्रकृतिमूलक अछि।

मकार योग सं, मानुष, मानुषी, मैथिल, मैथिली आ मिथिला, जकर प्रवृत्ति वा प्रकृतिगत विशेषता माया, मोह, ममता, मधुरता रहल अछि, बनल अछि। वस्तुतः मानुषी भाषेक दोसर नाम मैथिली थिक। वाल्मीकि रामायणक सुंदर काण्डमे सेहो एहि भाषा कें मानुषी भाषा कहल गेल अछि-

अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्। मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता॥

(30/97)

हनुमान जी स्वगत सोचैत अछि, एहन स्थितिमे हमरा ओहि सार्थक मानुष वाक्य अर्थवत् भाषाक व्यवहार करबाक चाही, जे मां सीताक नैहरक भाषा थिक। एहि सं मां सीता कें हमरा ऊपर संदेह नहि हेतनि आ ओ हमरा निन्दित नहि बुझतीह।

एहि श्लोक सं पूर्व हनुमान जी सोचैत छथि जे एक तें हमर शरीर अति शूक्ष्म अछि, दोसर हम बानर छी, जं मानुषी युक्त संस्कृत भाषामे मां सीता सं वार्ता करब वा जं द्विजक भांति संस्कृत भाषाक प्रयोग करब तं सीता हमरा मायावी रावण बूझि भयभीत भ' जेतीह-

अहं ह्यति तनुश्चैव वानरश्च विशेषतः। वाचं योदाहरिष्यामि मानुषीमिहं संस्कृताम्॥ यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्। रावणं मन्यमानां मां सीता भीता भविष्यति॥

(सुंदर काण्ड 30/16-18)

वस्तुतः वाल्मीकि रामायणक ई संदर्भ स्पष्ट करैत अछि जे हनुमान जी मां सीता सं मानुषी भाषामे वार्ता कयलनि। जें कि जनक इक्ष्वाकु मनु कुलक संतान रहथि, तें हिनका मानुष आ हिनक जन-भाषा कें मानुषी कहल गेल अछि। महाभारतमे वन्दी आ अष्टावक्र संवादक क्रममे (तीर्थयात्रा पर्व) जनक अष्टावक्रक मानुषी भाषाक प्रशंसा कयलनि अछि-

श्रृणोमि वाचं तव दिव्यरूपाम मानुषीं दिव्यरूपोऽसि साक्षात्।

जनक जी कहैत छथि जे हे ब्राह्मण! हम अहांक दिव्य रूपक मानुषी भाषा वा वाणी सुनि रहल छी, अहां स्वयं साक्षात दिव्य रूप छी। संभव अछि जे संस्कृतक संगहि अष्टावक्र उच्च कोटिक मानुषी भाषाक प्रयोग करैत होयताह। तें राजा जनक हिनक मानुषी भाषाक प्रशंसा कयलनि।

ओना श्रीमद्भागवत् महापुराणमे राजा निमिक पुत्र कें जनक, विदेह तथा मिथिल (मैथिल) कहल गेल अछि-

जन्मना जनकः सोऽभूद् वैदेहस्तु विदेहजः। मिथिलो मंथनाज्जातो मिथिलायेन निर्मिता॥

(अ.-93/93)

अर्थात् जन्म लेबाक कारणें जनक, विदेह सं उत्पन्न हेबाक कारणें वैदेह, मंथन सं उत्पन्न भेलाक कारणें मिथिला वा मैथिल नाम जनक जीक पड़ल तथा हिनकहि मिथिल नामक कारणें एहि भूभागक नाम मिथिला पड़ल। अस्तु, मिथिला नामक कारणें एहिठामक जनता कें मैथिल तथा एहिठामक

भाषा कें मैथिली मानब ओहिना स्वाभाविक अछि, जेना मानुषक भाषा कें मानुषी मानब।

लेख्य अवग्राही भाषा दृष्टि मैथिली भाषा प्रमाण कें ऋग्वेद श्रुति सं उल्लेख्य मानैत अछि। ओना कथित विद्वान लोकनि वाल्मीकि रामायणमे उल्लेख्य मानुषी भाषा कें प्राकृत मानैत छथि। मुदा ऋग्वेदक साक्ष्य अनुसार मानुषी भाषाक स्वभाव मैथिलीक स्वभाव अछि; किएक तं ई मातृ मधुरता अर्थात् मिठास सं भरल भाषा थिक, तें एकरा जनक जी दिव्य वाणी कहलनि अछि। ऋग्वेदमे मानुषी भाषाक भूभाग तथा मानुषक प्रवृत्ति सेहो स्पष्ट अछि, जे मिथिला क्षेत्रक प्रमाण तथा दर्शन थिक।

मैथिल शब्द मथ् धातुमे इलुच प्रत्यय कयला सं भेल अछि, जकर अर्थ इलाक मंथन होइत अछि अर्थात् शक्ति वा बुद्धिक मंथन करैबला मैथिल कहबैत छथि। एहि दृष्टिएं मैथिली भाषाक अर्थ शक्ति वा बुद्धि मंथन करैबला वाणी कहाओत। मिथिला शब्द सेहो मिथ-इला सं बनल अछि, जकर अर्थ शक्ति वा बुद्धि प्रशस्ति होइत अछि। अस्तु, जहिया सं वेदक प्रशस्ति आ प्रकृति पूजा प्रारंभ भेल, तहिये सं मैथिली वा मिथिलाक अस्तित्व अछि। मानुषी भाषाक रूपमे ऋग्वेद साक्ष्य, रामायण एवं महाभारतक साक्ष्य उत्तम अछि, मिथिला, मिथिल (मैथिलीक) साक्ष्य श्रीमद्भागवत महापुराणमे भेटि जाइत अछि। तें ई कहब अत्युक्ति नहि होयत, जे मैथिलीक प्राचीन नाम मानुषी भाषा थिक।

वस्तुत: मैथिली संभाष्य अवग्राही भाषाक प्रमाण सातम् शताब्दी धरि बनल रहल आ तत्पश्चात् एहि भाषामे काव्यक रचना प्रारंभ भेल, जे लेख्य अवग्राही भाषाक प्रमाण बनल। लोकवेद विधि-व्यवहारक दृष्टिएं एखनो मैथिली भाषा अलिखित संभाष्य अवग्राही भाषाक प्रमाण अछि। एहि पर गहन खोजक आवश्यकता अछि। वैदेही लिपि, जकरा मैथिली लिपि (तिरहुता लिपि) कहल जाइछ, एकर विकास भेलाक बाद मैथिली लेख्य अवग्राही भाषामे रूपांतरित भ' गेल।

प्रश्न उठैत अछि जे मानुषी भाषा वा मैथिली भाषा कें दिव्य गुण सम्पन्न किएक कहल गेल अछि? वस्तुत: ई प्रवृत्ति वा विचारक भाषा थिक। दोसर ई जे ई संस्कृतक निकटतम भाषा थिक। वस्तुत: मैथिली भाषाक प्रयोग ऋग्वेदे काल सं अलिखित प्रमाणमे भेटैत अछि। अस्तु, मानुषी भाषा कही वा मैथिली भाषा दुनूमे कोनो अन्तर नहि अछि। मैथिली मनस क्रिया वा मन्थन क्रियाक भाषा थिक। ई प्राकृत नहि शुद्ध मैथिली थिक, तें एकरा देशज प्रमाणमे ऋग्वेदे काल सं देखल जा सकैछ।

अस्तु, भाषाक विकास सांकेतिक अवग्राही भाषा सं लेख्य अवग्राही भाषा तकमे भेल। 'मैथिली' नामकरण कोलब्रुक द्वारा 1801 ई.मे भेल, ओहि सं पूर्व मैथिली सीताक लेल प्रयुक्त भेल अछि। प्राय: मैथिली नामकरण सं पूर्व आधुनिक कालमे 'मिथिला भाषा' कहल जाइत छल। मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता ऋग्वेदेमे निहित अछि, मुदा हमरा जनैत ऋग्वेद सं पूर्वहि एकर विकास मानुषी भाषाक रूपमे भ' गेल हेतैक, जकरा श्रुतिमे आनल गेलैक आ पुन: लेख्य अवग्राही भाषा मे। वस्तुत: मानुषी भाषा मैथिली भाषाक अतिप्राचीन नाम थिकै। एहि प्रमाणक बाद कोनो संशय नहि हेबाक चाही, जे मानुषी भाषा ऋग्वेद प्रमाण क भाषा थिक, जकरा आधुनिक कालमे मैथिली भाषा कहल जाइछ।

सहायक ग्रंथ

1. ऋग्वेद प्रथम मण्डल : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा; नई दिल्ली
2. वाल्मीकि रामायण : गीता प्रेस, गोरखपुर
3. महाभारत : गीता प्रेस, गोरखपुर
4. श्रीमद्भागवत महापुराण : गीता प्रेस, गोरखपुर
5. भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य: ले. राम चैतन्य धीरज, शेखर प्रकाशन, पटना-24

मातृत्व

✍ रूपा ठाकुर



नारी जीबन भेल सुसज्जित
जखन संतान क' केलहुं अर्जित।
निरूसंतानक कलंक मिटेलहुं
माता केर हम दर्जा पेलहुं।।

पूर्वक सुख -दुख सब बिसरेलहुं
जहन संतानक सागर मे डुबलहुं।
जखन चलै आओर मारै ठेहुनियां
रून-झुन बाजे पैरक पैजेनियां।।

एहि अवसर केर कि कहु वर्णनि
भार्या संग कहेलहुं मां जननी।
लेस मात्र जे गुम-सुम देखी
गोद उठाइ आंचल सं पोछि।।

मन अधीर सब सुधि हरायल
चांद बला लोरी हम गायल।
जहन देखि हर्षित भ' गेला
दुख बेकल सबहिं मिट गेला।।

मां शब्द सुनि हम आह्लादित
बड अभिलाषा छल ई चाहत।
संतति त' अय ओ पदारथ
मातु-पिता संग जग क' तारत।।

सम्पर्क: द्वारा, बबलु ठाकुर, ग्राम-पोस्ट : सुगौना, भाया : राजनगर, जिला : मधुबनी-847235
फोन : 7042980681, ईमेल : rupa.thakur1208@gmail.com

पोथी चर्चा

आजुक समय मे जखन मैथिली साहित्यक आलोचनाक स्पेस खाली अछि तखन पोथी समीक्षा सेहो कम्मे भ रहल अछि। लोक फेसबुक पर दू-चारि लाइन लिखी के छोड़ि दैत अछि आ लाइक, कमेंट्स देखि के हुनकर मन तिरपित भ' जाइत छैन जेना सिमरिया धाममे गंगा नहा लेलहुं। एहन काल मे रोमिशा झा एक सशक्त समीक्षक के तौर पर मैथिली मे आगू आयल छथिन। ओना हिनकर कविता मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाके सबटा प्रतिष्ठित पत्रिकामे प्रकाशित आ चर्चित भेल अछि। हिनकर मैथिली मे प्रथम कविता संग्रहक विमोचन 2019 मे बसंतपंचमी पर होयत। रोमिशा झाक लेखनीमे नीक गप ई जे ओ नीक सं पोथी के पढ़य छथिन जेकर प्रदर्शन हुनकर समीक्षा मे लखाह दैत छैथ।

✍ रोमिशा झा



लेखिका मैथिली कविता केर सशक्त युवा हस्ताक्षर छथि। हिनक कविता मैथिली आ हिंदी के प्रतिष्ठित पत्रिका सभ मे प्रकाशित भ' चर्चित भेल छनि। ओ आलोचनाक क्षेत्र मे सेहो सक्रिय छथि। हिनक पहिल मैथिली कविता संग्रह शीघ्र प्रकाशित होयबला छनि। हिनक पेंटिंग मे सेहो रुचि छनि।



मैथिली कविताक संसार मे किछु महत्वपूर्ण पोथी सभ आयल अछि। एहि क्रम मे सबसं पहिने हम महेन्द्र जी द्वारा लिखित 'मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी' के बात करैत छी। हिनक कविता सभ के पढ़ैत काल ई सहजहिं बुझा जाइत अछि जे कवि कें ग्रामीण संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज सं कतेक प्रेम छनि। कविता मे उमैरक अनुभव परिपक्वता सं बजैत अछि, जे जीवन के बहुत रास उतार-चढ़ाव देखलाक बादो ई विश्वास दियाबैत छथि जे जीवन सुंदर होएत अछि आ ताहि लेल प्रेम कें समेट के राखब बड्ड आवश्यक। हिनकर कविता सभ मे मानवीय संवेदनाक स्तर प्रखर छन्हि आ बदलैत समयक संग पतनोन्मुख सामाजिक चेतना दिस ई बेर बेर इंगित करैत छथि। कविता के एकटा खूबी भाषाक विलक्षणता अछि। खांटी मैथिली शब्द जे समयक संग मैथिली कविता सं भुतिया गेल अछि ओकरा ई विशुद्ध मैथिली शब्द सभ सं भाषा के मौलिकता के प्राणवान राखबाक श्रेयस्कर काज केने छथि। कविता मे बिंबक प्रयोग संतुलित अछि आ कविता कें सौंदर्य प्रदान करैत अछि नहि कि शब्दक भारी-भड़कम मकड़जाल बुनि पाठक के ओहि मे ओझरेबाक यत्न।

'एकटा विषधर जागल' कविता मे वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति सं उत्पन्न होइत सजग नागरिकक बेचैनी आ आन्तरिक द्वंद्व के स्पष्ट चित्रण भेटत जाहि मे ओ अन्त मे ई स्पष्टतः कहैत छथि जे जा छरि मनुष्य स्वयं मे शाक्ति, शालीनता आ निर्भिकता नहि आनत ता धरि समाज सं विष समाप्त करब असंभव। ओ गुहारि लगबै छथि-

कने जोड़ सं नगाड़ा बजबियौ
असुर भयाउनि के सोर पाड़ियौ...॥

मतलब कोनो भी खराबी सं युद्धक उद्घोष स्वयं करबाक प्रयत्न सबसे सही उपाय।

कविता 'भेटल होयत चिट्ठी' मे ओ बहुत सहजता सं साम्प्रदायिक असहिष्णुता के वर्णन करैत आग्रह करैत छथि

संपर्क : 166, डीडीए फ्लैट्स, तीसरी मंजिल, खिड़की गांव, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017
ईमेल : romisha094@gmail.com, *मो.:* 9810882109

जे मीडिया सदिखन नून, तेल, मसल्ला लगा समाचार के प्रचार-प्रसार मे सफल होइत अछि आ जोड़-तोड़ केर राजनीति देश मे फलैत-फुलैत रहैत अछि मुदा एहि सं पहिने कि सभ खत्म भ' जाए ओ आग्रह करैत छथि अप्पन मीत सं-

हिमगिरिक छोट पैघ श्रृंखला कें
गंगा आ वितस्ताक लहरि कें
दिशाहीन कृपाणक धार के
गांथि लेब--
अपन गुदड़ीक लाल कें गीत!
गांथि दिय हमरा शीघ्र...!

'आरोग्य-धाम' कविता मे ओ बहुत सहजता से ग्रामीण मन:स्थिति दर्शौलनि अछि, जे स्वयं के कोना समर्पित क' दैत छथि परम शक्ति के सम्मुख आ कोना भीषण सं भीषण कष्ट के उपचार आस आ लोकविश्वास मे ताकि लेल जाइत अछि आ अंधविश्वास पुस्त दर पुस्त निर्बाध चलैत रहैत अछि।

कविता 'सुरते सुरता' मे गाम सं जे शहर दिस पलायन भ' रहल अछि आ ताहि सं संबधक हेरायल माधुर्यक जे पीड़ा अछि, से बड्ड नीक जकां देखायल गेल अछि। कवि लिखय छथि-

चौहद्दी के चारूकातक गाम
लगैछ सुरता सं संबन्ध तोड़ि
नहि जानि कतए पड़ा गेल...?

ई वास्तव मे अजुका गामक यथार्थ अछि जे प्रायोजित नहि छल मुदा स्वयं के शहरीकरण मे कखन युवावर्ग अपन गाम बिसरि गेला आ कोना आब औनायल राति आ भयावन दिन गामक यथार्थ बनि गेल से हुनको नहि बूझल। सभ काज सुरते-सुरता भ' गेल आ ताहि सं शीर्षक पूर्ण कविता के सत्यापित करैत अछि। हुनकर कविता 'गाम सं गाम ध रि' मे गाम लेल जे हुनकर आसक्ति छनि से ई पांति सं बूझल जा सकैछ, ''गाम हमरा आंखि मे बसल / अपन अरिपनक ठांव पर / सभ दिन सभ बेर / आंगुर पकड़ि बैसा लैत अछि, प्रेम सं।'' वास्तव मे अपन अरिपनक ठांव पर बैसि कवि जे सूक्ष्मदृष्टि से गामक बदलैत परिदृश्य, दृष्टिकोण, सामाजिक, आर्थिक आ मानसिक परिवर्तन के शब्द देलखिन अछि, से प्रशंसनीय। हुनकर शब्द...

गाम पुरान नक्शाक तमाम तर्क कें
सिलेटक आखर जेकां मेटबैत
कतेक घाव आगां बढ़ल लगैछ।

ई पीड़ा एखन प्राय: बिहारक सभ गामक अछि जे शहरीकरण के मायाजाल मे फंसि चुकल अछि आ गाम अप्पन विशेषता छोड़ि एकटा नकलची जकां बिना बुझने-सुझने शहरक अनुकरण मे व्यस्त अछि, जेकर भुगतान मानवीय संबंध के बदलैत समीकरण आ ग्रामीण कला-संस्कृति के ह्रास छियै।

विकासक यात्रा क्रम मे मानवीय संवेदना कतए हेरायल जा रहल अछि एकर समीचीन वर्णन ओ 'ई पुरबा' 'मेटायल पता, पर अबैत चिट्ठी' आदि मे करैत छथि। आ संगहि कविता 'हम मनुख लिखब' मे ओ सभटा सामाजिक विकृति देखलाक बादो आश्वस्त आ अडिग छथि जे ओ अपन कविता मे सामाजिक जीवनक राग-उपराग मे संबंधक सौहार्द के लिखता। ताहि से बदलल परिस्थिति के बादो ओ लिखय छथि-

''हे हमर इतिहास!
अहांक लेल जिन्दाबाद-जिन्दाबाद!''

कविता 'कोशी दर्शन' आ 'कोशी गीत' कोसी नदी के कारण जे अभिशप्त आ आतंकित जीवन कोसिकन्हा मे बसल लोक के जीबै पड़ैत अछि, तेकर मार्मिक विश्लेषण अछि। हर वर्ष बाढ़िक आतंक आ ओकर परिणाम जे कलेजा के ध ुकधुकी बढ़ेने रहैत अछि, ओ बहुत नीक सं एहि कविता सभ मे दर्शित होइत अछि।

''हमर मैंया कहैत छली' 'ई पुरबा' आगिक धधरा छलैक'' ''बाट अछि निस्तब्ध गुज-गुज राति नि:शब्द'' ''जीवन तकबा मे तल्लीन' आर सभ एहने बहुत रास कविता मे संवेदनाक स्वर प्रबल अछि जे बदलैत वा विवश संबंधक मारि सहैत जीवन मे भावनात्मक लेस मात्र लेल व्याकुल आ आग्रही स्वर लेने अछि।

कुल मिलाके पोथी पाठक लेल रुचिकर आ वैचारिक आयाम के विस्तार करबा मे सहायक रहत। 'फेर सं हरियर' रमण कुमार सिंह के पहिल मैथिली कविता संग्रह अछि। ई कविता संग्रहक सभ से पैग खूबी एकर भाषाक सहजता अछि। ई जनसामान्य के अपन क्षेत्रक बोल-चाल के मैथिलीक प्रयोग केने छथि जेकरा बुझबाक लेल कोनो शब्दकोषक आवश्यकता नहि। ई अप्पन कविता सभ मे सहजता से समाज के विभिन्न समस्याके एकटा अंखिगर दृष्टि से देखैत आ चित्रित करैत छथि। एहि मे कल्पनाक स्वर बहुत कम अछि जे अछि से जीवन मे हर आदमी द्वारा भोगल जा रहल कटु यथार्थ आ ओकर पीड़ा अछि। समाजक बदलैत स्वरूप मे बजारवादक बढ़ैत वर्चस्व के ओ बहुत सहजता से अपन कविता सभ मे अकानै छथि। रोजगारक ब्योंत मे गाम सं शहर दिस विस्थापित होइत जीवन आ तेकरा सं उत्पन्न भेल भावनात्मक खिन्नता आ लाचारी कविताक प्रमुख स्वर अछि। एकटा पत्रकार होएबाक कारणें छोट-सं छोट सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक कल गिला के संपूर्णता मे जीवनक सभ पा पर हिनकर चेतना जाग्रत रहै छन्हि। हिनकर कविता मे प्रेम कोना प्रेमी-प्रेमिकाक स्वप्निल रहस्य नहि मुदा जीवनक ठोस धरातल पर एक दोसरक चिंता करैत भेटत। कविताक सभसे पैग खूबी पुरुष होएबाक बादो स्त्री सुलभ मोन के बहुत नीक से बुझनाई आ ओकर पा मे अपन बात राखनाइ अछि। हिनकर कविता देश काल संग अपन स्वरूप निर्धारित करैत अछि। एहि मे आधुनिक विचारधाराक स्वर प्रखर अछि।

'साझी सपना', 'महानगर मे प्रेम', 'क्षमा करब मीता', 'फेर सं हरियर', 'गृहस्थी राग' ई सभ एहि संग्रहक एहेन कविता अछि जाहि मे प्रेम के महत्व

देल गेल अछि लेकिन बिना कोनो दुराव छिपाव, लागि-लपेट अस्पष्टता के अकानैत जीवनक कठोर सत्य के अकानैत प्रेम। 'क्षमा करब मीता' मे एकठाम ओ कहैत छथि–

सभ के बहराबय पड़ैत छैक एकसरे
एकसरे भोगय पड़ैत छैक भटकाव।

एहि कविता मे कवि प्रेम के ओइ पराकाष्ठा पर छथि जतए प्रेम बन्धन नहि मुक्ति के मार्ग होइत अछि। चेतनाक आयामक विस्तारक मार्ग होइत अछि।

ओहिठाम दोसर कविता 'महानगर मे प्रेम' ताहि स्वप्नक लाचारी आ उमेदक वर्णन अछि जे शहर आबिते कोनो गृहण ीक मोन मे सबसे पहिने होइत छैन्ह आ से छी अप्पन घरक सपना। ई सपना के पूरा करबा लेल प्रेमी दिन राति ब्योंत मे लागल रहए छथि व्याकुलताक सं अपने सपना बुझि। ई जे प्रेम अछि आ जीवनक आवश्यकता अछि ओकर तन्नुक तार से गृहस्थीक चादर कविता बूनय छथि।

कविता 'फेर सं हरियर' दामपत्यक जीवनक ओहि पहलू के देखार करैत अछि जतए जीवन संघर्ष मे लंबा यात्रा तय क' लेलाक बाद आवश्यक होइत अछि फेर सं प्रेमक नव कोंपल के ओहि पुरान मोन मे स्फुटित होएब जाहि सं जीवन मे बचल रहए छै हरियरी।

''गृहस्थी राग'' मे निम्न मध्यमवर्गी पति-पत्नी आ गृहस्थ जीवन के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बहुत सहजता सं कएल गेल अछि। ओ एक जग लिखै छथि–

''नै त' अहां
चानीक चम्मच ल के जन्मल छलहुं
आ नै हमरा जिनगी मे
पसरल छल फूल''

ई प्राय: सभ निम्नमध्यमवर्गीय परिवारक यथ अछि।

आगां ओ एहि कविता मे लिखै छथि–

''परस्पर विश्वासक गेरि थाम्हि
हम पार करैत रहलहुं
जिननीक अथाह धार''

वास्तव मे यैह परस्पर विश्वास गृहस्थीक सफलताक कूंजी होइत अछि।

''जखन बाढ़ि अबैत अछि एकटा एहन कविता अछि जे वास्तव मे समाज मे व्यक्ति के व्यक्तित्वक पतनक चेथड़ा उघारि दैत अछि। एहि मे एकदिस त' बाढ़ि मे दहाइत भसाइत लोकक असोथकित विश्वास अछि जे सभ पुन: ठीक हेतै। अपन घर-द्वार माल-जाल अरिजन-परिजन सभक हानि के बादो दुखित मोन सं आशा के बाट तकैत बाढ़ि पीड़ित लोकक मनोदशा जे–

''एहन दुर्दिनो मे लोक
बचा के रखैत अछि आस्था
कि एक दिन फेर
सभ किछु भ' जेतै सामान्य
फेर सं लहलहा उठतै जीवन''

एकरे दोसर दिस बहुत नीक जेका खुशीक ओहि आवेग के वर्णन अछि जाहि मे अपने सनहक दोसर मनुखक दुखक आगि मे लोक कोना अप्पन रोटी संकए लेल आतुर रहैत अछि। कोना सरकारी हाकिम सभक पारिवारिक पंचवर्षीय योजना शुरू भ' जाइछ। कतेक निर्लज्जता से बाढ़ि पीड़ित राहत कोष के उपयोग ओ सभ बेटीक कन्यादान आ अप्पन शौक मनोरथ लेल उपयोग करए छथि। आ एहि राशि के हस्तगत करना लेल जे ब्योंत करए पड़ैत अछि से कतेक पतितकर ई कविताक एहि पांति मे देखार होइत अछि–

''दूर गाम मे बाढ़ि-पीड़ित लोक
करैत रहैत अछि हाकरोस
मेमसाहेब मंत्री आ विधायकजी खातिर
मुस्किया-मुस्किया क' कनबैत रहैत छथिन
लवली-लवली पटियाला पैग।''

एहि कविताक अंतिम पारा मे कवि स्पष्ट करैत अछि जे एखनो संवेदना समाजक अंतिम विपन्न आदमी लग सबसे बेसी बांचना अछि आ से 'रघुआ' आ 'फेकना' लगल बचल अछि जे निम्न वर्ग के होयतो उच्च मानवीय संवेदनाक संवाहक अछि।

''नै कोनो मंत्री आ नै कोनो संतरी
रहय विपदा काल मे / यैह दुनू बचौलक
भरि गामक प्राण।''

संग्रहक एकटा कविता 'नर्जीव' मे भौतिक उपयोगितावादक जाल मे फसल मोनक आवेग अछि। जाहि मे कवि बहुत ईमानदारी सं स्वीकार करए छथि जे हालांकि ओ सभ वस्तुजात जेकरा प्राप्त करबा लेल मनुष्य स्वयं के मशीन बना लेलक अछि। संवेदना शून्यता जाहि मशीनक पहिल शर्त भ' गेल अछि। बदलैत सामाजिक, पारिवारिक समीकरण जेकरा कारणे भ' रहल अछि ओ सभ निर्जीव वस्तु अछि मुदा वास्तव मे एहि निर्जीव चीजक शक्ति सजीव सं बेसी जेकर प्रभावे व्यक्ति स्वार्थक आत्मकेंद्रित मशीन बनि गेल अछि आ जेकरा बिना अस्तित्वक कल्पना आब कठिन किएक त' मनुष्यक संवेदना के गतिशीलता एहि आधुनिक समाज मे एहने निर्जीव चीज सभ से प्राप्त होइत अछि।

कवि अपन कविता सभ जेना कि 'गरीब बच्चाक कविता' 'बाट पर लेटाइत फूल' 'नेना बुतरू पर करू विश्वास' मे छोटे-छोट बच्चा आ ओकर आंखि मे बसैत स्वप्न जे अगर साकार हुए त' देशक भविष्य कतेक .... रहत तेकर मादे बात करैत छथि। ओ एक आवश्यकता बुझए छथि जे बच्चाक सपना पूरा करब कोनो समाजक पहिल दायित्व होइत अछि। बच्चे मे ई क्षमता होइत अछि जे कठिन से कठिन परिस्थिति मे मानवीय संवेदना के निश्छलता के संग संवाहक बनल रहि सकैछ।

''चौबटिया पर लड़की' स्त्रीक स्वतंत्रताक कविता अछि आ कोना ओ सभ धरक दीवार फलांगि आब दुनिया देखय लेल यात्रा पर निकलल छथि लेकिन पुरुष समाजक मन एखनहुं पूर्वाग्रह सं ग्रसित हुनका पुरान फ्रेम मे फिट देखए चाहै छथि जेकरा कारणे घर से बहरायल

स्त्री के शंका आ अपमानजनक दृष्टि के सामना सहजहि करैत पड़ैत अछि। तेकरा बादो अजुका स्त्री दृढ़ता सं अपना लेल एकटा विस्तृत वितान गढ़बा मे सक्षम आ दृढ़ छथि।

''एकरा सभ सं बेपरवाह लड़की
स्वयं मे मग्न
दृढ़ता सं ठाढ़ अछि
एकसरि चौबटिया पर''

एकटा कवि के मुंह से समान मात्रा मे स्त्री, बूढ़ आ बच्चाक प्रति संवेदना आ सहिष्णुता सहजहि आकर्षित करैत अछि। हिनकर कविता सभ मे सदाचार आ नैतिकताक मिथ्या मापदंड नहि छैन्ह। बदलावक आवश्यकता बुझै छथिन्ह।

''जनगीक ओरिआओन करैत'' मनीष अरविंद जी के कविता संग्रह अछि। हिनकर कविता सभ मे संवेदनाक स्तर त' अछिए ओकरा संगे-संग भाव के सहजता से संप्रेषित करबाक क्षमता सेहो अछि। ई बहुत सहजता से समाजक अध्ययन, पर्यावरणक निरीक्षण आ राजनीतिक विषयुक्त वातावरण पर दृष्टि रासबा मे सफल छथि आ एकरा सभ पर ओ कविता मे चर्चा करैत छथि। जंगल, वन्य जीवन, प्रकृति के सुंदरता संग-संग ओकरा नचेबाक आग्रह सहजहि हिनकर कविता मे भेटैत छन्हि। हिनकर कविता बहुत काल छन्दयुक्त होइत अछि आ ताहि सं काव्यरस से भरल रहैत अछि।

जीवन के प्रति सकारात्मक सोच, उत्साह आ जीजिविषा कविता सभ मे बहुत जगह देखार होइत अछि। 'स्वागत नव जीवन' 'मृत्यु-मुख सं आपसी केर गीत' 'टांगिक राखल लगैछ' 'व्हीलचेयर पर मैसिक' 'पांच जुलाई सोलह के मेदान्ता' 'मां क' कोरा मे पडल छी' 'स्मृति मे' आदि कविता सभ जीवनक घटनाक्रमक कारणे आजल ओहेन कविता सभ अछि जाहि मे कविक ओहिने अनुभव अछि जेना कि कोनो बीया गाछक प्रस्सफुटन के क्रम मे स्वयं के गलैत काल करैत होयत। प्रस्सफुटन लेल जाहि जीवटपन के जरूरत होइत अछि सएह मृत्यु के परास्त क' नव जीवन मे पुनः वापसी लेल चाही। आ हिनकर बहुत कविता सभ मे ई प्रमाण भेटैत अछि।

'नहि डेराथि सूर्य' 'एकटा बगड़ा एही गर्मी मे' 'गाछ झमटगर' 'गुड़गांव' 'नाट रिकोमेंडेड' आदि कविता सभ मे प्रकृति के प्रति जागरूकता बढ़ेबाक संगे-संग ओकर संवर्द्धन आ संरक्षण लेल पाठक केर प्रेरित करबाक यत्न अछि। शब्द-शब्द मे प्रकृति द्वारा मनुख लेल निस्वार्थ प्रेम आ भेट के अद्भुत तरीका सं विश्लेषण अछि आ एकर विनाशक खतरा से चेतायल गेल अछि। एहि संदर्भ मे 'नाट रिकोमेंडेड' एकटा एहेन कविता अछि जेकरा मात्र मनीषे जी लिखि सकैत छलाह किएक त' एहि लेल जे संवेदना, प्रकृति प्रेम आ व्यापकता मे ओकर सामिप्यक अनुर्भव आ सूक्ष्मदृष्टि के आवश्यकता होइत अछि से हिनका लगे प्रचूरता मे अछि। एहि कविता मे खनन माफिया, राजनेता, सरकारी कर्मचारी आ आम आदमी सभक सटीक चित्रण अछि। वन एवं पर्यावरण विभाग मे जाहि तरहक व्यभिचार प्रकृति के दांव पर लगबैत पसरल अछि ओकर स्पष्ट चित्रण अछि।

जीवनक हर क्षेत्र मे पसरल घिनौना राजनीति पर कवि के चेष्टगर बजरि दौड़ैत अछि आ ओकरा कखनो ओ व्यंग्य त' कखनो स्पष्ट विद्रोह के स्वर मे उजागर करैत छथि जे कि किछ कविता सभ 'एें यौ... कहू त'' 'चारिम स्तंभ' 'मतप्तता गीत' 'सत्य' 'जनता लेल' 'दे ने दण्डवत' 'भेटने करतौ' 'पठरू गीत' आदि कविता मे देखि सकैत छी।

कृष्ण मोहन झा 'मोहन' जी के किताब 'ग्लोबल गाम से अबैत हकार' एकटा एहन पोथी अछि जाहि मे जीवनक सभ राग-विरागक बनैत बिगड़ैत आकलन अछि। बदलैत सामाजिक परिवेश ढहैत प्राचीन रीति-रिवाज, छत-विछत होइत संबंध एहि सभक कवि बहुत सूक्ष्मता सं वर्णन करैत छथि। पोथी मे अपन समयक भोगल जा रहल यथार्थ के संवेदनशील मोनक धरातल पर गहनता सं अकानैत शब्द देल गेल अछि।

उपभोक्तावादी जीवन शैली, बढ़ैत बाजारवाद, समाज मे पसरल पाखंड, मानवीय मूल्यक ह्रास, गाम छुटलाक कष्ट आ शहरक जीवनक टीस हिनक कविता सभक कथावस्तु छन्हि। व्यंग्य विधा हिनकर कविताक खूबी अछि।

'बंसबिट्टी' की फर्क पड़ैत छै? 'मन पड़ि जाइत अछि 'गामक इजोरिया' 'तरहत्थी पर रौद' एहि सभ कविता मे गामक नैसर्गिक जीवन छुतबाक कष्ट आ मर्म अछि।

''आइ नहि बजलै' 'जं बुझि सकितै लोक' 'उघरल घर' 'काठक मनुख' आदि कविता सभ पढ़ि बदलैनि समय मे बढ़ैलति संबंधक विश्लेषण अछि।

''कागतक झंडा' 'अखबार' 'इजोतक पोचारा' 'तैं कहैत छी धृतराष्ट्र' 'खाधिक परंपरा' 'चुनाव एक' 'चुनाव दू' आदि कविता सभ मे एकटा सजग नागरिक जे देश काल लेल चिंतित अछि से बाजि रहल छथि।

ओ अपन कविता लिखबाक कारण अपने एकटा कविता मे लिखैत कहैत छथि।

''लिखैत रहैत छी कखनहुं
प्रतिक्रियाक व्यग्रता मे
त कखनहुं संवेदनाक तीव्रता मे
आ करैत रहैत छी कामना
जे कविताक अक्षर-अक्षर
दुर्वाखक बनि
समय-सम्भावनाक शीष पर
आशीष बनि
बाजि उठै।''

एहि पांति सभ से कविता लिखबाक उद्देश्य के संग हुनकर आशान्वित सोच सेहो परिलक्षित होइत अछि जे पाठक धरि कविता पहुंचि वर्तमान परिस्थिति मे नीक बदलाव आयत अवश्य।

''औनायल रातिक भोर' मनोज शांडिल्य के एहन किताब अछि जेकरा

मे कविताक शब्द-शब्द पाठक के सुसुप्त चेतना के स्पंदित क' मस्तिष्क के सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि। हिनकर अधिकांश कविता सभक खूबी अछि जे ई वैयक्तिक या आत्मपरक होएबाक संभावना से मुक्त भ' निर्भीक ठाढ होइत, समाज लेल ठोस आ सशक्त स्तर मे बाजैत अछि। कविताक विषय वस्तु ई बहुत गंभीरता से चुनय छथि आ तखन अप्पन सूक्ष्मदृष्टि से खांटी मैथिली शब्द सं विस्तार दैत छथिन्ह। सामाजिक कुव्यवस्था, जन चेतनाक अन्तद्वन्द, जीवन मे विष जकां पसरल जाइत बजारवाद, असहिष्णुता, संवेदनशून्यता आदि कविताक मूल भाव अछि जेकरा कखनो स्पष्ट त' कखनो व्यंग्य रूप मे शब्द देल गेल अछि। ओना त' संपूर्ण पोथी बढ़िया अछि लेकिन तखनो किछ कविता सभ अछि जे बेसी प्रभावित केलक जेना कि 'अवरोध' 'मुक्तिद्वार' 'संघर्ष' 'लेर' 'भूरतंत्र' 'परिचय' 'सप्पत' 'अमरत्व' 'कतहु अनन्त मे' 'उपनिवेश' 'बन्न खिड़कीक ओहि पार' 'ताधरि' 'उबेर' 'सौंदर्य' 'आहार' अनभुआर' 'नीलकण्ठ' 'डर' 'क्रीडा' 'अकाल मृत्यु' 'सोहरल उडीसक जमात' 'एक आना स्वाधीन' 'उपलब्धि' 'माटिपर कविता' आदि महत्वपूर्ण कविता सभ अछि।

अजित आजाद जी के संग्रह 'पेन-ड्राइव मे पृथ्वी' समकालीन मैथिली साहित्य मे कविताक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण उपलब्धि अछि। ओना त' मैथिली काव्य साहित्य अथाह-अपार अछि जेना क एकटा समुद्र होइत अछि। पैग-छोट सभ कवि साहित्यिक यात्रा मे अग्रसर होइत मैथिली साहित्य के समुद्र मे अपना के मिलेबाक लेल निरंतर कविताक यात्रा मे संलग्न छथि आ ओहि मे सं किछु स्वर समुद्रक लहर जेकां दूर तक सुनल जा सकैछ। ओहि स्वर मे एकटा शक्तिशाली स्वर अजित आजाद छथि। वर्तमान मैथिली साहित्य मे बहुत रास प्रबल आ सक्षम युवा कवि सभ छथि जेकरा कारण मैथिली साहित्यक युग मे ई स्वर्ण युग कहा सकैछ। एहि मैथलीक नव स्वर सभक एकटा विशेषता अछि जे ई मैथिली कविता के वैश्विक स्तर पर राखबाक प्रयत्न मे लागल छथि। नव चेतना, नव दृष्टि नव आयाम आनबाक चेष्टा मे संलग्न ई स्वर के कवि सभ मे अजित जी प्रमुख छथि। कवि मैथिली कविता के अप्पन मौलिकताक संग सार्वभौमिक करबाक प्रयत्न मे प्रयासरत छथि जेकरा कारण कालक्रम मे मैथिली कविता देशक अन्य भाषाक संग कन्हा सं कन्हा मिला चलत आ बहुत उमेद अछि जे शीघ्रहि विदेशी भाषाक साहित्यक मध्य अपन धाप सेहो छोड़त।

'पेन ड्राईव मे पृथ्वी' कविता संग्रहक भूमिका अपना आप मे बहुत महत्वपूर्ण आ विचारणीय अछि। एहि मे कवि कविताक ततबा सूक्ष्मवर्णन विस्तार सं केने छथिन जे आन कवि सभ लेल ग्राह्य योग्य बहुत रास बात बहुत बेबाकी से हुनकर कलम सं बहरा गेल अछि आ जे लाभप्रद अछि।

कवि भूमिका मे स्पष्टत: लिखैत छथि जे हुनकर उपलब्धि थिक कवि होनाय। ओ लिखय छथि "लड़ब हमरा पसिन्न अछि। ढाही लेबाक साहस आ नैतिकता हम कविताक प्राणतत्व थिक। हम प्रतिरोध मे जीबैत छी। हमरा आसन नहि, आसनी चाही जाहि पर हम बैसा सकी संघर्षक क्रम मे थाकल-हारल जनता कें किछु काल। ओही समय मे हमर कविता अपन सार्थक भूमिकाक चयन करैत हुनका लोकनिक आत्मबल बढ़ेबाक उपक्रम करैत अछि।"

अजित जी कविता के परिभाषित करैत कहै छथि "कविता एकटा जीवन पद्धति थिक, चिंता आ चिंतन सं युक्त, आत्मश्लाघा आ अहंकार सं मुक्त" वास्तव मे कविताक ई परिभाषा जे बुझि जायत ओकर कलम स्वता पूर्वाग्रह सं मुक्त भ' श्रेष्ठ कविताक रचना करत।

कवि कविताक विकास लेल समीक्षा आ आलोचना के आवश्यक बुझै छथिन्ह आ एहि पर जोर दैत छथिन्ह जे युवा पीढ़ी के अपन समीक्षक होएबाक चाही। ई बात वास्तव मे अतिआवश्यक अछि नव दृष्टिकोण सं नव स्वर के समीक्षा कविताक उत्तरोत्तर श्रेष्ठता लेल बहुत महत्व राखैत अछि। एहि क्षेत्र मे युवा लेखक के नि:धोख भ' आना चाही।

हिनकर लिखल भूमिकाक एक-एक शब्द महत्वपूर्ण अछि। चाहे ओ कविता मे विचार, रिस्क लेबाक क्षमता, बाजारवाद द्वारा कविता पर कएल गेल हमला थोपड़ी प्रेम, सभ बात स्पष्ट आ सटीक अछि। जेना कि कवि स्वयं कहै छथि जे "उत्तम कविता भाव, विचार, भाषा, विवेक आ जीवनानुभवक सम्पृक्ति सं बनैत अछि।" 'पेन ड्राईव मे पृथ्वी' मे एहिने बहुत रास उत्तम कविता सभ अछि। कवि जीवन केर घोर सत्य आ आवश्यकता के चिन्है छथि आ कविता के कोमल संसार मे यथार्थक धरातल पर एकरा लिखय छथि। संग्रहक पहिले कविता मे कवि स्पष्ट करैत छथि जे जीवन मे हुनका कोनो भी भावक' अतिरेक पसंद नहि आ आवश्यकता से बेसी किछो आवश्यक नहि-

'बेसी किछु नहि
"नहि, एतेक प्रशंसा नहि
नहि, एतेक निन्दो नहि
नहि, एतेक भूख नहि
नहि, एतेक तृप्तियो नहि
एतेक आकुलता, एतेक
निश्चिन्त सेहो नहि किन्नहुं
नहि, किछु नहि एतेक
जतबे जीवन, ततबे किछु
जीवनक अनुपात सं बेसी किछु नहि
अपन दुनू हाथ सं बेसी किछु नहि।"

एहि आत्मबोध आ आत्मविश्वास के परिलक्षित करैत दोसर कविता 'जाठि' अछि

हम एकटा जाठ छी
जतेक हिलायत डोलायत लोक
गड़ैत जायब आर गहींर"

तेसर प्रण

✍ प्रणव कुमार झा



शिक्षा: बीएससी (गणित, प्रतिष्ठा), एमसीए, एमए (लोक प्रशासन), पीजीडीटी।

सम्प्रति: राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नयी दिल्लीमे वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी) कें पद पर कार्यरत। साहित्यमे विशेष रुचि। लघुकथा विधा।

सम्पर्क:
ग्राम: गोरापुर, जिला बेगूसराय (बिहार)
मो. 9312240126
ईमेल : jhapranaw@gmail.com

आइ राघव के सिविल सेवा के फ़ाइनल रिजल्ट आब' बला छैन एहि लेल काल्हि रातिये सं हुनकर मोन अकसक्क भेल छैन। एक्को क्षण लेल निन्न हुनकर आंखिमे नहि आबि सकलैन। किये नै होयन, कैयेक बरष सं जे हुनकर आंखिमे सपना छल से आब हुनका सं मात्र एक क्लिक के दूरी पर छल। कांपैत हाथ सं ओ रिजल्ट के लेल क्लिक केलाह आ।

ई देख हुनकर मन:स्थिति जे भेलैन तेकर व्याख्या नै कयल जा सकै अछि। हुनका भेलैन जेना हुनका पांखि लाइग गेल होइन आ ओ दूर आकाशमे उड़ल जाइ छैथ। परंच स्वयं के बिट्ठू काटि क ओ स्वयं के सचेत केलाह। फ़ेर बरबस हुनका नौ बरष पुराण ओ घटना मोन पड़ि गेलैन, आजुक स्थिति के जेकर प्रतिफ़ल कहल जा सकै अछि।

तखन राघव दसवींमे गेल छलाह। बाबूजी एकटा सामान्य सरकारी कर्मचारी छलाह। घरमे सबटा मौलिक सुविधा उपलब्ध छल किंतु भोग-विलासिता सं दूरी बनल छल। राघव के दू टा बाल सखा छलाह-बंटी आ मोंटी। बंटी के पिताजी सेहो सरकारी कर्मचारिये छलाह, आ मोंटी के पिताजी व्यापारी छलैथ। मोंटी के पिताजी ओकरा एकटा बढिया वीडियो गेम खरीद के देलखिन जकरा देखा देखी बंटी सेहो अपन पापा सं कहि क ओहने वीडियो गेम खरीदबा लेलक। आब दुनू दोस्त राघव के खिसियाब लागलैन जे हमरा सब लग एत्ते नीक वीडियो गेम अछि आ अहां लग नै अछि। ई सुनि-सुनि राघव बहुत दुखी भ' गेल छलाह। ओ बाबूजी लग जिद्द क' देलखिन जे बाबूजी हमरो लेल अहां ओहने वीडियो गेम मंगा दिय। बाबूजी हुनका समझेलखिन जे बौआ ओ वीडियो गेम बहुत महग अछि आ एखन किननाइ जरूरी नहि अछि, एखन दीदी के इंजिनियरिंगमे एडमिशन कराब के अछि ताहिमे खर्च हेतै, आर काज सब अछि। किन्तु राघव कहां मान' बला छलाह। ओ कहलाह जे मोंटी आ बंटी के पप्पो त' दियेलखिनये कि नै।

एहि पर बाबूजी बाजलाह जे मोंटी के पापा अमीर व्यापारी छैथ आ बंटी के पापा घुसखोर। हुनका सं अहां अपन परितर किये करै छी। एही पर राघव तुनैक क' बजलाह जे एहेन इमानदारी के ल' क' की करब जे बेटा के सौखो नै पूरा क' सकी। एते बाजि ओ मुंह फुला क' ओत सं चैल गेलाह। मुदा हुनका आंखिमे एखनो वीडियो गेमे नाचि रहल छल। रातिमे ओ तामसे खानो नै खेने छलाह। सुतलि रातिमे हुनका विचार एलैन जे किये नै बाबूजी के पर्स चोरा ली आ ओहिमे जे पैसा हेतै तहि सं वीडियो गेम खरीद लेब दोस्त संगे जा क'। ई सोचिते ओ उठलाह आ चुप चाप सं बाबूजी के कुर्ता सं हुनकर पर्स निकाइल लेलैथ।

भोरे बाबूजी के इलेक्शन ड्यूटीमे जेबाक छलैन। एहि लेल ओ भोरे अन्हरोखे पहर निकैल गेलखिन। हरबरीमे ओ अपन कुर्ता के जेबियो नै चेक केलखिन जैमे हुनकर पर्स छलैन आ पर्समे पाई-कौरी के संग संग हुनकर आई-कार्ड बस पास आदि भी छलैन। बसमे बैसल बाबूजी जाय छलाह कि तखने टिकट चेकर सब पहूंचल। बाबूजी सं टिकट मांगला पर ओ जखने पास निकाल लेल जेबमे हाथ दै छैथ त' आहि रे बा पर्स त' अछिये नै! आब हुनका भेलैन जे की करी की नै करी। ओ टिकट चेकर के बात बुझाब के प्रयत्न कर लगलाह पर ओ मान' लेल तैयार नै। हिनका लग जुर्मानो भर' के लेल पाई नै छल। ताहि समयमे मोबाइल फ़ोन के ओहन चलन सेहो नै छल। टीसी हुनका बस सं उतारि क' जिरह कर लागल। खैर ई मामला के कहुना सल्टिया क' कहुना कहुना बाबूजी ड्यूटी पर पहूंचला। किंतु समय पर इलेक्शन ड्यूटी पर नहि पहुंच के कारण अधिकारी हुनका पर काजमे लापरवाही के चार्ज लगा हुनका

सस्पेंड क देलकैन। दुखी मन सं बाबूजी घर पहुंचलाह आ मां के सबटा बात बता क' पुक्कि पारि क' कानय लगलाह।

एहि बीच राघव सेहो कतौ सं खेलैत-कुदैत घर पहुंचलैथ। पहिने त' हुनका माजरा किछु बुझनामे नै एलैन, मुदा बात बुझला उत्तर त' जेना हुनका काटु त' खून नै। आत्मग्लानि सं ओ डूबल जा रहल छलाह। होय छलैन जे धरती फ़ाटि जाय आ हम ऐमे समा जाय। सोचय लगलाह जे आइ हमरा कारण बाबूजी के सस्पेंड होब परलैन आ बदनामी से अलग। किछु क्षण त' हुनका अपना आप सं, जिनगी सं घृणा होमय लगलैन, रंग रंग के नकारात्मक खयाल आब लागलैन, किंतु फ़ेर ओ अपना आप कें सम्हारलैथ आ अपना आप सं कहलखिन जे हमरा सं आइ बड्ड पैघ अपराध भेल अछि आ हम डरपोक नै छी, हम एहि अपराध के प्रायश्चित करब। मुदा राघव के ई हिम्मत नै भेलैन जे ओ सबटा सच्चाई बाबूजी के जा क' बता दितेथ। तथापि राघव तत्क्षण तीन टा प्रण लेलैन:

1. जिनगीमे कखनो कोनो प्रकार के चोरी नै करब
2. कखनो कोनो गैरजरूरी मांग नै करब
3. बाबूजी के आई.ए.एस. बनि क' देखायब आ तखन एहि अपराध के लेले क्षमा मांगब।

तखन फ़ेर राघव बाबूजी के पर्स के अति गोपनिय रूप सं राखि देलैथ। ओ दिन अछि आ आइ के दिन अछि, राघव सदिखन अपन दोनो प्रण के पालन केलैथ आ प्रतिपल अपन तेसर प्रण के पालन करै के लेल प्रयत्नशील रहलैथ। आ आई ओ दिन आबिये गेल।

ई सब सोचैत सोचैत राघव के आंखि सं खुशी के नोर बह लागलैन। ओ ओत सं सीधे बाबूजी के पर्स निकाल गेलैथ, आ फ़ेर गेलाह बाबूजी के ई खबर सुनाब'। आइ-कालि्ह इंटरनेट के जमाना अछि आ कोनो न्यूज फ़ैलबामे मिनटो कहां लागै अछी। बाबूजी कें आन लोक सब सं खबर भेट गेलैन जे हुनकर बेटा गाम-समाज के नाक उपर केलक आ मिथिला के नाम आओर रौशन। बाबूजी खुशीमे झुमैत राघव के सामने एलैथ। आब राघव के अपना आप कें रोकनाइ नामुमकिन भ' गेल छल। ओ बाबूजी सं लिपैट क' जोर जोर सं कान लागलैथ। हुनका आंखि सं गंगा-यमुना बह' लागलैन। बाबूजी कहलखिन दुर बताह तों गाम-समाज के एते नाम केलैं आ एना बताह जेकां कानि किये रहल छैं! आब राघव कानैत कानैत नौ बरष पहिने के सबटा घटना सुनाब' लगलाह आ अंतमे बाबूजी के ओ पर्स निकालि क' देलखिन। आब सभटा ग्लानि सभटा अपराध बोध समाप्त भ' गेल छल। नोरक बसातमे सब साफ़ भ' गेल छल। जेना लागै छल जे घनघोर घटाटोप के बाद फ़रिच्छ भ गेल छल।

✍ बैकुंठ झा



दरभंगा जिलान्तर्गत सन्नहपुर निवासी बैकुंठ झा के प्रकाशित कृति संदर्भ समय सोपान (कविता संग्रह), बुझनुक (लघुकथा संग्रह) अछि। गन कैरिज फैक्ट्री, जबलपुर सं सेवानिवृत्त।

सम्पर्क:
2458/ए-15/1, अनुराधा कालोनी,
धोबीघाट, वाटर वर्क्स रोड
जबलपुर-482001 (मध्य प्रदेश)

अटैक

कक्का एकर खूब व्यावहारिक लोक। गामक आम, लताम, महीसक घी आदि सनेस सं प्रसन्न केने रहैत छलाह अधिकारी कें। ताही बले एकरहु नोकरीमे घुसिया देने रहथि। आब ई नोकरी सं मुक्त भेलए। चिक्कन पाइ भेटलैक त' शहरमे एगो चिक्कन घर बनौलक। नव नव डिहिआइत लोकक बीच।

परसू गृहप्रवेशक अनुष्ठान छैक। लगेमे मौसीक डेरा छैक। निमंत्रण देब' गेल दुनू बेकती त' पुतहु स पुछलथिन सासु - आर ककरा सभकें बजबैत छिऐक?

- अपन दुनू बेटी जमाय कें कहि देलिऐ। मा-बाबूजी आ भैया कें सेहो। सभ कियो आइ सांझ तक जुमि जेताह' - पुतहु कहलथिन।

- आ सासुर दिसि सं?

- नञि, ओकरा सभकें ककरो नहि। ओ सभ खुश रहओ जे एकरा अपन घर नहि छैक। ओ सभ आओत त' हमर घर देखि क' अटैक भ' जेतैक!

एकैसम सदी

नोकरीक विवशताक कारणें अनुजक विआहमे नहि जा सकल रहथि जेठ भाय। किछुये दिनक बाद दुरागमन रहैक। एहि बेर दू गोटे सं गेलाह अग्रज।

मुंह देखाउनक व्यवस्था भेलैक। घोघ हटाओल गेलैक त' कनियाकें बिहुंसैत देखलक सभ कियो।

भैंसुर बड़ी काल धरि इएह सोचैत रहलाह - 'की इएह छैक एकैसम शताब्दी?'

✍ हितनाथ झा



बिनु पेनीक लोटा

औ बाबू! कहब तं लागत छक द'। मैथिली फकरा, गप्प, खिस्सा, लोकोक्तिक प्रारम्भ सैकड़ो-हजारो वर्ष पहिनहिसं चलि आबि रहल अछि आ गप्प-गप्पमे चटकार लेबाक लेल सभ तत्पर रहैत अछि जकरा, परत दर परत तहिआयल राखलकें उघरबाक हेतु खाली आंखिक प्रयोजन, सं ताकि लिय', बादमे अहुरियो कटलासं नहिं भेटत। कतबो फकसियारि काटब, लोक घुरियो क' नहिं ताकत। अपन आंटा गिल करब तं करू। संस्था चलायब तं चलाउ, बिनु बुझनहुं टिटकारी मारबे करत, केहनो नीक काजपर पानि पड़वाक कोशिश करबे करत, अपनाकें सुच्चा कहैत, अहांकें टलहा सिद्ध करबाक लेल अपस्यांत रहत। अहांकें फेसबुकपर लाइक, कमेंट बिना पढ़नो करत, कोनो किताबक बिनु पढ़नो बखिया उघारि देत, मुदा दू टाका खर्चो नहिं करत किताब किनबामे, होहकारी एतेक मारत जे बादमे हंसारत हैत सं अलगे। किछु मैथिलकें अपन किछु विशेष गुण छैक कतबो बामा-दहिना डोलेबैक, टस सं मस नहि हैत। भुखले रहत तं सुतले रहत। हाथ-पैर कियै डोलाओत, कोन एकरा बेगरता छैक, जं ओ ई काज नहि करत तं की संसारक उनटन भ' जेतैक! कहबी छैक अन्हराकें जेहने सुतने तेहने जगने। घर-बाहर सभ टा गमल छैक। अपन धुनमे रमल छैक।' रमता जोगी बहता पानी'।

ह-ह हमर ई गप्प अनोन-बिसनोन लागत तं लागौ औ बाबू! काज भेलाक बाद कियो घुरिओ क' नहिं ताकत-नहिं पूछत, अहां अपन घर, ओ अपन घर...। मुदा टकध्यान अहींपर लगौने रहत, अपन फूस-खपरैल घरक भूर नहिं सूझैत छैक, अपन माथ परक टेटर तं सहजहिं नहि। अहांक पक्का मकानक झोल अल्ट्रासाउंडसं बेसी चकचक आ झकझक आ अहांक झपलो टेटर पारदर्शी जकां, ओकर अपने घरसं दृष्टिगोचर होइत छैक।

बतकुटब्बलि, बतकुच्चनि एना करत, जेना दूरदर्शनक दंगल, हल्लाबोलक प्रोग्राम हो, मिथिला मैथिलीक विकासक सभ भार ओकरे कपाड़ पर लादल हो, मुदा तैयो ताल ठोकबे करत, हारि किन्नहु नहि मानत, राड़ ठनबे करत, हम तं बजवे करब, जेना एखन हम बलधिगरो क' रहल छी, बिनु पेनीक लोटा जकां। ने ओर ने छोड़। सभमे घोसिआयब कोन बेगरता? मुदा ज्ञान झाक जोग देने बिना निन्न कहां?

सम्पर्क:
जयप्रभा नगर, सेलिब्रेशनक पूर्व, स्टील गेट, हज़ारीबाग 825301 झारखंड।
मो, 9430743070

कालक गाल सं वापस

✍ विनीता ठाकुर



जीवन मे किछु घटना एहन घटित होइत अछि जकर याद मानस पटल पर सर्वदा अंकित भ' जाइत अछि। घटना केर स्मरण होइते मोन भयाक्रान्त भ' जाइत अछि।

घटना 1998के कार्तिक (नवम्बर) मासक अछि। हम सपरिवार छैठ पूजामे शमिल होमय वास्ते दिल्ली सं गाम जाइ लेल मगध एक्सप्रेसमे सवार भेलऊं।

ट्रेन निर्धारित समय पर खुजल धिया-पुता सब छोट छल। छैठमे गाम जाई छलऊ सब साल, पटना उतरि मधुबनी आ ओतय सं गाम जेबाक छल। हम सब बहुत उत्साहित रही आ बच्चा सबके उत्साह त' दुगुना छल गाम जाई के, ओहुमे छैठ पावैन मे।

गाड़ी के भीड़ के वर्णन की कयल जाय छैठ- दीया बाती के समयमे किछु बेसिये रहैत छै। खुब ठसाठस भीड़ छल पर ओकर तकलीफ केर अहसास नै भेल कियैकि गाम जाइ के खुशी छलै सबके, सब हंसी खुशी छल। गाड़ी जखन बक्सर स आगू बढ़ल करीब आठ बजैत होयत लागल जेना गाड़ी भागि रहल अछि बहुत तेज रफ्तारमे।

एकाएक सब जागि गेलैथ आ भयभीत होबय लगलौं जे ई की भ' रहल अछि फेर कनिके कालक बाद सब एक दोसर पर खसय लगलौं अजीब स्थिति भ' गेलै। बच्चा सब छोट छल सब के चेहरा देखिकेय मोन व्यथित छल। एखनहु ओ चेहरा मानस पटल पर अंकित अछि। आब भगवान भगवती के अलावा कोनो रास्ता नै छल। साक्षात मौत के मुंहमे छलहुं हमर दुनू बच्चा आ हम दुनू गोटे, चारु गोटे हाथ पकड़ि एकठाम भ' गेलहुं बचै के उम्मीद नै छल। एकाएक हमरा मुंह सं शिवाय शब्द निकलय लागल। खुब जोर जोर सं उच्चारण करय लगलहुं। किछिये समयक बाद लागल जे गाड़ी रूकि गेल जना कियो पकड़ि के जाहि स्थान पर गाड़ी रुकलहुं ओतय इंजन गाड़ि देने होई। एकदम टेढ़ भ' के रुकल। डर जे कखैन पलैट जायत, तइयो समान सब छोड़ि केय भगलहुं सब नीचा। पर गाड़ी ओहि अवस्थामे रहल। जना-तना स्पेशल गाड़ी सब के व्यवस्था होइत गेल आ मधुबनी पहुंचलौ। साक्षात ईश्वर मौत के मुंह सं बचेला तकर अहसास मानस पटल पर अंकित अछि।

सम्पर्क:
18/464, प्रथम तल, पुरना डी.सी. रोड, सोनीपत (हरियाणा)
फोन : 9818601848

✍ प्रदीप बिहारी



बेगूसराय निवासी प्रदीप बिहारी मैथिली साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर, मूलतः कथाकार। 'सरोकार' नामक कहानी संग्रहक लेल सन 2007 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सं सम्मानित।

सुआति

दुर्गा महरानीक खोइंछ भरबा लेल लोकक करमान लागल रहैक। भीड़मे बेसी महिला छलीह।

मंदिरमे पंक्तिबद्ध ठाढ़ छलीह महिला लोकनि। अपन-अपन बेरक प्रतीक्षामे ठाढ़। एहिबेर देखल जे किछु दम्पति सेहो लाइनमे ठाढ़ छथि। हमरा अचरज भेल जे पुरुष किएक खोइंछ भरताह? पूजा कमिटीक एक गोटेसं जिज्ञासा कयल, तं बुझना गेल जे पुरुष खोइंछ भरलाक बाद आरती आ नारयल फोड़'मे पत्नीक मदति करैत छथि।

हम बाहरेसं देखैत रही। एकटा वृद्ध दम्पति अयलाह। हम हुनका चिन्हलियनि। नोकरीसं बहुत पहिने रिटायर्ड। बहत्तरिसं बेसीएक बयस होयतनि। हमर नजरि दुर्गा महरानी दिस गेल। मूर्तिमे सौम्य देखाइत छलीह माता।

ओ वृद्ध दम्पति लाइनमे नहि गेलाह। बूढ़ी प्रायः डांड़ धयने नेंगराइत छलीह। बूढ़ा अपन बयस आ बूढ़ीक बेरामीक बात कहैत पैसि गेलाह। लोक किछु ने बाजल।

हमरा लेल धनि सन। देखि नहि सकलहुं जे बूढ़ी कखन खोंछि भरलनि। जखन नजरि गेल तं देखैत छी जे बूढ़ा अपन मोबाइलसं बूढ़ीक फोटो खीचि रहल छलाह। विभिन्न कोण आ मुद्रामे फोटो खिचबैत बूढ़ी अघा नहि रहल छलीह। खने, एहि कान्ह पर आंचर, तं खने ओहि कान्ह पर।

हमर नजरि दुर्गा महरानीक मूर्ति पर गेल। हुनक आंखि रौद्र लागल हमरा।

बूढ़ी किछु पुछलनि बूढ़ासं। की पुछलनि, से लाउडस्पीकरक तेज ध्वनिक कारणें सुनि नहि सकलहुं, मुदा अन्दाजसं बुझलहुं जे ओ बूढ़ासं पुछैत होथि जे आरो खींचब की भ' गेल?

माने बूढ़ा किछु आश्वस्त कयलखिन।

ओ दुनू गोटें ओत'सं बहरा गेलाह। बूढ़ी बड़ बढ़िया जकां बुलैत आयल रहथि। बाहर अबितहिं हम बूढ़ा दिस सहटलहुं।

बूढ़ा पत्नीकें कहलखिन, "एतना भीड़ के बादो तोएं नीके जकां भरि लेलहो खोइंछा।"

बूढ़ी, बूढ़ासं पुछलनि, "फोटो आर कनियानि (पुतौहु) के ह्वाट्सएप केलहो?"

हम दुर्गा महरानीक मूर्ति दिस तकलहुं। मैयाक चेहरा पर दयनीय भाव झलकल।

मोनमे

मोबाइलक घंटी बजलैक। नम्मर रहैक, नाम नहि। लगलैक जे आब बन्न भ' जेतैक, तं उठौलक, "हम प्रभात।"

"आ हम प्रिया। चिन्हलहुं?"

प्रियाक स्वर सुनितहि प्रभातकें पछिला सभ बात मोन पड़ि गेलैक। संगहि एम ए कयने छल। संगहि नोट्स बनबैत छल। संगहि विभिन्न विषय पर विमर्श करैत छल। आ...

"हेलो।" आ...अंततः संग नहि रहल। "की भेल बजै ने छी।" "हं, कहू। कोना छी? नीके होयब।"

"प्रश्न आ उत्तर, दुनू बाजिए देलहुं अहां। पहिने ई कहू जे हम अहांक फोनमे नहि छी, तें ने बड़ी काल घंटी भेलाक बाद उठौलहुं।"

"देरी होयबाक आर-आर कारण भ' सकैत अछि।" बाजल प्रभात, "अहां हमरा मोनमे छी, फोनमे रहबाक की खगता?"

बहुत दिनक बाद प्रियाक ओ हंसी प्रभात सुनलक। ओकरा मोन पड़लैक जे प्रिया एखनि ओहने सुन्नरि लगैत हेती, जेना पहिने हंसैत काल लगैत छलीह। ओकरो हंसा गेलैक।

सम्पर्क:
मेनकायन, न्यू कालोनी उलाव, बेगूसराय, पिन- 851134, मो. 9431211543

✍ मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'



शिक्षा : स्नातक प्रतिष्ठा (मैथिली साहित्य)
व्यवसाय : अभिकर्ता, भारतीय जीवन बीना निगम। नई दिल्ली
मैथिली मे 400से ज्यादा बीहनिकथा लेखन।
कविता/हाइकु प्रकाशित! मैथिली मे बीहनिकथा (Seed Story), जकरा हिन्दी मे लघुकथा कहल जाइछ, केर शुरू केनिहार लोकनि मे गनती।

सम्पर्क:
मिथिला जनरल स्टोर्स
सूरज बिल्डर्स वाली गली, विनय नगर
ददसिया रोड, सूर्या विहार-3,
सेक्टर-91, फरीदाबाद, (हरियाणा)
पिन कोड- 121003
मो.- 9540095340

जब्बरि

तगमा लेबाक लेल मंच सं बेरा बेरी विजेताक नाम पुकारि सम्मानित कएल जा रहल छल। आब पुकारल गेल -

मिकी चौधरी, पिताश्री अरुण चौधरी मंच पर आबथि!

- आदरणीय आयोजक मण्डल सं हमर गोहारि जे हमरा संग जन्म द' परा गेल अरुण चौधरीक नाम नै जन्म द' पोसनिहारि अनीता चौधरीक नाम जोड़ि जानल-पुकारल जए !

-हे गै बुच्ची, परोपट्टामे तोहर नाम भ' गेलौ। आ तों एना बजै छें, लोक की कहतौ, चुप्प!

-ऐं यौ बाबा! मेहनत केलौं हम, संग देलक माए आ पाइ खर्च केलौं अहां। तहन तगमा जीति हमर नाम हुअए आ कि हमर माए कें छोडि परा गेल अरुण चौधरीक?

-गै, समाजिक परम्पराक विरूद्ध जं एहेन जब्बरि बनै छें त' ई कह जे हमर मुंहक आगि आ उतरीक सेहन्ता कोना हएत?

-यौ बाबा! अहां जाहि पड़ाएल संतान लेल काहि कटै छी, हमहू त' ओकरहि संतान ने?

अहां निश्तुकि क' लियय ई पोती अहां के सोझे मोक्ष धाम पठा देत।

-बेटीक पैरूख चलतै?

-सुनू, हम्मर आ हम्मर माएक नाओं त' चलबे करतै जे हमहू जहिया बेटीक माए हेबै, पैरूख बेटिये कें सक्कत करबै ओकर बापक संग आ कि बापक बिना!

चांछ !

वीणा भौजी, जहन सजि-धजि बहराइत छथि त' सगरो मोहल्ला दलमलित भ' उठैए। ओ बड्ड सुन्नरि नै, मुदा आधुनिकताक सब सूत्र अंगेजने बुझू।

देखनिहारि पुरुष, मौगी जीह आ दांत दबेनहि रहि जाइए। किएक त' भौजी बड्ड कहबैका।

कुकुर कें कारमे ल' विदा होइत भौजी बजलीह- "मां, हम कुकुर कें डॉक्टर सं देखेने अबै छी। ई घरेमे रहिहथि। ककरो डोरबेल बजेला पर केवाड़ नै खोलिहथि। हम गोटे घंटामे घूरि आयब।"

यै कनिञा, हमरा रातिये सं तीन डिग्री बोखार ऐछ, कोनो दवाई दीतौं!

ठीक छै, हम अबिते ओकरो निदान क' देबैन।

बुढ़ि माय कें दुरखा सं कोठरीमे अबिते पानि भरल थरमस देखेलनि।

थरमस ल' झट्टे बहरेली जे ओह! कनिया त' पियासले रहि जेती। दुरखा सं बहराइत धरि कार नजरि सं ओझल भ' गेल।

"मुस्कियाइत सासू मां थरमसक कनकनाएल पानि माथ पर ढारि लेलनि!"

टकटकी

बेरा बेरी लोकक जमा भेल भीड़क सोझां ठोहि पाड़ि क' कान' लागल छल ओ छौंड़ी। कियो किछु पुछय त' उतारा नै द' सभहक मुंह तकैत रहल...

भीड़ बढ़ैत जा रहल छल...मुदा सब मूकदर्शक बनल।

शान्त भीड़मे सं आब शब्द बहरेलै "गै, ई कह तोहर नाम ठेकान की छौ?"

यौ छोड़ू, की करब नाम ठेकान बुझि?'

तोरा तोहर घर धरि पहुंचा देबौ।

✍ चन्डेश्वर खां



मधुबनी जिलान्तर्गत मेहंथ निवासी चण्डेश्वर खां सौ सं बेसी विहनि कथा लिखने छैथ आ तमाम मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित।

सम्पर्क:
ग्राम : पट्टीटोल,
पो. : कोठिया,
भाया- भीकारपुर,
जिला- मधुबनी
मो. : 9431835143

खातिरदारी

बारी सं बुढ़िया चारिटा मूर उपारिक अनलकै। जोर सं भूख लागल रहैक। देवाल घड़ी दिस नजरि घुमैलक घड़ीक सूइया बारह टपि गेल रहैक।

मोन पिटाट भ' गेलैक। जोर सं गरजल अपना पोती पर- गे रानियां एखन धरि भातो नहि भेलै? कखन बाबा खेथून।

ओहो हदे करैत छथि ओ दसे बजे नहा-धो क' तैयार भ' जाइत छथि। कोनो सुधिये ने छनि। ई नहि बुझैत छथिन जे जूति-बुधि आब दोसरा हाथ छैक।

दु:खताइ लोक कें टेम-टेम पर दवाइ चाही। जखन ठीक टेम पर भानसे नहि हेतैक, त' दवाइ कोना खायल जेतै। बुढ़िया अपना सूरमे छलीह।

दोसर हन्नामे टी.भी. लग बैसल, पुतौह बाजलि एतेक टेम बुझै छथिन, त' अपने सं सभ वस्तु क' लेतिह से नहि होयत छनि।

हिनका सभक खातिरदारी करैत-करैत मरि रहल छी, तैयो हिनका सभक लेल धनिसन।

बुढ़ियाक मुंहक बोल मुंहेमे रहि गेलैक।

जीतिया

यैह पनरह दिन भेल हेतैक, बूढ़वा आ बुढ़िया कें घर सं निकालि देनै रहैक।

कोना-कोना क'-क' बूढ़वा दिल्ली सन शहरमे घर बनबौने छल। से बेटा आ पूतौह अदना गप्प पर माय-बाप के घर सं निकालि देलकै।

माय-बाप हाकरोष करिते रहि गेलैक; मुदा बेटा पुतौह कें कोनो दरेग नहि।

हारल बाप थानामे केस क' देलकै। से बेटा के जहल भ' गेल रहैक।

ओ जेल त' चलि गेलैक; मुदा माय अहोंछिया काट' लगलैक। ओकरा बाप कें कहलकै, कहुना बौआ के जेल सं छोड़ दिऔक।

मुदा बाप गरजलैक, ई काज हमरा सं नहि हैत। कि ओकर किरदानी दूइए दिनमे बिसरि गेलियैक।

मुदा माय अठमज्जर खसा देलकै हारिके बाप थाना जा-क' बेटा के छोड़ौलक, अपनहि जमानतदारक स दसखत केलकै।

बाप के किछु टाका-पाइ राखल- उसारल रहैक, तें दोसर ठाम घर भाड़ा पर ल' क' रहि रहल छल।

माय जीतिया पाबनि कयने रहैक। से बूढ़ा के गोहराबैत बजलि - कने बच्चा के प्रसाद, नै द' अयबै।

पावनि त' ओकरे सभ लेल कयने रहियैक ने। माय-बाप दिस आ बाप ओहि मोटरी दिस देखि रहल छल।

मोह

दू-दूटा पुतौह रहितो बुढ़िया भिनसर सं सांझ धरि एक्के टांग पर नचैत रहैत अछि। बच्चा सभक गुह-मूत सं ल' क' खुऔनाइ-पियअनाइ सभ बुढ़ि के जिम्मा छनि। बच्चा सभके आंखिक अढ़ नहि होम दिअ चाहैत छथि।

से बुढ़ि त' आबिक' अपना पुतोह सभ के कहैत छथि आब हमरा सं एहि बाल-बच्चाक निमेरा नहि हैत। आब अहां सभ अपना-अपना बाल-बच्चा के सम्हारू।

बुढ़ि के रंग-विरंगक रोग छनि, दवाइक हाथे दिन बीति रहल छनि। ताहि पर पावनि-तिहार कोनो नहि छोड़ैत छथि।

एकादशी मंगल आ रवि। ई सभ कोना छोड़तीह। भरल-पूरल परिवार जे छनि।

रौ! हन्नू, बन्नू तू सभ दाढ़ी कें तंग नहि करहुन। आइ दादी के एकादशी छनि। सहल छथिन। फेन काल्हि सं खिस्सा सुनि लिहिए।

मुदा बच्चा सभ पर कोनो असरि नहि पड़' वाला रहैक ओ सभ दादी के दुनू कान सं पजिऔलक। मुदा दादी ओकरा सभ कें झमारि देलखिन्ह' हन्नू हिचक लागल।

हन्नू के माय आबिक डेन पकड़ि क' दोसर कोठलीमे ल' जाय लगलैक - आ जोर सं बजलैक एकटा यैह सरंग के टेकने छथिन। चल-चल हमरा लग।

मुदा ओ बच्चा सभ अपना जिद्द पर अड़ल आ कान' लागल, हम दादीए लग सूतब।

दुख रहितो बच्चा सबहक कानब दादी कें नीक नहि लगलैक। दादी हारल आ बच्चा सभ कें पजिआबैत खिस्सा कहनाइ शुरू क' देलनि।

✍ अखिलेश कुमार झा



लेखक आकाशवाणी दरभंगा मे अंतर्वार्ताकार आ दूरदर्शन मुजफ्फरपुर मे प्रस्तोता केर रूप मे संबद्ध छथि। कथा संग्रह 'नोर भरल नयन' हिनक पहिल प्रकाशित पोथी थिक। आकाशवाणी पटना मे सेहो अंतर्वार्ताकार रहि चुकल छथि।

सम्पर्क:
ननौर (पूर्व), वाया-रूद्रपुर,
जिला-मधुबनी, मिथिला-847411
मो. 8002600552

देवी पक्ष

आस्तिक विचारक लोक छल राजन। अपन धर्म, कर्म आ परम्परामे बड़ विश्वास रखै छल। एहि आधुनिक आ भागमभाग वला युगमे जखन एहन लोकके पिछड़ल मानल जाइ छै, राजन पितृपक्षमे तर्पण करब नहिं बिसरै छल। कालिह पितृपक्ष सम्पन्न भेल आइ सं देवी पक्ष आरम्भ भेलै। राजन अपन गोसाओनि घरमे कलश स्थापित केलक, जयन्ती पाड़लक आ नवरात्रक पवित्र अनुष्ठानमे लागि गेल। प्रथम दिनक पूजा सम्पन्न भेलै। सांझमे संध्या आरती सम्पन्न भेलै। सभ क्रियाकलाप सं निवृत्त भ' राजन शयन कक्षमे ओछाओन पर गेल आ निद्रा देवीक कोरामे सेहो चलि गेल। थोड़बे कालमे स्वप्न लोकमे विचरण करय लागल। देवी ओकर सपनामे आबि गेलथिन।

राजन क' ल जोड़ि भगवतीक सोझां ठाढ़ भ' निवेदन करय लागल--मां अपनेक आशीर्वाद प्राप्त करबा लेल हम आतुर छी। हमर गाममे अहांक स्वागत अछि।

भगवती क्रोध सं लाल होइत बजली--खाक स्वागत् अछि। तों सभ हमर सन्तान छें आकि शत्रु?

--एतेक क्रुद्ध किएक छी मां? हमरा लोकनि सं कोन अपराध भेल?

--सभटा क' ध' क' पूछै छें की भ' गेल! पहिने त' सभटा जंगल नाश केलही आ हमर वाहनक जीवन लेल संकट उत्पन्न केलही। हम तैयो ममता देखबैत सोचलहुं पैदलो जा क' आशीष द' अबै छीयौ। मायक हृदय छल, माफ केलियौ आ तोरा सभक रक्षा करैत रहलियौ...ई बजैत काल नोरक दू बून्न भगवतीक नयन सं गाल पर टघरि गेलनि।

--क्षमा करू मां बस अन्तिम बेर क्षमा दान दिय। आब एहन नहिं होयत। अपनेक आगमन बिनु हमरा लोकनिक अस्तित्व संकटमे पड़ि जायत।

--से त' पहिने सोचबाक छलहु।

--राजन भ' सं कांपय लागल

-देवी बजली--आब तों सभ हद पार क' गेल छें। सम्पूर्ण बाट घाट बांस बल्ला गाड़ि, पंडालक लाथे केवल प्रदर्शन। हमरा नाम पर एतेक घृणित अपराध!

--गलती स्वीकार अछि मां, सुधरबाक एकटा अवसर चाही मां।

--हमर भक्तिक स्वांग रचि मानव अस्तित्व कें संकटमे दै छें। हमरा त' संदेह अछि जे भक्तक रूप धारण केने कोनो आसुरी माया त' ने छें?

जाधरि राजन किछु उत्तर दै ताबे भगवतीक भयाओनि गर्जना आरम्भ भ' गेलै आ ओ अपन त्रिशूल सं राजनक छाती कें विदीर्ण क' चुकल छलीह।

एतबेमे राजन चेहा क' उठल आ चिचिया उठल क्षमा करू मां। फरिच्छ भ' गेल छलै। भोरका सपना सत्य हेबाक आशंका छलै। घरक सभ सदस्य राजन कें घेरने ठाढ़ छलै। बेटी एक गिलास जल देलकै थोड़ेक सं मुंह धोलक शेष पिउलक। घर सं बहरहाल त' देखलकै रातिये भयानक तूफान आयलाक कारणें कतेको पंडाल ढहि ढनमना गेल छलै। पूजाक नाम पर अनैतिक ढंग सं चन्दा असूली केनिहार आ लोकक लेल अन्य परेशानी ठाढ़ केनिहारक मुंह त' अपने सन भ' गेल छलै मुदा जकरा घरक सोझाक बाट बन्न क' देल गेल छलै पंडालक बहन्ने तकरा उसास भेटलै आ मोन प्रसन्न छलै।

बुझि पड़ै जेना भगवती ओकरे अपन आशीष प्रदान केने हेथिन आ नवरात्रक प्रथमे दिन महिषासुर सं त्राण भेटि गेल हो।

✍ घनश्याम घनेरो



बिहैन कथाकार। एकटा पोथी प्रकाशित - "उपरांत"। साहित्य सेवा सन 1983 सं। बिहनि कथा विकास हेतु सम्मान प्राप्त। फिलहाल पटनामे निवास।

सम्पर्क:
61, शक्तिनगर, सदाकत आश्रम, पटना-10
संपर्क सूत्र : 9955995509, 9430046280

रेडियो

एकटा नव रेडियो बाजारमें एलैयै। नाम कारवां छैक, सरगम सेहो लिखल छैक। भानुक बोली घरमे ककरो नहि सोहाइ छैक। कहैत छैक लोक भीड़मे असगर तकर पड़ि! भानु एहि झमेला सं फराके होबाक लेल रेडियो कीनी लेलक।

भानु रेडियोक प्रशंसा मोने मोन करैत अछि। अलबत्त भाई! गज़ब! आरो तोरी भल्ला के! पांच हज़ार गीत। सुनैत थाकिए जेबै। आवाज़ टेपरिकॉर्डर सं स्पष्ट - फरिच्छ। झरझरीं तं छहिये नहि। एफ एम सुन, समाचारो सुन! मगन भ' अपन कोठलीमे सुनैत छल।

भानुक माय पुतौह सं पुछलथिन - दस बजे रातिमे के गीत टेरैत अछि? नवेली के ग'ड़ भेटलन्हि - आर के? वैह अपन घरक लाट साहेब, भानु बाबू! फनैत भानु कोठलीक मोख सं चेतौलनि - कहलक जे! लोको के सूत' देबै की लोल्ला भरि राति बजैबिते रहब?

भानु रेडियोक आवाज़ लरम करैत बाजल- यैह बात अधलाह स्वरमे नहि कहितहुं तं की अहांक हुकुम हम नहि मानितहूं? नवेली उखरैत बजलीह - आंय यौ! जे मां कहलथिन्ह सैह तं सुनब' अयलहुं अछि। कोन बेजाय कहलौं? दिक्क लागि गेल की?

नै भौजी! दोख अहांक नहि अछि। कतौ जाउ वैह बजबाक लहज़ा सुनबामे आओत। मोन व्याकुल छोड़ि हर्षित हैब दुर्लभ।

हमर खड़ियाएल बात रहबे करत। हम नहि लल्लो-चप्पोमे रहै छी- नवेली सासु के सुना कहैत छलीह।

दूध महंग भेल जाइत छैक। लगैए जे सभ दुधे सं धोअल हो, मुदा बोलीमे वैह दाव-पेंच, अखरा। हं! किछु बांचलो छैक तं खरीद -बिक्रीक भाषामे।

नवेली कें अपना झुंझुआन लगलनि - बेरोजगारी कुन्ह' साइत भानु के भान भ' गेलन्हि।

दहीक मटकुड़ी

मिन्नी मिश्राक बेटा- पुतौह घर डेब लेलकनि। कतेक दिने बीतलैक अछि, गत छओ मास भेल हेतैक विवाह भेला। बड्ड बढ़िया बड्ड बेस! जकरा सामंजस्य कहल जाइ छैक, अनमन ओहने।

विवेकक लेल थारी लगौलनि अमिता। दूटा गरम गरम फुल्की, छोट छोट कटोरीमे दालि, तीमन आ भुजिया छलै। फुल्कीक संख्या देखि मिन्नी मिश्रा उझकि गेलीह। "आंय अय दुलहिन! जे कमाय सं मांगि मांगि खाय?

अमिताक देह भुलकि गेलनि। दही परसब मिन्नी मिश्रा किनको हस्तगत नहि केलनि अछि। समय भेलैक तं अमिता आग्रह केलनि - अय मां! आब दही काटि क' देथुन?

किचेन सं मिन्नी मिश्रा हाक देलनि - एह! अय, चम्मच कोन दोगमे रखने छी? आउ, देखाउ ने? तेगार सं चकरगरहा चम्मच दैत अमिता बजली - मां! हुनका हमरा अपने सं खुआब दौथ। हम अखन संतानक रकम तं नहि जनलिये अछि मुदा हुनक बेरि बेरि परसन मांगब आ हमरा कूदि क' आनब परसबमे परम आनंद आ सुख भेटैत अछि।

मिन्नी मिश्रा दहीक छह कटैत मुसकैत बजली - धौर! जाउ ओम्हर। एहिमे आंनदके लूटबामे कोन स्त्री पाछु रहलि अछि। आखिर विवेकक माय छियैक से कि हमरा सं बिसरल पार लगतै?

दहीक मटकुड़ी संग दुनू सासु - पुतौह डेग मिलौने किचेन सं बाहर भ' रहलि छलीह।

✍ कृष्णकांत वर्मा



पहचान-पत्र

पिछुलका साल ग्राम पंचायतक चुनाव जेठ मासमे सम्पन्न भेल छल। प्राथमिक विद्यालयक एकटा बूथ पर जखन हम वोट खसाबय पहुंचलहुं त' देखैत छी जे दोसर मोहल्लाक हमर एक परिचित ओहि जगह दोसर बूथ पर सं वोट खसा क' लौटि रहल छथि। हुनका पर नजरि पड़ितहि हमर हंसि छुटि गेल। ओ जेठक टहटहौआ रौदमे मंकी टोपी पहिरने छलाह। हमरा देखितहि ओ टोपी उतारि लेलन्हि। हम पूछि देलियन्हि - अहां वोट खसाक' आबि रहल छी, सं त' ठीक। मुदा ई टोपी? ओ बजलाह - पहिने अहां वोट खसा आबू तखन बतायब। ता धरि हम एहिठाम छी। कहैत ओ गाछक छाहरि तर ठाढ़ भ' गेलाह।

कनेक कालक उपरान्त हम वोट खसा अयलहुं। आ ओहि गाछ तर हुनका लग ठाढ़ भ' गेलहुं। ओ बजलाह- ई टोपी त' आब हमर जीवन-संगिनी बनि गेल अछि। हम किछु नहि बूझि सकलहुं। पूछलियन्हि - ई फटलाहा पुरनका टोपीक प्रति अहांक ह्रदयमे एतेक प्रेम उमड़ि गेल से की कारण? ओ बजलाह- की बताबी? चारि साल पहिनहि हमर ई मतदाता पहचान-पत्र बनल छल। एहि लेल माघ मास जखन हम फोटो खिंचाबय पहुंचलहुं त' जाड़ाक पोशाक संग ई मंकी टोपी सेहो पहिरने रही। आइ जखन वोट खसाबय भोरे-भोरे बूथ पर गेलहुं त' मतदानकर्मी रोकि देलक आ कहलक जे ई अहांक फोटो नहि थिक। कतबो सफाय देलहुं मुदा ओ नहि मानलक। लाचार भ' ई टोपी पहिरि के आबय पड़ल।

हम हुनका हाथ सं पहचान-पत्र ल' कें देखय लगलहुं। हम कहलियन्हि - ओना त' बहुतो गोटाक पहचान-पत्रमे बहुतो तरहक विसंगति अछि। जेना-वयसक अंतर, बापक जगह बेटाक नाम, पत्नीक जगह काकी के नाम आदि। मुदा अहांक समस्या अलग अछि। तें मतदान कर्मीक रोकब उचित। अहांक फोटो स्पष्ट नहि भेल अछि ऊपर सं मंकी टोपी! तें भयंकर लगैत अछि। जेना लश्करे-तैयबाक कश्मीरी आतंकवादी हो। हमर बात सुनितहि ओहो भभाक हंसि पड़लाह। आ दुनू गोटे घर दिस विदा भेलहुं।

देशक हाल

हम सबदिन ओहि दलान पर ट्यूशन पढ़ाबय जाइत रही। दलानक एक दिस दोसर चौकी पर विद्यार्थीक वृद्ध दादाजी, जनिका हम काकाजी कहैत रहियन्हि, हुनक बिछौना बिछाओल रहैत छल। चिट्ठी-पत्री धरि पढ़ल काकाजी अपन चौकी पर बैसि सब दिन रामचरितमानस क' चौपाइ पढ़ैत रहथि।

ओहि दिन हम भूगोल पढ़ाबैत रही - जे पृथ्वी पर लगभग तीन चौथाइ भागमे जल आ मात्र एक चौथाइ भाग स्थल अछि। जलभाग महासागर कहबैत अछि आ स्थल भाग महादेश। हमर ई बात सुनितहि ककाजी पूछलथिन्ह - आंय हौ मास्टर! जखन ई बात छैक तखन सबटा पानि टघरि के एम्हरे कियैक नहि चलि आबैत छैक? हम समाधान करैत कहलियन्हि - जे स्थल भागक औसत ऊंचाई समुद्रतल सं बेसि अछि। ककाजी बजलाह- नहि हौ! तों मास्टर त' बनि गेलह मुदा असली बात नहि बुझैत छहक। बात ई छैक जे सरकार कोशी बान्ह जकां सब नदी-समुद्र के बान्हि देने छैक। रामायणोमे सेतु-बान्ह रामेश्वरक चर्चा छै। मुदा ओ त' त्रेता जुग छलैक। ई त' कलिजुग छी। कोशी आबैत छल त' अंगने घरमे मछहर होइत छल। खेतमे नवका माटि बिछा जाइत छल आ फसिलो खूब उपजैत छल। आब देखैत छहक? बिना खाद-पानिक एको चुटकी धान उपजैत छैक? तें देशक ई हाल अछि। लोक अन्न-पानि बिना मरैत अछि। काकाजी बजैत रहलात, हम सुनैत रहलहुं।

सम्पर्क:
ग्राम-पटोरी (पश्चिम),
पो.-पंचगछिया, थाना-बिहरा,
जिला-सहरसा (बिहार)

✍ मनोज कुमार कश्यप



आजीविका : संप्रति केंद्रीय गृह मंत्रालय मे अवर सचिव के पद पर कार्यरत छथि।
प्रकाशित कृति : दू गोट मैथिली लघुकथा संग्रह - 'बदलैत समय' आ 'एक ठोप इजोत' पुस्तकाकार प्रकाशित। दर्जनों फुटकर मैथिली रचना सभ आकाशवाणी सं प्रसारित आ पत्र-पत्रिकामे सेहो प्रकाशित। एकरा अतिरिक्त कतेको बेर मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली आ साहित्य अकादमी, दिल्ली के मंच स' रचना पाठ।

सम्पर्क:
गामक पता : सलेमपुर (पत्रालय), वाया - पंडौल, जिला - मधुबनी-847234 (बिहार)
वर्तमान पता :
5/8, ब्लॉक - 1, न्यू मिंटो रोड हॉस्टल, मिंटो रोड कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110002,
ईमेल : writetokmanoj@gmail.com,
मोबाइल : 9810811850

संवेदना

भोरुका पहर सेहो अगहन के... तैं रोड लगभग सुनसाने जकां। इक्का-दुक्का लोक कखनो-कखनो ओहि बाटे गुजरैत। कि ताबते धड़ाम... के आवाज भेलै।, एकटा तेज गति स' जाइत कार, एकटा साइकिल सवार कें तेहन जोड़दार टक्कर मारने छलै जे साइकिल सवार हवामे उछलि क' दस-पंद्रह हाथ दूर जा क' खसल। लग-पासक लोक सभ बिना कोनो बिलम्ब केने पहुंचि गेल ओत' आ लागल अपन-अपन मोबाइल स' विडियो बनाब'।, एकटा आदमी दौड़ल ओत' पहुंचल आ? घायल व्यक्ति के पॉकेट टटोलि क' किछु निकालि पड़ा गेल। ताबे आओर भीड़ जुटलै आ ओहो सभ अपन वीडियोग्राफी कौशल देखाबय लागल। एहनो नहिं जे सभ वीडियोग्राफियेमे तल्लीन छलय किछु सहृदय लोक ओहि बाटे गुजरैत वाहन सभ कें हाथ द' क' रोकबाक निष्फल प्रयास सेहो करैत रहल जे कहुना घायल कें कोनो हॉस्पीटलमे पहुंचा क' चिकित्सा सुविधा देल जाय। कोनो उपाय नहिं देखि अंतमे केयो पुलिस के फोन कैलकै। मुदा पुलिस जखन आधा घंटा के बाद ओत' पहुंचलैय ताहि स' पहिने ओ तड़पि-तड़पि क' दम तोड़ि देने छलै।

ओहि दिनक समाचार चैनल सभ पर ओ वीडियो खुब चललै आ बेसी लोकप्रिय भेलै।

अनुत्तरित प्रश्न

मैंयां कें छौरझप्पी होइते मातर दलान पर दस लोक के जुटान भेल आ आरम्भ भ' गेलै श्राद्ध आ भोज पर गहन विचार-विमर्श। पंडितजी श्राद्धकर्म हेतु वस्तु-जात के संगहिं घाट आ आंगन के दान इत्यादि के फेहरिश्त लिखा चुकल छलाह।, एम्हर कै गाम के जवार नोंतल जाय ताहु पर निर्णय भ' गेलाक बाद असल घमर्थन हुअए लागल जे कोन दिनक भोजमे कोन-कोन वस्तु-विन्यास हेतैक। ई विषय कनेक चक्करदार हेबाक कारणे सभक अपन-अपन सुझाव छलैक आ तैं सर्वसम्मत निर्णयमे बेसी माथापच्ची स्वभाविके। पंडितजी पानि पीबा स' पहिने कुरूड़ फेकैत बजला - 'हे! सुनै जाई जाऊ। भोजमे जे वस्तु-विन्यास राखी से अपन निर्णय, मुदा बुड़ही कें मनपसंद वस्तु जरूर हेबाक चाही। नहिं त' बुड़ही कें पईत नहिं हेतनि।' एहि प्रस्ताव कें उपस्थित सभ जन मुड़ी डोला क' समर्थन केलाह।

अंततोगत्वा सभ वस्तु-जातक फेहरिश्त संगे भोजमे कोन दिन की विन्यास रहतै, जेनेरेटर, टेन्ट हाऊसक सामान, हलुआई, कार्यकर्ता सभक नाम आदिक विषद सूची बनेबाक कार्य सम्पन्न भेलै। रजिस्टर आ कलम आशू के हाथमे दैत भैया आंगनमे राखि देबा लेल कहि कुर्सी स' उठि क' डांड़ सोझ कर' लगलाह। आशू भोजक विन्यास पढ़ैत बाजल - 'जा पापा! एहि लिस्टमे 'नोन रोटी' कहां लिखलियै? मैंयां त' रोज इहै खाइत रहै ने? तकर मतलब त' ओकरा इहै बेसी पसिन्न छलै। पंडितजी कहने छलाह ने पापा जे मैंयां के पसिन्न के वस्तु भोजमे राखक लेल। 'सुनिते भैया तामसे लाल भ' गेलाह - 'तेहन घरमेच्चा मारबौ जे मुंहे तोड़ि देबौ। जो अपन काज करग'।

अपरतिभ भेल आशू रजिस्टर आ कलम लेने ओत' स' चलि त' गेलय मुदा ओकर नेनमतिमे ई जिज्ञासा घुमड़िते रहि गेलै।

✍ जगदानंद झा 'मनु'



साहित्य- मैथिलीमे गजल, गीत, कविता, कथा व बीहनि कथा लिखब रुचि। एक टा गजल संग्रह, एक टा बीहनि कथा संग्रह आ एक टा कविता संग्रह तैयार, ऑन लाइन वेव वर्जन उपलब्ध अछि। समय-समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकामे गजल अबैत रहैए। दिल्लीसं प्रकाशित "मिथिलांचल टुडे'' सं संबद्ध रहलाह।

सम्पर्क:
गाम पता: ग्राम पोस्ट-हरिपुर डीहटोल, भाया कलुआही, जिला मधुबनी, बिहार 847229
वर्तमान निवास- पूर्वी विनोद नगर, दिल्ली, मोबाइल 9212461006

असली स्वर्ग

विज्ञापन, मीडिया टीभी चैनलसं दूर मिथिलाक पावन धरतीक एकटा गामक पोखरि भिरपर कुटीमे रहनिहार बाबा। गामक नजरिमे ओ पागल मुदा हुनक नजरिमे ई दुनिया पागल। एक दिन हुनकर दर्शनक सौभाग्य भेटल। समान्य देखाए बला ओहि बाबाक भीतर हमरा आलोकिक शक्तिक अनुभूति भेल। अपन मोनक जिज्ञासा शांत करैक लेल हम हुनकासं एकटा प्रश्न पुछलहुं, "बाबा ई स्वर्ग की छैक?"

बाबा मुस्काइत, "ई तोहर जिज्ञासा छऽ की हमर परीक्षा?"

"क्षमा करब बाबा, ई अहांक परीक्षा नहि अछि। जखन तखन सभक मुंहसं सुनैत छी फल्लां काज करब तं स्वर्ग जाएब, फल्लां काज करब तं नर्क जाएब, मुदा हम आइ धरि नहि बुझि पेलहुं जे स्वर्ग की अछि। हमरा विश्वास अछि जे अपनेक उत्तरसं हमर मोनक जिज्ञासा अवश्य शांत होएत।"

बाबा : "स्वर्ग नामक कोनो जगह वा चीज नहि छैक, (किछु काल शांत रहला बाद) ई मात्र अहांक मोनक सुखद अनुभूति अछि। जाहिखन अहां दुख आ सुखकें अवस्थासं उपर भ' जाइ छी, अर्थात दुखसं दुखी नहि आ सुखसं सुखी नहि। जाहिखन अहां समुच्चा चर-अचर अस्तित्वसं प्रेम करए लगै छी, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, घृणा आदि बिकारसं अपनाकें दूर रखैमे समर्थ भ' जाइ छी। डर अहांक भीतरसं खत्म भ' जाइए। सदिखन आनन्दक अवस्थामे रहैत छी... इहे स्वर्ग अछि।"

"की ई सभ सम्भव छैक।"

"सम्भव तं छैक मुदा बड़ कठिन। सभक बूते ई नहि भ' सकै छैक। एतेक कठिन छै जे लोककें असम्भव जकां बुझाइत छै। कियो एहिपर विश्वास करै लेल तैयार नहि अछि आ एकरा जीवनसं फराक मुइला बादक क्रिया बता देल गेल छैक।"

भूख

ब्रेकिंग न्यूज। बॉलीवुड सिनेमाक मशहूर अदाकारा ज.ख. फांसी लगा क' आत्महत्या क' लेली।

टीभी देखैत हमर आठ बर्खक भतीजाक नेनपनसं भरल प्रश्न, "बड़का बाबू ई आत्महत्या की होइ छैक।"

"बेटा, आत्महत्या अर्थात अपन जीवनकें कोनो ने कोनो बिधिसं खत्म केनाइ।"

"मुदा बड़का बाबू, लोक अपन जीवनकें खतमे किएक करै छै?"

"बेटा, जखन कोनो मनुखक भूख एतेक बढ़ि जाइ छैक जे ओकरा शांत नहि कएल जा सकैए तं ओकर परिणति अंततः आत्महत्याक रूपमे होइ छैक।"

मासूम अबोध नेनाक समक्ष हम ई फिलोसफी दए तं देलहुं मुदा एकरा ओ अबोध की बुझत। जखन मशहूर अदाकारा ज.ख. नहि बुझि पएलीह। हमहूं बुझलहुं कतए बस बेलूनक हबा जकां ई शव्द कतहुंसं हमर मुंहसं बहार भ' गेल।

✍ पूनम झा



बाहर जायबाली मौगी

जेबीसं नोटक गड्डी, सोना-चानीक गहना दैत मोहना कनियांके हंसैत कहलकै, देखलहि ने जे हम कतेक प्रेम करैत छियौ आ तू बुझबे नै करैछें।

कनियां बिहुंसैत समेटिकय राखि लेलक।

मोहना शराबक संग चिखना खेलक आ बी.पी. तेज भ' गेलै, ओ जा क' पड़ि रहल।

अचक्केमे मोहनाक बेटा सीढीसं खसि पड़ल, माय समेटि क' कोरामे बैसाओल आ माथस खुन पोछैत, मोहनाके समाद पठेलकै जे दवाइ लेने अबौं।

मोहना चिकरैत आ गाइर पढैत बाहर निकलल -एहन कोन स्त्रीगण जे बाहर जाकय दवाइयो नै लाओत,

घरमे भरिदिन बैसल खाओत, काज राज त' छैहे नै आ अण्ट-शण्ट बड्ड किछु।

मोहना हकमय लागल आ कनियां बच्चाकें करेजासं सटने हिचक'आ बच्चा आब चोटकें बिसरि माएक नोर पोछय लागल आ लोकसभ मोहनाकें माथमे तेल पानिकें धार देमयमे बेहाल जे बी.पी. माथ पर चढ़ि गेलैं।

कनियांक मुंहसं अस्फुट ध्वनि निकलि रहल छल जे बाहर त' कहियो निकलय नै देलक, कहैं जे बाहर जाय वाली मौगी सभ किदन कहांदन होइत छैक?

मुदा ओकर बात सुनय वाला केयो कहां रहैक।

सर्टिफिकेट

बल्लीपुर वाली पुतौहु गीताक अथक आ निस्वार्थ सेवाक बले आइ तीन मास पर स्वस्थ आ प्रसन्न भ' दलान पर बैसल गप्प मारि रहल छलि। पुतौहुक सेहो हर्षक कोनो सीमा नैं छल।

सब लेल सरबत ल' ओ दलान दिश विदा भेलीह कि शरबत सं बेसी मीठ बोली सुनाइ पड़लैन्ह ...ओ ध्यान लगा सुनय लगलीह।

मुदा जेना बज्रपात भेल आ कि शरबतमे केओ करैलाक रस मिलाकय पिआ देलकैन्ह, तेहने बुझेलैन्ह।

सासुक मधुमिश्रित बोली गुंजि रहल छल...धन्य हमर श्रवण कुमार बेटा जे हमर पुतौहु के सीधा केने रहैत छैन्ह। आ ओ हमर सेवा नै करती से हमर बेटा नै चलय देतैन्ह। आ हम जे कहबैन्ह से सुनहि पड़तैन्ह, नै त' थकुचि देतै। भगवान हमर बेटाकें अक्खे औड़दा देथुन्ह।

पुतौहुक आंखिसं नोरक टघार संग मुंहसं अग्निवर्षाक धार बहय लागल आ। ओ कहि रहल छलीह...किएक होइत अछि एहन? एकटा स्त्रीक कृति, सेवा, त्याग सब पुरुषक श्रवणकुमार बनबाक सर्टिफिकेट? किएक? बेटा लाजे त' इम्हर -उम्हर ताकय लागल आ बुढ़ी अप्पन विजयी मुद्रा सं।

सम्पर्क:
द्वारा: धनी शर्मा,
कामाख्या गेट, दुर्गा सरोवर,
गुवाहाटी-781009
मोबाइल: 8638448607

✍ डॉ. अनमोल झा



मधुबनी जिलान्तर्गत नरुआर निवासी अनमोल झा के आय धरि छह टा पोथी प्रकाशित भेल छैन्ह। समय साक्षी थिक (मैथिली लघुकथा संग्रह), ई जे समय अछि (मैथिली लघुकथा संग्रह), टेक्नोलजी (मैथिली लघुकथा संग्रह), चन्दा मामा आउ आउ (मैथिली बाल कविता संग्रह), से जे कहैत रही (मैथिली कविता संग्रह) आ मेघ खंडमे चन्द्रमा (मैथिली लघुकथा संग्रह) प्रकाशित। मैथिली मे एमए, नेट, पीएचडी.

समाजिकता

उपनयनक मरबा बान्है कालमे चारि टा मुसलमान जन आओर एकटा कमार रहैक। सर-समाज बिगजी खा क' आ चाह, शर्बत ठंडा पी-पी क' अपन पार पुरा लेने छल। ओहि जन सभ के रौदमे काजमे भीड़ल देखि बाहर सं आयल मिसर जी घरवारी कें पुछलथिन कातमे जे आब मरबा ई सभ बन्हैत छैक?

घरबारी कहलथिन - ई सब नहि बन्हतै त' काज नहि हेतैक बाभनक! ध नि ई सब जे अपना सभक संस्कार एखनो होइत अछि। समाजक भरोसे आब कोनो काज नहि होइत छैक। देखबे केलियैक बिगजी बेरमे कतेक लोक छलैक आ एखन कतेक लोक छैक?

मिसर जी क्षुब्ध एवं निरूत्तर छलाह समाजक समाजिकता पर!

जानवर

संगीत कें एकटा डेरा भाड़ाक लेबाक छनि ताहि लेल आइ कतेक दिन सं अपनो आ पत्नी व्यस्त छथि। कएक ठाम देखबो केलथिन। कतहुं पसन्द नहि आ कतहुं पसन्द त' भाड़े बहुत या उलटा-पुलटा बात।

एहिना भेलैक जे संजीत ऑफिस मे रहथि त' पत्नीक कोनो संगी कहलकनि फल्ला ठाम डेरा खाली छैक चल देखै छीयैक की केना कहैत छैंक। ओ गेलीत ओतय, घर देखलनि, घरो पसन्द नहि, भाड़ो बेसी रहैक आ बिजलीक चार्य डायरेक्ट मीटर नहि दके दस रुपया यूनीट कहलकनि। घरक मलिकीनीक इच्छा रहैक ई सब लड़ लैय। बहुत दिन सं घर खाली रहैक। संजीतक पत्नी कहने रहथिन नहि तोहर घर लइ बला नहि छथि। घरक मलिकीनी पुछलकनि जे तोहर कएक टा बच्चा छड़ जकरा सके रहमे एतय। ई कलहथिन दू टा। मकान मलिकीनी कहलकनि - नहि हम दू टा बच्चा बाली के नहि देवैक भाड़ा। एक टा बच्चा बाली कें देबैक। दू टा रहला सं बहुत हल्ला होइत छैंक। हमर बच्चा सभकें सुतै मे दिक्कत होयत।

संगीतक पत्नी कहलथिन आ तोरा कएक टा बच्चा डड़? मकान मलिकीनी कहसकैक-चारि टा। ई कहलथिन तोहर अपन बच्चा चारि टा छह से किछु नति आ हमर बच्चा तोरा भारी लगैत छड, एहने मनुकख छैं तों। तू जे आब कमो कके देमे त' हम नहि लेबौ घर। आ सं. कहलथिन ई चलू एहन घरनहि चाडी हमरा। फेर घुरिक संगीतक पत्नी कहलथिन ओहि घरबाली कें जे एखन ननका घर देखै छीयौक एहि सं पहिने त' तहं भाड़े हेमे? ओ कहलकनि तें से त' रही। ई कहलथिन जे तोहर चारि टा बच्चाक हल्ला सं मकान मालिकक बच्चाक नीन्द मे दिक्कते नहि भेलै आ लोकक दू टा बच्चा तोरा नजरि पर चढ़ै छड़? लोक सं नहि भगवान सं डर भगवान सं आ से कहि चलि आयल रहथि संजीतक पत्नी।

सम्पर्क:
विनार सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड,
9 सी, लार्ड सिन्हा रोड, तीन तल्ला,
कोलकाता-700071
मोबाइल: 9433753863

✍ डॉ. प्रमोद झा



संस्कृत (एमएए), साहित्याचार्य
विशेष क्षेत्र- मिथिलाक लिपि-विज्ञान, इतिहास। संस्कृतमे बुद्ध-चरितम् एवं भ्रूणपंचाशिका प्रकाशित। अनेक ग्रन्थक सम्पादन। मैथिलीमे मुख्य रूपसं कथालेखन। 1980 ई। सं विभिन्न संकलन आ पत्रिकामे प्रकाशित। उपन्यास- घुरि आउ कमला (ई बुक)।

ठुठ्ठा पीपर

पुरना पोखरिक महार पर ठाढ़ ई ठुठ्ठा पीपर अपन नीक दिनक गाथा दीन भावे जना रहल अछि। बूढ़ पुरानक मुहें सुनै छी जे जेना ई हेवानिमे अछि तेना पहिनै नै छल। अकादारुन विशाल छल। ऐ पर रंग विरंगक चिड़ै चुनमुनी दिन-राति कल कूजन करैत रहैत छल, बूझू त' एक तरहे ई चिड़िया घर छल।

थाकल ठहियायल बटोही, जन बोनिहार हरवाह चरवाह आ खेतिहर लोकनि एकर शीतल छायामे खूब विश्राम करैत छलाह। वैसाख जेठक दुपहरिमे त' ई गाछ बूझू अमृतक बंटवारा करैत रहैत छल। ई गाछ, गाछ नहिं एकटा विचार छल। एकर छायामे अबैत देरी ऊंच-नीच, छोट-पैघ आ अमीर-गरीबक भेद जेना मेटा जाइत छलै "सर्वे वर्णा: द्विजोत्तमा:" जेना साम्यवादक जन्म एत्तै भेल होइ।

एकर जड़िमे महावीरजीक धुजा सेहो छलैन। राम नवमीक मेला तेहन ने होइ छलै जे देखिते बने। दूर-दूर सं भक्तजन अबैत छलाह आ पावन प्रसाद पाबि धन्य होइत छलाह। नाच-तमासा सेहो खूब होइ छलै। एक दिस आल्हा रूदल त' दोसर दिस छपहा चौरी! एक सांझ जे सुरूह होइ छलै सं भिनसर भ' जाइत छलै। एकर छाहरिमे कुस्तीक आयोजन सेहो खूब होइ छलै। एह देखते बने!

मुदा काल ककरो कहां बकसै छै। एकरो अपन चपेटमे एक दिन लैये लेलकै। तेहन ने बिहारि उठलै जे एहू गाछ के ममोड़ि के खसा देलकै। चिड़ै चुनमुनीक खोंता उजरि गेलै। चीं चीं कें कू करैत, कनैत बिलखैत अपन दोसर निवासक टोहमे दहो दिस छिड़िया गेलै। उजड़ि गेलै रंग बिरंगी चिड़ै चुनमुनीक बसेरा आ बिला गेला ऐ गाछक रसिया! ने ओ देवी आ ने ओ कड़ाह!!

आइयो अवर्यातक रस्ता यैह छै मुद ऐ ठुठ्ठ गाछ दिस ककरो नजैर नै जाइ छै, तैयो ई मूक भाषामे जेना सब कें किछु जना रहल अछि-हम अहां लोकनिक पुस्त दर पुस्त सेवा कयलहुं मुदा अहां सब हमरा लेल की कयल? जखन हमर प्रत्येक अवयब कें बिहारि तोड़ि ताड़ि कें फेक देलक तखन अहां लोकनि मात्र आह कहि अपन अपन चुलहीमे झोंकि देल किंतु ई नै फुरैल जे ऐ आहत पादपक जैड़मे पानियों ढारक चाही। हमरे सन कठजीब जे आइयो जीबै छी। हमरामे परोपकारक भावना आइयो ओहिना अछि तें पौनगी छोड़ै छी आ अहां लोकनि निर्मम जकां हमर कोमल किशलय तोड़ि तोड़ि बकरी कें खुवबै छी। की यैह थिक न्याय? हम अहां सब कें उलहन नै दै छी हं तखन एतबा धैर अवस्से कहब जे "सुखमे सुमिरन सब करे दुखमे करे न कोय" अपन अतीत कें यंत्रवत गरदैनमे लटकबै बला मनुख, कने वर्तमानो कें सहेजू!

सोटा

-सुनै छै?

-हं, कहौ ने!

-कने एमहर अबौ ते!

-कोमहर?

-घर मे, आर कत'?

-से किये?

-चाह बनौने छियै एकरा ले!

-हमरा ते भेल जे...

-मार बाढ़ैन! घुघनो लटकल पर मन ककड़िये खेत पर जाइ छैन! ओहे जगह बैठल रहौ, नेने अबै छियै ओत्तै! हे लौ! ढकोसौ! खौंझैत बाजलि बजार बाली।

-मर बैंह! ई मजाको नै बुझै छै? बलौ कें बिगैर जाइ छै!

-त' एगो बात कहौ ई जे मोन एना किए अघोर केने रहै छै?

-देखै नै छै भलेसबा के! परिच्छा पर परिच्छा देने चल जाइ छै आ फल वैह ढाक कें तीन पात! सरकारी नोकरी एते सस्ता छै!

-एना नै भखौ! छौंड़ा चन्सगर छै, कतौ ने कतौ भैए जेतै की! आर कने दिन दिक्कत उठबौ!

-से ते उठैये रहल छी आ उठेबे करबै। हम कहै छियै जे दिल्ली बम्मै किए ने पकैर लै छै? देखौ महेशबा बेटा के, केहन दिन दुगुन्ना राति चौगुन्ना केने चल जाइछै!

-धैरज धरौ, एकरो हेतै! छौंड़ा कहै छलै जे ऐ बेरिया कतौ ने कतौ बाजी मैरिये लेबै। किदन ते कहलकै? मारे मुंह ध' के! मनो ने पड़ैये! हं, हं आरच्छन! तै बदौलत।

-बोलैयो ने अबै छै एकरा!

-त' कथी?

-आरच्छन!!

-सैह!

-कोनो गरिबहा कें थोड़े एकर सुबिधा भेटै छै!

-त' ककरा भेटै छै?

-अपना आरू जाइतक बड़का छोटका नेता आ धनिकहा सब के! गरिबहा के, के पुछै छै? ई आरच्छन नै आराच्छस छियै। जहिना बड़का जाइतक धिया पुता पैढ़ लिख के नोकरी ले बेलल्ला भेल छै तैहना हमरो आरूक। भोंटक खातिर समाज के खंडी पखंडीमे बांटि देलकै चंडलबा चोरबा सब। आब' दौ फेनो भोंट के! ओ सब दबौतै नोटा आ हम सब देखेबै सोंटा!!

सम्पर्क:
'गोकुल' साहित्याचार्य
विद्यावारिधि
ग्राम पोष्ट- दीप, जिला- मधुबनी, (मिथिला)
बिहार
मो. 9871779851

✍ महाकान्त ठाकुर



मधुबनी जिलान्तर्गत बाबू पाली (पाली मोहन) निवासी महाकांत ठाकुर मूल रूप सं कवि छैथ। केहन स्वर्ग (काव्य संग्रह), धरती आ चान आदि पोथी प्रकाशित, विभिन्न आलेख आ समीक्षा आदि विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित।

सम्पर्क:
पाली मोहन, खजौली, मधुबनी।

गरीबीक लाभ

गप त' बहुते करैत जाइत छी, कोनो नव-धनीक आ की सामंती धनीक गिरहथ-गिरहथनीक पांजरमे बैसि गरीबीक गुणगान सुनलहुं अछि?

फैक्ट्री मालिकक केबिनमे बैसि लेबर समस्या पर विचार-विमर्श सुनल अछि? नहि ने?

गामक गिरहथनी हमरा बुझबैत रहथि जे गरीब नहि रहने टहल-टिकोरा, मेहनतिया काज, आंइठ-कुइठ धोनाई, साफ-सफाई, ओछाओन-बिछाओन झाड़ब, ओछाएब-उठाएब कें करतै? गिरहथ गिरहथनीक पोर-पोरमे तेलक मालिस कोना हेतनि? कने सोचियौ! सभ धनीके भ' जेतै त' कते जुलुम हेतै?

एक त' ओहिना मंहग भ' गेलैए जन-बन। नकदी दै छिऐ त' करैत रहैए कन-कन। सरधुआ सरकारो ओकरे सभकें देबय लगलैए राशनक अन्न!

आब मालिकक गप कहां सुनै छै! बेसी लोक त' दिल्लिए पंजाब दिश दौड़ै छै। तीन सेर बोईनमे भरिदिन खटैत छलै। सांझ-भिनसर तरबा रगड़ैत छल। एक टांग पर ठाढ रहैत छल। की मजाल कियो कल्ला अलगा क' बाजि लेत!

की करय कहै छी? लेबर प्रॉबलम भ' जाइत छै। लोकल कें राखू त' यूनियनबाजी करत आ दोसर ठामक कर्मचारी कम भेटि रहल अछि। सरकारी कानून हिसाबे दरमाहा, बोनस आ छुट्टी देबय लगियौ त' कमेबै कथी? हर चीज महंगा भ' गेलैए...!

लेबर सभ बड़ मंगै छै...! सार नेतो सभ गरीबे सभ लय बजै छै। बुझिते नहि छै! गरीबी बनल रहतै त' उत्पादन बढैत रहतै। सभ धनीक भ' जेतै त' मेहनतियाक काज के करतै???

तें ने सरकार झुग्गी-झोपडी़ बनवय दै छै, एहि सरकारक दलाल नेता सभ एहि गरीब सभ के नीक दिनक सपना देखबै छै। एकरा सभके दान द' भीख द' की सेवा क' पुण्य कमाइछै!

कने सोचियौ! गरीब नहि रहतै त' बिना दान के धरम कोना हेतै???

पंचैती

पत्नी : (पंचक बीच) हमर घरवला एकटा आन महिला संगे रहि रहल छथि। एहि अन्याय के विरुद्ध अहां सभ जे कहब हम सैह करब?

पंच : बाप रे! ... एहन जुलुम? की यौ अमरेश जी? अहां के कनिको विचार नहि मन मे?

अमरेश : कथीक विचार?

पंच : पाप-पुण्यक? नैतिक-अनैतिक? नीक बेजाय?

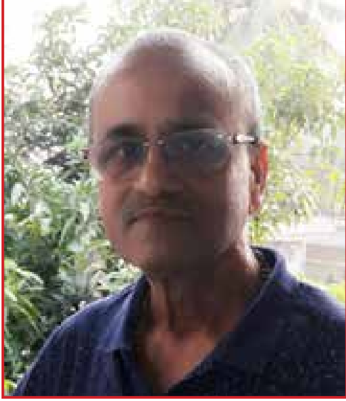
अमरेश : एहि ठाम अहां सभ श्रेष्ठजन उपस्थित छी। हमरो परिवारक आ सासुरोक लोक... प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील, नेता आ व्यापारी!

पंच : से त' ठीके कहलह अछि। तें ने अपन गलती मानि सुधरि जाह...परिवार जुनि तोड़ह!

अमरेश : पंच परमेश्वर होई छथि, हम झूठ नहि बाजब। मुदा हमर सभटा काज खरापे अछि। 10 रु. सैकड़ा तक सूदि पर पाई लगानी लगबै छी बिना लाइसेंसक। ईंटा बेचै छी प्रति हजार सौ-पचास कम दैत छिऐ। सिमेंट मिलाबटी आ बालू कम नपै छिऐ! जकरा-तकरा स' दारु पीबि क' झगड़ा करैत छिऐ। करोडो़क सम्पत्ति बनेलिऐए परिवारे लय... हम अपना मर्जी के खिलाफ। कोनो पंचैती नहि केलकै कियो! ... एक्के ठो काम अपना सुख लय केलियै...जकरा स' प्रेम केलियै ओकरा इज्जति देलियै...! अहां सभ कही त' सभ कारबार बन्न क' साधु बनि जाइ छी...!!!

साहित्यकारक करतूत

✍ सुरेन्द्र नाथ झा



प्रकाशित पोथी मां के लाल (हिंदी उपन्यास), दृष्टिकोण (मैथिली आलोचना आ व्यंग्य), समय शिला पर (मैथिली कथा संग्रह), गजल हमर हथियार थीक (मैथिली गजल संग्रह), परिधि सं बाहर (मैथिली कथा संग्रह), उसरगल लोक (मैथिली उपन्यास), फैसला (हिंदी उपन्यास), एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित मैथिली निबंध, व्यंग्य, गजल, लघु कथा तथा हिंदी मे कविता तथा लघु कथा।

सम्पर्क:
ग्रा.+पो.- भद्रेश्वर, जिला- अररिया
वर्तमान पता : न्यू नवरतन हाता, खजांची हाट, पूर्णिया (854301)
मो. 9430582152, 6206584807

हौ काका, एकटा बात बुझलहक?

यी हौ?

एम्हर भावन मुंह मिलानी नहि होइ छहु तावत किछु फुराइयै नहीं छहु।

बाते तेहेन छैक ने काकाजे मुहांमुहीं भेरे बिना मजे नहिं अओतैक।

ऐना भेलै की जे तो एतेक बेहाल भ' गेल छै।

भेलै किछुओ नहि, नहि त' बुझहक बड़का गप्प भ' गेलै।

के तोरा से लागै जेतौक। भूकैत-भूकैत पेटक नस दोहाय गेल अछि मुदा तोहर पेट स कोनो बात उगिलायब बड्ड कठिन।

सुनहक ने।

तोरा की होइ छहु जे हम कानमे ठेपी ल' क' बात क' रहल छी।

तोहीं कोन कम छह। जखन किछु कहय चाहै छी कि तो ओहि पर टोकारी द' दै छहक।

ले, आब हम मुंहें बंद क' लै छी। आबहु त' कह ने की भैलै।

बड्ड जुलुम भ' गेलै काका। एकटा साहित्यकार के आइ बीचे सड़क पर मारि देलकै।

ई कोन जुलुम भ' गेलै रौ? एतय रोजे हजारों-लाखों लोक मरैत अछि त' उकासी धरि नहि होइत अछि आ एक साहित्यकारक मरने एतेक आश्चर्य किए?

ओ साहित्यकारे टा नै रहै काका। समाजेक लेल जीवैत रहै आ समाजेक लेल मरैत रहै।

धुर बुड़ि। ओ आगि मूतैत हेतहु, आगि साहित्य के आगां राखि पाछो दान करै, मुंहमे राम आ बगलमे छूरी वाली बात तोरा नहि बुझल छहु। गृहस्थो स बढ़ि ओ मुंहझौंसाक पग लगा त' दु.......... करियनि। अरे अप......... कतहु शान स बैसल हेताह आ दुर्गेनन सह पड़ैए एकर केरी के। ओ अहांक बेटी नहि, कोनो दोसर केर जनमल थिकीह।

हुनकर बात सुनिये के लोहछि गेल रहथि पिता, की क' लेबनि जानि के? जतके घिनयबाक रहय सं घिनाइये गेल। एहि सभ घोर-मट्ठामे हाथ द' क' समाजमे आओर घिनयबाक अछि? अहां स पहिने हम बुचिया के बुझा क' थाकि गेलहुं। एखन भोग' किनका पड़ै छनि, हुनके ने?

सफैय्या क' बादक बात भेलै। पत्नी कहलनि, 'पहिने ई जानियो जे एहेन करम केलनि के?

अहांक की मोन अछि? ई कुलछमीक चलैत हम सब स' लड़ैत रही? आब हमर बैह उमरि रहल? मोन त' होइए जे छौड़ीक कंठे दबाय मारि दी।

अहां स' आओर हैबे की करत। मुदा हम त' आइ ने कालिह एकर दबल तह उखाड़ि के रहबै।

ओहि दिन पूरे समाजक बीच पंचैती भेल रहै। पूरे समाज एहि बात पर अड़ि गेल रहैल जे जं आइ बुचिया मुंह जीह खोलैए त' समाज स' निकालि देल जयतैक। बहुत देर चुप रहलाक बाद किछु सोचैत-विचारैत बुचिया कहने रहथि, 'हमर पेट मे बाबूक बच्चा अछि।'

आ तकर बाद ओ किए नहिं बाजल छलि। ठोहि पाड़ि कान' लागल छलि।

पंचायतक सभ लोक अवाक् रहथि आ बुचिया पिता मुंह झुकौने ठाढ़ रहथि। कें कियो एहि देश मे समाजक सेवा करैत अछि? कनै कहियो ओकर मरला के बाद टी.भी., रेडियो अथवा समाचार पत्र मे नाम अबैत अछि। अनासे एहि मे साहित्यकारक कोनो चालि हेतहु।'

'की कहै थी काका। साहित्यकार की कोनो घुड़की फान्ही जनैत छथि। आब ओकर समर्थन मे साहित्यकार सब पुरस्कारो घुमाव लगल छथि।'

'तोरा नीक स' नहि बुझल कछु। एहि सं बड्डा बड़का आफत देश मे एलै। आपातकालक दमनचक्र चलनै। साम्प्रदायिक दंगा मे देश झुलसले। हरिजन अत्याचार बढ़लै। आंखिफोडक कांड भेलै। कहां कहिये पुरस्कार घुमायल गेलै? आ यैह सोचि ओ सभ पुरस्कार फेर आपस लइयो लेलकै। फेकले थूक फेर सं चलैटत गेलै। हम सभ साहित्यकार नहियो की तइयो की जीवन मे एहेन करम करब।' महक ओतहि सं अवैत छैक नतय किछु ने किछु सड़ल रहैत छैक।

✍ भारती कुमारी



हिन्दी मे स्नातकोत्तर भारती कुमारी एखन गुरुग्राम मे रहैत छैथ।

सम्पर्क:
पता- गृह संख्या -505, सेक्टर-4, गुरुग्राम, हरियाणा-122001, मो.-8447118646

झिंझिर

बसन्तपुर वाली काकी धियान सं अपन पुतौह के देखैत छलथिन। दुइए मास त' भेलैन ए दुरागमन के। कनियां बड्ड नीक। चारि टा बच्चा के अकाल मृत्यु के उपरांत एक्के टा बउआ बचल। डर सं काकी-कका बाहर नै जा देलखिन्ह। बिकतो - बिकतो अपन पन्द्रह- बीस बीघा जमीन छैन आ लगे के गाममे बउआ के मास्टरी के नौकरी मुदा एकौनिया पूत होय के कारण बउआ कनी मनमौजी भ' गेलाह। काकी चिंता करथिन ते कका कहथिन - बेटा थिकै, एतबा टा चलै छै। एम्हर किछु दिन सं कनियां के हाथमे लाल - नीला निशान देखि काकी चिंतित भ' गेलीह फेर मनमे भेल जे नवब्याहू छथिन कथीले पूछब?

साड़ीमे कनियां देह ते नै देखाए पड़ैत रहय कहीं देहोमे ते नै? आय काकी के मन नै मानलक।

"बहुआसिन...!"

"हां मां?"

"ई हाथमे चोट कथी के थीक?"

"ओ... मां... ओ...केवाड़ पुराना डिजैन के छै तें झिंझिर लगाबमे चोट लागि जाय छैन।"

"रोज?"

"हां....हां.... रोज।"

काकी अंगना सं विदा भ' गेलीह। रातिमे जखन दूनू बाप - बेटा खाना खाइत रहथिन, काकी ऊंच स्वरमे बजलखिन - यै बहुआसिन! अहां के घरक केवाड़ सं झिंझिर हटा क' छिटकिनी लगबा देलहुं ए, आब चोट नय लागबाक चाही। ई झिंझीर सं हमरो बड्ड चोट लागल ए, नवारीमे मुदा तखन नै बुद्धि रहय नै हिम्मत।

✍ भुनेश चौरसिया



फुस्स बात !

जखनि देखी, अहां एना किए रूसल रहै छी? ककरो सं किछु बाजै नै छीयै, सदिखन मुंह फुलौने रहै छीयै!

घरक सब एके स्वरमे बाजल- कनियैन, हम सब बुझि गेलौं जे - ससुरारि सं दान- दहेजमे कमी भेलाक खातिर अहां मुंह फुलौने छी।

बाबू जै लए खेत बेचलक से सुख भोगबा सं पहिने गुजरि गेल!

तै पर हुनकर माथा ठनकल ओ भुइयांमे मुक्का मारैत चिन्तनमे डुबि गेल। मां जी डपटैत बाजल रौ तू चुप्प कर नै त' बात के बतंगर भ' जेतौ। हे सुन! मौगी मेहरि दबले नीक।

तों फुसिए बात के नमरेने जा रहल छें!, ई कह जे- हमर बिआह त' क' देलही आ हम रहियै निकम्मा!

"उएह छौ जे मोन मारि के रहलौ, दोसर त' नै जानि कोन उधवा उठबितौ।"

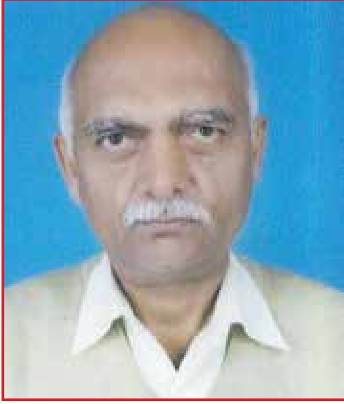
मायक आंखि नोरा गेलै!

"फुसि बात के फुस्स होम' देथुन!" - कनियैन अपन अंचरा से सासु मांक नोर पोछैत बजली।

आइ से जे गति तोरा, से गति मोरा।

सम्पर्क: द्वारा - आर.आर. टैक्नोमैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 5. के.एम. स्टोन, ओल्ड मानेसर रोड, ग्राम:-मोहम्मद पुर पोस्ट:-नरसिंग पुर, फैक्ट्री एरिया, जिला: गुरुग्राम, हरियाणा:-122004, फोन:-9910348176

✍ धनाकर ठाकुर



लेखक चिकित्सक छथि आ साहित्य मे रूचि राखैत छथि। आयुर्विज्ञान प्रगति तथा मैथिली संदेश नामक दु गोट पत्रिकाक संपादन करैत छथि।

सम्पर्क:
डिपार्टमेंट ऑफ़ जनरल मेडिसिन, राजश्री मेडिकल कॉलेज, टोल प्लाजा के निकट, पोस्ट-फतेहगंज (पश्चिम), बरेली-243501
मोबाइल: 7580831499

गिरगिट

'ओ गिरगिट जकां रंग बदलैत रहैत छथि', जीवनमे कोनहुं सिद्धान्त नहि, हुनका वोट नहि देल एहिसं नींक नोटा दबाएब।

विचार नीक अछि, सभकें एहि लेल सहमत करू।

से कहियो भेल अछि सहमति सं आब होइत? किये कहताह एकादशी त' दोसर त्रयोदशी।

लगैत अछि अहां आइ व्रत केने छी।

हं पेट लेल, मुंह लेल नहि।

धीरे-धीरे मुंह सेहो बन्द भ' जाएत, एकर व्यवस्था करबा दैत छी। आ जेबसं एक टा ललका पात निकालि हुनक जेब मे।

आब के अछि सिद्धांत बला- ई नै तो ओ, कियो नहि तखन त' ओहिमे चुनबह ने। नोटा के दबेबह ते' नहि जानि के चुना जाय जे एकरहुं सं खराब कहि नहि आबि आए। ई खैल पील घरक छह, जे खेबाक छलैक से एक बेर खाइए लेने होएत, तैं एकरहि वोट एहु बेर द' देल जाए त' की हर्ज?

एकर मुंह ठीकहि बन्द नहि छैक। भोजनहिक नहि बजबाक सेहो असरि होइत छैक, भगवान कृष्ण बिसरि गेल छलाह।

सच मे! गिरगिट...

स्वप्न-ए-शाहजहां

आइ धनतेरसमे की खरीदलहुं मालकिन।

की खरीदब, अहांक कपार।

से त' अहांक बापहिं हमर बापसं खरीद देने छलाह।

अहां बहुत बजैत छी।

कोनहुं 'मी टू' क घोषणा नहि ने करब।

अहां कोनहुं 'अकबर' छी की?

से कहां, होइतै त' 'शाहजहां' किएक ने बनितहुं। (हजारों हरम वाली - स्वागत धरि सं)

मतलब अहां...

ठीकहि बुझलहुं, मैडम...

चापलूसी कियो अहां सं सीखए।

जे बुझी, जेना बुझी...

अहां हमरा एतेक मानैत छी, तें ने हम पड़ोसी पंजाबिन जकां करवा चौथ केलहुं।

दिल्लीक प्रमुख पाबनि अछि, कोनो बेजाए नहिं।

हमर यादगारमे अहां छोटहिं किछु...

यदि अवसर देलहुं त'।

फोड़ी चानि अहांकें गामवला खापरि से जे हम जाइ आ अहां ओहि पड़ोसिन सं...

जा धरि रहत शरीरमे प्राण!

✍ ओम चौधरी

करब मां मिथिला कें प्रणाम!!
नित दिन उठी सोचब मैथिल जन कें विकास!
हैत ने समुचो त' थोड्वो हैत विकास!!
जा धरि रहत शरीरमे प्राण ...!
मैथिल छी हम गौरव अछि!
मां मैथिली के सौरभ छी हम!!
कमला कोशी बागमती गंडक!
विद्यापति मंडन अयाची जनक धाम!!
जा धरि रहत शरीरमे प्राण......!
मिठगर बोली अछि हमर पहचान
एकता अछि हमर जान!
देश रही प्रदेश रही सब तर अछि हमर एगो विशिष्ट पहचान!
जा धरि रहत शरीरमे प्राण!
ता धरि करब मां मिथिला कें प्रणाम!



दिल्ली आयानगर एगो प्राइवेट कंपनी मे एकाउंट एसिसटेंट मैनेजर पद पर कार्यरत।

संपर्क: चहुटा टारा टोल, थाना-बिस्फी, जिला- मधुबनी, बिहार
मोबाइल: 9958638604

✍ कान्ता रॉय



सम्प्रति : मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन मे एडमिनिस्ट्रेशन अधिकारी।
लेखन की विधाएं-लघुकथा, कहानी, गीत-गज़ल-कविता और आलोचना
अध्यक्ष : लघुकथा शोध-केंद्र भोपाल, मध्यप्रदेश
ट्रस्टी- श्री कृष्णकृपा मालती महावर बसंत परमार्थ न्यास।
प्रधान सम्पादक: लघुकथा टाइम्स
संस्थापक : अपना प्रकाशन
हिंदी लेखिका संघ मध्यप्रदेश (वेवसाईट विभाग की जिम्मेदारी)
पुस्तक प्रकाशन :
घाट पर ठहराव कहां (एकल लघुकथा संग्रह), पथ का चुनाव (एकल लघुकथा संग्रह), आस्तित्व की यात्रा (एकल लघुकथा संग्रह)।

सम्पर्क:
मकान न. 21, सेक्टर-सी, सुभाष कालोनी, नियर हाई टेंशन लाइन, गोविन्दपुरा, भोपाल-462023
फोन-9575465147
ई मेल- roy.kanta69@gmail.com

मिथिलानी जागि गेल

"यौ गाम बाबू, सुनलियै, की कहैत छथिन पिसी दाई।"

"कि कहैत छथुन मंजूला बौआ, तोहर पिसी दाई?"

"कहै छथिन जे कतबो पढेबै बेटी के, पाई तय गनहि पड़त।... पढ़ल-लिखल बेटी देबई, हुनकर बेटा समकक्ष, ते पाई रूपैया कियैक गनबै...से कहू त' ...?"

"की कहियौ बात बिचार मिथिला कें बौआ, ताहि दिन चूरा दही खुआ क' सभा के बर-बरियाती कें सत्कार भ' जाइत छलै। आब त' समय खराब भ' गेलई, बुझलहुं!"

"यौ काका, आंहा कहू जदी पाई - रुपैया ल' क' हमर बनल बेटी उठायत कियौ त' हम अनजाइतमे बेटी बियाह करब लेकिन पाई- रूपैया दय क' हम मिथिलामे बियाह नई करब। बुझलहूं ने।"

"मति भ्रष्ट भ' गेलहुं कि तोहर मंजुला! ई कि बजलैह?"

"हम त' आब जे बजलहुं सं बजलहूं। करबो सैह करब, नई तय कहियौ जे चेत जायत सब।"

मरूआ माछ

"हयौ!"

"धुत तोरी के! फेर स'?... फरमाऊ आई की चाही?"

"आई कम सम नय, बहुत किछु चाही!"

"ऐं, की बजलहुं, बहुत किछु?... यौ बाबा, ई कोउन घरक' बेटी माथ पर सटल'हुं जे बात बात पर फरमाइस लगेने रहय अछि? बकु जे बकय के अछि!"

"झिमनी पात, बांसक पात, केराक पात आओर... मरूआ-माछ सेहो, ... नय मरूआ-माछमे रुपैया नय फेकू, हम काकी घर सय मांगी क' मुंह अईछ लेब।"

"ऐं?... काल्हि जितिया पाबैन छैक की?"

"हां, बांसक पात, झिमनी पात आर केराक पात चन्नू कें कहबै, ककरो बाड़ीमे सय तोड़ी आनत! आहां नय हरान होऊ!"

"हम कियैक हरान नय होऊ? हम्मर कनिया दुई दिन निर्जला रहथिन, आर हम किछु नय करू?"

"पाई आओर समय, दुनुक अभाव! गिरहस्थी कें भार सबटा आहांक माथ पर. .....!"

"हे कनिया, ऐहन बात जुनि करू, आहांक वास्ते हम सबखन समर्थ छी। एकटा अप्पन ब्लाऊज लाऊ नाप वास्ते, ठाढ़ भ' दर्जीबा सय सिया क' आनब! आहांक लेल पटोर नय त' पोलिस्टर कें साड़ी हम आनिए सकैत छी।"

"साड़ी नय लाऊ, देलहा-लेलहा केयेकटा साड़ी राखल अछि सैह पहिर लेब।"

"हम्मर कनिया पाबैनमे अनकर नुआ नय पहिरत। अप्पन घरक'-बरक' देल खायत आओर पहिरत, बुझलहुं ने?"

"दही पौरल' अछि?" "हां!"

"जाइत छी किलो भरि माछ लाबै लेल। आई हम सब ऐकेठाम माछ-भात खायब।"

✍ मृणाल आशुतोष



युवा साहित्यकार, फेसबुकिया साहित्यिक दुनियामे चर्चित नाम। आकाशवाणी दरभंगासं लघुकथा सभक प्रसारण। सदाबहार कवी आरसी प्रसाद सिंहक ग्राम एरौतक निवासी।

सम्पर्क:
द्वारा श्री तृप्ति नारायण झा,
ग्राम: एरौत रोसड़ा, समस्तीपुर
(बिहार)
मोबाइल : 91-8010814932,
9811324545
ईमेल: mrinalashutosh9@gmail.com

ज्वाला

गामक सबसं पैग जमींदार कामेश्वर सिंह विदा भेल छलाह। हुनकर बेटा-पोता सभ श्राद्ध मे बीसगामा भोज करैत छलाह। गामक सभ मज़दूर हफ्ता भरि सं ओहि मे लागल छल। बस करिया आ हरिया ई दुन्नु भाय भोजक काम-काजक हिस्सा नय छल।

हफ्ता भरि सं दुनू बैसल छल। क्योनो मजदूरी नय भेंट रहल छल। घर मे आब खेबाक लेल एको टा दाना तक नय छल। हवा सं आवैत पकवान गमक सं पेटक ज्वाला दुगुना-चौगुना भ रहल छल। हरिया सं आबि भूख बर्दाश्त नय भेल, "रौ करिया, चल न रौ! भोज शुरू भ गेलैक हन! दु दिन सं पेटक भीतर किछ गेलए हन नय। चल न रौ!"

"तोरा जेबाक छौ त' जो मुदा हम नय जायब!"

"रौ, भूख सं आबि मरि जायब। चल न! गमछा सं मुंह छांपी लेब दुन्नु गोटा!"

"तू भूलि गेल हिन मुदा हमरा अखनो याद अछि जे खरिहान पहुंचबाक मे बस आधा घण्टा देर भ गेला पर कतेक गरिएने छल ओ जमींदरबाक पोता!"

"तौं एक नम्बरक गधा छैं। भूख सं जान जा रहल अछि आ तोरा अखन पूरना बात सब याद आबि रहल छौ। तोरा मरबाक छौ त' मर मुदा हम त' चललियो!"

"हां, हां जो न! लाज-शरम त' एको पैसा छौ नय तोरा!" करिया गरजक कोशिश केलक मुदा पेट-पीठ एक भेल देह एकर अनुमति नय देलक!"

भोजक भीड़ मे नुकाक हरिया दबाक खेलक। जमानाक बाद नीक भोजन मिलल छल। खा के निकालबाक चेष्टा मे छल कि जमींदरक छोटका बेटाक नज़र पड़ गेल। हरिया बचबाक कोशिश केलक मुदा सफल नय भेल।

"रे हरिया! खायल भ गेलौ त' कनि एकटा काज कर त!"

ओ एकटा काज सं दोसर काज करैत करैत आधा राइत भ गेल। मालिक सं भाय लेल खाना मांगी गमछा मे बान्हि ओ अपन झोपड़ी तरफ दौड़ल!

पहुंचैत ज़ोर सं बाज़ल, "रौ करिया! देख न! कतेक नीकगर पकवान आनलियो हन तोरा लेल!"

"मरि गेलें की रौ! जल्दी सं खा ले नय त' भूख सं मरि जेबें!

क्योनो जबाब नय आयल त' ओ करियाक ज़ोर सं हिलेलक। हिलवैत करिया एक तरफ लूढैक गेल।

"अरौ बाप रौ बाप! ई की भ गेलय। रौ भाय, हम नय जनैत छलिए जे तोरा मे एतैक गैरत छौ जे जान द देबहिं मुदा जमींदरबाक अन्न..." आब हरियाक चीख सं पूरा गाम सिहर गेलय।

गलती

दीवालीमे आदित्य मिशिर गाम आयल छलाह। घर-दुआरि बहुत गंदा छल त' साफ-सुथरा करबाक लेल दू टा जन लगौने छलाह। अपनों घरमे सर-समान सब ठीक सं सज़ाक राखि रहल छलाह। अचानक सं कनिया आवाज़ देलखिन, "घरमे कोन पहाड़ तोड़ि रहल छी। दुनू जन विदा भ रहल अछि।"

गमछा सरिआवैत बाहर एलाह, "की हउ गुलटेन? की भेलह? काज छोड़ी क' कियैक जा रहल छह?"

"किछ नै भेल मालिक। हमर आधा दिनक मजदूरी द' दीअ आ हमरा माफ करू।"

"बाज त' सही। की भेलौ?"

"मालिक! हमरा सं नुका क' हमर बेटा के अहां गुटका देलियै न!"

"हां, देलियै। पहिले ओ मांगलक तखन नै देलियैक रौ!"

"ओ त' बच्चा अछि एखन मुदा अहां त' बुझनूक छी।"

.....

"मालिक, अहां त' दिल्लीक पैघ हस्पतालमे काज सेहो करैत छी। रेडियोमे सुनैय छी जे ई खेला सं कैंसर सेहो भ' जाइत छैक। जखन अहिं लोकनि गुटका-तुटखा पर लगाम नै कसवैय त' ई कोना बन्द हेतैक?

"गुलटेन! औंठा छाप भ' क' बड्ड नीक बात कहले। भूलि जो ई बात आ लागि जाह काज पर। आब हम नहि एहन गलती करब आ नहि ककरो करय देबैक!!

✍ भवनाथ झा



शिक्षाः संस्कृत (एम.ए.), साहित्याचार्य
विशेष क्षेत्र- मिथिलाक लिपि-विज्ञान, इतिहास।
संस्कृतमे बुद्ध-चरितम् एवं भ्रूण पंचाशिका प्रकाशित। अनेक ग्रन्थक सम्पादन।
मैथिलीमे मुख्य रूपसं कथालेखन। 1980 ई. सं विभिन्न संकलन आ पत्रिकामे प्रकाशित।
उपन्यास- घुरि आउ कमला (ई बुक)

सम्पर्क:
ग्राम- हटाढ रुपौली,
झंझारपुर, मधुबनी

अतीत

पण्डितजी दलाने पर सुतथिन। हुनका सिरमामे हुनकासं बहुत जेठ एकटा संदूकची रहनि, जकर चाभी हरदम हुनक जनेउमे बंधले रहैत छल। बियाह भेलनि, बेटा भेलनि, पोताक उपनयन सेहो भेलनि, मुदा केओ नै देखलक जे ओहिमे की भरल छैक? दूनू बेटा भिनाउजो क' लेलनि, जाहिमे ओ संदुकची सामिलाते रहलैक।

एक बेर कमला माइ कुपित भेलीह। बाढिक घोषणा भेलैक। लोकसभक अंदाज रहनि जे एहि दलान पर सेहो पानि चढिए जाएत। बुढाकें सभ कहलथिन जे चलू कोठा पर व्यवस्था क' दैत छी। दू टा बेटा रहथिन्ह। छोटकी पुतोहुक इच्छा जे बाबूजी हमरामे रहथि। जेठकी सेहो ओहि संदुकचीक तिलस्म सं प्रभावित रहथि।

दुनू दियादनी यैह मौका देखलनि, हुनक सामान अपन कोठा पर लए जेबाक लेल दुनू जुमलीह। कहलथिन- बाबूजी- "ई संदुकची तं लए नै गेल हैत। एहिमे जे छैक, जे एकटा कपड़ामे बांधि देथु तं हम लए चलै छियनि। संदुकची एतहि रहए दथुन। बाढि गेलाक बाद सुखा क' फेर ओ सामान राखि देल जेतैक।"

बुढाकें अपन सुरक्षासं बेसी चिन्ता ओही गठरीक रहनि। ओ एकटा प्लास्टिकक बोडा मंगबाए अपनहिं हाथे सभटा मोटरी ओहिमे रखलनि आ पुतोहुक संग सीढी दिस बिदा भेलाह। दुनू पुतोहु अपन अपन घर चलबाक लेल दुराग्रह करए लगलथिन, पएरसं दाढी धरि पकड़लथिन। तखनि बुढा आजिज भ' अपन भातिज कमलाकान्त कें सोर कएलनि आ चिकरि उठलाह- आबह आ सम्हारह अपनालोकनिक अतीत। अपन पुरखासभ द्वारा हाथक लिखल ग्रन्थ सभ। कुलमे आब तोंही टा छह एकर उत्तराधिकारी। ओ अपन कान्ह परक बोड़ा कमलाकान्त कें दैत हल्लुक भेलाह आ कहलथिन- "कनियां, ओहिमे हमरालोकनिक पुरखाक लिखल ग्रन्थ सभ छैक, हस्तलेख सभ, आर किछु नै छैक, जकर असल उत्तराधिकारीकें हम सौंपि देलियैक। आब कहू, जे किनका आश्रममे चली।" बुढा घूमि देखलनि तं दुनू पुतोहु अपन अपन घर घोंसिया गेल छलीह।

पृथ्वीपुत्र

दिनेशक माय दुखीत पड़ि गेलीह। गाममे महामारी पसरि रहल छलैक। एसकरुआ दिनेश सभटा काज छोड़ि गाम जुमलाह आ मायक सेवामे लागि गेलाह।

मायक पलंग लग कुरसी पर बैसल सोचैत रहलाह- आन-आन घरमे की बितैत हेतैक? गाममे बहुतो बुढी एसकर रहैत छथि! हुनक सेवा के करैत हेतनि। भावना जोर केलकनि- सभक माय तं माइये हेतीह ने! आ दिनेश अपन घर छोड़ि गामक घरे-घरे घुमय लगलाह। माय फेर एसकरुआ भ' गेलथिन।

महामारी थम्है के नामे नै लैत रहै। दस गाम धरि पसरि गेलै। दिनेशक चिन्ता बढल गेलनि। गामक चौबटिया पर पाकड़िक गाछक तरमे एसकरे बैसल ओ सोचए लगलाह। मोन हुनका धिक्कारि रहल छल- की गामे टा तोहर अपन छियौ! सभ तं अपने ने! ! ई गाम, ई परोपट्टा, ई देश!, भारतमाता! सम्पूर्ण पृथ्वी!! दिनेश चिचिया उठलाह- हं, हम पृथ्वीपुत्र छी। भावना फेर जोर मारलकनि आ ओ ओतहिसं अपन गामो छोड़ि गामे-गामे बौआएल लगलाह।

किछु दिनक बाद दिनेशक मायक दाह-संस्कार क' लोकसभ नहेबाक लेल धारक कातमे जुटल तं देखलक जे एकटा बतहा धारक कछेरमे ओंघराएल बड़बड़ा रहल अछि- हम पृथ्वीपुत्र छी!!

✍ सत्येंद्र कुमार झा



प्रेम

एकटा 'संभ्रांत' घरक महिला अपन 'संभ्रांत' सखी-बहिनपाक बीच अपन पतिक प्रेमक बखान क' रहल छली। सम्पूर्ण वार्तालापक सार ई छल जे ओहि महिलाके हुनक पति जतेक प्रेम करैत छथिन, ओतेक कोनो महिलाके पति झगड़ा नहि करै छथि।

ओहि 'संभ्रान्त' महिला समूहक गप्प हुनकर घरक दाय सेहो सुनि रहल छलै।

'मलिकिनी, कहियो साहेब अहां पर खिसियाइतो छथि की नहि? अहांक कोनो गप्प कटितो छथि की नहि? कहियो तामसमे झिझकि क' बिनु खएने बाहर चलि जाइत छथि की नहि?'

'दूर बतहिया, तूं की बुझबही... पैघ घरमे ई सभ नहि होइत छै...' सम्पूर्ण महिला मंडली एकहि स्वरमे बाजि उठली।

हं मलिकिनी, ठीक्के कहलियै... पैघ घरमे ई सभ नहि होइत छै...' दाइक जवाब छलै आ ओकर नजरि सामने राखल शीशाक मूर्ति दिस चलि गेलै, जाहिमे एकटा पुरुष एकटा स्त्रीकें भरि पांज पकड़ने छलै आ मूर्तिक महिला कतौ आन दिस ताकि रहल छल... मलिकिनी ओकरा 'प्रेममूर्ति' कहैत छलि, मुदा ओकरा बुझल छै आ तें ओ मूर्ति ओकरा सदिखन 'विवशता ओ समझौता' केर प्रतीक सन लगैत छलै।

लेखक सी.एम. साईंस कॉलेज, दरभंगा केर मैथिली विभाग मे सहायक प्राध्यापक छथि।
प्रकाशित कृति : मैथिली ओ हिन्दीक प्राय: सभ प्रमुख पत्र-पत्रिकामे विभिन्न विधा मे रचना प्रकाशित। 2007 मे लघुकथाक पोथी 'अहीं के कहैत छी' आ 2018 मे कविता संग्रह स्वप्न मे 'इन्द्रधनुष' प्रकाशित।

सम्पर्क:
स्थायी पता : संकटमोचन नगर मंगरौनी रोड, मध ुबनी-847211
स्थानीय पता : शीशमहल बंगालीटोला, लहेरियासराय, दरभंगा-846001
मो. 9835684869

पूर्वज

एकटा भव्य समारोह। चकमक करैत मंच। लाल, पीयर, हरियर, उज्जर परिधानमे सजल कविगण। किछु विशिष्ट हेबाक प्रबल संभावना।

एकाएकी कविलोकनि मंच पर चढ़' लगला। मुदा कियो बुझि नहि पौलक जे मंच पर चढ़बा लेल जाहि लतमारा पर ओ लोकनि पयर राखि रहल छथि सं लकड़ीक नहि छल अपितु एकटा वृद्ध ओत' खसल छला। ओ त' लाइटवला देखलक त' चिचियायल।

वृद्धकें उठाओल गेल। ओ मूर्छित छला। बड़ीकालक बाद जखन हुनका होसमे आनल गेल त' एकगोटे पुछलथिन- 'बाबा, अपनेक नाम की अछि?'

वृद्ध बड्ड प्रयासक बाद बाजि सकला- 'विद्यापति।'

अपन नाम बजैत-बजैत ओ वृद्ध पुन: बेहोश भ' गेल छला।

एखनधरि हुनका होस नहि अयलनि अछि।

की एक्कहि टा अभिमन्यु ?

✍ डॉ. आभा झा



प्रवक्ता संस्कृत
गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16

सम्पर्क:
116-बी, अर्जुन नगर,
सफदरजंग एन्क्लेव,
नई दिल्ली-29
फोन : 9871053391

मां मां... कत्त' छी मां? हमरा बचाउ... हमरा बचाउ...

''की भेल बौआ? कोनो खराब सपना देखलौं की? हम एत्तहि छी, अहीं लग। लिय', कने पानि पी लियऽ, तखन सुतबाक कोशिश करू।'' पसेना सं भीजल अक्षय के माथ सोहरबैत माए सांत्वना दैत कहलखिन। धीरे-धीरे मायक कोरमे अक्षय निन्न पड़ि गेल।

भोरमे स्कूल जयबा लेल अक्षय के उठबैत माय कहलखिन - ''बौआ, जल्दी उठू, देरी भ' गेल, बस अबिते होयत।'' मां, आइ मोन नै ठीक अछि, छुट्टी कर' दिय'...

''की भेल बौआ? बोखार त' नै बुझाइछ, माथमे दर्द अछि की? आ की आन कोनो बात? चलू, डॉक्टर सं देखा दी की...। मुदा मूड़ी हिलबैत पुत्रक मुंह दिस तकैत माए कहलखिन- ''बेटा, हमरा बुझाइ अछि जेना अहां किछु कह' चाहैत छी, मुदा कहि नै पबै छी। बेटा! हम मां छी, निधोख भ' अपन समस्या कहू, जं कोनो समस्या छै, तो सोझरायल जेतै, बाजू त' अहां।''

''नै मां, रातिमे निन्न नै पड़ल ठीक सं, तैं आलस बुझा रहल अछि, एक दिन आराम करब त' ठीक भ' जायत, अहां निश्चिंत भ' आफिस जाउ...

''अहां के असकर छोड़ि दी? अहांक बाबू रहितथि त' ओ देखा दितथि डॉक्टर सं, ओ त' काल्हि औता मुम्बई सं। हम छुट्टी ल' लै छी।''

''मां हम कोनो छोट बच्चा नै छी, हम अठमा क्लासमे पढ़ै छी, अपन ध्यान राखि सकै छी अहां निश्चिंत भ' ऑफिस जाउ, हम कने काल आराम करब, तकर बाद स्कूल के होमवर्क करब।''

जेना तेना अपन माए के आश्वस्त क' ओ ऑफिस पठौलक, मुदा तकर बादो ओकरा चैन कत' भेटलै? दिमाग जेना सुन्न भ' गेल रहय- ''की करू हम? ककरा अपन समस्या कहियै? मां के केना ई लज्जाजनक वृत्तांत कहियै? लेकिन ककरो नै कहने त' हम पागल भ' जायब। लेकिन ककरा? स्कूलमे ककरो कहबै त' ओ सब हमरा बाहर मारि देत से धमकी देने अछि, नै कहबै त' नित्ते हमरा संगे दुराचार करत। एक सप्ताह सं लगातार अर्धावकाशमे जबरदस्ती शौचालय ल' जा नहि जानि की करै अछि, जबरदस्ती हमरा मुंहमे किछु पिया क निर्घृण काज करै अछि, पूरा शरीर जेना सुन्न पड़ि जाइ अछि। पढ़बामे सं मोन नै लगै अछि, रातिमे सेहो डरें निन्न नै अबै अछि। हे भगवान! हम की करू?'' तखने दरबज्जा के घंटी बाजल। केबाड़ के छेद सं देखलक त' बाप के देखि खुशी सं दरबज्जा फोललक- ''बाबू! अहां? अहां त' परसू अबैया छलियै?''

''हां बेटा! मीटिंग स्थगित भ' गेलै, तैं आइये आबि गेलहुं। लेकिन अहां घरमे केना? स्कूल नै गेलियै? मोन नै ठीक अछि आ की होमवर्क बाकी छल?''

''नै बाबू, मोन त' ततेक खराप नै अछि, लेकिन कनिक सुस्ती जकां लागि रहल छल तैं... कनी गड़बड़ा क' अक्षय बाजल। पिता ध्यान सं चेहरा देखैत, ओकर माथ छुबैत पुछलखिन- ''बेटा, क्यो स्कूलमे तंग करै अछि? कोनो दुर्घटना भेल? एक सप्ताह पहिने जाहि प्रसन्न बेटा छोड़ि क' गेल सही, सं त' अहां नै छी! की भेल? हमरा स्पष्ट कहू।'' आब अपना के नै रोहि सकल अक्षय। हिचकैत सब टा घटना बाप के बता देलक। कनिकाल हतबुद्धि जकां अमानवीय कष्ट सहैत सुकुमार बेटा के देखैत रहलाह। फेर अपन कर्तव्य निश्चित क' स्कूल दिस बिदा भेला। ''नै बाबू, अहां नै जाउ, ककरो कहने हमरा मारि देत ओ सभ।'' भ' सं कंपैत अक्षय बाजल। ''नै बेटा! आब क्यो हमर फूल सन बेटा के कोनो कष्ट नै द' सकै अछि, हम जड़ि सं काटि देबै ओकरा। अहां निश्चिंत रहू। तकर बाद अपन डीएसपी मित्र के सब बात बता हुनका संग स्कूल गेला। सब बात प्रधानाचार्य के बता हुनक सहयोग सं शौचालयमे गुप्त कैमरा लगबा आपस भेला। बेटा के अगला दिन स्कूल जा सामान्य व्यवहार करबा लेल कोनहुना तैयार केलनि। अगिला दिन चारू दुर्दांत छात्र सबके दुष्कृत्य कैमरामे अबितहिं बाहर सिविल ड्रेसमे ठाढ़ पुलिसवाला चारू छात्र के ध' लेलकै। माय-बाप के सुदृढ़ आर्थिक स्थिति आ ताकतवर पद सेहो ओकरा सबके जेल जैबा सं नै बचा सकलै। आइ साल भरि सं अक्षय आ ओकर सनक शोषित छात्र सभ निर्भय भ' विद्यालय जाइ छै। मुदा आइ अखबार पढ़िते, ओकर हेडलाइन पर नजर पड़िते अक्षय के पुरान घाव जेना टीस देब' लगलै- ''सात साल के बच्चा अभिमन्यु के स्कूलक शौचालयमे रहस्यमय ढंग सं मृत्यु भ' गेलै।'' हे भगवान! ई की केलियै? हम त' भाग्यशाली छलौं जे समय पर जान बचि गेल, मुदा आइयो अनेक बच्चा सब चुपचाप अमानवीय अनाचार सहबा लेल विवश अछि। महाभारत काल सं चक्रव्यूहमे अभिमन्यु फंसल तड़पि रहल अछि, मरि रहल अछि। की आइयो? की अभिमन्यु एक्कहि टा?

सामा करियौ ने उपाय... (मैथिली कथा)

✍ मुक्ता मिश्रा



राजकमल चौधरीक छोट पुत्री, दरभंगा जिलान्तर्गत सैसपुर गामक निवासी। कविता, कहानी आ अपन स्मृति आख्यान लिखि रहल छथिन। पहिलुक बेर कोनो प्रिंटमे प्रकाशन।

सम्पर्कः
ग्राम-सैसपुर, पोस्ट-जुगियारा,
जिला-दरभंगा, बिहार
फोनः 6200354993

सामा-चकेबा के गीत सुनि शिखा सेहंनतीत भेलि नैहर जाय हेतु, अनेक वर्ष बाद शिखा के कोनो खास प्रयोजन सं सासुर आबैय के सुअवसर प्राप्त भेलैन, सासुर त'सासुर थीकै नैहर सन मनोरम कहां, सर्वप्रथम शिखा प्रियतम के मनाओल तखन सासुर-भैंसुर सं आदेश प्राप्त कयल, कुलिन बेटी-पुतौहू के आदेश प्राप्त करैय मे अधिक कठिनाई के सामना नहि करैय पड़ैत छैन, कहै नै छैक 'माधोपुर लेल पगरि' शिखा मोटरि-चोटरी नहि बान्हय लगलि, मनहि बिचारल सनेस बाटहि लय लेब।

दलान पर टेम्पो रुकल परंच आंगन सं कियो नहि बहरायल, शिखा के मोनक कोन मे शंका अंकुरित भ' गेलैन, ऐना किया हबेली भम्म पड़ल अछि, कतय गेला भतिजा सब लाल बाबू, छोटका बऊआ आ कतैय गेला नूनू भैया, शंकित मोने शिखा आंगन प्रवेश कयलि देखैत छथि छोटकी काकी दतमैन आ पितरिया लोटा मे पानि लेने देहरि पर झुड़ झमान भेल बैसल छथिन।

दांत सं ठोर के कुचैत शिखा-काकी के चरण-स्पर्श करैत काकी सं पुछैत छथिन-काकी घर किये भम्म पड़ैल अछि, आशिष दय, नूआं के आंचर सं पीरहि झाड़ैत काकी शिखा धीया के बैसक दैत पुछैत छथिन-कहू बऊआ, नैहर केना मोन पड़ि गेल, काकी के नयन कोन मे नुकायल नोर मे अंकित ब्यथा के पढ़ैय के प्रयास करैत शिखा पुनः पुछैत छथिन-काकी, नूनू भैया एखन तक खेते पर छैथ, लाल बाबू के कखन तक स्कुल रहैत छैक, आंखि मे नोर दांत निपोर आंचर सरियाबैत भौजी अबैत छथिन शिखा के उचित भ्रम के टाड़ैत, गोर धय पुछैत छथिन-कहू दीदी की समाचार सब ठीक छैक नै, झा जी के दलाने पर किये क' छोड़ि देलियैन, ब्यथित मोन क'संग जूझैत बरबस हंसैत शिखा कहैत छथिन-की बात छैक बरा झा जी के फिकर लागल अछि, झा जी अपना गाम छथि आ हम अपना गाम आयल छी,

दीदी के अबाय सुनि जहिना छल तहिना रुन्नी दौड़ल आयल, ओहिना दुनू हाथ मे चिकैन माटी लेसारल छलैक, मिठाई के पाकिट शिखा-रुन्नी हाथ मे दैत कहैत छथिन-बऊओ सब स्कुल सं कखन अऊतौ, निश्चल भावे रुन्नी कहैत छैन-दीदी, लाल भैया आ छोटका भैया दुनू गोटे पापा संगे दिल्ली गेलथिन, शिखा के मोन वेकल भ' गेलैन, थर-थराईत स्वरे कहैत छथिन-कहिया गै, नुनू भैया फोन पर गप्प करैत छला परंच हम कतय सं बजैत छी से नहि कहैत छला, हमहूं त' बताहिए भेल रहैत छी, हमहूं कहां पुछैत छलियैन, माहुरक घोंट पीबैत भौजी कहैत छथिन-बऊआ दाई, जखन पेटो पर आफद पड़ैय लगलैन तखन गाम छोड़ैय के सिवा कोनो टा चारा नहि छलैन।

बीच मे अपने बिमार पड़ी गेल छला से सुनि अहां के दुनू भतिजो चलि गेल, फड़ाक सं नोर पोछैत शिखा के हाथ धय उठाबैत रुन्नी कहैत छथिन-दीदी, हम कतेक सुन्नर सामा बनेलहूं अछि से देखय चलु नै, बाक् बन्न कयने नीरस नयने शिखा सामा-चकेबा के निहारी रहल छलि, मन-ही-मन विनयभाव प्रगट क' शिखा सामा-चकेबा सं कहि रहल छलथिन-हे सामा-चकेबा आब किछु करियो उपाय जाहि सं हमर भाई-भतिजा मिथिले मे बास करैय, ओकरा रने-बने बऊआई के काज नहि पड़ैय, मिथिले मे हमरा भाई-भतिजा के रोजगार भेटय।

पाबनि - तिहार



✍ पं. रामानन्द ठाकुर

सा.धर्म. आचार्य, एम.ए. मैथिली
कर्मकाण्ड, ज्योतिष, पुराण,
प्रोविन्य कर्म एवं यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ

सपर्क :
एच-292, पु. सीमापुरी
मो. 09871637565

अगहनक इजोरिया

रवि व्रतारंभ	- 08/12/2018
श्री गणेश चतुर्थी	- 10/12/2018
विवाह पंचमी	- 12/12/2018
स्कंध षष्ठी	- 13/12/2018
मोक्षदा एकादशी	- 18/12/2018
प्रदोष त्रयोदशी	- 20/12/2018
प्रदोष चतुर्दशी	- 21/12/2018
पूर्णिमा	- 22/12/2018

पूसक अन्हरिया

लम्बोदर चतुर्थी	- 25/12/2018
सफला एकादशी	- 01/01/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 03/01/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 04/01/2019
दशतारकारंभ	- 04/01/2019
अमावश	- 05/01/2019

पूसक इजोरिया

श्री गणेश चतुर्थी	- 09/01/2019
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	- 13/01/2019
तिल संक्रांति/दशतारकांत	- 15/01/2019
पुत्रदा एकादशी	- 17/01/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 18/01/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 19/01/2019
पूर्णिमा	- 21/01/2019

माघक अन्हरिया

कमला स्नान	- 22/01/2019
भालचन्द्र चतुर्थी	- 24/01/2019
रामानन्दाचार्य जयंती	- 27/01/2019
षट्तिला एकादशी	- 31/01/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 02/02/2019
नरक निवारण चतुर्दशी	- 03/02/2019
मौनी अमावस	- 04/02/2019

माघक इजोरिया

शिशिर नवरात्रारंभ	- 05/01/2019
श्रीगणेश चतुर्थी	- 08/01/2019
सरस्वती पूजा	- 10/01/2019
अचला सप्तमी	- 12/01/2019
भौमी एकादशी	- 16/01/2019
माधव द्वादशी	- 16/01/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 17/01/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 18/01/2019
पूर्णिमा	- 19/01/2019

फागुनक अन्हरिया

हेरम्ब चतुर्थी	- 22/02/2019
विजया एकादशी	- 02/03/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 03/03/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 04/03/2019
महाशिवरात्रि	- 04/03/2019
शिव दर्शन	- 05/03/2019
गोसाहन्तिक अमावस	- 06/03/2019

फागुनक इजोरिया

जनकपुर परिक्रमारंभ	- 07/03/2019
श्री गणेश चतुर्थी	- 10/03/2019
आमलकी एकादशी	- 17/03/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 18/03/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 19/03/2019
होलिका दाह	- 20/03/2019
सप्तडोरा होली	- 21/03/2019

चैतक अन्हरिया

विकट चतुर्थी	- 24/03/2019
पापमोचनी एकादशी	- 01/04/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 02/04/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 03/04/2019
अमावस स्नान दान	- 05/04/2019

चैतक इजोरिया

वसंत नवरात्रारंभ	- 06/04/2019
गौरी तृतीया/गणेश चतुर्थी	- 08/04/2019
सुर्य षष्ठी	- 11/04/2019
अष्टमी निशा पूजा	- 12/04/2019
विजया दशमी पारण	- 14/04/2019
कामदा एकादशी	- 15/04/2019
विष्णु द्वादशी	- 16/04/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 17/04/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 18/04/2019
पूर्णिमा	- 19/04/2019

वैशाखक अन्हरिया

वक्रतुण्ड चतुर्थी	- 22/04/2019
कोकिला षष्ठी	- 25/04/2019
वरुथिनी एकादशी	- 30/04/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 02/05/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 03/05/2019
अमावस	- 04/05/2019

वैशाखक इजोरिया

अक्षय तृतीया	- 07/05/2019
श्री गणेश चतुर्थी	- 08/05/2019
जान्हवी सप्तमी	- 11/05/2019
रवि व्रतांत	- 12/05/2019
जानकी नवमी	- 14/05/2019
मोहिनी एकादशी	- 15/05/2019
मधुसूदन द्वादशी	- 16/05/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 16/05/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 17/05/2019
पूर्णिमा	- 18/05/2019

जेठक अन्हरिया

आखुरथ चतुर्थी	- 22/05/2019
अपरा एकादशी	- 30/05/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 31/05/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 01/06/2019
वट सावित्री अमावस	- 03/06/2019

जेठक इजोरिया

श्री गणेश चतुर्थी	- 06/06/2019
गंगा दशहरा	- 12/06/2019
निर्जला एकादशी	- 13/06/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 14/06/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 15/06/2019
पूर्णिमा	- 17/06/2019

आषाढ़क अन्हरिया

विघ्नराज चतुर्थी	- 20/06/2019
मैथिल सौराठ सभारंभ	- 21/06/2019
योगिनी एकादशी	- 28/06/2019
योगिनी एकादशी वैष्णव	- 29/06/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 30/06/2019
सौराठ सभाअंत	- 30/06/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 01/07/2019
भौमवती अमावस	- 02/07/2019

आषाढ़क इजोरिया

ग्रीष्म नवरात्रारंभ	- 03/07/2019
श्री गणेश चतुर्थी	- 05/07/2019
हरिशयन एकादशी	- 12/07/2019
वासुदेव द्वादशी	- 13/07/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 14/07/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 15/07/2019
गुरु पूर्णिमा	- 16/07/2019

साओनक अन्हरिया

गणधिप चतुर्थी	- 20/07/2019
सोम व्रतारंभ	- 22/07/2019
मधुश्रावणी मौना पंचमी	- 22/07/2019
कामदा एकादशी	- 28/07/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 29/07/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 30/07/2019
हरियाली अमावस	- 01/08/2019

साओनक इजोरिया

मधुश्रावणी	- 03/08/2019
बरद चतुर्थी	- 04/08/2019
सोमव्रत	- 05/08/2019
पूत्रदा एकादशी	- 11/08/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 12/08/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 13/08/2019
रक्षाबन्धन पूर्णिमा	- 15/08/2019

भादवक अन्हरिया

विनायक चतुर्थी	- 19/08/2019
चन्द्र षष्ठी	- 21/08/2019
कृष्ण जन्म अष्टमी व्रत	- 23/08/2019
कृष्ण जन्म वैष्णव व्रत	- 24/08/2019
अजा एकादशी	- 26/08/2019
वत्स द्वादशी	- 27/08/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 28/08/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 29/08/2019
कुशी अमावस	- 30/08/2019

आसिनक इजोरिया

हरितालिका तीज	- 01/09/2019
चौठ चन्द्र	- 02/09/2019
ऋषि पंचमी	- 03/09/2019
राधा अष्टमी	- 06/09/2019
कर्माधर्मा एकादशी	- 09/09/2019
वामन जयंती इन्द्रपूजा	- 10/09/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 11/09/2019
अनन्त चतुर्दशी	- 12/09/2019
महालयारंभ	- 13/09/2019
पूर्णिमा अर्घदान	- 14/09/2019

आसिनक अन्हरिया

पितृपक्ष पहिल श्राद्ध	- 15/09/2019
इन्द्रपूजा विसर्जन	- 17/09/2019
गणेश चतुर्थी	- 17/09/2019
जितिया अष्टमी व्रत	- 22/09/2019
मातृ नवमी	- 23/09/2019
इन्दिरा एकादशी	- 25/09/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 26/09/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 27/09/2019
पितृ अमावस	- 28/09/2019

आसिनक इजोरिया

नवरात्रि आरंभ	- 29/09/2019
श्री गणेश चतुर्थी	- 01/10/2019
विजया दशमी	- 08/10/2019
पाशांकुशा एकादशी	- 09/10/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 11/10/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 12/10/2019
कोजगरा पूर्णिमा	- 13/10/2019

कार्तिक अन्हरिया

करक चतुर्थी	- 17/10/2019
रमा एकादशी	- 24/10/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 25/10/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 26/10/2019
दीपावली अमावस	- 27/10/2019
अन्नकुट गोवर्धन पूजा	- 28/10/2019

कार्तिक इजोरिया

भैया दुज	- 29/10/2019
श्री गणेश चतुर्थी	- 31/10/2019
नहाय खाय	- 31/10/2019
खरना	- 01/11/2019
छठि संध्या अर्घ्य	- 02/11/2019
प्रात: अर्घ्य परणा	- 03/11/2019
अक्षय नवमी	- 05/11/2019
देवोत्थान एकादशी	- 08/11/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 09/11/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 10/11/2019
कार्तिकी पूर्णिमा	- 12/11/2019

अगहनक अन्हरिया

श्री गजानन चतुर्थी	- 16/11/2019
कालभैरब अष्टमी	- 20/11/2019
उत्पन्ना एकादशी	- 22/11/2019
प्रदोष त्रयोदशी	- 24/11/2019
प्रदोष चतुर्दशी	- 25/11/2019
मार्गी अमावस	- 26/11/2019

सामान्य पर्वादिक मन्त्र



✍ पं. श्री भवनाथ झा

सपर्क :
5516/3, फरीदाबाद
मो. 9810024069,
9910024069

1. **साओनक पूर्णिमा कें रक्षा (राखी) बन्हबाक मन्त्र –**
ऊं येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबधनामि रक्षे मा चल मा चल।।
2. **भादवक अमावस्याकें संग्रहार्थ कुश उखाड़बाक मन्त्र –**
ऊं कुशाग्रे वसते रूद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।।
ऊं कुशो'सि कुशपुत्रो'सि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देव पितृ हितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।
3. **भाद्रशुक्ल चतुर्थीचन्द्रक दर्शन करबाक मन्त्र –**
फल लय – सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तयं ह्येष स्यमन्तकः।।
प्रार्थना – नमः शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय त' नमः। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मीभ्रात्रे नमो'स्तु ते।
दिव्यशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
4. **भाद्रशुक्ल चतुर्दशी कें अनन्त धारण करबाक मंत्र** (पुरुष दहिन बांहिं आ स्त्री वाम बांहिंमे बन्हैत छथि) –
प्रार्थना – ऊं अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्रशिरसे नमः। नमोस्तु पद्मनाभाय नागानां पतये नमः।।
अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नान् समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।।
बन्धन मन्त्र – ऊं संसारसागरगुहासु सुखं विहर्तु वाञ्छन्ति ये कुरूकुलोभ्द्वशुद्धसत्वाः।
सम्पूज्य च त्रिभुवनेशपनन्तदेवं बध नन्ति दक्षिणकरे वरडोरकन्ते।।
ऊं इदं डोरकमनन्ताख्यं चतुर्दशगुण ाात्मकम् सर्वदेवमयं विष्णोः स्वकरे धारयाम्यहम्।।
5. **भादवक पूर्णिमा कें अगस्त्यार्घदान (अगस्ति तर्पणक) मन्त्र** – (शंख सं दक्षिण मुहें अर्घ्यदान करी)
जलअक्षातस्वेतपुष्पलय–ऊं कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम्। उदयन्ते लड्काद्वारे अर्घोऽय प्रतिगृहाताम्।।
फल फूल द्रव्यलय – ऊं शंख पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधाानि च। उदयन्ते लं्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम।।
काश-पुष्प लय – ऊं काशपुष्पप्रतीकाश वर्हिमारूत सम्भव। उदयन्ते लेकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम।।
प्रार्थना मन्त्र – ऊं आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन सं मंऽगस्त्यः प्रसीदतु।।
आगस्ति पत्नी कें आर्घ्य – ऊं लोपामुद्रे महाभागे राजपुत्रि पतिव्रते। गृहाणाधर्य मया दत्तं मैत्राावरूणि वल्लभे।।
6. **तुलासंक्रान्ति (कार्तिक संक्रान्ति) सं आकाशदीपदानक मन्त्र –**
ऊं दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपम् जे प्रयच्छकमि नमोऽनन्ताय बेधासे।।
7. **दीपावलिक प्रदोष कालमे उल्का ग्रहण-प्रज्वलन-भ्रमण-विसर्जन सबटा दक्षिण मूहें करी –**
ग्रहण-प्रज्वलन मन्त्र – ऊं शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।।
भमणमन्त्र– ऊं अग्निदग्धाश्रच सं जीवाः येप्यदग्धा कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमांगतिम।।
विसर्जन/त्यजनपन्त्र– यमलोकं परित्यज्य आज्ञता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।
8. **भ्रातृद्वितीया दिन भाइ कें भोजन**

करयबाकाल बहिन कें निम्न मन्त्र पढ़क चाहि –

छोट बहिन हेतू– भ्रात: तवा'नुजाता'हं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत:।।

जेठ बहिन हेतु– भ्रात: तवाग्रजाता'हं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत:।।

9. **देवोत्थान एकादशीक विष्णूत्थापनक मन्त्र –**

ऊं ब्रहोन्द्ररूद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीय:। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।।

ऊंमेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र: शारद्यपुष्पणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।।

ऊं उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्

10. **माघशुक्ल अचला सप्तमी कें बैर आ आकक पात शिर पर लय स्नान करबाक मन्त्र –**

ऊं यद्यज्जन्मातं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी।।

एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातं च यत् पुन:।।

इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिकें सप्तव्याधिसमायुक्तं हर माकरि सप्तमि।।

सूर्यार्घ्य दान – ऊं सप्तसप्तेरह: प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। यप्तमीसहितो देव गृहाणार्ध्य दिवाकर।।

प्रणाम् मन्त्र – ऊं जननी सर्वभूतानां सप्तमी सप्तप्तिकें सप्तव्याहृतिकें देवि नमस्ते रविमण्डले।।

11. **माघशुक्ल भीष्माष्टमी कें भीष्मक तर्पण करबाक मन्त्र –** (पिताक जिवितो कयल जाइछ)।

तेकुशायवजल लय – ऊं वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे।।

वसूनामवताराय शान्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।।

प्रार्थना मन्त्र–ऊं भीष्म: शान्तनवो वीर: सत्यवादी जितेन्द्रिय:। आभिरभ्दिरवाप्नोतु प्रत्रपौत्रोचितां क्रयाम्।।

12. **फाल्गुन पूर्णिमा कें होलिकादहनक मन्त्र –**

ध्यान मन्त्र – ऊं अस्माभिर्भयसन्त्रस्तै: कृत्वा त्वं होलिकें यत:। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।

दाहन मन्त्र – ऊं दीपयामाम्यत्र त' घोरां चितिं राक्षसि त' नम:। हिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीपते:।।

भष्म धारण – वन्दिता'सि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभि:। अतस्त्वं पाहि नो भीत्या भूषिता भूतिदा भव।।

13. **वैशाख (मेष) संक्रांन्तिकें जलपूरिति घटदान विधि –** (ई माता–पिता एवम् स्वयं हेतु कयल जा सकैत अछि)। जाहि निमित्तक जतेक घैल हो, जल भरि क' सरबामे जौ–आम–द्रव्य दय घैलक मूंह झांपि दी। एकटा पात पर एकटा तेकुशा राखी, एकटा पात पर अक्षत–फूल मिला क' अलग आ तिल अलग राखी, तखन एकटा तेकुशा सदिखन हाथमे रखनञ आगां सब काज करी।

पुष्पाक्षत सं घैल पर – ऊं वारिपूर्णघटाय नम:। 3 बेर, पात पर राखल तेकुशा पर – ऊं ब्राह्मणाय नम: 3 बेर – तखन तिल–जल लयय (संकल्प)–ऊं अद्य अमुकें मासि अमुकें पक्षे अमुक तिथौमेषार्कसंक्रमण प्रयुक्तपुण्यकाले अमुकगोत्रस्य मम श्री अमुकशर्मण: सकलपापक्षय पूर्वक ऐहिकसकलमनोरथ सि) पूर्वक अनन्तकालिक स्वर्गप्राप्तिकाम: इमं ब्रह्मविष्णुशिवात्माकं सोपकरण वारिपूर्णघटं वरूणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाया'हं ददें।।

तेकुशा होथे घैल स्पर्श क' – ऊं एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु शिवात्मक:। अस्य प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथ–।।

पुन: तेकुशातिलजल लय, दक्षिणा राखि – ऊं अद्य कृतैतद् वारिपूर्णघट दानप्रतिष्ठार्थं एतावद् द्रव्यमूल्यक हिरण्यम् अग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।।

ई स्वयं हेतु घटदानक प्रक्रिया अछि। पितृ–मातृ उद्येश्यक घटदानमे मात्र संकल्प निम्न प्रकारे होयत, शेष पूर्ववते रहत।

मातृ–पितृ उद्येश्यक – ऊं अद्य अमुकें मासि अमुकें पक्षे अमुक निथौमेषार्कसंक्रमण प्रयुक्तपुण्यकाले अमुकगोत्रस्य पितु: अमुकशर्मण: (अमुकगोत्राया: मातु: अमुकीदेव्या:) स्वर्गप्रप्तिकामनया इमं वारि पूर्णघटं वरूणदैवतं सथानामगोत्राय ब्राह्मणाया'हं ददें।।

14. **वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) कें परशुराम कें अर्ध्य देबाक मन्त्र –**

ऊं जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्य मयादात्तं कृपया परमेश्वर।।

आषाढ़शुक्ल रविदिन कें पुलिकमूल (इसरगत) बन्हबाक मन्त्र –

ऊं शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागा: प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।।

अन्य व्यवहारिक एवम् सांस्कारिक मन्त्र

✍ पं. श्री भवनाथ झा

वाजसनेयीक यज्ञोपवीतक मन्त्र: ऊं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्यंच प्रतिपुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:।

छनदोगक यज्ञोपवीतक मन्त्र: ऊं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपरह्मामि।।

दूर्वाक्षतक मन्त्र:

ऊं आबह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसि जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्यो'तिव्याधी महारथो

जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ान्वानाशु: सप्ति पुरन्धिर्योषा रथेष्ठा: सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतम् निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम् योगक्षेमो न: कल्पताम् मन्त्रार्था: सिद्धय: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशो'स्तु मित्राणामुदयस्तव।।

(एहि सं आगां पुरुषक हेतु: दीर्घायुर्भव:, आ स्त्रिगणक हेतु - सौभाग्यवती भव, कहल जाइछ)।

वैतरणी गोदान विधि

वैतरणी गोदानक सम्बन्धमे कारी गाय दानक हेतु कहल गेल अछि। अभावमे लोक आनो रंगक गाय अथवा गोमूल्य सेहो दान करैत छथि। कतेक ठाम दान लेनिहार ब्राह्मण उपस्थित रहैत छथिन आ कतेक ठाम नञ। परिस्थिति वश मंत्र आ व्यवस्था बदलि जाइत छैक। कारी गाय हेतु - कृष्ण गवि, बाछा/बाछी सहित हो त' - सवत्सकृष्ण गवि, उज्जर गाय हेतु - कपिल गवि, सेहो बच्चा सहित हो त'-सवत्सकपिल गवि, गायक उपर वस्त्रादि हो त'-सावरण कृष्णगवि, आदि कहक चाहि, आ गोमूल्य हेतु - एतावद्द्रव्यमूल्यक सावरण सवत्सकृष्ण गवि, कहक थिक। ब्राह्मण छथि त' हुनक पैर पर, नञ होथि त' पात पर तेकुशा राखि ताही पर ब्राह्मण छथि त' हुनक पैर पर, नञ होथि त' पात पर तेकुशा राखि ताही पर ब्राह्मणक पूजा करक चाही। एतावता:

दाता पूर्वाभिमुख बैसि शुचि भ' तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं कृष्णगव्यै नम:।।

(सवत्स/सावरण/कपिल/एतावद् द्रव्यमूल्यक यथोपलब्ध वाक्य योजन करी) तीन वेरि गाय पर।। ऊं

ब्राह्मणाय नम:।। तीन वेरि ब्राह्मणक पैर पर अथवा पात पर राखल तेकुशा पर।। ब्राह्मणक उपस्थिति हो त'

तेकुशा हाथे जल ल' - ऊं इमां कृष्णां गां ददानि।। जल ब्राह्मणक हाथमे दी आ ब्राहाण जल लैत - ऊं

ददस्व।। कहथि। तत: दाता गाय कें जल सं सिक्त क' - ऊं उष्णे वर्षति शीते वा मारूते वाति वा भृशम्।

दातारं त्रायते यस्मात् तस्मात् वैतरणी स्मृता।। समद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्यंनां कृष्णां वैतरणीं च गाम्। तत: तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं अद्य अमुकें मासि अमुकें पक्षे अमुकतिथौ अमुक गोत्रस्य पितु: अमुकशर्मण: यमद्व ारावस्थित वैतरणीनदी सुखसन्तरणकाम इमां कृष्णां गां (एतावद्द्रव्यमूल्यक सवत्सकृष्ण ागवीं) रूद्रदैवताम् यथानामगोत्राय ब्राह्मण ााय दातुमहमुत्सृज्ये।। तत: पात पर दक्षिणा राखि- ऊं तत्सत्।। कहि जल सं सित्त क' तेकुशा-तिल-जल ल' - ऊं अद्य कृतैतत् कृष्णगवीदान प्रतिष्ठार्थम् एतावद् द्रव्यमूल्यक हिरण्यम् अग्निदैवतम् यथानामगोत्राय ब्राह्मण ााय दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।। दक्षिणा ब्राह्मण कें द'- ऊं स्वस्ति ।। ई ब्राह्मण कहथि। तत:पर ब्राह्मण गायक न्ाँगरि पकरि क' अपन शाखानुसार कामस्तुति पाठ करथि। यथा- यजुर्वेदी होथि त' - ऊं को दात् कस्पा अदात् कामो दात् कामायादात्। काम: प्रतिगृहीता कामैत्तत्ते।।

सामवेदी होथि त' -

ऊंक इदं कस्मा अदात् कामायादात्।

कामो दाता काम: प्रतिगृहीता काम: समुद्रमाविशत् कामेन त्वा प्रतिगृहामि कामैत्तत्ते।।

दानलेनिहार ब्राह्मणक अनुपस्थितिमे कामस्तुतिक प्रयोजन नञ। इति।।

दाहसंस्कार विधि

कुश आछौल ठइरी पर शव कें व्यवहारानुसार राखि क' नूतनवस्त्र पुष्पमालादि सं अलंकृत क'

श्मशान भूमिमे आनि, कार्ता/अग्निदाता स्नान पूर्वक शुचि भ' पूर्वाभिमुख भ' नव मटका (तौला) मे जल भरि तेकुशा हाथे जल कें अभिमन्त्रित करथि - मन्त्र यथा - ऊं गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्या: शिलोच्चया:। कुरूक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सरिद्राम्। कौशिकीं चन्द्रभागां च सर्वपाप प्रणाशिनीम्।

भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा।। धैनवं च वराहं च तीर्थ पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुर: सागरांस्तथा।। ई पढ़ि सब तीर्थक मानसं ध्यान आ आवाहन क' शव कें दक्षिण शिर क' स्नान कराय यथा शक्ति वस्त्र-यज्ञोपवीत-पुष्पमाला-चन्दन-सुगन्धादि सं अलंकृत क' चिता पर उत्तरशिर शयन करावी। (पुरुष कें अधोमुख आ स्त्री कें उत्तान राखक लेल कहल गेल अछि। अपन व्यवहारक अनुकूल करी)। चिता कें काष्ठादि सं सजा तत: कर्ता अपसव्य भ' दक्षिणाभिमुख भ' आचारात् हाथमे प्रज्ज्वलित ऊक ल' अगिला दूनूं

मन्त्र पढ़ि, तीन वेरी चिता कें प्रदक्षिणा क' शव कें मुखाग्नि देथि। मन्त्र यथा - ऊं कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् सं गच्छतु।। ततः घृतादिक निक्षेप पूर्वक कपोतावशेष शवदाह क' ऊक पर कुरहैर सं सात वेर प्रहार क' चिता कें सात वेरि प्रदक्षिणा क' सात टा एक-एक ठुठ्ठीक काठी ल' अगिला मन्त्र पढ़ि बेराबेरी सातो काठी फेकि दी अथवा अपन व्यहार कें अनुसार करी।। मन्त्र यथा - ऊं क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्। ततः शवानुगमन कर्ता (कठियारी गेनिहार) सब गोटे छोट आगु पैघ पाछूक क्रममे एक दोसरक पैरक विनास्पर्श करैत जलाशय जा क' कनेक जलमे जा क' भीजल वस्त्र देह पर ल' क' अपसव्य भ' मोड़ा-तिल ल' मृतकक ध्यान करैक दक्षिणाभिमुख तिलाञ्जलि देथि। मन्त्र यथा - ऊं अद्यामुकगोत्र (पितः) अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। (संबंधी लोकनि पितः कें स्थान पर अपन सम्बन्धानुसार वाक्य योजन करथि, असंबंधी लोकनि ई शब्द उच्चारण नञ करथि)। ततः अग्निमे जा क' लोह-पाथर-अग्नि-जल स्पर्श व्यवहारानुसार करी। ओना एकर मन्त्र देल गेल अछि। यथा - लौह - ऊं लौहवद् घ्द्कायो'स्तु। पाथर स्पर्श - ऊं अश्मेव स्थिरो भूयासम्। अग्नि स्पर्श - ऊं अग्निर्नः शर्म यच्छतु। प्रत्येक वेर जलक स्पर्श विना मन्त्रहिं करी।।

मृतोद्येष्यक सन्ध्या विधि

अस्थिसञ्चयोपरान्त ताही सन्ध्या सं आरम्भ क' नह-केशक सन्ध्या पर्यन्त करक चाही।

घरक एकटा कोनमे गायक गोबर सं नीपल जगह पर त्रिकाष्ठ (खड़हीक तेकठी) पर राखल माटिक (कांच) भाण्ड अथवा पिपरक पातक पूड़ामे अलग-अलग जल-दूध-फूलमाला-दीप राखि क' कर्ता दक्षिणाभिमुख भ' बामा जांघ खसा मोड़ा-तिल-जल ल' उपरोक्त प्रत्येक वस्तुक बेराबेरी दान करथि। क्रमयथा - जलदान - ऊं अस्यां सन्ध्यायाम् अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत इदं जलं त' मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ऊं अत्र स्नाहि।। दुग्धदान-ऊं अस्यां सन्ध्यायाम्। ऊं इदं दुग्धं त' मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ऊं इदं दुग्धं पिब।। पुष्पमाल्य दान - ऊं अस्यां सन्ध्याम् अमुकगोत्र पितः अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत एष दीपस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठाताम्। ऊं अनेन पश्य।। इति।।

मिथिलामाहात्म्य

मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।।

मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तभ्दक्तैः सह मोदते।।

मैथिली शरणम्मम।। कदाचित् अशुद्धिक हेतु क्षमा पार्थी।।

✍ मिन्नी मिश्रा

आमक दू कतरा



सम्पर्क:
शिवमैत्री अपार्टमेंट, फ्लैट नंबर-301, रोड नंबर-3, महेशनगर, पटना-24
फोन नंबर: 8340290574

"बधाई हो... अहां सब दादा-दादी बनि गेलौं।

"सत्ते कहैत छी...?

"हां...काकी, भरल दशमीमे साक्षात भगवती घर एलीह हे।"

"मुदा...एना...कोना भ' गेलइ! टोल-परोस कें लोक सब हरदम बजैत छल-- जे कनियां कें बेटा हेतैन... कनियां कें पेटक सभटा लक्षण बेटे वला छैन्ह।''

"पहिल बेटी...बेटे भेलइ ने... द्य जाउ. ..जल्दी सं, जा क चिल्हका-चिल्कौर कें देख आउ।" कक्का, काकी कें ढांढस दैत बजलाह।

"हां...काकी चलू हमरा संगे...अहांकें लेबर-रूम लय चलैत छी। पोती कें देखिकऽ मोन गदगद भ' जैत...डोका जेना आइंख, पोछल नाक, औंठिया केश ... अनमन दुर्गा जी।

काकी, सब साल अहां जयंती खसबैत छी...कलश बैसबैत छी...नौ दिन कुमारि भोजन करवैत छी। पूरा...परोपट्टामे अहांक विधि-विधान सं पूजा-पाठक सोहरा पसरल अछि। तकरे त' ई फल अछि ... जे आइ अष्टमी दिन भगवती कें पदार्पण भेल।"

"अवस्था...हमर भेल, भंसीआइत अहां छी...? कतय...पूजा-पाठ कें गप्प, आ... कतय...बेटा-बेटी के! दुनुमे कोनो तुलना छै कि?"

"काकी, हम अहांकें प्रशंसा केलौं... अहां, उनटे हमरा पर बिगरि गेलौं।'

" देखू, भगवाने, ऊपरे सं बेटा...बेटीमे अंतर कऽ कें पठेने छथिन्ह? बिना बेटा कें आगि देने, माय-बाप कें नै तऽ पइट होइत छै...आ नै कुलक वंश बढ़ैत छै।

" काकी, अहां भरि दिन भगवतीए कें पूजा-पाठ करैत रहैत छी...तखन एहन बात! यदि बेटी नै हेत त...बेटा कतय सं हेत? आब बताउ...बेटा-बेटी में, के...कम, आ...के...बेसी?

छै ने...एक्कें आमक दू कतरा।''

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Balance Sheet As On 31st March 2018

LIABILITIES		Amounts (Rs)
CAPITAL FUNDS		
Opening Balance	2,707,976.00	
Add : Excess income over expenses during the year	91,270.00	2,799,246.00
CURRENT LIABILITIES		
Expenses Payable		522,535.00
		3,321,781.00

ASSETS		Amounts (Rs)
FIXED ASSETS		
FURNITURE	1,988.00	
Less: Depreciation	198.00	1,790.00
COMPUTER	24,000.00	
Less: Depreciation	8,000.00	16,000.00
LAND & BUILDING		
Najafgarh (Janki Bhawan)	494,814.00	494,814.00
Sangam Vihar (Mithila Bhawan)	2,082,402.00	
	52,060.00	2,030,342.00
INVESTEMNTS		
Fixed Deposit with Bank	300,000.00	
Add: Interset Accrued	33,917.00	333,917.00
SECURITY DEPOSIT		62,500.00
CURRENT ASSETS		
Cash- in- hand		124,519.00
SBI Current A/c		65,722.00
Syndicate Bank		43,435.00
Loans & Advances		59,270.00
TDS Receivable		89,472.00
		3,321,781.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]



CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-08-2018

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

अखिल भारतीय मिथिला संघ
अध्यक्ष
PRESIDENT

TREASURER

अखिल भारतीय मिथिला संघ
महासचिव
GEN. SECRETARY

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110062

Income & Expenditure A/c For The Year Ending 31st March 2018

EXPENDITURE	Amount (Rs)	INCOME	Amount (Rs)
To Bank Charges	1,999.00	By Donation	104,000.00
To Depreciation	60,258.00	By Interest from FDR	24,101.00
To Conveyance	87,755.00	By Interest from Saving A/C	1,919.00
To Misc. Expenses	2,335.00	By Membership Fees	78,118.00
To Honorarium	180,500.00	By Received from Sovenior	1,823,152.00
To Tribhukti Publication	25,000.00	By Received from Coupan Sales	306,000.00
To Educational Scholarship	31,000.00		
To Samapan Samaroh	27,000.00		
To Accounting Charges	15,000.00		
To Medical Camp	30,000.00		
To Social Welfare	31,000.00		
To Samarika Publication	277,900.00		
To Printing Statioanry	11,626.00		
To Postage and Stamp	4,992.00		
To Short & Excess	1,392.00		
To Meeting & Seminar	35,000.00		
To, Audit Fees	12,000.00		
To Mithila Bibhuti Parv Samaroh	1,266,955.00		
To Holi Mahotsav	85,000.00		
To Office Maintenance	9,418.00		
To Tour & Travel	49,890.00		
To Excess of Income Over Expenditure	91,270.00		
	2,337,290.00		2,337,290.00

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]



CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-08-2018

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

अखिल भारतीय मिथिला संघ
PRESIDENT अध्यक्ष

TREASURER

अखिल भारतीय मिथिला संघ
GEN. SECRETARY महासचिव

पत्राचार



"मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु संघर्षशील"

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी०)

रजिस्टर्ड अण्डर सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (21 of 1860)

रजिस्ट्रेशन नं. 10288

E-mail : akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com

www.mithilasangh.com

पत्राचार कार्यालय:
20, कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली- 110001
मो0: 9650461788, 9717539000

प्रधान कार्यालय:
म.नं. 435/7 ए,
ई-ब्लॉक, संगम विहार
नई दिल्ली-110080



23-11-2018

सेवा में,

श्री नीतीश कुमार
माननीय मुख्य मंत्री,
बिहार, पटना

विषय : मैथिली को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने के संबंध में आवेदन

महोदय,

बिहार के पांच करोड़ से अधिक जनता की मातृभाषा मैथिली है। परन्तु बिहार में मातृभाषा मैथिली में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो पाई है। इस संबंध में मैंने पूर्व में भी आपके समक्ष आवेदन दिया था। नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर आपके समक्ष भी हमलोगों ने इस मांग को रखा था। इसके बाद 25 अक्टूबर, 2018 को आपको पत्र लिखकर पुन: इस मांग को दोहराया था।

मातृभाषा मैथिली में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की मांग आज बिहार सरकार के समक्ष सबसे प्रमुख मांग है। इसके पक्ष में बिहार की पांच करोड़ से अधिक जनता है। महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम उपराष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने कई अवसरों पर इसकी चर्चा की है कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। पूरे विश्व के शिक्षाविदों ने यह स्वीकार किया है कि जब तक मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था नहीं होगी, बच्चों का मस्तिष्क विकास ठीक प्रकार नहीं हो सकता है। इतना ही नहीं, मिथिला क्षेत्र से जुड़ी अनेकानेक संस्थाओं द्वारा भी समय-समय पर यह मांग सरकार के समक्ष रखी है। बिहार सरकार द्वारा अब तक इस संबंध में आदेश निर्गत नहीं किया गया है जबकि इसकी व्यवस्था करने में सरकार के समक्ष कोई अड़चन नहीं है।

हम आपसे पुन: मांग करते हैं कि मातृभाषा मैथिली में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करने हेतु आवश्यक निदेश देने की कृपा की जाए। इससे आप इतिहास में अमर हो जाएंगे और आपके इस निर्णय को मिथिला क्षेत्र की जनता सदैव याद रखेगी।

भ व दी य,

(विजय चन्द्र झा)
अध्यक्ष



"मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु संघर्षशील"

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी०)

रजिस्टर्ड अण्डर सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (21 of 1860)

रजिस्ट्रेशन नं. 10288

पत्राचार कार्यालय:
20, कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली- 110001
मो0: 9650461788, 9717539000

E-mail : akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com
www.mithilasangh.com

प्रधान कार्यालय
म.नं. 435/7 ए
ई–ब्लॉक, संगम विहार
नई दिल्ली–11008

23-11-2018

सेवा में,

माननीय मंत्री
मानव संसाधन विकास विभाग
भारत सरकार, नई दिल्ली

विषय : मैथिली को शास्त्रीय भाषा की मान्यता देने के संबंध में

महोदय,

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा दिनांक 13 अक्तूबर, 2018 को नई दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान में एक वृहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस विद्वत गोष्ठी में मैथिली को शास्त्रीय भाषा का सम्मान देने के संबंध में विमर्श किया गया। इससे पूर्व मैथिली साहित्य संस्थान, पटना द्वारा भारत सरकार के समक्ष मैथिली को शास्त्रीय भाषा देने के लिए आवेदन समर्पित भी किया गया था जो आपके स्तर पर लंबित है।

पांच करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा मैथिली है। शास्त्रीय भाषा के सभी मानदंडों को मैथिली भाषा पूरा करती है। आप अवगत होंगे कि माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा ही मैथिली भाषा को अष्टम अनुसूची में शामिल करने का निर्णय लिया गया था। मैथिली को शास्त्रीय भाषा की मान्यता देकर पुन: मिथिलावासियों का दिल जीत लेने की संभावना नजदीक आ गई है।

मैथिली को शास्त्रीय भाषा देने संबंधी संचिका आपके विभाग में विचारार्थ लंबित है। हमारा अनुरोध है कि आप इस संबंध में पहल करने की कृपा करें जिससे मैथिली को शास्त्रीय भाषा की मान्यता देने संबंधी आदेश का रास्ता प्रशस्त हो सके। आपके इस निर्णय से मिथिला के साहित्याकाश पर आपका यश युग-युगों तक फहराता रहेगा।



भ व दी य,

(विजय चन्द्र झा)
अध्यक्ष



"मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु संघर्षशील"

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी०)

रजिस्टर्ड अण्डर सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (21 of 1860)

रजिस्ट्रेशन नं. 10288

पत्राचार कार्यालय:
20, कॉपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली- 110001
मो0: 9650461788, 9717539000

E-mail : akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com
www.mithilasangh.com

प्रधान कार्यालय:
म.नं. 435/7 ए,
ई–ब्लॉक, संगम विहार
नई दिल्ली–110080

23-11-2018



सेवा में,

श्री नीतीश कुमार
माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

महोदय,

चेतना समिति, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोह में दिनांक 22 नवम्बर, 2018 को आपके कर कमलों से मुझे सम्मानित होने का सौभाग्य मिला, इसके लिए आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में 24 दिसम्बर, 2017 को आयोजित अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयन्ती समारोह में माननीय सांसद श्री प्रभात झा की उपस्थिति में सीतामढ़ी जिला के पुनौराधाम सीता अवतरित स्थल के पुनरुद्धार के लिए आपसे आग्रह किया गया था। हम आपके प्रति आभार प्रकट करना चाहते हैं कि आपने इस मांग को स्वीकार कर जानकी नवमी के अवसर पर 24 अप्रैल, 2018 को कार्यक्रम का शिलान्यास भी किया। इतना ही नहीं, बिहार सरकार द्वारा इस कार्य के लिए 44 करोड़ 48 लाख रुपया आवंटित भी किया गया। श्री प्रभात झा के अनुरोध पर भारत सरकार द्वारा भी इस कार्य के लिए 1 अरब 3 करोड़ रुपया की सहायता देने की योजना बना रही है। यदि बिहार सरकार पहल करे तो यह निधि भी बिहार सरकार को प्राप्त हो सकता है।

दिनांक 22 नवम्बर, 2018 को चेतना समिति, पटना के मंच पर मैंने आपसे इस विषय में अनुरोध किया था। आपने तत्काल प्रधान सचिव श्री चंचल कुमारजी को निदेश दिया कि इस कार्य में शीघ्रता लाने के लिए आवश्यक उपाय किए जाएं। श्री चंचल कुमारजी ने भी तुरंत संबंधित अधिकारियों तक आपका निदेश प्रेषित किया।

हम आपसे आग्रह करना चाहते हैं कि इस परियोजना का अपने स्तर से सतत मूल्यांकन कराते हुए शीघ्रातिशीघ्र परियोजना सम्पन्न कराकर माता सीता की प्रकट स्थली को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने का यश प्राप्त करें। इस महती कार्य के लिए मिथिला ही नहीं पूरा विश्व आपको हमेशा याद रखेगी।

भ व दी य,

(विजय चन्द्र झा)
अध्यक्ष







The Energy to Light a Billion Smiles

IndianOil. The Energy Of India.



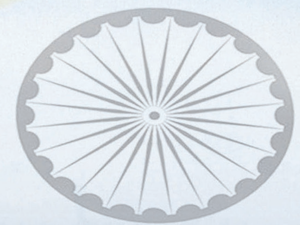


SPEED | PRECISION | POWER



BRAHMOS SUPERSONIC CRUISE MISSILE

World Leader in Cruise Missile Family







MULTIPLE PLATFORMS ▪ MULTIPLE MISSIONS ▪ MULTIPLE TARGETS